चारों धाम की यात्रा

जगद्गुरु श्री शङ्कराचार्य जी ।

चारों धाम की यात्रा

महात्म्य सहित

(चारों धाम के अतिरिक्त भारतवर्ष के तमाम प्रसिद्ध दर्शनीय स्थानों का सचित्र वर्णन)

★

लेखक :—

श्री विशालमणि जी शर्मा उपाध्याय

नारायण कोटि, गढ़वाल।

★

प्रस्तावना लेखक :—

श्री० श्रीराम शर्मा आचार्य

सम्पादक "अखण्ड ज्योति"

★

प्रकाशक :—

फर्म **रघुनाथदास पुरुषोत्तमदास अग्रवाल**

बुकसेलर्स एण्ड पब्लिशर्स,

छत्ता बाजार, मथुरा।

सन् १९५० | सर्वाधिकार प्रकाशक के आधीन हैं | मूल्य ४)

❀ श्री बद्रीश पंचरत्न स्तुति ❀

पवन मन्द सुगन्ध शीतल हेम मन्दिर शोभितम् ।
निकट गंगा बहत निर्मल श्री बद्रीनाथ विश्वंभरम् ॥
शेष सुमिरन करत निशदिन धरत ध्यान महेश्वरम् ।
श्री वेद ब्रह्मा करत स्तुति श्री बद्रीनाथ विश्वंभरम् ॥
इन्द्र चन्द्र कुबेर ध्वनिकर धूप दीप प्रकाशितम् ।
सिद्ध मुनिजन करत जय २ श्री बद्रीनाथ विश्वंभरम् ॥
शक्ति गौरि गणेश शारद नारद मुनि उच्चारणम् ।
योगि ध्वनिकर अपार लीला श्री बद्रीनाथ विश्वंभरम् ॥
यक्ष किन्नर करत कौतुक ज्ञान गंधर्व प्रकाशितम् ।
श्री लक्ष्मि कमला चंवर डोले श्री बद्रीनाथ विश्वंभरम् ॥
कैलाश में एक देव निरंजन शैल शिखर महेश्वरम् ।
राजा युधिष्ठिर करत स्तुति श्री बद्रीनाथ विश्वंभरम् ॥
श्री बद्रीनाथजी के पंचरत्न पढ़त पाप विनाशनम् ।
कोटि तीर्थ भयो [illegible] प्राप्यते फलदायकम् ॥

प्रकाशक की ओर से—

सांस्कृतिक, राजनैतिक और ऐतिहासिक दृष्टि से भारत का संसार में अपना एक विशिष्ट स्थान है। देश देशान्तरों से यात्री और विद्यार्थी सदियों तक यहाँ ज्ञानार्जन करने और यहाँ के कला सौंदर्य का आनन्द लेने, मार्ग की कठिनाइयों और खतरों का सामना करते हुए महीनों पैदल चलकर आते और इस पवित्र भारत—भूमि की यात्रा करके आत्म विभोर हो जाते थे। प्रसिद्ध चीनी यात्री फाह्यान तथा जो भी यात्री इस देश में आये वे जीवन भर इसके उपासक और प्रशंसक बन गये। हमारे ऋषि मुनियों और पूर्वजों ने देश को एकता के सूत्र में पिरोने और धार्मिक तथा सांस्कृतिक ज्ञान चर्चा करने के उद्देश्य से तीर्थ यात्राओं की परिपाटी प्रारम्भ की जो हजारों वर्षों से चली आ रही है जहाँ अधिकांश भारत वासी अपनी २ सुविधानुसार जाते रहते हैं। यात्रा में जलवायु परिवर्तन, अन्त-प्रान्तीय लोगों का सम्पर्क तथा तीर्थों में अपने पवित्र नदी, पहाड़ों, ऐतिहासिक—सांस्कृतिक स्थानों तथा मन्दिरों के दर्शनों का लाभ यात्री को प्राप्त होता है और इस प्रकार वह दैनिक जीवन के कटु संघर्षों और थकान से अवकाश पाकर भौतिक एवं आध्यात्मिक शांति प्राप्त करता है। भारत के समस्त तीर्थों और मुख्य २ नगरों पर भ्रमण सम्बन्धी कोई प्रमाणिक और सचित्र पुस्तक का हिन्दी में अभाव हमें बहुत दिनों से खटक रहा था और स्वयं यात्रा सम्बन्धी कोई बड़ी प्रमाणिक और सचित्र पुस्तक प्रकाशित करने का वर्षों से हमारा विचार चल रहा था कि गत वर्ष हमारे सहयोगी तथा मित्र श्री विशाल मणिजी शर्मा उपाध्याय गढ़वाल से मथुरा पधारे और उनसे हमने अपना

संलग्न प्रकट किया, वे चूंकि अपने माता पिता के साथ पहले भारतवर्ष के सारे तीर्थों की यात्रा कर चुके थे और स्वयं भी इस विषय में दिलचस्पी रखते थे अतः उन्होंने पुस्तक के लेखन का भार अपने कन्धों पर लेकर हमें निश्चिंत कर दिया। हमारे उनके विचारों का प्रतिफल यह पुस्तक पाठकों के सामने है। पुस्तक का भूमिका क्या लिखा जाय? पुस्तक स्वयं अपनी भूमिका है और इससे अधिक पुस्तक के सम्बन्ध में पाठक अपनी राय दे सकेंगे। पाठक इसकी विषय तथा चित्रसूची पढ़कर इसकी उपयोगिता के सम्बन्ध में अनुमान लगा सकेंगे। यात्राके प्रत्येक मुकाम के सम्बन्ध में विस्तृत जानकारी के अतिरिक्त वहाँ की जलवायु, जातियें, भाषायें, उपयुक्त निवासस्थान, सरकारी नियम, सार्वजनिक तथा सामाजिक सेवा संस्थाओं पर पुस्तक में इतना लिखा गया है कि यात्री यथासम्भव बिना किसी परेशानी के पुस्तक के सहारे यात्रा कर सकता है।

हमारी कठिनाइयां—

इस पुस्तक को हम हरिद्वार के कुम्भ के शुभ अवसर पर बाजार में लाना चाहते थे, समय कम था और कार्य अधिक। संयोगवश इसी समय प्रेसों में वोटर लिस्ट छपने का सरकारी काम आपड़ा और कईबार हमें यह विश्वास हो चला कि इच्छित समय पर हम पुस्तक प्रकाशित न कर पायेंगे। आगरे के जिस प्रेस में पुस्तक छपरही थी दुर्भाग्य से वहां पुस्तक के दो-ढाई सौ हस्तलिखित पृष्ठों को चूहे बुरी तरह जगह २ से खागये और इस प्रकार ऐन वक्त पर हम कठिनाइयों में पड़ गये। इन्हीं परेशानी और जल्दी बाजी में कई आवश्यक अंश जगह २ से छूट गये अथवा छोड़ देने पड़े और कहीं २ बड़े २ शहरों का

वर्णन जहाँ कई २ पृष्ठों में छपना था कुछ लाइनों में ही करके पुस्तक के आकार को कुछ सीमित कर देना पड़ा। इनमें सबसे अधिक दुःख हमें इसबात का है कि पुस्तक में भूलसे अमृतसर के "जलियां वाले बाग" और गढ़वाल के अमर शहीद श्रीदेव-सुमन का संक्षिप्त परिचय भी छपने से रह गया। पुस्तक में प्रूफ सम्बन्धी भूलें तो यत्र तत्र रह ही गई हैं साथ ही बानियों और चित्र तथा नक्शे जो हम इसमें देना चाहते थे समयाभाव के कारण न देसके। हम पाठकों को विश्वास दिलाते हैं कि इसके आगामी संस्करण में हम निश्चित रूप से इसकी सारी त्रुटियों को दूर कर देंगे और पाठक गण जो सुझाव हमें देंगे हम उनका स्वागत करेंगे। लेखक श्री० विशाल मणिजी शर्मा उपाध्याय तथा पृष्ठ सं० २६१-३२० और अन्तिम व्रजयात्रा वाले परिच्छेद के लेखक श्री० बाल मुकुंदजी चतुर्वेदी हमारे धन्यवाद के पात्र हैं जिन्होंने इतनी शीघ्रतापूर्वक अथक परिश्रम करके हमें यह लेखन सामग्री प्रदान की। इस प्रकार यह जो कुछ भी और जैसे "सुदामा के चावल" हैं आपके सामने हैं, यदि इससे आपका कुछ लाभ हो सका तभी हम अपना श्रम सफल समझेंगे। आशा है यात्रा प्रेमी जनता इसे अपनाते हुये अपने संशोधन और सुझाव भेज करके हमें आगामी संस्करण और भी ठीक और विस्तृत रूप से प्रकाशित करने का उत्साह प्रदान करेगी।

विनीतः—

पुरुषोत्तमदास अग्रवाल

अध्यक्ष—

फर्म—रघुनाथदास पुरुषोत्तमदास अग्रवाल, मथुरा.

प्रस्तावना

★

तीर्थ यात्रा का अनेक दृष्टियों से बड़ा महत्व है। जलवायु परिवर्तन, ज्ञानवृद्धि, ऐतिहासिक परिज्ञान, आर्थिक प्रत्यावर्तन, सत्संग तथा धर्म संचय आदि लाभों के कारण तीर्थ यात्री को अपनी यात्रा पर खर्च किये धनकी अपेक्षा अनेक गुना हित साधन होता है। इन्हीं कारणों को ध्यान में रखते हुए हमारे पूजनीय पूर्वजों ने ऋषि मुनियों और शास्त्रकारों ने तीर्थ यात्रा का महत्व प्रतिपादन किया है और विभिन्न तीर्थों का महात्म्य विशद रूप से वर्णन किया है।

भारतीय जनता तीर्थ यात्रा को एक प्रधान धार्मिक कृत्य मानती है और बहुसंख्यक जनता इस उद्देश्य के लिये यात्रायें किया करती है। यात्रा काल में अन्य कठिनाइयों की अपेक्षा यह एक भारी कठिनाई रहती है कि यात्री को तीर्थ स्थानों का पूरा परिचय नहीं रहता अतः कितनी ही महत्वपूर्ण जानकारियों से उसे वंचित रहना पड़ता है और कई ऐसे स्थान मार्ग में छूट जाते हैं जिनका देखना और जानना अत्यावश्यक था। इसी प्रकार अपेक्षाकृत कम महत्व के स्थानों में यात्री को अधिक समय और खर्च करना पड़ता है। भारतवर्ष जैसे विशाल देश में जहाँ सैंकड़ों ही छोटे बड़े तीर्थ व दर्शनीय धार्मिक स्थान हैं इस बात की अत्यन्त आवश्यकता थी कि समस्त भारतवर्ष की यात्रा सम्बन्धी कोई प्रमाणिक बड़ी पुस्तक प्रकाशित होती जिसे

पढ़कर यात्री बिना किसी सहारे पुस्तक के आधार पर यात्रा कर सकें और उनका ज्ञान वर्द्धन हो तथा जिसे पढ़कर अपने राष्ट्र का सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक चित्र उनके मस्तिष्क में नाच उठे। इस विषय पर हिन्दी में जो भी छोटी मोटी पुस्तकें प्रकाशित हुई है वे प्रायः अपूर्ण और अप्रमाणिक हैं तथा वे यात्रियों को उतनी लाभप्रद सिद्ध न हो सकीं जितनी होनी आवश्यक थी। अस्तुः

इस दशा में प्रस्तुत पुस्तक के प्रकाशक बहुत दिनों से एक बड़ी यात्रा सम्बंधी पुस्तक महात्म तथा चित्रों और नक्शों के सहित प्रकाशित करने का विचार कर रहे थे। अन्त में वे अपने प्रयत्न में सफल हुए और प्रस्तुत पुस्तक को इतने सर्वाङ्ग सुन्दर रूप में प्रकाशित कर सके। पुस्तक को आदि से अंत तक देखने पर यह साहस पूर्वक कहा जा सकता है कि यह पुस्तक यात्रा—भ्रमण साहित्य में अद्वितीय है विद्वान लेखक का तीर्थों सम्बन्धी व्यक्तिगत ज्ञान पुस्तक को उपयोगी बनाने में बड़ा सहायक हुआ है। इस पुस्तक को खरीदने में जो पैसा पाठक खर्च करेंगे वे पुस्तक के मूल्य की अपेक्षा कई गुना अधिक लाभ प्राप्त करेंगे। हमारा विश्वास है कि इस पुस्तक का समुचित स्वागत होगा और लेखक तथा प्रकाशक महोदय धार्मिक जनता के लिये इसी प्रकार के और भी उपयोगी प्रकाशन उपस्थित करेंगे।

विनीतः—

श्रीरामशर्मा आचार्य

सम्पादक—"अखंड ज्योति"—मथुरा.

अनुक्रमणिका—

चारों धाम की यात्रा

*

विषय	पृष्ठ संख्या

विषय	पृष्ठ संख्या

विषय	पृष्ठ संख्या

चित्रों की सूची

चारों धाम की यात्रा

लेखक—

श्री विशालमणिजी शर्मा उपाध्याय,

गुप्त काशी, गढ़वाल।

बद्री केदार की संक्षिप्त झांकी

चतुर्भुजं-पाश धरं गणेशं-

तथां कुशं दन्त युधं तमेवम् ।

त्रिनेत्र युक्तं त्वभयं करं तं-

महोदरं चैकरदं गजास्यम्॥१॥

तन मन धनदे धर्म की, जो राखत मरयाद ।

रहत सुखी सब तौरसे, त्यागत हो बरबाद ।२।

प्यारे-बन्धुओं ? धर्म की रक्षा किये बिना जाति और देश की रक्षा कदापि नहीं हो सकती । हिन्दुओं ने जितना धर्म का गौरव समझा उतना अन्य जातियां अभी तक नहीं समझ सकीं, हकीकत शूलीपर चढ़ा ! गुरू गोविन्दसिंह के चार बच्चे मारे गये, महाराणा प्रताप चित्तौर छोड़ घास पात खा जंगलों में रहे, वीर शिवाजी न होते तो आज

एक भी हिन्दू न होता, संसार में जो जो जाति उच्च शिखर पर पहुँची वह धर्म प्रचार के बदौलत पहुँची ।

जाति और देश का उद्धार करना प्रत्येक मनुष्य का कर्तव्य है, ऐसा एक भी योग्य पुरुष नहीं जिसका ध्यान इस तरफ़ न गया हो, १ मनुष्यों में प्रेम की भागीरथी बहाना, २ देश में खाद्य पदार्थों की बहुतायत करना, ३ देश के उद्योग धन्धों को उच्चशिखर पर लेजाना, ४ देश में विद्या का प्रचार करना, ५ देश से रोगादिक आपत्तियों का दूरी करण कर देना, ६ देश को मितव्ययी और पवित्र चरित्र बनाना, ७ समस्त देश को धार्मिक बन्धन में बांधना, ८ राष्ट्र को उन्नति पर लेजाना ये देशोन्नति के कर्तव्य हैं, जिस देश का उत्थान हुआ है इन्हीं नियमों से हुआ है, उन्नत क्रिश्चियन अपने ईसाई धर्म के प्रचार में करोड़ों रूप

में व्यय करते हैं, मुसलमान पहले इस्लाम धर्म का प्रचार करते हैं बाद में शेष उन्नति कारक कार्यों पर हाथ डालते हैं, यह उन लोगों का दुर्भाग्य है जो धर्म की रक्षा किये बिना ही देश की रक्षा समझ बैठें।

जिला—गढ़वाल

श्रीकेदार नाथ, बद्री नारायण, गंगोत्तरी, यमुनोत्तरी आदि सभी उत्तरा खण्ड के तीर्थ जिला गढ़वाल में हैं, इस देश का नाम पहले केदार खण्ड था लेकिन यहां अनेक गढ़ों के होने से इस प्रान्त का नाम गढ़वाल पड़ा जो मौनी की रेती से ऊपर समूचा कहलाता है। जिसकी ऊँचाई समुद्र तल से २ हजार फीट से २६ हजार फीट तक है। यहाँ सबसे ऊँचे पहाड़ १ वर्तास्तूंट २ चौखम्ब ३ नालीकांठा ४ दूनागिर ५ नन्दादेवी ६ त्रिशूली नाम से विख्यात हैं। जो हमेशा बर्फ से ढके रहते हैं।

इस जिले में नदियां गंगा भागीरथी गंगोत्तरी से आगे १८ मील से निकलकर ११० मील देव प्रयाग में अलख नन्दाजी से मिलती है और यमुना नदी यमुनोत्तरी से निकल कर जिला देहरादून होती हुई अम्बाला सहारन पुर होती हुई प्रयाग राज में गंगाजी से मिलती है। अलख नन्दा नदी बदरी नारायण के उत्तर अलकापुरी हिमालय से निकल कर १३० मील देव प्रयाग में भागीरथी में मिलती है। वैसे तो इस केदार खंड से करोड़ गंगायें हैं लेकिन प्रधान नदियां इनके अतिरिक्त १ धौली-नीति हिमालय से ५० मील पैन खण्डा में बहकर विष्णु प्रयाग में २ विरही-त्रिशूली वांक से ३० मील बहकर गोहना ताल होती चमोली से ४ मील आगे अलखनन्दा में आमिली ३ नन्दाकिनी त्रिशूली वांक के बांये भाग से निकल कर ३० मील दशोलि में

बहकर नन्द प्रयाग में ४ पिण्डर नदी पिण्डुरी ग्लेशियर से निकल कर ८० मील वधाण और कपीरी, चांदपुर बहकर कर्ण प्रयाग में ५ मन्दाकिनी श्रीकेदारनाथजी के उत्तर ५ मील हिमालय से ५३ मील नागपुर में बहकर रुद्र प्रयाग में ६ नयार नदी दूधातोली के पर्वत से दो धार होकर ३० मील वांघाट के ऊपर २ मील पर दोनों धार इकट्ठी होकर मरोड़ा डैम होकर व्यास प्रयाग (व्यासघाट) में भागीरथी गंगाजी में मिलती हैं। ७ रामगंगा दूधा तोली पहाड़ से निकल कर १६ मील लोहवा खनसर में बहकर अल्मोड़ा, मुरादाबाद होकर सोन, खोह, विनेश्वरी सहायक नदियों के सहित कन्नौज के पास गंगाजी में मिल गई हैं।

तिब्बत जाने के मार्ग याघाटे १ नीलंग गंगोत्तरी से ३८ मील १७,३५० फीट, २ माणाघाटा बद्रीनाथ से २८ मील १८४०२ फीट, ३ नीति

घाटा जोशीमठ से ७१॥ मील १६६२८ फीट ऊंचाई के हैं। इस प्रान्त की जलवायु प्राय सर्द हो है किन्तु स्वास्थ्य के लिये लाभ-दायक है।

वर्तमान देश की जातियाँ

यहां के निवासी हिंदू हैं, केवल श्रीनगर, पोड़ी, लैन्सडौन, रुद्रप्रयाग, भीरी, नंदप्रयाग, कर्णप्रयाग थराली, लोहबा में कुछ मुसलमानों के अलावे सभी हिन्दू जातियां जिनमें प्राचीन काल से ब्राह्मण, राजपूत, वैश्य, शूद्र आदि २ जातियां हैं शूद्र इधर दो प्रकार के हैं एक शत् शूद्र दूसरे असत् शूद्र जिन्हें बीठ और डूम करके पुकारा जाता रहा है। यहां बीठ लोगों की सब की हिस्सेदारी जमीन है, चन्द व्यापारियों के अलावा सभी लोग खेती कमा कर अपनी गुजर किया करते हैं, किन्तु यहां के अछूतों (डूमों) के पास जमीन का अभाव हा है जिसके
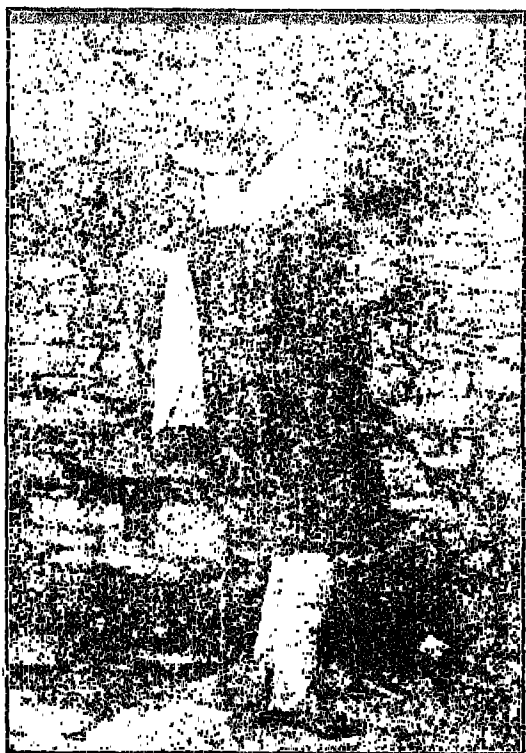
उत्तराखण्ड यात्रा में कण्डी की सवारी।

लिये यहां के वीठों ने तमाम शिल्पकारी का काम जैसे लुहार, बढ़ई, दरजी, राज, मिस्तरी, मोची(चमार) काम इन्हीं अछूतों के पास रखा जिससे इनकी भरपूर गुजर होतीगई। इस देशमें प्राय: विद्या का अभाव ही है केवल प्रतिशत ५० वीठों और १ या २ अछूतोंमें साक्षर हैं। लेकिन वर्तमान समय में पाठशाला, विद्यालय एवं कौलेजों, हाईस्कूलों का प्रबन्ध होने से भावी सन्तान की पढ़ने की आशा अवश्य है लेकिन दु:ख है कि यहां के कतिपय लोग गरीबों को इल्मदार होना नहीं चाहते खास कर हमारे शिल्पकारों को शिक्षित, सभ्य, एवं सच्चा और मितव्ययी न बनाकर उन्हें उल्टे मार्ग पर ले जारहे हैं। जब यहां वैश्य तथा सत् शूद्र जनेऊ नहीं पहनते हैं तो असत् शूद्रों को जनेऊ पहना छूआ छूत हटाना मात्र ही उन्नति का पाठ पढ़ा रहे हैं, परिणाम यह निकला कि

अछूत प्राचीन मेल खोकर अपना शिल्प छोड़ते जारहे हैं जिससे सवर्ण लोग अपना इन्तजाम स्वंयम् करने लगे हैं।

यात्रा मार्ग अधिकतर नदियों के किनारे होकर ही गया है जो कि साफ सुन्दर ३ या ४ मील के फासले पर दुकानों से आबाद है, इस यात्रा का क्रम दक्षिणावर्त है, अतः पहले जिस जिस तीर्थ को आप जावें दाहिने हाथ की सड़क छोड़ कर बांये हाथ की सड़क चले जावें, सारी यात्रा में आपको सभी आवश्यक सामान स्थान स्थानपर उचित मूल्य पर मिलता हो जावेगा, लेकिन तीर्थ स्थानों में कोई भी सामान काफी मंहगा मिलेगा, इसका खास कारण सामान पहुँचाने का किराया दुकानों का किराया एवं घर द्वार छोड़कर ५-६ महीने वहां का कठिन कष्ट सहन करना है।

जरूरी बातें

उत्तराखण्ड की यात्रा के लिये १५ अप्रेल के बाद ही यात्रा करनी चाहिए इससे पहले जाने में सभी स्थानों में बर्फ मिलेगा। बद्रीनारायण के पट सदाकाल १४--१५ मई के लगभग खुलते हैं, केदारनाथ के पट ता: २--३ मई के लगभग खुलते हैं, यही ता: १ मई के लग-भग गंगोत्तरी, यमनोत्तरी के पट भी खुल जाते हैं।

उत्तराखण्ड यात्रा में सरकारी प्रबन्ध

तमाम यात्रा लाइन पर सड़क साफ सुन्दर बनी हैं जिन पर अन्धे भी अच्छी तरह चल सकते हैं। हर नौ मील के फासले पर डाक बंगले हैं, हर ८--१० मील पर सफाखाना अर्थात् सरकारी दवाखाना है, हर ३--४ मील पर डाकखाना है, केदार नाथ, गुप्तकाशी में

अभी तार घर नहीं हैं, शीघ्र ही खुलने वाले हैं, तार भेजने को किसी भी डाकखाने के द्वारा भेज सकते हैं। यात्रियों की सहायता के लिये प्रत्येक चट्टी पर चौधरी मुकर्रिर रहता है और खास खास स्थान पर पुलिस भी मौजूद रहा करती है, सफाई के लिये सेनिटरी इन्स्पेक्टर मौजूद रहते हैं जो दुकानदारों को खराब माल, बासी मिठाई और सड़ा घी, पानी मिला दूध बेचने नहीं देते तथा मेहतरों के द्वारा चट्टियों की सफाई टट्टियों की सफाई रखवाते हैं, टट्टियों पर टट्टी पेशाब जाने को कोई पैसा कहीं देना नहीं पड़ता, प्राय बड़े बड़े स्थानों पर समाचार पत्र भी आपको पढ़ने को मिला करेंगे।

इस सारी उत्तराखण्ड की यात्रा में एक बड़ा भारी पुस्तकालय जिसमें हर प्रकार की पुस्तकें सस्ती कीमत पर मिला करती हैं

वह नारायण कोटि में है।

यात्रा में सवारी का प्रबन्ध

यात्रा में किरायेपर सवारी के घोड़े, डण्डि, कण्डि हर स्थान पर हर वक्त मिला करते हैं लेकिन मंहगे ज्यादा रहते हैं।

कुली का प्रबन्ध

कुलियों का प्रबन्ध भी स्थान स्थान पर हो जाता है, किन्तु मंहगा मिलता है इसलिये अगर यात्री कुलियों पर व्यर्थ पैसा बर्बाद न कर उस पैसे को "विद्यालयों" में दान दें तो देश बड़े उपकार का भाजन बनें।

यात्री को जरूरी सामान क्या पास में रखना है ?

आज कल उत्तराखण्ड यात्रा में प्रत्येक चट्टियों पर सभी आवश्यक सामान किफायत से हर समय मिला करता है, तब क्यों मध्यम दर्जे के लोग व्यर्थ के सामान को साथ में रख कर उसके लिये कुली कर बैठते हैं जिसके

कारण ज्यादा खर्चा करने पर भी कुली लोग बार बार तंग किया करते हैं। इसलिये मामूली बिस्तर तथा धोती लोटा टोर्च बस यही सामान अपने पास एक बेग में ताला बंद करके अपने साथ आसानी से ले जाया जा सकता है, बाकी सामान जब चाहो जहां भी खरीद लो इसीमें आपको लाभ है। दवाईयां कुछ अपने पास रखना आवश्यक है इस लिये किसी भी दवा को आप सस्ते दामों से -- विशाल कार्यालय नारायण कोटि में खरीद लेवें ।

यात्री का दैनिक कार्य

यात्री प्रातःकाल नित्यकर्म से निवृत्त हो कुछ जल पान अवश्य कर लेवे, उसके बाद १० बजे तक चल कर विश्राम कर भोजनादि कर आराम करे फिर ४ बजे से ६ बजे तक शाम के वक्त भी चलकर १५ मील रोजाना चलें

हफ्ते में एक दिन किसी भी स्थान पर मुकाम कर अपने कपड़े धोने आदिके कार्य कर लेवें। पसीने में एक दम स्नान न करें खुले गधेरे जो बस्तियों के कारण महा गन्दे रहते हैं उनका पानी न तो पीनेके ही काम लेवें और न उनसे स्नान ही करें। वर्षात में गधेरों की जगह जोंकें बदन काट लेती हैं किसी किसी जगह काटने वाली मक्खियां भी काटती हैं लेकिन घबराने की बात नहीं है। हां पहाड़ी रास्तों में वर्षात् से फिसलने का डर है, अतः बड़ी सावधानी से फिसलन और ठोकर बचाकर चलना चाहिए। यात्री जब अधिक ऊंचाई जैसे पवांली, केदारनाथ, तुंगनाथ, बद्रीनाथ के पास पहुंचता है वैसे ही वहां की ऊंचाई की हलकी वायु और तरह तरह की जड़ी बूँटियों की खुशबू से सिर घूमने लगता है, अतः घबरावें नहीं।

धर्मशाला--सदावर्त

श्री १०८ बाबा काली कमली की ओर से उत्तराखण्ड की सारी यात्रा में -- धर्मशाला और सदावर्त प्राय: ८--१० मील पर स्थान स्थान पर मौजूद हैं जिनके द्वारा भारी उपकार हरहा है। एक जमाना था जब सच्चे विरक्त साधु तपोवन और ऋषिकेश में भगवद् भजन में लीन रहा करते थे जिन्हें देख श्री स्व० स्वामी विशुद्धानन्दजी ने मारवाड़ी समाज को उपदेश देकर साधुओं के लिये ऋषिकेश में भोजनादि व्यवस्था की थी किन्तु खेद है कि आज वह साधु समाज अवनत हो उपेक्षणीय होरहा है, वे सच्चे साधु अब नही हैं उनके स्थानपर अनेकों तरह के लोग भर गयेहैं शोक महान् शोक।

ठहरने का प्रबन्ध

रास्ते में ठहरने और खाना बनाने का अच्छा प्रबन्ध है। जिस चट्टी में आप ठहरेंगे

गुप्त काशी गढ़वाल के सार्वजनिक कार्यकर्ताओं का समूह ।

वहां आपको रहने का और बर्तनों का पूरा प्रबन्ध किया जाता है। चट्टियां दुकानदारों की होती हैं। कम से कम एक पाव आटा खरीदने से दुकानदार चट्टी पर टिकने में एत-राज नहीं करते, किन्तु मीठी जबान वाला व्यक्ति बिना लिये दिये भी रहने दिया जाता है। बड़ी बड़ी चट्टियों में पांच मील के ऊपर बाबा-काली कमली की धर्मशाला है। चिट्ठी वालों की वहां पूरी तरह सेवा की जाती है। ठंडी जगह कम्बल भी ओढ़ने को मिलते हैं।

खाने पीने का सामान

आटा, चावल, उड़द की दाल और घी इस देश की चीज हैं, बाकी गुड़, खटाई, मसाला, तेल, नमक, वगैरह सब बाहर की चीजें हैं। सड़क के किनारे दुकानदार चाय, दूध जगह जगह पर बेचा करते हैं। दूकान में

चौका लगाना और जूंठ गिलास मांजना दुकानदार ने अपने जिम्मे कर रखा है।

सुई, तागा, टिकुली, बिन्दी की भीक

रास्तेमें सुई, तागा, बिन्दी को मांगने वाले सब होजाते हैं, इस कारण सुई तागा बांटने को साथ अवश्य रखना चाहिये।

गरीब देश की शिक्षा संस्थायें

इस देश में फीसदी पांच मनुष्य ही शिक्षित हैं शेष सब अशिक्षित खुद असभ्य हुआ करते हैं इस कारण हम अपनी उन्नति नहीं करसके, हमारे बहुत से बालक पञ्जाब और बनारस आदि २ स्थानों में विद्याध्ययन करने गये और अनेकों मुसीबतें सहन करके विद्याध्ययन कर अपनी आत्मा प्रसन्न करसके थे लेकिन वे विद्वान् विरुद्ध जल-वायु से क्षय आदि रोग से पीड़ित हो बिना किसीके उपकार किये ही कालके ग्रास होगये।

ऐसे हृदय विदारक दुःखों को देख कुछ देश हितकी कामना वाले मनुष्यों ने अनेक कठिनाइयों को पारकर शिक्षणालय तैयार कर दिये हैं जिनमें गरीब देश के निधन बालक विद्याध्ययन कर रहे हैं लेकिन यह विद्यालय आप जैसे धनवान्-विद्वान् धर्मात्माओं की कृपा पर ही चल रहे हैं विद्यादान के बराबर और कोई दान है ही नहीं' अतः अवश्य इन विद्यालयों में दान देवें।

बीमार कौन होते हैं

जो पसीने में स्नान करते हैं, जो चलते चलते गन्दा पानी पीते हैं, जो आम खुमनी आदि कच्चे फल और बासी खाना खाते हैं, वर्षा में भीगते हैं, तथा घाम में सूखते हैं, यात्री को हर तरह पथ्य से रहना चाहिए।

खतरे से सावधान

पहले यह उत्तराखण्ड सत्व, धर्म परायण

था झूठ बोलना, चोरी करना इस देशके लोग जानते ही नहीं थे कहीं कोई सामान भूल से छूट जाता था तो महीनों के बाद भी उसका सामान सुरक्षित उसे मिल जाता था। किन्तु आज वह बात नहीं है। आजकल, चोर, जेबकट, ठग, उठाइगीर साधु वेषमें यात्रियों के संग होलेते हैं और उन्हीं का खाना खाकर मौके की तलाश में रहते हैं जब कभी वे पूरा अवसर पालते हैं तो--मियांकी जूती मियां के शिर पटक देते हैं मतलब यह कि उन्हींका खाना खाकर उनका सर्वस्व छीन लेते हैं। अतः स्नान करते समय, सोते समय, अपने सामान को इन्तजाम के साथ रखना चाहिए। खासकर, हरिद्वार, भीमगोड़ा, ऋषिकेश, लक्ष्मणझूला, देवप्रयाग, श्रीनगर, रुद्रप्रयाग, गुप्तकाशी आदि स्थानों में बड़ी सावधानी से रहना चाहिए।

फालतू सामान कहां रखना चाहिये।

यमुनोत्तरी जातीवार, गंगाणी में, गंगोत्तरी जातीबार, भटवाड़ी में, केदारनाथ जातीबार नारायण कोटि (भेत) में और बद्रीनाथ जाने में चमोली इन स्थानों में फालतू सामान छोड़दें कारण कि यह स्थान आपको वापिस आती बार मिलजाते हैं तब क्यों व्यर्थ चढ़ाई में सामान कम न कीयाजावे, नारायण कोटि (भेत) बहुत बड़ा बाजार है बढ़िया मकान ठहरने को है यात्रियों का सामान मुफ्त इन्तजाम के साथ रख दीया जाता है। उत्तराखण्ड यात्रामें सस्ती और हर तरह के आरामके लिये यही एक तीर्थ नारायण कोटि है।

आज कल के यात्री

आज कल यात्रा के रूप में चोर, जार, बेईमान, बदमाश, जेब कटे, नंगे, भूखे लोगों की तायदाद ज्यादे है सच्चा यात्री बहुत ही

कम देखने में आता है यह हमारा अनुभव है। कुछ लोग तो घर में अपने घर वालों के साथ भर पेट भोजन नहीं पाते हैं इसलिये पेट भर भोजन करने को यात्री बनते हैं किन्तु वे स्नान, दान, दर्शनादि को जानते ही नहीं, कुछ लोग केवल भीख मांगने को ही यात्री होजाते हैं, कुछ लोग भ्रमण करने को ही यात्रा कहते हैं और कुछ महापापी हत्यारे दिन दहाड़े डाका मार कर के टट्टी की आड़ में शिकार खेलकर भी लोक दिखावे को यात्रा करते हैं। एक ताजा घटना है कि—मुरादाबाद निवासी स्व० रामकुमार शर्मा के बड़े पुत्र सनातन धर्म प्रेस के मालिक सनातन धर्म पताका के सम्पादक पं० रामचन्द्र शर्मा जो पटाका के नाम से अपनी बदनीयती से मुरादाबाद में प्रसिद्ध हैं जिन्होंने अपने सहोदर भाई मुरारीलाल शर्मा, सूर्यदेव शर्मा से विश्वास

घात कर बेईमानी की कैंची द्वारा दो हजार रुपया लेखक की चुराये वेभी ता० १७ जून ४६ को केदारनाथ की यात्रा कर बद्रीनाथ गये क्या कोई कह सकता है कि यह यात्री थे और इनकी यात्रा भी हुई। अस्तु असल में यात्री बहुत कम आते हैं जो तीर्थ सेवी होकर दान, पुण्य करते हुए कीर्तन आदि में अपनी यात्रा निर्विघ्न समाप्त करते हैं ऐसे लोगों को को धन्य है।

बद्री, केदार, मन्दिर--सुधार।

इन जगत्पूज्य मन्दिरों का कुप्रबन्ध देख जनता एक स्वर से चिल्लाई कि बद्री--केदार के मन्दिरों का प्रबन्ध असन्तोष जनक है, इनके सुप्रबन्ध की निहायत आवश्यकता है।

बद्री--केदार के मन्दिर हिन्दुओं के सर्वोपरि महत्व पूर्ण तीर्थ हैं। इनकी प्रतिष्ठा समस्त हिन्दू संसार में है। ये सर्वश्रेष्ठ पवित्र तीर्थ

जब कुप्रबन्ध के कारण निकृष्ट अवस्था को पहुंच गये तब आवश्यकता हुई सुप्रबन्ध की।

उन्नीसवींशताब्दी के आखिर वर्षों की बात है कि जब मन्दिर बद्रीनाथ दशा रावल तथा उनके कर्मचारियों की गलती के कारण बहुत गिरगई तब गढ़वाल के जिला मजिस्ट्रेट ने दीवानी कानूनके अनुसार वहां के पुजारी (रावल) पर कुमाऊं कमिश्नरी में दावा पेश किया, सन् १८६६ में अदालत कमिश्नरी ने एक स्कीम तैयार कर उसका एक मात्र ट्रस्टी और सर्वे सर्वा रावल कोही बनाया। बृटिश गवर्नमेन्ट की नीति धार्मिक प्रश्नोंमें हस्तक्षेप न करने की होने के कारण रावल निर्भय हो गये। जिस मन्दिर के पुजारी विरक्त ब्रह्मचारी हुआ करते थे उस पद पर इन्द्रिय लोलुप विषयी पुरुष जिनपर ह- द- ४६८ तक के इस्तगासे हुए जारी बनकर भगवान् बद्रीनाथ

जी की मूर्ति का स्पर्श करने लगे। उस वक्त का अनुमान था कि मन्दिर बद्रीनाथ की कुल जुमला वार्षिक आय एक लाख रुपया से अधिक थी लेकिन रावल साहब गृहस्थ होने के नाते अपव्यय कर बैठते थे। सारी बदइन्त-जामियों से पिछली सरकार भी परिचित थी। सन् १९२८ में प्रान्तीय सरकार ने संयुक्त प्रान्तीय हिन्दू धार्मिक तथा दातव्य धर्मादाय समिति नियुक्त की और उसे गढ़वाल के इन मन्दिरों की जांच के लिए भेजा। उस कमेटी ने बद्री--केदार के मन्दिरों के विषय में जनता की राय तथा प्रमुख व्यक्तियों के विचार इकट्ठे किये और प्रान्तीय सरकार के पास जोरदार शब्दों में यह रिपोर्ट भेजी कि इन मन्दिरों का वर्तमान प्रबन्ध बहुत ही असंतोष जनक है। उस सब कमेटी ने ताजीरात हिन्द की दफा ९२ के अनुसार मन्दिर बद्रीनाथ

व केदार नाथ के कुप्रबन्ध के लिये एक सुन्दर स्कीम तैयार कर सरकार के पास पेश की लेकिन पिछली सरकार ने उस पर कोई ध्यान नहीं दिया।

टिहरी नरेश ट्रभन्कोर के राजा द्वारा किसी नम्बूरी ब्राह्मण को पुजारी के लिये चुनवा कर बुलाते जो आखिर रावल बनता रहा। मन्दिर के प्रबन्ध निरीक्षक टिहरी नरेश माने जाते थे लेकिन वे भी नाम मात्र के रह गये थे। केवल नायब रावल को बुलाने और कपाट खोलने के अलावा टिहरी नरेश का अधिकार कुछ नहीं रह गया था। इसलिए सन् १६३३ में यह विचार किया जारहा था कि मन्दिर और पुरी बद्रीनाथ टिहरी राज्य के आधीन कर दिये जांय। सारे भारत में इसी प्रश्न पर बड़ा आन्दोलन उठा और हिन्दू जनता ने इस पर बड़ी दिलचस्पी ली।

श्री सी० वाइ० चिंतामणि तथा कौंसिल के अन्य ३७ मेम्बरों का एक वक्तव्य इस प्रश्न पर निकला कि बद्रीनाथ को बृटिश सरकार के आधीन रहनेसे उसके सुधार के विषयमें जनता को चिल्लाने और आन्दोलन करने का मौका आसानी से मिलसकेगा। खासकर ऐसे अव-सर पर जबकि भारत को प्रान्तीय स्वराज्य मिलरहा है, रियासत टिहरी में मन्दिर बद्रीनाथ को सौंपना उचित नहीं।

सर ज्वालाप्रसादने यू० पी० धर्म रक्षिणी सभा के मार्च १९३७ के किसी अधिवेशन के अवसर पर व्याख्यान देते हुए कहा था कि सरकार इस बात के लिये बहुत इच्छुक है कि वह प्रान्त के मठ-मन्दिरों का शीघ्र सुधार करे। उन्होंने एक बिल भी पेश किया।

हर्ष का विषय था कि दिसम्बर की मिटिङ्ग में कांग्रेस पार्टी ने यह प्रस्ताव पास किया.

आचार्य जुगलकिशोर पार्लियामेन्टरी सेक्रेटरी के नेतृत्व में एक कमेटी नियुक्त हुई जिसने यू०पी० के मठ-मन्दिरों की योजना के साथ साथ बद्री केदार के मन्दिरों की भी योजना उनके साथ थी ही किन्तु जनता ने अनुरोध किया कि यहां के लिए एक स्पेशल बिल तैयार किया जाने और अलाहदा कमेटी बनने की प्रार्थना की, भाग्यवश प्रान्तीय सरकार के मंत्री पं० गोविन्द वल्लभपन्त जो संयुक्त प्रान्तीय हिन्दू धार्मिक तथा दातव्य धर्मादाय समिति के मेम्बर रह चुके थे और बद्री--केदार मन्दिरों के सम्बन्ध में काफी--जानकार थे उनके भारत की प्रमुख संस्थाओं तथा गण्य-मान्य सज्जनों एवं जिला बोर्ड गढ़वाल तथा पार्वतीय विद्वानों ने प्रार्थना की शीघ्राति शीघ्र इनका सुप्रबन्ध किया जाय और स्पेशल बिल से १८६६ की स्कीमका अन्त कर दिया जाय. फल स्वरूप

श्रीबदरीनाथ मन्दिर कानून ता० ३ नवम्बर १६३६ को यू० पी० गवनर महोदय की अध्यक्षता में स्वीकृति हुआ। कमेटी का निर्माण न होने पर एक्ट की धारा २७ के अनुसार ठा० प्रतापसिंह चौहान डिप्टी कलक्टर की नियुक्ति स्पेशल आफीसर के पद पर की गई ता० १५ अप्रेल ४० को बदरीनाथ के रावल पं० वासदेव नम्बूरी से चार्ज लेकर कानूनी कार्य चलने लगा। चार्ज में सोने चांदी के अलावे १४३ रु० नकद १०० का सोना और १४ हजार का कर्जा संभाला। स्पेशल आफीसर का कार्यकाल १५ अप्रैल ४० से जनवरी ४१ तक रहा, फरवरी ४१ में श्रीबदरीनाथ कानून की धारा ५ के अनुसार कमेटी का निर्माण किया गया। स्पेशल आफीसर चौहान ने कानून की धारा १ को कार्यान्वितकर पर्याप्त सुधार कर अपूर्व सफलता प्राप्त

र्था। इस वर्ष ४० हजार यात्रि भगवान् के दर्शनो को आये।

फरवरी ४१ में कमेटी का निर्माण हुआ और १२ व्यक्तियों की समिति बनी (१) आनरे बल डाक्टर सर सीताराम एम० ए० एल, एल. बी० डी० लिट् (अध्यक्ष) (२) श्री. जी. जी. खापरडे (सदस्य) (३) ला० आनन्द स्वरूप मुजफ्फर नगर (४) श्री-रमाकांत मालवीय एम. एल. सी. (५) श्री० हरगोविन्द पंत एम. एल. ए. (६) श्री गोस्वामी गणेशदत्त शास्त्री (७) कैप्टन ईन्द्रदत्त सकलानी (८) श्री महंत योगेन्द्रपुरी शास्त्री (९) पं० मोतीचंद शर्मा (१०) श्री० अनुसूयाप्रसाद बहुगुणा एम. एल. ए. (११) कुंवर रघुनाथसिंह मेम्बर डि० बो० (१२) श्री० शंकरसिंह नेगी मे० डि. बोर्ड—

इस कमेटी ने अनेक प्रस्ताव मन्दिर उन्नति के पास किये और स्पेशल आफीसर ठा० चौहान को मन्त्री नियुक्त किया। इस कमिटी का कार्यकाल ४१ फरवरी से ४४ फरवरी तक रहा कमेटी ने अपने कार्य काल में बड़े बड़े सुधार कर तमाम कामों को सुचारू रूप में लिया। अब फिर से नई कमेटी का निर्माण हुआ जिसका कार्यकाल मार्च ४४ से फरवरी ४७ तक रहा और इसके सदस्य निम्न लिखित महाशय थे। (१) श्री० बाल गंगाधर खापर्डे एम. ए. (अध्यक्ष) (२) श्री० यज्ञनारायण उपाध्याय एम. एल. ए. (सदस्य) श्री पद्मेन्द्र सिंह रावत वकील (४) शंकरसिंह नेगी वकील (५) श्री ईन्द्रदत्त सकलानी (६) श्री उमादत्त डंगवाल (७) बाबू घनश्याम चीफ जज टेहरी (८) श्री परमानन्द पाण्डे वैद्य रत्न (९) गो० गणेशदत्त शास्त्री ता: १ अगस्त ४६ को ठा०

प्रतापसिंह चौहान सप्लाई आफिसर गढ़वाल के पद पर जाने से मंत्री पं० रामदत्त पांडे तहसीदार नियुक्त हुए, इस कमेटी ने भी अपने कार्य काल में अनेकों प्रशंसनीय कार्य करके काफी धन भी भगवान के कोष में जमा किया, आज ६ साल में कमेटी ने वह कार्य कर दिखाये जो अकथनीय हैं—

मन्दिर बद्रीनाथ की तीसरी कमेटी का निर्माण मार्च ४७ को हुआ जिसके सदस्य यह महाशय हैं (१) श्री हरगोविन्द पन्त एम. एल. ए. सदस्य भारतीय विधान परिषद् (अध्यक्ष) (२) श्री-यज्ञ नारायण उपाध्याय एम. एल. ए. (सदस्य) (३) श्री० ब्रजनाथ सर्गा एम ए० एल० एल० बी [४] ला० दीपचन्द एम० एल० सी० (५) श्री हीरा वल्लभ त्रिपाठी म्यूनिसिपल चेयरमैन हरद्वार [६] श्री जगमोहनसिंह नेगी एम० एल० ए० [७] श्री

पद्मेन्द्रसिंह रावत बी० ए० एल. एल. बी.
(८) श्री चन्द्रसिंह थोकदार (९) श्री इन्द्र-
दत्त सकलानी एम. ए. एल.एल. बी. (१०)
कुंवरसूरवीर सिंह बी० ए० एल० एल० बी०
(११) रा० ब० घनश्याम दास चीफ जस्टिस
(१२) श्री औतारसिंह बी. ए. एल. एल बी.
रायबहादुर घनश्यान दास जी के त्यागपत्र
पर श्री उमादत्त डंगवाल बी० ए० एल०
एल० बी० सदस्य नियुक्त हुए। मंत्री पद के
लिये ८४ आवेदन पत्रों में पांच उम्मीदवार
चुनाव में लखनऊ गये, मतगणना से श्री पुरु-
षोत्तम बगवाड़ी बी० ए० एल. एल० बी०
मन्त्री नियुक्त हुए। ता० १०--११--४७ को
पं० रामदत्त पाण्डे ने चार्ज दिया, वर्तमान
कमेटी का कार्य अत्यन्त प्रशसनीय चलरहा है
इस कमेटी के असिस्टेन्ट सेक्रेटरी श्री. नारायण
दत्त बहुगुण श्रीकेदारनाथ जी के सुचारु प्रबन्ध

पर हैं। आपने वर्तमान सन्०४६ में काफी इन्तजामों द्वारा बड़ी भारी आय जमाकी, यही आय इन मन्दिरों में पेस्तर भी होती रही होगी किन्तु विद्वानों के इन्तजाम और कुपढ़ों के इन्तजामोंका कितना अन्तर हुआ करता है।

मन्दिर बद्रीनाथ की भोग पूजा स्वामी शंकरा चार्यकी व्यवस्था के अनुसार दक्षिण भारतके नम्बूद्री जातिके ब्राह्मण करते हैं। आजकल इस स्थान पर पं० पी० कृष्णनन रावल हैं जिन्हें २४--४--४८ को तिलक मिला है।

मन्दिर श्रीकेदारनाथ के पुजारी लिङ्गाय-त जंगम हैं, ये लोग श्रीकेदारनाथ, मध्मेश्वर, ऊखीमठ और गुप्तकाशी इन चार स्थानों की पूजा करते हैं, आजकल यहां के रावल श्री० जयलिङ्गजी हैं।

उत्तराखण्ड के प्रसिद्ध स्थानों की दूरी--मीलों से--

हरिद्वार से यमुनोत्तरी	···	१४०
··· गंगोत्तरी	···	१४८
··· केदारनाथ	···	१५१
··· बदरीनाथ	···	१६२
··· यमुनोत्तरी होकर- गंगोत्तरी	···	२३६
हरिद्वार से-यमुनोत्तरी, गंगोत्तरी, केदारनाथ होकर बदरीनाथ	···	४६१
हरिद्वार से यमुनोत्तरी, गंगोत्तरी, केदारनाथ, बदरीनाथ होकर हरिद्वार	···	६५३
हरिद्वार से उत्तरकाशी	···	१२७
··· गुप्तकाशी	···	१२७
··· रूद्रप्रयाग	···	१०३
··· चमोली	···	१४३
··· कर्णप्रयाग	···	१२५
··· श्रीनगर	···	७७
··· देवप्रयाग	···	५६
··· टिहरी	···	५६
··· ऋषिकेश	···	१५
··· कनखल	···	२
··· कीर्तिनगर	···	७८
कीर्तिनगर से श्रीनगर	···	३
ऋषिकेश से टिहरी	···	४४
देव प्रयाग से टिहरी	···	३४
टिहरी से धरासू	···	२६
मंसूरी से धरासू	···	३८
टिहरी से यमुनोत्तरी	···	७४
··· गंगोत्तरी	···	१००
··· श्रीनगर	···	३३
··· देवप्रयाग	···	३४
··· मुखीमठ	···	३५
धरासू से यमुनोत्तरी	···	४८
धरासू से गंगोत्तरी	···	७३॥
गङ्गोत्तरी से केदारनाथ	···	१२१
यमुनोत्तरी से गंगोत्तरी	···	६६
उत्तर काशी से गङ्गोत्तरी	···	५८
बूढ़ाकेदार से त्रियुगी-नारायण	···	४०॥
त्रियुगी नारायण से केदारनाथ,		१२
केदारनाथ से बदरीनाथ	···	१०१
रुद्रप्रयाग से केदारनाथ	···	४८
··· से बदरीनाथ	···	८६
··· से गुप्तकाशी	···	२४
गुप्तकाशी से-नारायण कोटि		२
नारायण कोटि से केदार-नाथ	···	२२
··· से कालीमठ	···	२

कालीमठ से काली शिला	३
कालीमठ से कोटिमाहेश्वरी	५
गङ्गोत्री से उत्तरकाशी	४२
उत्तर काशी से भटवाड़ी	१८
गङ्गोत्री से मल्ला	४०
मल्ला से बूढ़ाकेदार	२७
केदारनाथ से नारायणकोटि	२२
नारायणकोटि से चमोली	३१
रुद्रप्रयाग से-उत्तराखण्ड—	
विद्यापीठ	२४
उखीमठ से तुंगनाथ	१४
तुंगनाथ से चमोली	१८
चमोली से बदरीनाथ	४८
चमोली से ज्योतिर्मठ	३०
जोशीमठ से बदरीनाथ	१८
जोशीमठ से लोकपाल	१८
जोशीमठ से फूलों की घाटी	१६
जोशीमठ से तपोवन	७
जोशीमठ से नीतिगांव	४३
नीति गांव से नीतिधूरा	१२
नीतिधूरा से कैलाश	१४७
बदरीनाथ से सत्यपथ	१५॥
बदरीनाथ से वसुधारा	५
बदरीनाथ से मातामूर्ति	२
बदरीनाथ से माणा गांव	२
माणागांव से माणा धूरा	२६

माणाधूरा से कैलाश	२१२
केदारनाथ से चोरावाड़ीताल	१॥
केदारनाथ से वासुकीताल	॥
चमोली से गोहनाताल	१२
नन्द प्रयाग से गरुड़ मोटर	५७
गरुड़ से रानी खेत	६०
कर्णप्रयाग से रानीखेत	६०
कर्णप्रयाग से भिकिया सैंण	५६
भिकिया सैंण से रामनगर	४४
कर्णप्रयाग से चौखुटिया	
कर्णप्रयाग से चमोली	२०
कर्णप्रयाग से रुद्रप्रयाग	२२
हेलंग से कल्पेश्वर	७
मण्डल से अनुसूया	३
मण्डल से रुद्रनाथ	१०
कालीमठ से राकेश्वरी	७
कालीमठ से मध्यमेश्वर	१५
श्रीनगर से पौड़ी	८
पौड़ी से दुगड्डा	४१
दुगड्डा कोटद्वारा	१०
दुगड्डा लन्सडौन	६

श्री नगर से मोटर द्वारा पौड़ी दुगड्डाहोकर कोटद्वारारेल स्टेशन को अच्छा मार्ग है यात्रि चाहें तो इस रास्ते भी अपने मकान को जा सकते हैं खासकर पूरब को जाने वाले यत्रियों को कोट द्वारा,नजीनावाद होकर जाने में ही सुगमता रहेगी

हरिद्वार से—यमुनोत्तरी, गंगोत्तरी, केदारनाथ, बद्रीनाथ होकर वापिस रेलवे तककी चट्टियां—मीलों में।

चट्टी		मील
हरिद्वार	...	०
सत्यनारायण	...	८
ऋषि केश	...	७
मुनि की रेति	...	१-४
लक्ष्मणझूला	...	१-४
गरुड़ चट्टी	...	२
महादेव	...	५
नाइमोहन	...	१
बिजनी छोटी	...	२
बिजनी बड़ी	...	१
प्योड़ खाल	...	१
कुण्ड	...	२
बन्दर भेल	...	३
महादेव	...	३
सेमल	...	४
कांडी	...	३
व्यासघाट	...	४
छालुरी	...	३
उमरासू	...	२-२
सौड़	...	२-४

चट्टी		मील
देवप्रयाग	...	१-२
घतेश्वर	...	४
देवानीगाड़	...	२
कुलासू	...	२
रानीबाग	...	३-४
कोलटा	...	१-१
रामपुर	...	२-२
अर कणी	...	३
बिल्वकेदार	..	२
श्रीनगर	...	३
सुकरता	...	४-४
भट्टीसेरा	...	३-५
खांकरा	...	३
नरकोटा	...	२-६
गुलाबराय	...	३
रुद्रप्रयाग	...	१-२
छतोली	...	४-४
तिलवाड़ा	...	१-१
मठ	...	१-१
	...	४

अगस्तमुनि	...	४	कंथा	...	३-४
सौड़ी	...	२-२	ग्वालिया बगड़	...	२
चंद्रापुरी	...	२	दैंड़ा	...	१
भीरी	...	३-४	गोद	...	१
पोखरी खेत	...	१-४	पोथी बासा	...	२
कुण्ड	...	२	दोगल भीटा	...	२
गुप्तकाशी	...	२-१	बणियां कुण्ड	...	०-६
नाला	...	१	चौपता	...	१
नारायणकोटि	...	१-२	तुंगनाथ	...	२
ब्यूंग	...	२	भुलकना	...	२
मैखण्डा	...	१-४	पांगर बासा	...	२-६
फाटा	...	१-४	मण्डल	...	३-२
बड़ासू	...	२	वैरागणा	...	२
बदलपुर	...	१	गोपेश्वर	...	३-६
रामपुर	...	३	चमोली	...	२-४
सीतापुर	...	१-२	मठ	...	२
त्रियुगी नारायण	...	३-४	छिनका	...	१ ४
सोन प्रयाग	...	३-४	बौला	...	२
गौरी कुण्ड	...	२-४	सीयासैन	...	१
सर्गानिशानी	...	२	हाट	...	१
रामबाड़ा	...	२	पीपल कोटि	...	२
केदार नाथ	...	३	गरुड़ गंगा	...	३-४
नारायण कोटि	...	२२	टंगनी	...	१-४
नाला	...	१	पाताल गंगा	...	३
विद्यापीठ	...	१-३	गुलाब कोटि	...	२
ऊखीमठ	...	१-१	हेलंग	...	२

	...	२-२
झड़कुला	...	१-२
सिंहधार	...	३
जोशीमठ	...	०-४
विष्णु प्रयाग	...	२
घाट	...	४
पाण्डु केश्वर	...	२
लामबगड़	...	३
हनुमान चट्टि	...	३
बद्रीनाथ	...	५
चमोली	...	४८
कुहेड़	...	२
मैठाणा	...	२
नन्दप्रयाग	...	३
सौनला	...	३
लंगासू	...	३
उमट्टा	...	४
कर्णप्रयाग	...	२
रुद्रप्रयाग से—		
कर्णप्रयाग को	...	२२
रुद्रप्रयाग	...	०
सुमेरपुर	...	३-४
शिवानन्दी	...	४-४
नगरासू	...	३
कमेड़ा	...	३
गोचर	...	२

चटशापीपल	...	२
कर्णप्रयाग	...	४
कर्णप्रयाग से मेलचौरी,		
चौखुटिया, गनोखेत,		
काठ गोदाम, रामनगर,		
कर्णप्रयाग	...	०
शिमली	...	४
सिरोली	...	२
भटोली	...	१-४
जुव्वलपुर	...	२
आदि बद्री	...	१-४
खेती	...	३-२
जौंकापानी	...	१-४
दिवाली खाल	...	२
गांडागांज	...	०-४
नाड़गधेरा	...	२
लोहबा	...	१-६
धुनार घाट	...	१-५
मेलचौंरी	...	५
पनुवाखाल	...	१
सेमलखेत	...	१-४
गणाई (चौखुटिया)	...	५-४
महाकालेश्वर	...	४
चित्रेश्वर	...	२
द्वाराहाट	...	४
चण्डेश्वर	...	२-४

ककड़ा	...	२-४	नन्दप्रयाग—		०
गगास	..	२-४	थिरपाक	...	४
कोटली	...	७-४	बिरोली	...	१
गनीखेत	...	१-४	चमनोली	...	२
काठगोदामरेलस्टेट. ६०मील			घाट	...	४
गगाईसे —रामनगरको			बांसबगड़	...	३॥
गगाई	...	०	सुतताल	...	७
त्याड	...	४-४	झुंगगी	...	४।
मासी	...	२-६	थराली	...	५
बूढ़ाकेदार	...	४	बैनोली	...	१॥
भिकयासैंण	...	३	ग्वालदम	...	४।
श्रीकोट	...	३	धरकोट	...	४
बामोट	...	३	ग्वाड	...	३
गबीलखाल	...	३-६	डंगोली	..	१
गूजरघाटी	...	३	वैजनाथ	...	२
मछोड़	...	३	गरुड़ मोटर स्टे०	...	१
पनवा धोखन	...	२	हरिद्वारसेयमुनोत्तरी१४०मील		
गोदी	...	२	हरिद्वार	...	०
टोटाग्राम	...	६	ऋषिकेश	...	१५
भौराल	..	२	नरेन्द्रनगर	...	१०
कुमरिया	...	३	टिहरी	...	४१
मोहन	...	३	सराँई	...	५
गरजिया	...	५	भल्डियाना	...	६
रामनगर	...	८	छाम	...	५
नन्दप्रयागसे —			नगूण	...	५
ग्वालदम ४७ मील को—			धरासू	...	५

कल्याणी	...	४	यमुनाचट्टी	...	६
गेंवला	...	५	ओजरी	...	६
सिलक्यारी	...	५	डडोटी	...	२
राड़ीधार	...	५	रानागांऊ	...	२
डंडालगांऊ	...	२	हनुमानचट्टी	...	२
शिमली	...	२	खरशाली	...	४
गंगाणी	...	२	यमुनोत्तरी	...	४

ऋषिकेश से ५३ मील टिहरीतक मोटर चलती है आगे उत्तरकाशी तक मोटर सड़क बन रही है।

यमनोत्तरीसे-गंगोत्तरी ९९ मील

गंगोत्तरीसे-केदारनाथ १२१ मील

यमुनोत्तरी	...	०	गंगोत्तरी	...	०
शिमली	...	२५	मल्ला	...	४०
सिंबोट	...	७॥	सौरा	...	६
नौकुरी	...	३	पवालु	...	३
उत्तरकाशी	...	६	छूणा	...	३
गंगोरी	...	३	बेलक	...	४
नेताला	...	३	पंगराणा	...	५
मनेरी	...	४	भाला	...	४
कुमाल्टी	...	४	अगूड़ा	...	३
मल्ला	...	२	बूढ़ाकेदार	...	२
भटवाड़ी	...	२	भैरों	...	६॥

भूकी	...	६	भोंट	...	२
गंग नाणी	...	३	घुत्तू	...	६
लोहारीनाग	...	४	दुफन्द	...	६
सूकी	...	५	मग्गू	...	३
झाला	...	३	त्रियुगी नारायण	...	५
हरसिल	...	२	गौरीकुण्ड	...	५
धराली	...	२॥	सर्गानिशानी	...	२
जांगला	...	४	रामबाड़ा	...	२
भैरोंघाटी	...	२॥	केदारनाथ	...	३
गंगोत्तरी	...	६॥	केदारनाथसे--		
गोमुखी	...	१८	नारायणकोटि	...	२२

देवप्रयागसे-टिहरी ३४ मील,

देवप्रयाग	...	०
खरसाड़ा	...	१०
कोटेश्वरे	...	४
बरडया	...	६
क्यारी	...	८
टिहरी	...	६

मंसूरीसे-टिहरी ४० मील

मंसूरी	...	०
सुवाखोली	...	६
धनोल्टी	...	८
कांणाताल	...	९
कौड़िया	...	५
टिहरी	...	१२

ऋषिकेशसे नरेन्द्रनगर-होकर-टिहरी-५४ मील-

ऋषिकेश	...	०
नरेन्द्रनगर	...	६
फकोट	...	११

कोटद्वारसे-श्रीनगर ५० मील

दुगड्डा	...	१०
डाडामण्डी	...	६
द्वारीखाल	...	३
बांघाट	...	७

नागणी	...	१०	घोलेथ	...	२
चमा	...	५	अधवानी	...	१०
टिहरी	...	१२	पौड़ी	...	१०
मंसूरी से-धरासू ३८ मील,			श्रीनगर	...	८
मंसूरी	...	०	कर्णप्रयाग से-चमोली २०मील		
सुवाखोली	...	६	उमट्टा	...	२
थत्यूड़ा	...	६	लंगासू	...	४
मोलधार	...	५	सोनला	...	४
आंधियारी	...	७	नन्दप्रयाग	...	३
चापड़ा	...	१	मैंठाणा	...	३
न्याड़	...	६	कुहेड़	...	२
धरासू	...	७	चमोली	...	२

चमोली, अपरगढ़वाल का न्याय-कार्यालय है। यहां खण्डमण्डलाधीश आदि प्रमुख न्याय कर्तालोग एवं क़ानूनी पण्डितों का निवास भी है।

मुद्रक--सूर्य मशीन प्रेस मथुरा।

॥ आरती जय जगदीश हरे ॥

ओ३म् जय जगदीश हरे स्वामी जय जगदीश हरे।
भक्त जनों के संकट छन मैं दूर करे ॥ ओ३म्
जो ध्यावे फल पावे दुःख बिनसे मन का।
सुख सम्पति घर आवे कष्ट मिटे तन का ॥ ओ३म्
मात पिता तुम मेरे शरण गहूं किसकी।
तुम बिन और न दूजा आस करूं किसकी ॥ ओ३म्
तुम पूरण परमात्मा तुम अन्तर्यामी।
पार ब्रह्म परमेश्वर तुम सब के स्वामी ॥ ओ३म्
तुम करुणा के सागर तुम पालन कर्ता।
मैं मूरख खल कामी कृपा करो भर्ता ॥ ओ३म्
तुम हो एक अगोचर सब के प्राण पति।
किस विधि मिलूं गोसाईं तुमको मैं कुमती ॥ ओ३म्
दीन बन्धु दुःख हरता तुम ठाकुर मेरे।
अपने हाथ उठाओ द्वार पड़ा तेरे ॥ ओ३म्
विषय विकार मिटाओ पाप हरो देवा।
श्रद्धा भक्ति बढ़ाओ सन्तन की सेवा ॥ ओ३म्

* ओ३म् जय जगदीश हरे *

श्री गङ्गाजी की आरती

जय भगवति गंगे। मा जय जय भगवति गंगे ॥ सरल तरंगे दुर्मति भंगे सुमरत दे संगे ॥ जय० ॥ टेक ॥ विष्णु पदादनु शारणी खंडिनी ब्रह्मण्डे। शंकर जटा के विहरति अतिरंगे। जान्हवि नाम तुम्हारो शोभित जय अनघे। भागिरथी मति लगाने सागर जग उद्धारणे ॥ जय० ॥ १ ॥ अघनाशन भवशासन दासन शिवतनुजं। त्रासन मोह विकारन काशन ब्रह्मपददे। सुरसरि धारा सधारा कलिमल टारन जै शरणागत प्रतिपालक बालक शिवसुखदे ॥ जय०॥ २ ॥ शिवसरणी जगतरणी हरणी भवसिन्धो। हरिपद दाता धाता वंदित जगमाता ॥ काम क्रोध विदारणि दारुण दुर सुभगे। पाथोधि परतिय सुर-धुनि गुण जगे ॥ जय० ॥ ३ ॥ तव धारा जयपारा दर्शित भक्तजने। सेवत काशिनिवासी अखिल जम्यतरने। शेप नरेश कवेशा गुण गावें तेरा। पूरी आस निराशा सुरसरि सुखदंगे ॥ जय० ॥ ४ ॥ सुरवधु सारी नृपति सुनारस्निपा मृदमद दे। ते सुरलोकं गच्छति सुर धर निर्मलदे ॥ तेरी महिमा कालगि वरनूं गंगे भवगंगे त्रिपथगामिनी सुर नर पन्नगधे ॥ जय० ॥ ५ ॥ गंगा आरति सकल उधारति हरजनने। सुनत सुनावत फल पावत मनके ॥ गावत आरति रामकृष्ण जन के। सकल कामना पूरन करत श्रीगंगे ॥ जय०॥ ६ ॥

विशाल कार्यालय की पुस्तकें।

पूजा भास्कर २॥), सत्यनारायण कथा बड़ी ॥।), अनुवाद दीपिका १॥), कर्मकाण्ड भास्कर ५), स्वतंत्र भारत काव्य १), सदाचार चन्द्रिका १॥), संस्कार पद्धति ३॥), वृत्तमाला छन्द रचना ।॥), काँग्रेसी गीत≡), पितृकर्म पद्धति ४), सूक्ति कुसुम वाटिका ।=) कलियुगी अबला =), दुर्गा कल्प द्रुम ३), ताजिक भास्कर १।), भारत सार गुटका ४), ज्योतिष भास्कर २॥), देवी पूजा पद्धति ॥), सुख सागर बड़ा १५), पंचाँग भास्कर २), जगदम्बा शतक ।), सुखसागर छोटा ८), शान्ति पद्धति दान० २), कौला सार ।=), प्रेम सागर ५), तीर्थ पद्धति २), तीर्थ श्राद्ध ≡), रामायण गुटका २)।

शुद्ध बढ़िया ऊनी माल

गरम शाल बढ़िया सफेद २=) ३०) पूरी सूट को ३०) व ३५) रु० स्वीटर बाँह वाला १२) १४), बिना बाँह ६) ८) रु० धागा स्वीटर का रंगीन =) पौंड, गलीचा शुद्ध ऊन का ३५) से १०० तक, आसन १।, १॥ गज १० से १५ तक संध्या का या कुरसी का बढ़िया आसन ६) रु० बुरुश ऊन साफ करने का बढ़िया ८) जोड़ा। शुद्ध सफेद चँवर बढ़िया १०) सेर। अव्वल नं० कस्तूरी ३५) तोला, बन्द नाभा कस्तूरी २४) तोला, हिमालियन चाय ४) पौंड। हम हर प्रकार की पुस्तकें और भारतवर्ष की औषधियाँ, कार्ड, लिफाफे, दवात, कलम, समाचार-पत्र आदि हर समय प्रस्तुत रखते हैं और आपका माल इन्तजाम से डाक द्वारा भी भेजने का इन्तजाम है। एक बार हमारी परीक्षा करियेगा। पत्र व्यवहार केवल हिन्दी में करें। माल मंगाने को पेशगी और उत्तर के लिये जवाबी कार्ड भेजना न भूलें।

पता—विशाल कार्यालय, नारायण कोटि गढ़वाल।

यात्रा की निशानी

यात्रा बारम्बार नहीं होती अतः इस यात्रा में आपको खास निशानी चित्रपट, नक़शा, फोटो, लाकेट और तरह २ की यात्रा की पुस्तकें शुद्ध सूर्य तापी, सत-शिलाजीत, यात्रीसखा चूर्ण, हैजे की अनुभूत दवा, भारतवर्ष के बड़े २ औषधालयों की अद्भुत दवाइयाँ, हर प्रकार की पुस्तकें, शुद्ध जनेऊ, नेताओं तथा देवताओं की छाप के रुपये और हिमालय की ताजी दिव्य बूटियाँ सस्ते दामों पर हमसे लीजिये। इस पर्वत प्रान्त में सिर्फ यहीं एक कार्यालय आपको मिलेगा जहाँ कि आप सभी अप्राप्त वस्तु सस्ते दामों पर पा सकेंगे।

बद्री केदार यात्रा १।) पट नकशा ।) चारों धाम महात्म्य १) फोटो ?) से -) आना तक। चारों धाम केवल भाषा ।।) लाकेट २।) रु० दर्जन। भक्ति सागर ।।)। अंगूठी =) से ।-) ॥) तक। कीर्तन-चन्द्रिका ।।)। हैजा की दवा ॥। शीशी।

सत शिलाजीत फौलादी—

यह स्वर्ग भूमि हिमालय की देन है जहाँ श्रीलक्ष्मणजी को मेघनाद की शक्ति से जिलानेवाली बूटियाँ और सोना, चाँदी लोह आदि धातुओं की खानें हैं, शिलाजीत का सत है जो सूर्य ताप द्वारा तैयार किया जाता है इसमें लोह भस्म दिया जाता है जिससे प्रमेह, स्वप्नदोष, मधुमेह, प्रदर, मूत्र के रोग, वीर्य का पतलापन, खून की कमी, कमजोरी, तिल्ली के विकार, पाण्डु, कामला अवश्य दूर होते हैं बल्कि कटे, जले, चोट और जहरीले घाव भी तुरन्त अच्छे होते हैं। मूल्य १ तोला १), २।। तोला २) ५ तोला ३॥) १० तोला ६) १ सेर ४०) रु.। चौथाई मूल्य पेश्तर आने से डाक से भी भेज देते हैं। पेशगी अवश्य भेजें उत्तर के लिये जवाबी कार्ड भेजें।

पता—विशाल कार्यालय—नारायणकोटि गढ़वाल।

नारायण कोटि गुप्त काशी के पास केदारनाथ की ओर है।

ज्योति मठ
तुंगेश्वर

भारतवर्ष
मथुरा

गङ्गा का महात्म्य और पुण्य

—:o:—
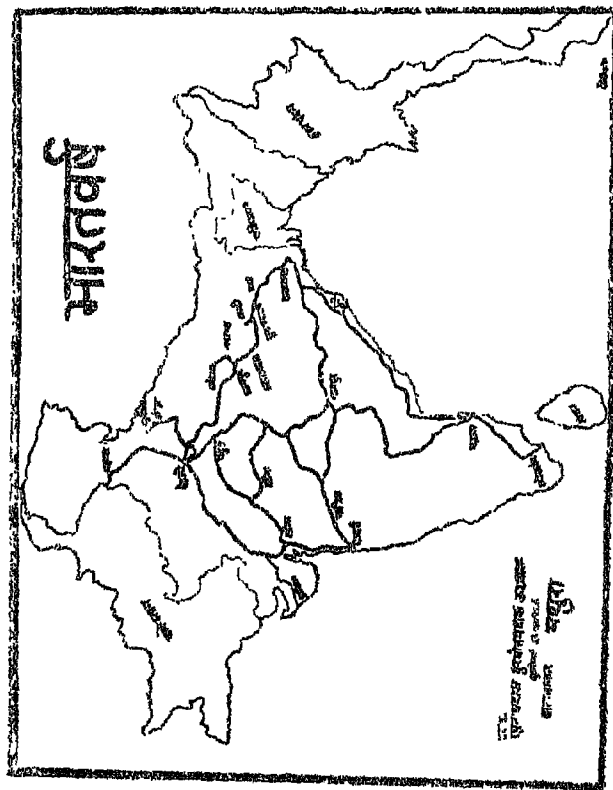
हमारे शस्त्रों में सभी जगह गंगा के प्रभाव का वर्णन मिलता है तथा इस प्रकार की कथायें भी पाई जाती हैं शास्त्रों में यहां तक वर्णन पाया जाता है कि यदि श्रद्धा व विश्वास पूर्वक गंगा में स्नान किया जाये तो अश्वमेध यज्ञ जैसा फल प्राप्त होता है, इस विषय में एक इतिहास है जो कि नीचे लिखा जाता है:—
मकर संक्रान्ति के पर्व पर श्री महादेव जी श्री पार्वती जी के साथ स्नान के निमित्त प्रयाग जा रहे थे, मार्ग में स्नानार्थ जाते हुए अन्य जन समुदाय को देख कर श्री पार्वती जी ने भगवान शंकर से पूछा कि हे प्रभो। यह इतना जन समूह जो संसार के दिग दिगान्तर से आरहा है इसका क्या कारण है? श्रीशंकरजी ने कहा कि यह सब मनुष्य गंगा में स्नान करने के लिये जा रहे है, जिसका महात्म्य बड़ा अद्भुत और अनन्त है श्री पार्वतीजी कहने लगीं कि हे प्रभो! कृपा कर मुझे यह महात्म्य सुनाइये। भगवान् ने कहा कि जो गंगा स्नान को आते हैं उनको प्रति पग सौ अश्वमेध यज्ञ फल मिलता है। और करोड़ों जन्मों के पाप नष्ट हो जाते हैं, तथा वह मनुष्य देवतुल्य हो जाता

है। यह बात सुन पार्वती जी कहने लगी कि यह लाखों शूद्रादि जाति के मनुष्य जो स्नान करने चले आरहे हैं इन की अभी कुरूपता तक नहीं गई तो भला देवता कहां से होंगे, मैं आपकी बात कैसे ठीक मानू ? इस पर श्री महादेव जी ने उत्तर दिया कि मैं इस बात को अभी प्रत्यक्षसिद्ध कर दिखाता हूँ, यह कहकर श्रीशंकरजी कोढ़ी का रूप बना कर यात्रीयों के सम्मुख मार्ग में बैठ गये और पार्वतीजी से कहा कि तुम इसी सुन्दर स्वरूप से मेरे शरीर पर की मक्खियों को उड़ाती रहो, जो कोई पूछे तो यही कहना कि कर्म विपाक में इनके लिये लिखा है कि जिसने सौ अश्वमेध यज्ञ किये हों यदि उससे इनका शरीर स्पर्श हो जाय तो यह अच्छे हो सकते हैं, सो यहां लाखों मनुष्य एकत्रित हैं यदि किसी ने सौ अश्वमेध यज्ञ किए हो तो वह इनको स्पर्श करदे जिससे मेरे पति देव कोढ़ से छूट जाये पार्वतीजी ने ऐसा ही किया।

थोड़े से समय के पश्चात् ऐसी सुन्दर स्त्री को एक कोढ़ी की सेवा करते देख कर वहां बहुत से लोग एकत्रित हो गये, कितने ही जो पार्वती जी पर मोहित हो कर कोढ़ी को छोड़ अपने संग चलने को कहने लगे, कोई उनके साथ हँसी करने लगे, परन्तु ज्ञानी लोगों ने उन की प्रशंसा

करते हुये उन्हें धन्यवाद दिया, उसी समय एक कंगाल ब्राह्मण ने आकर पूछा कि माता जी तुम यहां पर क्या कर रही हो ? किसी एकान्त स्थान में जाकर अपने पति की सेवा करो। यहां बैठने का क्या कारण है। पार्वती जी ने सारा वृत्तान्त कह सुनाया। यह सुन ब्राह्मण बोला कि तुम सौ अश्वमेध कहती हो मैं तो लाखों कर चुका हूँ यह कह कर उसने ज्यों ही स्पर्श किया कि महादेव जी का शरीर कोढ़ से छूट कर अत्यन्त मनोहर हो गया। यह देख कर सब आश्चर्य से चकित रह गये, कारण पूछने पर ब्राह्मण ने बतलाया कि शास्त्रों में वर्णन है कि गंगा स्नान करने के लिये जो मनुष्य निर्मलभाव से पैदल चलता है उसको प्रति पग सौ अश्वमेध यज्ञों का फल मिलता है मैं २० सों बार पैदल गंगा स्नान करने आया हूँ इस कारण मैंने लाखों ही अश्वमेधों का फल पा लिया इस पर मुझे पूर्ण विश्वास है।

इसके बाद शिवजी ने पार्वतीजी से कहा कि देखा, इतने लोगों में कौन गंगा स्नान करने आया था और किसे शास्त्रीय वचनों पर पूर्ण विश्वास था, इसलिये जिसे गंगाजी के प्रति दृढ़ विश्वास होता है, उन्हें अब यही उपरोक्त फल मिल जाता है, इसमें संशय नहीं।

"हरिद्वार का प्राचीन इतिहास"

—::०::—

हरिद्वार अथवा गंगा द्वार हिन्दुओं का एक प्राचीन पवित्र तीर्थ है। यह लुक्सर से १७ मील की दूरी पर और सहारनपुर से ५० मील की दूरी पर है और यह गंगा के तट पर सहारनपुर के उत्तर पूर्व के कोने पर शिवालक पर्वत के दामन में है।

मेघदूत काव्य से सिद्ध होता है कि यह तीर्थ हरिद्वार महाराज भोज के समय में नहीं था। क्योंकि पंडित कालिदास ने जो उक्त राज के समय में प्रसिद्ध काव्य मेघदूत में कई विख्यात स्थानों के साथ कनखल का नाम लिखा है यदि उस समय हरिद्वार होता तो कनखल का नाम यह क्यों लिखता। उन्होंने हरिद्वार का कहीं भी कुछ वर्णन नहीं किया। स्कन्द पुराण और मत्स्य पुराण में हरिद्वार का वर्णन आया है। चीनी यात्री हियूनशांग यहाँ आया उसने इसको म्यूलो वर्णन किया है जिसके विषय में किंघम साहब की राय है कि यह मायापुर है। अबूरीहान तथा रशीदउद्दीन मुसलमान इतिहास लेखकों ने इसे गंगाद्वार वर्णन किया है। लेकिन अबुलफ़ज़ल जो बादशाह अकबर के समय में

प्रसिद्ध इतिहास लेखक हुआ है वह इस स्थान को हरि-द्वार के नाम से पुकारता है।

तीर्थ का अनुसंधान करने से स्पष्ट विदित होता है कि यह तीर्थ राजा मानसिंह सवाई जयपुर के कुछ समय पहिले स्थापित हुआ क्योंकि सबसे प्रथम इस जगह पर राजाजी ने एक छोटा सा घाट शिवालिक पर्वत की कुछ कगर काट कर इस ही शिवालिक पत्थरों से बनवाया था जिसकी आठ सीढ़ियाँ ज्यों की त्यों नये घाट से उत्तर की ओर मायापुरी की हवेली के पास अब भी मौजूद हैं और उक्त घाट से मिली हुई राजाजी की छतरी भी खड़ी है नहीं तो यहाँ इससे पहिले कोई च्चिन्ह तीर्थं का नहीं मिलता और पण्डों की बहियाँ भी इसी समय का परिचय दे रही हैं।

राजा मानसिंह का सिक्का देखने से विदित हुआ कि राजाजी १५६५ ईसवी में राजगद्दी पर बैठे थे जिसको आज ४३० वर्ष हो गये हैं वह मुहम्मद जलालुद्दीन अकबर बादशाह के शासनशीन थे और हफ्तहजारी मनसब रखते थे। जब से राजाजी ने घाट बनवाया तब से यह ब्रह्मकुण्ड विख्यात हुआ और राजा के नियम पालन करके राजा प्रजा और रईस स्नान को आने लगे।

मायापुरी में इसका नाम गंगाद्वार लिखा है यह नाम पहिला प्रतीत होता है क्योंकि जब राजा भगीरथ हिमालय की श्रेणियों को काटता काटता अन्तिम श्रेणी शिवालक को जो केदारनाथ की दक्षिण सीमा है काट कर गंगा को हिमालय पर्वतों से बाहर भूमि में लाया तो गंगाद्वार नाम हुआ और हरिद्वार नाम भी इसी प्रकार बोला जाने लगा क्योंकि केदार देश महादेवजी का देश हैं और महादेवजी का नाम हर हैं तो केदार देश का द्वार होने से हर का भी द्वार हुआ।

इस तीर्थ के प्रचलित होने का मुख्य कारण यह है कि पहिले समय मे तपस्वी महात्मा लोग इन स्थानों को तप करने योग्य गंगाजी का तट और बन वेदाभ्यास और योग सिद्धि के उपयोगी देखकर वास किया करते थे। इसी कारण ऋषीकेश और तपोवन इत्यादि स्थान आज तक विख्यात चले आते हैं। मायापुरी महात्म्य में भी जिन स्थानों को तप तीर्थ लिखा है जहाँ उनका स्थान भी लिखा है कि अमुक ऋषि ने अमुक स्थान में तप किया, इसलिये यह पुण्य भूमि है। और गंगा—गंगा नदी हरिद्वार में पर्वत से बाहर मैदान में निकली है इसलिये हरिद्वार पहले गंगाद्वार के नाम से प्रसिद्ध

था। गंगा भारतवर्ष की सब नदियों में प्रधान और सबसे अधिक पवित्र है। गंगा हिमालय में गंगोत्री पहाड़ से निकल कर दक्षिण की ओर पर्वत के लगभग १५०० मील बहने के उपरान्त अनेक प्रवाहों से बंगाल की खाड़ी में गिरती है।

हरिद्वार के तीर्थ

अयोध्या मथुरा माया काशी कांची अवन्तिका।
पुरिद्वारावतिज्ञेया सप्तैता मोक्ष दायकाः॥

हरिद्वार भारत के सात मुख्य पवित्र नगरों में से है गंगा की पवित्र शोभा के देखने का सौभाग्य सबसे प्रथम यही प्राप्त होता है। हरिद्वार का स्टेशन ई० आई० आर० की एक शाखा पर है, हरिद्वार में करीब ५० धर्मशालायें हैं, कुछ में यात्रियों के भोजन का भी प्रबन्ध है।

हरिद्वार तो अब एक बड़ा नगर बन गया है, यह भी गंगा जी के नहर के किनारे है, डाकघर-बिजली-तार टेलीफ़ून आदि सभी यहाँ पर उपस्थित हैं, म्युनिसिपैलिटी के उद्योग से इस समय पक्की सड़कें बन गई हैं। अस्पताल भी खुल गया है, खाने-पीने के लिये बाजार भी है।

हरिद्वार में यात्रियों का मुख्य कर्म स्नान है, यहाँ देव दर्शन का भी बड़ा पुण्य है, इस स्थान में पिण्डदान तर्पण, और पुष्प (हड्डी) प्रवाह भी किया जाता है, हरि की पौड़ी में अस्थियाँ प्रवाहित की जाती हैं, स्नान का भी मुख्य स्थान है, मायापुरी, कुशावर्त-बिल्वक-नील पर्वत और कनखल इन पाँच तीर्थों में स्नान पूजन करने से कल्याण होता है (गरुड़ पुराण पूर्वार्द्ध ८१वाँ अध्याय)।

स्टेशन से पौन मील की दूरी पर प्रसिद्ध घाट "हरि की पौड़ी" यह स्थान हरिद्वार का केन्द्र है, पत्थर का घाट बना है, दाहिनी ओर दो-तीन मन्दिर हैं। बाईं ओर एक बड़ा पत्थर का मकान है, जिसके साथ ही एक मन्दिर है, इस घाट पर उत्तर की ओर दीवार के नीचे हरि का चरण चिन्ह है, हरि की पौढ़ियों से कुछ दूर पूर्व की ओर गंगा के बीच घाट में पानी से थोड़ा ऊपर एक चबूतरा है, सरकार ने इस प्लेटफार्म तथा सीढ़ियों के मध्य में एक छोटा सा पुल बाँध दिया है प्लेटफार्म और पैढ़ियों के बीच में जहाँ गंगा की धार है उसी स्थान को ब्रह्मकुण्ड कहते हैं, यहाँ बड़ी बड़ी निडर मछलियाँ बहुत हैं ब्रह्मकुण्ड के पास गंगाजी की

धार के बीच में ही मनसा देवी का मन्दिर है मन्दिर की प्रदक्षिणा यात्री लोग जल ही में करते हैं, ब्रह्मकुण्ड का हरिद्वार में बहुत महात्म्य है, इस स्थान पर ब्रह्माजी ने यज्ञ किया था, यहीं पर श्री गंगाजी का मन्दिर है जहाँ प्रातः व सायंकाल आरती होती है, रात को गंगा की शोभा बड़ी सुन्दर होती है।

मायापुरी

(मायापुरी, कुशावर्त, नील पर्वत, कनखल का वर्णन)

—:ः०ः:—

हरिद्वार हरद्वार गङ्गाद्वार इन सब नामों के सम्बन्ध में आप पीछे पढ़ चुके हैं मायापुरी इसका प्राचीन नाम है, बाकी सब नाम पीछे के हैं, उसके सम्बन्ध में पौराणिक कथा इस प्रकार है—

हरिः विष्णु, द्वारः दरवाजा, अर्थात् भगवान विष्णु का दरवाजा, जिस बद्री धाम में भगवान विष्णु 'हरि' स्वयं तपस्वी अवतार धारण कर तपस्या करते थे उसका

मार्ग इसी स्थान से होकर जाता है, इसी कारण इस पुरी का नाम हरिद्वार पड़ा।

इस स्थान में श्री गंगाजी पर्वतों से होकर प्रथम समतल (मैदान) में प्रविष्ट हुई हैं, इसी से इसको गंगा द्वार भी कहते हैं। इसका प्राचीन नाम मायापुरी है, इस नाम की कथा पुराणों में इस प्रकार है—पूर्वकाल सत्युग में दक्ष प्रजापति ने यहाँ पर एक बड़ा यज्ञ किया था, उस यज्ञ में दक्ष नें अपने सब इष्टमित्र अपनी कन्यायें और उनके पति आमन्त्रित किये थे, पर केवल अपनी कन्या सती और उनके पति महादेव जी को को निमंत्रण नहीं भेजा, अपनी अन्य बहिनों को पिता के घर जाते देख सती के मन में अपने माता पिता तथा सभी बहिनों से मिलने की इच्छा प्रकट हुई, उन्होंने अपने पति श्री महादेव जी से अपने माता पिता के पास जाने की आज्ञा माँगी, महादेव जी ने सती को समझाया कि बिना बुलाये किसी के घर जाना ठीक नहीं है, पर सती जी ने नहीं माना और उल्टा ताना महादेव जी को दिया कि तुम तो फकीर हो, इससे माता-पिता-बहिन के प्रेम को क्या जानो। इस पर महादेव जी कुछ रुष्ट हो गये, उन्होंने तुरन्त योगबल से जान लिया कि होनहार

होकर ही रहेगी इसलिये सतीजी को पिता के घर जाने की आज्ञा दे दी, और वह जल्दी से अपने माता-पिता के पास पहुँच गई, दक्ष ने सती का कुछ भी आदर सत्कार नहीं किया, तब सतीजी अपने किये पर पचताने लगीं, फिर आगे जब सती जी ने देखा कि यज्ञ में सब देवताओं को तो यज्ञ भाग दिये जा रहे हैं, पर उनके पति महादेव जी को कोई यज्ञ भाग नहीं दिया जा रहा है, तब उन्होंने इसका कारण अपने पिता दक्ष से पूछा दक्ष ने उत्तर दिया कि हे सती ! तेरे पति मुण्ड माला पहनते हैं, नंगे रहते हैं, उनका स्वरूप अमंगलकारी है, इसलिये उनको यज्ञ में बुलाना या यज्ञ भाग देना उचित नहीं, हमने भूल से तेरा विवाह उनसे कर दिया अब हम पछताते हैं, अपने पिता के यह वचन सुन सती के क्रोध की सीमा न रही, अपने पती का निरादर सहन न कर सकी, वह अपने पति महादेव जी का मन में स्मरण करती हुई यज्ञ कुण्ड में कूद पड़ी और भस्म हो गई, जब महादेव जी को सती के भस्म होने का समाचार मिला तो उन्होंने अपने गणों को, प्रधान गण वीरभद्र की अध्यक्षता में दक्ष के यज्ञ को नष्ट करने के लिये भेज दिया, महादेव जी के गणों ने यज्ञ भूमि में

पहुँच कर यज्ञ को नष्ट भ्रष्ठ कर दिया और दक्ष का सिर काट कर यज्ञ कुण्ड में डाल भस्म कर दिया। तब ब्रह्मादि देवताओं ने गण की वेदना से व्याकुल होकर महादेव जी की स्तुति की, फिर महादेव जी ने प्रसन्न हो दक्ष को जीवित कर दिया लेकिन उसका सिर भस्म हो चुका था इस कारण बकरे का सिर काट कर दक्ष के धड़ से लगाया गया फिर दक्ष ने भी महादेव जी की स्तुति की, महादेव जी के प्रसन्न होने पर दक्ष ने वर मांगा कि मेरी आप में भक्ति सदा बनी रहे, यह तीर्थ पापों का नाश करने वाला हो, महादेव जी ने तथास्तु कह समझाया कि यह सब विष्णु भगवान की माया से हुआ है, इसलिये इस क्षेत्र का नाम मायापुरी होगा, और हम यहाँ पर दक्षेश्वर नाम से निवास करेंगे।

माया क्षेत्र का मायापुर एक प्रधान क्षेत्र था प्राचीन समय में यह नगरी अति सुन्दर और वैभव सम्पन्न थी। काल की गति से इसका सम्पूर्ण वैभव नष्ट हो गया, मायातुर ७वीं सदी तक रहा, इस समय मायापुर की बस्ती नहीं है, किन्तु हरिद्वार व कनखल के बीच उसके खंडहर अब भी मिलते हैं, इस नगरी का विस्तार शास्त्रों में ६६ मील लम्बा और २० मील चौड़ा बतलाया गया है।

इस समय मायापुर हरिद्वार से १ मील दक्षिण पश्चिम गंगा के दाहिने तट पर है, यह सप्त पुरियों में से माया नाम की एक पुरी थी; अब दीन दशा में है। यहां के प्राचीन टीले ही अब स्मृति मात्र हैं, इस माया-पुर में राजा वेन की गढ़ी बनी हुई है, इन टूटे फूटे ध्वंसावशेष स्थानों को देखने के लिये भी यात्री बड़े चाव से जाते हैं।

इस मायापुरी में पुराने ३ मन्दिर हैं, पहला पूर्वोत्तर ज्वालापुर जाने वाली सड़क के पास है, यह मन्दिर माया देवी का है जो १०वीं व ११वीं शताब्दी का बना हुआ है, माया देवी के तीन सिर और चार भुजायें हैं, इसके निकट ही आठ भुजा वाले शिव की मूर्ति है, और बाहर नन्दी बैल है।

कुशावर्त

हरि की पौड़ी से दाहिनी ओर थोड़ी दूर पर कुशावर्त नाम का प्रसिद्ध घाट है। महाराज इन्दौर ने यहाँ एक छायादार चबूतरा बनवा दिया है, यहाँ यात्री सुख से स्नान पूजा पाठ पिण्डदान कर सके हैं। मेष की संक्रान्ति के समय यहां पिण्ड दान की बड़ी भीड़ रहती है, स्कन्द पुराण में इस तीर्थ का बहुत महात्म्य

लिखा है यहां महामुनि दत्तात्रेय जी ने तप किया था। इस स्थान पर यात्री मुण्डन संस्कार करते हैं। कुशावर्त के दक्षिण की तरफ विष्णु तीर्थ है।

नील पर्वत और नीलेश्वर शिव

मायापुर से दक्षिण गंगा पर लकड़ी का पुल है, जिसको लांघ कर नील पर्वत पर जाना होता है, मेले के दिनों में हरि की पौड़ी के निकट नावों का पुल बनता है, यात्रीगण गंगा पार नील पर्वत पर जाते हैं, लकड़ी के पुल पर नील पर्वत पर नील पर्वत के पास तक डेढ़ मील गंगा के विस्तार में पत्थर के टुकड़ों पर चलना होता है, विविध प्रकार के विविध रंग के छोटे छोटे गोलाकार पत्थर देख पड़ते हैं, कनखल के सामने दक्षिण गंगा के बायें नील पर्वत नामक एक पहाड़ है, जिसके नीचे से बहती हुई गंगा की एक धारा को नील धारा कहते हैं, जो कभी कभी सूख भी जाती है। पहाड़ी के नीचे गौरी कुण्ड के पास एक नये मन्दिर में गौरी-शंकर शिव-लिंग और ऊपर एक छोटे मन्दिर में नीलेश्वर शिव-लिंग है। गौरी कुण्ड का जल कभी कभी सूख भी जाता है।

दक्षेश्वर के निकट नील शैल के ऊपर नीलेश्वर शिव-लिंग है जिसके दर्शन से पाप क्षय होते हैं उस जगह भी चण्डिका का स्थान है उसके निकट उराम कुण्ड है जिसमें स्नान करने से बड़ा आनन्द होता है।

उज्जैन का असमर्चित नामक ब्राह्मण बड़ा पापी था वह एक समय चोरों के साथ चोरी के लिये माया क्षेत्र में गया वहां उसे शिवभक्त ब्राह्मणों के सत्संग से ज्ञान उपजा। वह उनके उपदेश से गंगाजी के समीप महागिरि स्थान पर जाकर रात दिन महादेव का नाम रटने लगा सात दिनों के उपरान्त सदाशिव ने उसको दर्शन दिया और प्रसन्न होकर कहा कि हे ब्राह्मण! तुम आज से हमारे गण हो, जाओ तुम्हारा नाम नील होगा हम नीलेश्वर होकर इस स्थान पर बिराजमान होंगे, इस पर्वत का नाम भी नील ही होगा, हम अंश रूप होकर सर्वदा इस स्थान पर तुम्हारे साथ रहेंगे, गंगाजी के तट पर जो हमारा कुण्ड है उसमें स्नान करने से मनुष्य हमारा रूप हो जायगा इस प्रकार नील पर्वत तथा नीले-श्वर की कथा है।

नीलेश्वर से दो मील दूर चंडी पहाड़ की चोटी पर

चंडी का मन्दिर है, मार्ग चढ़ाई का है, रास्ते मे पानी नहीं मिलता मन्दिर दूर से दिखाई देता है।

कनखल

कनखल बड़ा प्राचीन तीर्थ है, और हरिद्वार से दो मील की दूरी पर स्थित है। कनखल शब्द का भावार्थ यह है कि कौन ऐसा खल है जो कि यहाँ आकर श्रद्धा एवं विश्वास पूर्वक गंगा स्नान कर भगवान दक्षेश्वर महादेव का पूजन करे और उसके पाप क्षय न हों, यहां पर श्री महादेव जी दक्षेश्वर के रूप में निवास करते हैं, जिसकी कथा इस प्रकार है—

पूर्व समय में दक्ष प्रजापति ने गंगाद्वारे में राज किया आदित्य-वसु-साध्य-रुद्र आदि देवता इन्द्र के सहित वहां पर आये थे। ऋषिगण भी पितरों तथा ब्रह्मा के साथ वहां इकट्ठे हुए थे। निमन्त्रित देववृन्द निज देवियों के सहित वहां उपस्थित थे उस समय दधीच क्रुद्ध होकर बोले कि जिस यज्ञ में भगवान शंकर पूजित न हों वह यज्ञ सर्वनाश का सूचक है, दधीच ने यह देखकर कि यहां श्री शंकर जी ने क्रोध से सर्वनाश अवश्यंभावी है, अतः यज्ञ से दूर रहना ही श्रेयस्कर

समझा ऐसा निश्चय कर वहां से पृथक हो दधीचि कहने लगे देखो यज्ञभोक्ता पशुपति हैं, वही इस यज्ञ में निमन्त्रित नहीं किये गये मुझे यह बोध होता है कि देवताओं ने एकता करके यह सब किया है, जो हो दक्ष का यह यत्न किसी प्रकार सिद्ध न होगा।

दक्ष ने अपना यज्ञपति विष्णु को बनाया और विधि से आहुति देनी प्रारम्भ की इससे श्री शिवजी ने क्रोधित हो तमतमाते हुए अपने मुख में ज्वालमाला शरीर वाले शस्त्रधारी एक भूत (गण) को उत्पन्न किया और उसको दक्ष के यज्ञ विध्वंस करने की आज्ञा दी, महाकाली भी अनुमति लेकर उसकी अनुगामिनी हुईं भगवान वीरभद्र ने भी उनके साथ अपने अनेकों गण यज्ञ विध्वंस करने के लिये भेज दिये। वह सब रौद्रगण दक्ष के यज्ञ मण्डल में पहुँचे उनके भयानक नाद से सब देवता भयभीत हो गये और पृथ्वी कांपने लगी रुद्रगणों ने वहां पर सब कुछ तहस नहस कर डाला, और उस प्रधान भूत ने दक्ष का शिर काट डालना चाहा इस पर ब्रह्मादि देवताओं ने उनकी स्तुति की और पूछा कि आप कौन हैं। फिर प्रसन्न होकर वह गण बोला कि मैं महादेव जी के क्रोध से उत्पन्न हुआ उनका एक गण

हूँ और वीरभद्र मेरा नाम है, यह देवी के क्रोध से उत्पन्न हुई भद्रकाली हैं, अब तुम अपना कल्याण चाहते हो तो अभी महादेव जी की शरण में जाओ।

तब दक्ष ने शिव की बड़ी स्तुति की जिससे महादेव जी अत्यन्त प्रसन्न हुए और बोले कि हे दक्ष ! इस यज्ञ में विघ्न होने से तुम निराश हो, मैंने पूर्व काल में भी तुम्हारा यज्ञ विध्वंस किया था उसी परम्परा के अनुसार यह सब किया गया है, अब तुम अपना मानसिक शोक दूर करो, ऐसा कह कर शंकर जी अपने गणों सहित अन्तर्ध्यान हो गये।

इस कनखल क्षेत्र में जहां श्री शिव जी ने दक्ष यज्ञ विध्वंस कराया उसी स्थान पर श्री महादेव जी लिंग रूप से स्थित हुए और दक्षेश्वर नाम से प्रसिद्ध हुए, जिनके दर्शन से मनुष्य शिव समान हो जाता है। इसी कनखल क्षेत्र में अनेकों महात्माओं ने पूर्वकाल में तपस्या की थी।

कनखल के सम्बन्ध में कूर्म पुराण उ.परिभाग छत्तीसवें अध्याय पर कनखल के स्नान का बड़ा पुण्य बताया है।

महाभारत के शल्य पर्व में यह भी लिखा है कि दक्ष के यज्ञ के समय सरस्वती आई थीं और शीघ्रा से बह गईं, कनखल में गंगा सरस्वती कुरुक्षेत्र आदि के समान स्नान का फल मिलता है महाभारत के अनुशासन पर्व २५वाँ अध्याय में लिखा है कि गंगा द्वारकुशावर्त, बिल्वक, नील पर्वत और कनखल इन पाँच तीर्थों में स्नान करने से मनुष्य पाप रहित होकर सुरलोक को प्राप्त होता है। कूर्म पुराण में लिखा है कि हिमवान पर्वत और गंगा नदी सर्वत्र पवित्र हैं, सतयुग में नैमिषारण्य त्रेता में पुष्कर, द्वापर में कुरुक्षेत्र और कलियुग में कनखल तीर्थ प्रधान है। वामन पुराण में लिखा है कि कनखल में श्री प्रहलाद ने भद्रकाली और वीरभद्र का पूजन किया था। हिमालय की दूसरी कन्या उमा से भगवान रुद्र का विवाह हुआ तब से श्री भगवान महादेव उमा सहित इसी कनखल में निवास करने लगे।

कनखल में बहुत से ऐतिहासिक मन्दिर हैं जैसे कि (१) गंगा के तीर पर सती घाट के निकट सोटेश्वर महादेव का मन्दिर है इसके अलावा एक बड़ा शिव मन्दिर और एक छोटा शिव मन्दिर है, (२) एक राधा कृष्ण का मन्दिर है जो किसी रानी का बनवाया हुआ

है, इसमें राम-जानकी की, राधाकृष्ण तथा गंगाजी की मूर्तियाँ हैं, (३) वेद व्यास का मन्दिर है, शहर से दक्षिण की ओर दक्षेश्वर महादेव का मन्दिर है, मन्दिर छोटा बिना शिखर का है, इसके पश्चिम की ओर एक खिड़की है मेलों के समय यात्री लोग खिड़की से ही प्रवेश करते हैं। मन्दिर से उत्तर की ओर वीरभद्र और भद्रकाली की मूर्तियाँ हैं और पीछे सती कुण्ड है जिसकी भस्म यात्री लोग अपने साथ ले जाते हैं, कुण्ड के ऊपर चार पायों का छोटा गुम्बद है। मन्दिर और कुण्ड के मध्य में नन्दी का पाँच पुरानी मूर्तियाँ हैं। मन्दिर के आस पास तीन चार छोटे मन्दिरों में शिव लिंग और दालान में पाँच हाथ से अधिक बड़े महावीर (हनुमान) हैं।

भीमगोड़ा

भीम गोड़ा हर की पैड़ी से उत्तर में लगभग ३-४ मील है, इसके सम्बन्ध में कोई पौराणिक कथा हमारे देखने में नहीं आई, किन्तु यह किंवदन्ति प्रसिद्ध है कि महाभारत युद्ध के पश्चात् जब पाण्डव हिमालय में आये तो पहाड़ पर किसी स्थान पर ठहर गये, वहाँ पर रात के समय जब सोने लगे तो महाराज युधिष्ठिर ने भीमसेन

ने कहा कि भैया तृषा है। यह आज्ञा सुन भीमसेन उठे और कहने लगे कि अभी नीचे जाकर गङ्गाजल ला देता हूँ। परन्तु महाराज युधिष्ठिर ने कहा कि भैया इस घोर अन्धेरी रात्रि में जब कि कोई मार्ग नहीं दीख रहा इतने नीचे कहाँ जाओगे। इसके लिए मैं आज्ञा नहीं देता, तब भीमसेन ने अपना गोड़ा जोर से दबाया कि उसी समय पहाड़ टूट कर वहीं पर गंगा का उद्गम हो गया, तब से यह स्थान भीम गोड़ा के नाम से प्रसिद्ध हुआ पिछले दिनों में पहाड़ से पानी गिरकर इस गढ़े में जमा हो जाता था अब सरकार ने पक्का कुण्ड बना कर गंगा पानी छुड़वा दिया है। जिससे कि और तीर्थों पर स्नान करके यहाँ भी यात्री स्नान करते हैं।

सप्त सरोवर

भीम गोड़ा से उत्तर की ओर भूपत वाला नामक एक स्थान है, उसे डेढ़ या दो मील आगे गांगा के किनारे सप्तसरोवर नामक स्थान है, इसी स्थान पर प्राचीन काल में बड़े बड़े ऋषि महात्मा तप किया करते थे, अब भी यह बड़ा सुन्दर एवं रमणीक स्थान है।

सप्त सरोवर के पीछे गंगा की जाह्नवी तथा आगे

की गंगा भगीरथी कहलाती है, कुछ लोगों का मत कि सप्तसरोवर पर ही श्री जन्हु मुनी ने गंगा पान किया था. कोई कहते हैं कि वह कोई अन्य स्थान था। जो भी हो सप्तसरोवर बहुत महत्व का स्थान है।

पद्म पुराण के पाताल खण्ड ८२वें अध्याय में लिखा है कि वैशाख शुक्ला सप्तमी को जन्हु मुनि ने गंगा का पान किया था जिससे समस्त गंगा उनके पेट में समा गईं फिर भगीरथ के प्रार्थना करने पर मुनी ने अपने दक्षिण कर्ण से गंगा को बाहर निकाल दिया था। इसी लिए इस सप्तमी का नाम गंगा सप्तमी पड़ा। इस दिन स्नान का बड़ा पर्व है और दूर दूर से यात्री स्नान करने आते हैं तथा मेला लगता है।

हरिद्वार-कनखल-ज्वालापुर की अन्य संस्थायें

—:०::—

हरिद्वार—हरिद्वार में श्रवणनाथ मन्दिर, श्रवणनाथ घाट तथा श्रवणनाथ पुस्तकालय है, साधु महाविद्यालय आदि महन्त श्री शान्तानन्द जी के बनाये हुए दिव्य स्थान हैं।

हरिद्वार ज्वालापुर सड़क पर ऋषिकुल ब्रह्मचर्याश्रम है, इस आश्रम मे सनातन धर्म के सिद्धान्तानुसार वेद वेदाङ्गों की शिक्षा दी जाती है, साथ में ही आयुर्वेदिक कालेज है, जिसमें प्राचीन व अर्वाचीन पद्धति के अनु- शिक्षा का प्रबन्ध है। (सूचना विभाग) इसके अलावा भोलाश्रम, गीताभवन तथा श्री १०८ बाबा कालीकमली वाला क्षेत्र का ब्रांच हैं जहाँ यात्री आकर सब बातें पूछते हैं।

कनखल—कनखल में बाबा काली कमली क्षेत्र हैं, रामकिशन मिशन सेवाश्रम है जहाँ बंगाली साधु सेवा भाव से जनता जनार्दन की सेवा करत हैं, रामकिशन मिशन वाली सड़क पर ही राजस्थान वानप्रस्थ आश्रम

हैं, यहाँ हरनन्यराय सूरजमल रुइया बम्बई वालों की भी एक बड़ी धर्मशाला है।

ज्वालापुर—ज्वालापुर में गुरुकुल कांगड़ी जो पहले कांगड़ी में था तथा ज्वालापुर महाविद्यालय हैं, आर्य वानप्रस्थाश्रम और महिला विद्यालय आदि कई संस्थायें हैं।

हरिद्वार से ऋषिकेश

हरिद्वार व कनखल आदि तीर्थों की यात्रा के अनन्तर यात्री ऋषिकेश को जाते हैं, हरिद्वार से ऋषिकेश तक रेल तथा लोरी सरविस भी मिलती है।

१–परदूनी—भीमगोड़ा से ३ मील के फासले पर है, यहाँ बाबा काली कमली वाले तेगे की धर्मशाला है।

२–रायवाला—यहां रेल का स्टेशन है और जंक्शन है, तथा काली कमली वालों की धर्मशाला है।

३–सत्यनारायण—यहां पर प्रत्येक यात्री पहले रात्रीवास करते थे, अब भी मोटर आदि से उतर कर भगवान सत्यनारायण के दर्शन करते हैं, तथा चरणामृत पान करते हैं, यह मन्दिर तथा धर्मशाला और बड़ी गौशाला बाबा काली कमली वाले की है।

४—बीबी वाला—सत्यनारायण से ढाई मील के फासले पर है, यहां पर बाबा काली कमली वाले की धर्मशाला तथा प्याऊ का प्रबन्ध है।

५—दूध पानी—बीबी वाला से एक मील पर है, यहां पर श्री दूधनाथ महादेव का मन्दिर है, बाबा काली कमली वाले की धर्मशाला तथा गौशाला है।

६—रामनगर (गंगाद्वार)—यहां पर काली कमली वाले ने सरकार से जमीन लेकर एक साधु आश्रम बनाया, इसमें साधु महात्माओं के रहने व भजन के लिए बड़े अच्छे स्थान बन हुए हैं, और इस उत्तम रमणीक स्थान में 'आत्मविज्ञान भवन' की स्थापना की जा रही है जिसके उद्देश्य यह हैं कि वर्तमान संसार में जो अशान्ति उत्पन्न होती जा रही है, उसको दूर करने के पौराणिक ढंग से आध्यात्मवाद का प्रचार किया जाय। साधु-संन्यासी-महात्मा-तपस्वी लोग यहां आध्यात्मवाद की शिक्षा देंगे और जनता में अपने देश की स्वतन्त्रता को दृढ़ बनाने के भाव भरेंगे।

ऋषिकेश

ऋषिकेश एक पवित्र स्थान है, यहां प्राचीन काल

में बड़े बड़े साधु महात्मा तपश्चर्या किया करते थे, इसी लिए इस स्थान का नाम ऋषिकेश पड़ा है, क्योंकि ऋषिक् नाम है इन्द्रियों का जहां शमन किया जाय।

ऋषिकेश के सम्बन्ध में पुराणो में क्या लिखा है! उसका नाम ऋषिकेश कैसे पड़ा? यह हम संक्षिप्त तौर पर साधु के पाठकगणों को बताना उचित समझते हैं। (स्कन्ध पुराण) केदार खण्ड दूसरा भाग १८वां अध्याय विष्णु भगवान् ने १७वें मन्वन्तर में मधु और कैटभ दोनों दैत्यों को मारकर उनके मेद से पृथ्वी को बनाया उसके उपरान्त वे पृथ्वी तल के सैकड़ों क्षेत्रों में भ्रमण करते हुए गंगाद्वार में गये। बड़े तेजस्वी रैभ्य मुनि बहुत काल से तप कर रहे थे। विष्णु भगवान् ने आम्र-वृक्ष में प्राप्त हो कर रैभ्य मुनि को जो कुब्ज अर्थात् कुबड़े हो गये थे। दर्शन दिया। मुनि भगवान् को देख कर बार बार दंडवत् करके स्तुति करने लगे। भगवान बोले हे मुनीश्वर! मैं प्रसन्न हूँ तुम इच्छित वर मांगो। मुनि बोले हे भगवन्! यदि आप प्रसन्न हैं तो आप इस स्थल पर नित्य निवास करें सदा तुम्हारे और मेरे नाम से यह स्थान प्रसिद्ध रहे भगवान ने कहा कि ऐसा ही

होगा कुब्जरूप तुमने आम्रवृक्ष में प्राप्त मुझको देखा इस कारण से इस स्थान का कुब्जाम्रक नाम होगा।

काली कमली का प्रबन्ध

—:o:—

श्री बदरीनारायणजी का यात्रा में काली कमलीक्षेत्र का प्रबन्ध प्रशंसा के योग्य है। श्री १०८ स्वामी विशुद्धानन्द गिरिजी महाराज ने बद्रीनाथ के ऊपर घोर तपस्या कर भगवान के आदेशानुसार एक काले कम्बल की अलफी धारण करके कलकत्ते जाकर धनिक मारवाड़ियों के सामने बड़े फूटे घड़े को धधकती आग से जलता अपने नंगे सिर पर धारण कर यह उपदेश दिया कि श्री बद्रीनाथ में धर्मशाला, सदावर्त खुलने चाहियें ऐसे त्यागी और परोपकारी महात्मा के अमृतरूपी वचनों को शिरोधार्य कर मारवाड़ी समाज ने "ऋषिकेश" में श्री स्वामीजी की कुटिया बनवा उनके कथनानुसार अनेक स्थानों पर धर्मशाला, सदावर्त, पानी प्याऊ

खुलवाई। तेरह साल तक महात्मा जी ने इस परोपकारी काम को अपने सामने कराया और सं० १९५३ में स्वर्गवासी होगये। स्व० श्री १०८ बाबाजी का चेला खास तो कोई नहीं था लेकिन स्वामीजी का हाथ-बंटाने वाले कई साधु महात्माओं में दो मुख्य थे, एक तो बाबा रामनाथ जी दूसरे स्वामी आत्मप्रकाश जी कुछ दिन दोनों महात्मओं ने इस काम को सम्हाला बाद आपसी कलह के कारण स्वामी आत्मप्रकाश जी ने स्वर्गाश्रम, नाम की एक संस्था अलग खोली, जो एकान्त अति सुन्दर स्थान बाबा काली कमली के नाम से ही प्रसिद्ध है। बाबा काली कमली के चेत्र ऋषिकेश के एकमात्र सर्वेसर्वा बाबा रामनाथ जी हुए और उन्होंने इस संस्था की बड़ी भारी उन्नति की और उन्तीस वर्ष काम करने के बाद सं० १९८२ में परलोक सिधारे। बाद बाबा मनीराम जी ने चेत्र का कार्य सम्हाला और एक भारबड़ी कमेटी भी प्रबन्धक हुई और काम भी अच्छा चला किन्तु सं० १९९७ में बाबा मनीराम जी भी परलोक सिधारे और अब कलकत्ता की समिति के आधीन चेत्र का प्रबन्ध है।

क्षेत्र का कार्य

बाबा काली कमली का प्रधान कार्यालय ऋषिकेश में है। इनकी ओर से पहाड़ों में तथा देश-देश में क्षेत्र खुले हुए हैं। साधुओं को बना बनाया भोजन मिलता है इस क्षेत्र की ओर से श्री बद्रीनाथ यात्रा में प्रायः ८-१० मील पर धर्मशाला सदाव्रत है। लगभग ६५ सदावत ६५ औषधालय ७० धर्मशाला ५० पानी की प्याऊ ५ गौशाला ३ पाठशाला तथा आयुर्वेद महाविद्यालय और औषधि निर्माणशाला हैं। बद्रीनाथ जाने वाले साधु महात्मा संत और गरीबों को ऋषिकेश से सदावर्त की चिट्ठी तमाम यात्रा को ले जानी चाहिए। बड़े आदमियों को खातिर की चिठियां मिलती हैं। जिसे देखकर सभी धर्मशालाओं के चौकीदार अच्छी जगह देकर खातिर करते हैं।

पंजाबी सिन्ध क्षेत्र का प्रबन्ध

काली कमली क्षेत्र के ही समान "सिन्ध पंजाब क्षेत्र" नाम वाली एक संस्था है जिसका प्रबन्ध बहुत ही सुन्दर है। इस संस्था का प्रधान कार्यालय भी ऋषिकेश में ही है। इसकी भीमगोड़ा, कनखल आदि में बड़ी

विशाल शाखायें हैं, बद्रीनारायण यात्रा में भी इनकी ओर से अन्न क्षेत्र हैं। ऋषिकेश में पाठशाला, अंगरेजी दवाखाना भी इस उन्नतिशील संस्था के हैं।

इन्दौर राज्य की ओर से सदावर्त

यह सदावर्त बहुत थोड़े स्थान पर है और अभ्यागतों को मिलता है।

ऋषिकेश में छोटे छोटे क्षेत्र हैं। यहां कई धर्मशाला हैं।

यहाँ श्री भरत जी का मन्दिर है तथा एक वैष्णव सम्प्रदाय का पुष्कर मन्दिर है, चन्द्रभाग के मध्य में श्री चन्द्रेश्वर महादेव का मन्दिर है, वीरभद्र तथा सोमेश्वर महादेव के मन्दिर हैं, मुनि की रेति में श्री शत्रुघ्न जी का मन्दिर है।

कोल घाटी में दण्डी स्वामी रहते हैं, अच्छी धारणा और निष्टा वाले विद्वान हैं। झाड़ियों में विरक्त तथा अवधूत लोग रहते हैं, मुनि की रेती में कैलाश आश्रम है, वहां के महन्त बहुत अच्छे विद्वान् और अच्छी निष्ठा के साधु हैं, इस से थोड़ा आगे श्री शिवा-नन्द जी की आनन्दी हैकुट, जहांपर बड़े बड़े अमेरिकन, अंगरेजतथा अन्य जन आध्यात्मवाद की शिक्षा पाते हैं।

ऋषिकेश से टिहरी ४१ मील है, ऋषिकेश से ही उत्तराखण्ड की यात्रा आरम्भ होती है यहां से ही सीधे केदारनाथ जी तथा बद्रीनाथ जी व जमुनोत्तरी गंगोत्री को जाते हैं।

ऋषिकेश से लोरी बरनिस टिहरी तक जाती है, उससे आगे यात्री धराशू होकर यमुनोत्री जाते हैं। और उत्तर काशी होकर गंगोत्री चले जाते हैं, जिसके स्थानों का वर्णन आगे दिया जायगा। टिहरी से उत्तर काशी तक नई सड़क लोरी जाने के लिये बन रही है आशा है कि इसी वर्ष चालू हो सकेगी।

लक्ष्मण झूला और तपोवन

ऋषिकेश से तीन मील के फासले पर गंगा पार की भूमि को तपोवन कहा जाता है। प्राचीन काल में यहाँ तपस्वी महात्माओं का वास होता था, वहाँ तपश्चर्या करते थे इसी से इस स्थान का नाम तपोवन प्रसिद्ध हुआ। अब भी जो तपोवन के चावल होते हैं वह बहुत बढ़िया श्रेणी के होते हैं।

पहले इस स्थान पर रस्सों का पुल होता था उसी

से यात्री लोग गंगा पार करते हुए झूल जाते थे इसी कारण से इसका नाम लक्ष्मण झूला प्रसिद्ध हो गया, यहां पर लक्ष्मण जी गणेशजी हनुमान जी के मन्दिर हैं बड़े सुन्दर स्थान हैं, एक बंगला और पुलिस की चौकी है, बाबा काली कमली की धर्मशाला है। यहां पर ४५० फीट लम्बा दर्शनीय पुल है।

स्वर्गाश्रम

स्वर्गाश्रम लक्ष्मण झूला के पुल से भी यात्री जाते हैं, और मुनि की रेती में नावों का भी प्रबन्ध रहता है उससे सीधे चले जाते हैं, और स्वर्गाश्रम में बड़े सुन्दर स्थान हैं।

गीता भवन

गीता भवन श्रीमान् भक्तराज जी सेठ जयदयाल गोयन्का गीता प्रेस गोरखपुर वालों ने बनाया है, यह बहुत सुन्दर है, ऊपर की मंजिल में एक विशाल हाल बनाया गया है। जिसमें गीता के श्लोक तथा रामायण की चौपाइयां लिखी हुई हैं। यहां सत्सङ्ग का अच्छा प्रबन्ध है तथा यहां वटवृक्ष के नीचे चैत्र से आषाढ़ तक

बराबर सत्सङ्ग तथा उपदेश होता है, इन महीनों में सत्सङ्गियों का बड़ा समारोह रहता है।

लक्ष्मण झूले का इतिहास

कुब्जाम्रक तीर्थ के उत्तर ऋषि पर्वत के निकट गङ्गा के पश्चिम तट पर मुनियों का तपोवन है उस स्थान के नीचे के भाग की एक गुहा में शेष जी स्वयं निवास करते हैं।

श्री रामचन्द्र जी रावण को मार कर सीता जी और लक्ष्मण जी के सहित अयोध्यापुरी में आये और अपने पिता के राज सिंहासन पर विराजे उसके पश्चात् लक्ष्मण जी को राजयक्ष्मा का रोग हुआ। श्री रामचन्द्र के पूछने पर महर्षि वशिष्ट ने कहा कि लक्ष्मण ने रावण के पुत्र इन्द्रजीत को जो ब्राह्मण था और से हार कर तप करने जाना चाहता था। 'मारा' उसी पाप से इनको यह रोग हुआ है, यह कुब्जाम्रक तीर्थ में जाकर तप करें तब रोग से विमुक्ति हो जायँगे और तुम भी रावण वध के पाप से छूटने के लिए तप करो।

(स्कन्द पुराण के खण्ड २२वाँ अध्याय) कुब्जाम्रक से डेढ़ कोस उत्तर गंगा के तट में अब तक शेष जी

विधमान हैं श्री लक्ष्मण जी ने वहां जाकर निराहार रह शिव का तप किया उसके पश्चात् वह सौ वर्ष वायु भोजन करके और सौ वर्ष पत्र, फल खाकर एक चरण से खड़े होकर तप करते रहे तब शंकर भगवान ने प्रकट होकर उनसे बोले कि लक्ष्मण हमारे प्रसाद से तुम्हारा सब पाप छूट गया, इस स्थान में एक बार स्नान करने से मनुष्य तीन करोड़ व ब्रह्म हत्या से विमुक्त हो जायगा तुमने तो मुनिहंता पापी राक्षस को मारा है तुम्हारा रोग अब छूट गया, अब से यह स्थान तुम्हारे नाम से प्रसिद्ध होगा और हम लक्ष्मणेश्वर नाम से यहाँ स्थित रहेंगे मेरे दर्शन से पापियों का भी मोक्ष हो जायगा। शिवजी के अन्तर्द्धान हो जाने पर लक्ष्मण जी अपने पूर्ण अंश से वहां स्थित हुए और उनके बायें भाग में लक्ष्मणेश्वर शिव (प्रतिमा रूप) विराजमान हैं। जिनके दर्शन करने से सम्पूर्ण पाप छूट जाता है गंगा के पश्चिम तीर पर लक्ष्मण कुण्ड है वहाँ स्नान और जप करने से अनन्त फल लाभ होता है। इसी प्रकार की कथा—

शिवपुराण (८वाँ खण्ड १५वाँ अध्याय) में लिखा है कि कुब्जाम्रक तीर्थ के पास गंगा के बीच सोमेश्वर महादेव हैं। गंगा के पश्चिमी तट पर तपोवन है यहां

ही लक्ष्मण जी ने बड़ा तप किया था और शिवजी की कृपा से पवित्र हो गये।

और शिवजी लिंग के रूप से वहाँ विराजमान हुए इसी से लक्ष्मणेश्वर नाम से विख्यात हुए लक्ष्मण जी भी शेष का शरीर धारण कर उसी स्थान पर स्थित हुए हैं। इसी से इस स्थान का महत्व शास्त्रों में बताया है। अब वर्तमान में भी इस स्थान पर बैठने वालों को बड़ी शान्ति प्राप्त होती है।

इससे आगे बद्रीनाथ की यात्रा का मार्ग आरम्भ होता है, और वह इस प्रकार है—

१ गरुड़चट्टी—लक्ष्मण झूला से दो मील की दूरी पर है। यहां पर बाबा काली कमली वाले की धर्म-शाला है।

२ फुलवाड़ी—गरुड़चट्टी से दो मील फुलवाड़ी चट्टी है गंगाजी के तट पर है।

३ गूलरचट्टी—फुलवाड़ी से गूलरचट्टी दो मील है नदी पास है तथा आगे हूल नदी में पुल है।

४ महादेवशैण—गूलरचट्टी से दो मील है यहां पर बाबा काली कमली वाले की धर्मशाला है और महादेव

तथा गरुड़ जी का मन्दिर है यहां बाबा काली कमली वाले की ओर से प्याऊ तथा सदावर्त का प्रबन्ध है।

५ नाई मोहन—महादेव सैन से एक मील नाई मोहन चट्टी है यहां से चार मील की चढ़ाई शुरू होती है।

६ छोटी बीजनी—नाई मोहन से एक मील की दूरी पर है।

७ बड़ी बीजनी—छोटी बीजनी से आधा मील है यहां पर प्याऊ का प्रबन्ध है।

८ न्योड़ खाल—बड़ी बीजनी से न्योड़खाल डेढ़ मील की दूरी पर है।

९ कुण्ड चट्टी—न्योड़ खाल से कुण्डचट्टी डेढ़ मील है यहाँ पर बाबा काली कमली वाले की प्याऊ है तथा यहां पर एक बहुत मनोरंजक झरना है और तीन मील सीधी सड़क है।

१० बन्दरमेल—कुण्ड चट्टी से बन्दरमेल तीन मील पर है यहां पर बाबा काली कमली वालों की ओर से प्याऊ का प्रबन्ध होता है, यहां से आगे रास्ता उतराई का है।

११ महादेव—चन्द्रमेल से तीन मील महादेव चट्टी है गंगा जी के पास है मार्ग सीधा है।

१२ ओखलाघाट—महादेव चट्टी से ढाई मील की दूरी पर हैं और बाबा काली कमली वालों की ओर से प्याऊ का प्रबन्ध होता है।

१३ सेमलचट्टी—ओखलाघाट से डेढ़ मील है तथा प्याऊ का प्रबन्ध है।

१४ कांडी चट्टी—सेमलचट्ठी से तीन मील की दूरी पर कांडी चट्टी है बाबा काली कमली वाले की धर्मशाला है तथा गोपाल जी का मन्दिर है। धर्मशाला में बर्तन तथा वस्त्रों का प्रबन्ध है।

१५ भैरोंखाल—कांडी से एक मील की दूरी पर है यहां पर प्याऊ का प्रबन्ध है यहां से दो मील उतराई है।

१६ व्यासघाट—भैरों खाल से तीन मील है यहां पर बाबा काली कमली वालों की धर्मशाला है डाकखाना १५१४ फीट जगह है। यहां पर व्यास जी तथा रामेश्वर महादेव का मन्दिर है और व्यास गंगा का पुल है व्यासदेव ने यहां पर तपस्या की थी। इसी नदी में ६ मील पूरब नैय्यरडैम ६ सौ फीट ऊंचा बन रहा है।

१७ भोंटा चट्टी—व्यासा घाट से एक मील की दूरी पर ओंटा चट्टी है।

१८ छालरी—भोंटा चट्टी से दो मील की दूरी पर है यहां से ६ मील देवप्रयाग तक सीधा रास्ता है।

१९ उमरासू—छालरी से दो मील की दूरी पर है।

२० सोड़ चट्ठी—उमरासू से ढाई माल की दूरी पर है यहां एक सुन्दर झरना है।

२१ देवप्रयाग १। मील है।

देवप्रयाग के नामकरण का इतिहास

सतयुग में देव शर्मा नामक प्रसिद्ध मुनि हुआ, वह देव प्रयाग में जाकर विष्णु भगवान का तीव्र तप करने लगा, जब मुनि ने दस सहस्त्र वर्ष तक पत्ता खाकर और एक हजार वर्ष एक पाद से खड़ा रह कर उग्र तप किया, तब लक्ष्मी जी सहित विष्णु भगवान प्रकट हुए और बोले कि हे तपोधन! मैं प्रसन्न हूँ तुम इच्छित वर

मांगो देव शर्मा बोले कि हे प्रभो] हमारी निश्चल प्रीति तुम्हारे चरणों में रहे यह पवित्र क्षेत्र कलियुग में सम्पूर्ण पापों का नाश करने वाला होय, तुम सर्वदा इस इस क्षेत्र में निवास करो और जो पुरुष इस क्षेत्र में तुम्हारा पूजन और संगम में स्नान करें उनको परमगति मिले, भगवान से कहा कि हे मुनि ! ऐसा ही होगा मैं त्रेतायुग में राजा दशरथ का पुत्र राम नाम से विख्यात होकर रावणादिक दैत्यों को मारूँगा और कुछ दिनों तक अयोध्या का राज भोग कर के इस स्थान पर आऊँगा तब तक तुम इसी स्थान पर निवास करो फिर हमारा दर्शन पाकर तुम परमगति पाओगे तब से इस तीर्थ का नाम तुम्हारे नाम के अनुसार देव प्रयाग होगा, विष्णु भगवाने के चले जाने पर देव शर्मा उस स्थान में रहने लगा, विष्णु त्रेता युग में राजा दशरथ के गृह जन्म लेकर राम नाम से विख्यात हुए उन्होंने रावणवध करने के पश्चात् जाकर देव शर्मा को दर्शन दिया और कहा कि हे मुनीश्वर ! अब से यह तीर्थ लोक में प्रसिद्ध होगा। तुमको सायुज्य मुक्ति मिलेगी। ऐसा कह कर रामचन्द्र जी सीता और लक्ष्मण के सहित उस स्थान पर निवास करने लगे।

ब्रह्मा जी की तपस्या

ब्रह्माजी ने सृष्टि के आरम्भ में दश सहस्र और दस सौ वर्ष समाधिनिष्ठ होकर कठिन तप किया। तब विष्णु भगवान उस स्थान में प्रकट हुए और बोले कि हे ब्राह्मण! वर माँगो ब्रह्मा जी ने कहा कि हे प्रभो! मुझको जगत की सृष्टि करने का सामर्थ्य होय और यह स्थान पवित्र तीर्थ हो जाय, भगवान बोले कि तुम सृष्टि करने में समर्थ होगे यद्यपि यह तीर्थ पवित्र है तिस पर भी २८ मन्वन्तर में जब राजा भगीरथ इस मार्ग से गंगाजी को ले जायगा तब से यह तीर्थ अति पवित्र हो जायगा और इस स्थान का नाम ब्रह्मा तीर्थ होगा, अब ब्रह्मकुण्ड के नाम से प्रसिद्ध है।

देव प्रयाग के तीर्थों का महात्म्य

ब्रह्म तीर्थ के निकट महामति वशिष्ठ जी ने निवास किया, जो मनुष्य वहाँ एक बार भी स्नान करता है वह किसी स्थान में मरे अवश्य ब्रह्म में लीन होगा।

गंगा और शान्ता नदी के संगम के पास जिसकी उत्पत्ति दशरथाचल से हुई है शिव तीर्थ है, जहां श्री रामचन्द्र जी ने अनेक शिवलिंग स्थापन किये हैं। शिव

तीर्थ के ऊपर के मार्ग में वैताल कुण्ड के समीप वैताल की शिला है वैताल कुण्ड में स्नान और शिला का स्पर्श करके नारायण का ध्यान करने से सर्व यज्ञ, तीर्थ और दान करने का फल प्राप्त होता है उस कुण्ड के प्रभाव से बड़े बड़े बैताल परमगति को पाये हैं उस कुण्ड और शिला पर स्नान दान और पितरों के पिण्ड दान करने का कोटि गुणा फल लाभ होता है।

वैताल तीर्थ से ऊपर एक बाण की दूरी पर सूर्य तीर्थ है जहाँ स्नान करने से मनुष्य कुष्ठ रोग से विमुक्त हो जाता है। पूर्व काल में मेधातिथि नामक ब्राह्मण ने देव प्रयाग में जाकर सूर्य भगवान का तप किया था। सूर्य भगवान ने प्रकट होकर उससे कहा कि वर माँगो। मेधातिथि बोले कि हे भगवान्! तुम्हारे चरणों में सदा मेरी भक्ति होय। तुम हमारे साथ यहाँ निवास करो यह पवित्र कुण्ड और यह तीर्थ तीनों लोकों में विख्यात हो जाय सूर्य भगवान् ने कहा कि ऐसा ही होगा तब से यह तीर्थ पवित्र और प्रसिद्ध हुआ। माघ सुदी सप्तमी के दिन सूर्य कुण्ड में स्नान करने वाला मनुष्य बहुत काल तक सूर्य लोक में निवास करके ब्राह्मण के घर जन्म लेकर वेद वेदान्त पारंगत होता है।

वशिष्ठ तीर्थ से ८० हाथ ऊपर वाराह तीर्थ है सतयुग में सर्वबन्धु नामक ब्राह्मण वाराह भगवान् का बड़ा भक्त था उसने देव प्रयाग में जाकर वाराह रूप विष्णु का बहुत काल तप किया वाराह जी प्रकट हुए सर्वबन्धु ने यह वर मांगा कि हे भगवान् ! तुम नित्य हमारे साथ यहाँ निवास करो । भगवान बोले कि मैं सर्वदा इस तीर्थ में वास करता हूँ इस तीर्थ का नाम अब से वाराह तीर्थ होगा । मैं गंगा में शिला रूप से निवास करूँगा जो मनुष्य इस कुण्ड में स्नान करेगा उसको सायुक्ति मुक्ति मिलेगी जो तृप्ति पितरों को सहस्र वर्ष श्राद्ध करने से होती है वह तृप्ति केवल तीर्थ में तर्पण करने से होगी । ऐसा कह भगवान शिला रूप से गंगा में स्थित हुए, उन्होंने अपने दोनों बगलों में शिवजी को स्थापित किया ।

महर्षि विश्वामित्र की तपस्या तथा किन्नरी को शाप

महर्षि विश्वामित्र हिमवान पर्वत पर मानसरोवर के समीप उग्र तप करने लगे इन्द्रादिक देवताओं ने उनके तप से व्याकुल होकर ब्रह्माजी के आदेशानुसार तप में

विघ्न डालने के लिए पुष्पमाला नामक किन्नरी को भेजा वह अन्य अप्सराओं के साथ विश्वामित्र के निकट जा वीणा बजा कर गान करने लगी। कामदेव ने अपने कुसुम बाण को विश्वामित्र पर छोड़ा विश्वामित्र का ध्यान छूट गया उसने अपने आगे खड़ी पुष्पमाला को देखा ऋषि के पूछने पर उसने अपने आने का सब वृतान्त कह सुनाया मुनि ने शाप दिया कि तुम मकरी अर्थात घड़ियाल की स्त्री हो जाओ, जब पुष्पमाला प्रार्थना करने लगी तब विश्वामित्र ने कहा कि तुम देव प्रयाग में जाकर वहां कुछ काल निवास करो, जब त्रेता युग में रामचन्द्र लक्ष्मण सहित वहां आवेंगे तब उनके दर्शन करने से तुम्हारे शाप का अन्त होगा, पुष्पमाला देवप्रयाग में आकर गंगा जी में मकरी रूप से रहने लगी।

त्रेता युग में रामचन्द्र जी लक्ष्मण सहित आये, जब स्नान करने के लिए गंगा में प्रवेश करने पर मकरी उनको निगलने लगी तब उन्होंने उसका सिर काट डाला उसी समय मकरी अपना शरीर छोड़ कर सुन्दर स्त्री हो श्री रामचन्द्र जी की स्तुति करने लगी, भगवान बोले कि हे किन्नरी ! तुम हमारे धाम में जाओ आज से यह

ती। पौष्पभाज नाम मे प्रसिद्ध होगा, यहां स्नान दान जप होम करने वालों पर मैं प्रसन्न हूँगा, इस स्थान पर पितरों के तर्पण करने से पितर लोग असंख्य वर्ष पर्यन्त स्वर्ग में निवास करेंगे, उसी समय वह किन्नरी शाप से विमुक्त होकर विष्णु धाम को चली गई।

श्री वामन भगवान के चरण स्पर्श से जल धारा

जिस समय वामन जी ने अपने चरण से भूमण्डल को नापा था उसी समय समय उनके चरण की अंगुली के नख से जल की धारा निकली, वह ध्रुव के मण्डल तथा 'सप्तर्षि मण्डल' होती हुई मेरू के शृंग पर ब्रह्मलोक में गिरी, वहां से वह धारा ४ भागों में विभक्त होकर पृथ्वी में आई और क्षीर समुद्र में मिली, उनमें सीता नामक धारा गन्धमादक के शिखर पर गिरी यही पूर्व दिशा में भद्राश्ववर्ष में गई चक्षुनाम धारा माल्यवान के शिखर से पश्चिम दिशा में केतुमाल पर्वत पर गई और अलकनन्दा नामक धारा दक्षिण को बहती हुई हिमालय पर आई यहां शिवजी ने इसको अपनी जटा में रख लिया। कुछ दिनों के उपरान्त राजा भगीरथ ने

शिवजी को प्रसन्न करके अपने पितरों के उद्धार के लिए उनसे उस गंगा को मांगा, शिवजी ने गंगा को दिया, गंगा हिमालय से नीचे के शृंग पर गिरी उनके प्रबल वेग से शृंग के दो भाग हो गये, इस कारण गंगा दो धारा होकर भारतवर्ष में आई। उनमें से एक धारा अलकापुरी होकर आई इसलिए उसका नाम अलकनन्दा पड़ा, देवप्रयाग में आकर दोनों धारा फिर एक में मिल गई। संगम से वाणजा नदी तक देवप्रयाग क्षेत्र है।

संगम के पूर्व भाग में गंगा के दक्षिण तट पर तुण्डीश्वर महादेव हैं अलकनन्दा के किनारे एक पवित्र कुण्ड है जिसके निकट तुण्डी भीलनी ने बहुत काल तक शिव का तप किया था जिससे शिवजी यहां तुण्डीश्वर नाम से स्थित हो गये।

श्री रामचन्द्रजी ने देवप्रयाग में जाकर विश्वेश्वर शिव की स्थापना की। उससे ऊपर क्षेत्रराज भैरव है। जो मनुष्य विश्वेश्वर के बिना दर्शन किये हुए तीर्थ यात्रा करते हैं उनका सम्पूर्ण फल निष्फल हो जाता है क्षेत्रपाल भैरव का यथाविधि पूजन करके तब रामचन्द्र जी के दर्शन करना चाहिये।

देवप्रयाग वर्णन

देवप्रयाग—देवप्रयाग के पास से गंगा उत्तर से आई है और अलकनन्दा पूर्वोत्तर से आकर भागीरथी में मिल गई है, देवप्रयाग के पास अलकनन्दा पर लोहे का पुल है वह पुल दोनों किनारों के पायों के भीतर २५० फीट लम्बा और भीतरी २४ फीट चौड़ा है अलकनन्दा के बायें किनारे पर जिसको वाह कहते हैं में बाबा काली कमली वाले की धर्मशाला है जिसमें सब तरह की दुकानें हैं वे सब दुकानें सन् १८१४ की बाढ़ से बह गईं अब वहाँ दो चार मकान बने हैं और एक डाकखाना भी है।

अलकनन्दा के दाहिने और गंगा के बायें संगम के पास समुद्र के जल से २२६६ फीट ऊपर पहाड़ के बगल पर देवप्रयाग बसा है, पुल के पश्चिम चौरस फर्श बीच में रघुनाथ जी का बड़ा मन्दिर है, मन्दिर के शिखर पर सोने का सुन्दर कलश और छत्र लगे हैं भीतर रघुनाथ जी की श्यामरङ्गकी विशाल मूर्ति खड़ी है उनके दोनों चरणों और हाथों पर चाँदी का जड़ाव शिर पर सेनहरा मुकुट हाथों में धनुष बाण और कमर में ढाल

तलवार है, रघुनाथ जी के बायें एक सिंहासन में श्री जानकीजी और दाहिने राम और लछमण की मूर्ति हैं जो रामनवमी और बसन्त पंचमी आदि उत्सवों में बाहर के पत्थ के सिंहासन पर बैठाई जाती है मन्दिर के आगे जगमोहन से बाहर पीतल की बनी हुई गरुड़ की बड़ी मूर्ति बनी हुई है मन्दिर के दाहिने बद्रीनाथ महादेव और कालभैरव महावीर जी और बायें महादेव हैं लोग कहते है कि यह रघुनाथ जी की मूर्ति शंकराचार्य की स्थापित की है। यहाँ का पुजारी महाराष्ट्र ब्राह्मण है मन्दिर का चोबदार सवेरे के दर्शन के समय एक पैसा लेकर यात्री को मन्दिर में जाने देता है।

रघुनाथजी के मन्दिर से १०० सीढ़ी से अधिक नीचे भागीरथी और अलकनन्दा का संगम है इस संगम पर अलकनन्दा के समय जल के नीचे पड़ गये। अब इनमें कोई स्नान नहीं कर सकता हैं अब उस स्थान के ऊपर मुण्डन और स्नान होता है और जब कि आटे की १६ गोलियां बनाकर पितरों का पिण्डदान दिया जाता है यहां एक छोटी और एक बड़ी गुफा हैं छोटी गुफा में श्री महादेव स्थित हैं।

सन् १८६४ ई० की बाढ़ के समय रघुनाथ जी के

मन्दिर के नीचे की बस्ती बाजार धर्मशाला और कई देव स्थान बह गये और ऊपर के सब बच गये उस समय ७० फीट ऊँचा पानी बढ़ा था देवप्रयाग के पुराने लोग कहते हैं कि बाढ़ में गंगाजी का पानी जब तक बराबर चढ़ता गया। जब तक पानी ने मन्दिर में प्रवेश करके श्री रघुनाथ जी के चरण स्पर्श न कर लिये तदुपरान्त पानी चरण स्पर्श करते ही तुरन्त घटना शुरू हो गया ये श्री रघुनाथजी के चमत्कार का नमूना है इसके बाद दुबारा देव प्रयाग की पूर्व ऊँची जमीन पर नई बस्ती बसी, रघुनाथ जी के मन्दिर के उत्तर ऐक छोटी धर्म-शाला और मन्दिर से करीब २०० सीढ़ी के ऊपर पर्वत पर क्षेत्रपाल का मन्दिर है देवप्रयाग में काली कमली का सदावत हैं। बद्रीनाथ के पण्डे देवप्रयाग में ही रहते है पण्डे लोग वहाँ से या हरिद्वार से ही धनी यात्रियों के साथ बद्रीनाथ तक जाते हैं देवप्रयाग गढ़वाल जिले के पांच प्रयागों में से एक है दूसरे रुद्रप्रयाग, कर्णप्रयाग नन्दप्रयाग और विष्णुप्रयाग उससे आगे मिलेंगे।

संगम के उतर स्थान पर गंगा के किनारों पर वाराह शिला बेताल, शिला, पौष्पमाल तीर्थ इन्द्रद्युम्न बिल्वतीर्थ, सूर्यतीर्थ और भरतजी का मन्दिर हैं वैताल

शिला पर पिण्डदान करते हैं।

गंगोत्री के यात्री देवप्रयाग से गंगा के किनारे किनारे टिहरी होकर गंगोत्री जाते हैं देवप्रयाग से लग-भग २४ मील टिहरी और टिहरी से ८६ मील गंगोत्री है यात्री लोग लौटते समय श्रीनगर या त्रियगीनारायण होकर केदारनाथ और बद्रीनाथ जाते हैं।

केदारनाथ और बद्रीनाथ के यात्रियों को देवप्रयाग से गंगा छूट जाती है उनको वहाँ से अलकनन्दा के बायें किनारें चलना पड़ता है वे लोग लक्ष्मण झूला से देव प्रयाग तक ३० मील गंगा के किनारे किनारे आते हैं लक्ष्मण झूला, फुलवाड़ी चट्टी, महादेवचट्टी, व्यासचट्टी और देवप्रयाग केवल इन्हीं ६ स्थानों में स्नान और जल पान के लिये गंगाजल मिलता है शेष स्थानों में ऊपर से गंगा दीख पड़ती है।

देवप्रयाग में तारघर, डाकखाना, अस्पताल, पुलिस तथा बंगला आदि सभी चीजें हैं, तथा देवप्रयाग की ऊँचाई १५५० फीट है।

देवप्रयाग से केदारनाथ तथा बद्रीनाथ के यात्री अलकनन्दा के बायें किनारे चलते हैं, यहाँ से भागीरथी

छूट जाती है, इस यात्रा में भागीरथी का सम्बन्ध देव प्रयाग तक ही है, इससे आगे मन्दाकिनी पिण्डरथौली अलकनन्दा आदि गंगायें मिलती हैं।

१ धनेश्वर—देवप्रयाग से आधा मील सुरम्य स्थान है।

२ देवानीगाड़ १ मील सीधा रास्ता है।

३ कुलासू २॥ मील सीधा रास्ता है।

४ रानीबाग—४ मील पर है, यहाँ डाक बँगला है, तथा अच्छी दुकानें हैं, पहले यहाँ धर्मशाला तथा पक्का बाग था जो १८२४ की बाढ़ में बह गया था।

५ रामपुर—रानीबाग से ३ मील है, यहां बाबा काली कमली की ओर से धर्मशाला बनाने की तजवीज है।

६ दिगोली—रामपुर से ३ मील पर है।

७ बिल्व केदार—दिगोली से २ मील है। इस बिल्व केदार का ही नाम भीलेश्वर है, और भीलेश्वर नाम कैसे पड़ा।

भीलेश्वर महादेव के सम्बन्ध में भिन्न-भिन्न पौराणिक कथायें

—:—

भीलेश्वर

भीलेश्वर मन्दिर के पहले खाण्डव नदी अलकनन्दा से मिल गई है। अलकनन्दा के बायें किनारे पर गुम्बज दार छोटे मन्दिर में अनगढ़ भीलेश्वर शिवलिंग है, उनका तांबे का अर्घा और चांदी का छत्र बना है पहला मन्दिर सन् १८६४ की बाढ़ से बह गया। अब नया मन्दिर बना है शिवलिंग वही है मन्दिर के निकट छोटी छोटी कोठरियाँ हैं इसी स्थान पर भील रूपधारी सदाशिव और अर्जुन का परस्पर युद्ध हुआ था।

डुण्ढम नामी एक छोटी नदी उस पार अर्थात् अलकनन्दा के दाहिने आकर उसी में मिलती है जिसपर एक ही मेहराबी का पुल है पुराणों में उस संगम का नाम डुण्ढप्रयाग और उसके पास के पर्वत का नाम इन्द्रकील पर्वत लिखा है उस स्थान पर एक नया शिव मन्दिर बना है।

संक्षिप्त प्राचीन कथा महाभारत वनपर्व (३७वाँ अध्याय) अर्जुन तपस्वियों से सेवित अनेक पर्वतों को देखते हुए हिमालय पर्वत के इन्द्रकील नामक स्थान पर पहुँचे उस स्थान पर तपस्वी के रूप में इन्द्र ने अर्जुन को दर्शन दिया और कहा कि हे तात ! जब तुम शूल-धारी भूतों के स्वामी शिव का दर्शन करोगे तब हम तुमको सब शस्त्र देंगे। अब तुम परमेश्वर शिव के दर्शन का यत्न करो उनके दर्शन होने से सिद्ध होकर स्वर्ग में जाओगे। इन्द्र के जाने पर अर्जुन वहीं बैठकर योग करने लगा (३८वाँ अध्याय) अर्जुन का उग्र तप देख कर मुनीश्वरों ने महादेव के पास जाकर अर्जुन के तप की प्रशंसा की (३९वाँ अध्याय)। तपस्वियों के जाने पर सदाशिव किरात का वेष धारण कर महामेरु की शिखा के समान शरीर बना कर धनुष बाण लिए हुए अपने समान वेषवाली पार्वती और अनेक भूतों के सहित किरात वेषधारिणी अनेक स्त्रियों को संग ले उस वन में जा पहुँचे।

उसी समय दनु का पुत्र मूक नामक राक्षस का रूप बनाकर मारने की इच्छा से अर्जुन को देख रहा था तब अर्जुन ने गांडीव धनुष लेकर उस राक्षस से कहा

उत्तरा खन्ड विद्या पीठ
श्री गुप्त काशी जी

श्रीद्वारकानाथजी
महेश
मर्दनी
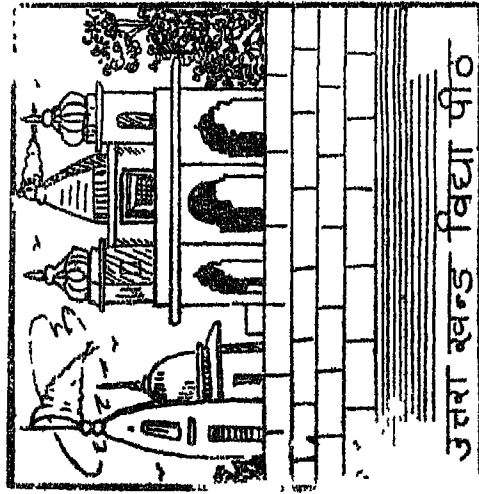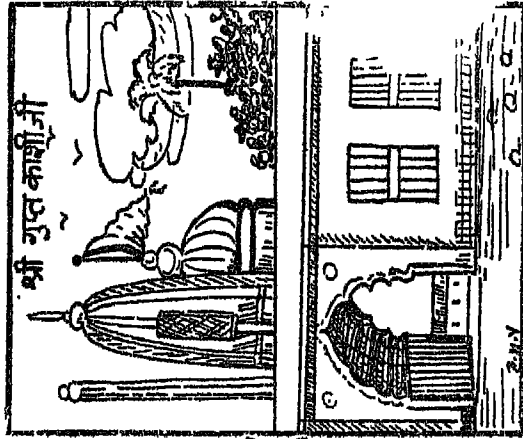
कि मैं अभी तुमको यम के घर पहुँचाता हूँ। उस समय किरात रूपी महादेव ने अर्जुन से कहा कि पहले मैंने इसको मारने की इच्छा की है, तुम इसको मत मारो। परन्तु अर्जुन ने उनका निरादर कर सूअर पर बाण चलाया। ठीक उसी समय किरात ने भी सूअर को लक्ष्य करके उस पर बाण चलाया। जब वह मर गया तब यह कहकर कि मेरे ही बाण से यह सूअर मरा है अर्जुन और किरात दोनों परस्पर वादविवाद करने लगे। अनन्तर अर्जुन को महाक्रोध हुआ, वह बाणसे किरात को मारने लगे किरात अर्जुनके बाण को सहने लगा उसके पश्चात् वे दोनों परस्पर एक दूसरे को बाणों से विद्ध करने लगे तब अर्जुन ने किरात पर बाणों की वर्षा की किरात रूपधारी शिव प्रसन्न चित्त से बाणों की वर्षा को सहते हुए पर्वत के समान अचल हो खड़े रहे। उनके शरीर में कुछ भी घाव न लगा। यह देख अर्जुन को सन्देह हुआ कि यह शिव या कोई यक्ष राक्षस अथवा देवता तो नहीं है फिर सोचा कि यदि यह शिव को छोड़कर और देवता या कोई भी यक्ष होगा तो अब मैं इसको कठिन बाणों से मारकर अवश्य यम के घर पहुँचाऊँगा ऐसा विचार कर अर्जुन बाणों की तेज वर्षा करने लगा। शिव उन बाणों से भी अचल रहे जब बाण

भर में अर्जुन के बाण चुक गये तब उन्होंने धनुष से ही किरात का गला फाँस कर वज्र के समान मुक्कों से किरात पर प्रहार किया जब पर्वत के समान किरात ने इनके धनुष को भी ग्रास कर लिया तब तो अर्जुन ने खड्ग को किरात के शिर में मारा परन्तु उसके शिर में लगने से वह उत्तम खड्ग भी टूट गया। तब अर्जुन शिला और वृक्षों से मारने लगा परन्तु किरात उनको भी सहने लगा तब दोनों का परस्पर मुक्को से युद्ध होने अनन्तर महादेव ने अर्जुन के शरीर में पीड़ा दी और अपने से उनका तेज खींच कर उनके चित्त को मोहित कर दिया तब अर्जुन निश्चेष्ट हो कर पृथ्वी पर गिर पड़ा श्वाँस भी बन्द हो गया। परन्तु क्षणमात्र के पीछे वह चैतन्य होकर उठा और शरण देने वाले भगवान शिव की शरण में गया। उस समय अर्जुन ने शिव की मिट्टी की मूर्ति बना कर उस पर माला चढ़ाई। जब अर्जुन ने वही माला किरात के शिर पर देखी, तब वह किरात के चरणों पर गिर पड़ा। शिव अर्जुन की असाधारण वीरता से प्रसन्न होकर पार्वती के सहित प्रकट हुए अर्जुन ने शिव की बड़ी स्तुति की। शिव बोले हे अर्जुन पूर्व जन्म में तुम नर नामक ऋषि थे नारायण

तुम्हारे साथी थे। बद्रीकाश्रम में हजारों वर्ष तुमने तपस्या की थी तुम्हीं दोनों से जगत स्थित है पीछे शिव अर्जुन को पाशुपत्य अस्त्र और स्वर्ग जाने की आज्ञा देकर अन्तर्ध्यान हो गये।

खांडव और गंगा अर्थात् अलकनन्दा के समीप शिवप्रयाग हैं उसी स्थान पर महर्षि खांडव ने सदाशिव का तप किया था उस स्थान पर भक्ति पूर्वक स्नान करने वाले को ब्रह्म-सायुज्य मिलता हैं संगम में स्नान करके महादेव की आराधना करने से मनुष्य तीनों लोकों में श्रेष्ट हो जाता है। उसी स्थान पर महादेव जी ने इन्द्र पुत्र अर्जुन को दर्शन दिया था।

गंगा और खांडवनदी के संगम के आधे कोस पर कालिका नदी का संगम जिसके दर्श करने से सौ यज्ञ करने का फल होता है उससे एक कोस दूर करिपर्वत पर करि नामक भैरव हैं उससे आधे कोस पर बल्सज्ञानामक नदी खांडव में मिली हैं। संगम से ऊपर सिरस्कूट स्थान पर नारायणी नदी का संगम और नारायणी के संगम से दो कोस दूर राजिका नदी का संगम है।

गंगा के उत्तर तीर पर ढुंढप्रयाग तीर्थ है। पूर्व-

काल में हुंडी ने पांच हजार पांचसौ वर्ष तक पत्ते लाकर तप किया था तभी से वह स्थान हुंडप्रयाग के नाम से प्रसिद्ध हो गया। जो मनुष्य सोमवती अमावस्या को उस तीर्थ में स्नान करता है उसको सब पुण्य और सम्पूर्ण यज्ञ करने का फल लाभ होता है वहां सूर्य और चन्द्र-ग्रहण में स्नान करने से मनुष्य लोक में धन्य-धन्य हो जाता है शिवप्रयाग से पूर्व गंगा के दक्षिण तट पर एक बाण के अन्तर में शिवकुण्ड तीर्थ है जहाँ शिवजी जल में निवास करते हैं।

राजराजेश्वरी पीठ से पावमील पर मनादरी नामक पवित्र नदी है उससे चार बाण ऊपर देवव्रती नदी देववती से ५ बाण ऊपर मधुमती नदी, मधुमतीसे चार बाण ऊपर मनोन्मती नदी, मनोन्मती से दो बाण ऊपर किलकेश्वर महादेव और किलकेश्वर से ऊपर जीवती नामक नदी है जीवती नदी के ऊपर उत्तर दिशा में सब कामनाको देने वाला इन्द्रकील पर्वत है पूर्वकाल में उस स्थान पर दुष्ट दैत्यों के द्वारा इन्द्र कीले गये थे अर्थात दैत्यो के भय से वहाँ छिप कर रहे, इसलिये उस पर्वत का नाम इन्द्रकील हो गया।

श्रीनगर १७०६ फीट बिल्वकेदार से ४ मील है।

श्रीनगर समतल भूमि में बड़ा रमणीक स्थान है पर्वतीय प्रदेशों में यह एक समतल भूमि में बसा हुआ स्थान है, यहाँ का बाज़ार सुन्दर है, यहां मोटर तारघर, अस्पताल पुलिस-थाना तथा बाबा काली कमली वाले की धर्मशाला है श्रीनगर का शास्त्रों में क्या वर्णन है यह निम्न प्रकार है—

श्रीनगर

संक्षिप्त प्राचीन कथा स्कन्द पुराण केदारखण्ड उत्तर भाग (पहला अध्याय) श्रीक्षेत्र अर्थात् श्रीनगर का स्थूल रूप को लोत्तमार्ग से कोल कलेवर तक चार योजन लम्बा और तीन योजन चौड़ा सूक्ष्म रूप जीवेन्द्रपुर से सरसवती नदी तक और अति सूक्ष्मरूप खांडव नदी से शितिपुर तक है। श्रीक्षेत्र में देवता लोग सर्वदा निवास करते हैं। वहाँ मृत्यु होने से जन्म मरण का बन्धन छूठ जाता है, वहाँ भगवान शंकर शिव के सहित सर्वदा विद्यमान रहते हैं। पूर्वकाल में तारकासुर ने इन्द्रादिक देवताओं को स्वर्ग से निकाल दिया था तब वे लोग सम्पूर्ण पृथ्वी में भ्रमण करके केदारेश्वर क्षेत्र में जहाँ तारकासुर का भय नहीं था आये इन्द्र ने इन्द्रकृत

पर्वत पर निवास किया उसके दक्षिण भाग में कैलास पर्वत पर यमराज ने अपना गृह बनाया इसी प्रकार सम्पूर्ण देवता उसके आसपास अपना अपना निवास स्थान बनाकर रहने लगे कितनेही युगोंके उपरांत वे लोग शिवकी अराधना करके स्वामिकार्तिकको पाकर फिर स्वर्ग में आये और स्वामिकार्तिक को सेनापति बनाकर असुरों को परास्त करके अपने अपने स्थानों को फिर पा गये।

राजा धर्म्मनेत्र ने उत्कालक मुनि से पूछा कि श्री क्षेत्र की उत्पत्ति किस भांति हुई। मुनि कहने लगे कि सतयुग में सत्यकेतु नामक प्रतापी राजा हुआ वह बहुत काल राज्य करने के उपरान्त अपने पुत्र सत्यसंग को राज्य देकर इन्द्रकील पर्वत पर गया और गुफा में समाधि लगा कर तप करने लगा। उसके पश्चात् राजा का शत्रु कोलासुर आया। राजा सत्यसंघ घोड़े पर सवार हो नगर से बाहर निकला। गंगा के उत्तरी तीर पर एक योजन की दूरी पर कुबेर पर्वत के दक्षिण भाग में राजा सत्यसंघ और कोलासुर का रोमहर्षण युद्ध होने लगा। बहुत काल तक युद्ध होने के उपरान्त आकाशवाणी हुई कि हे सत्यसंघ! तुम उत्कालक क्षेत्र के ऊपर भाग में दो बाण की दूरी पर गंगा के दक्षिण

तीर में भगवती की आराधना करो। उनके प्रसाद से तुम कोलासुर को मार सकोगे। ऐसा सुन राजा सत्यसंघ उस स्थान पर गया और एक शिला पर भगवती का यन्त्र लिखकर पूजा करने लगा। एक सौ वर्ष राजा के तप करने के पश्चात् भगवपी ने राजा को दर्शन दिया राजा ने दंडवत् करके जगदम्बा की स्तुति की, भगवती बोली कि हे राजन्? मैं प्रसन्न हूँ तुम मुझसे इच्छित वर मांगो। सत्यसंघ ने कहा कि हे जगदम्बे! कोलासुर हमारे हाथ से मारा जाय। इस पवित्र क्षेत्र का तुम कभी त्याग न करो, और इस क्षेत्र में जो कुछ कर्म किया जाय उसका फल कोटि गुणा हो। भगवती बोली कि हे सत्यसंघ तुम्हारे हाथ मे कोलासुर का वध होगा। यह क्षेत्र श्रीक्षेत्र के नाम से प्रसिद्ध होगा यह क्षेत्र सम्पूर्ण पापों का नाश करने वाला और यहाँ मृत होने वालों को मुक्ति देने वाला होगा। जो मनुष्य इस क्षेत्र में हमारा पूजन करेगा वह थोड़े ही दिनों में हमारे समान समर्थ हो जायगा। मैं शिवजी के इस क्षेत्र में सर्वदा निवास करती हूँ इस स्थान में आधे कोस की दूरी पर गंगा के उत्तर तीर में मैं राजराजेश्वरी के नाम से प्रसिद्ध हूँ पूर्व समय में राजा कुबेर ने यहां मेरी आराधना की

थी, तब से मैं यहाँ निवास करती हूँ जब कुबेर मेरी आराधना करके सम्पूर्ण सम्पत्ति का स्वामी हो गया, तब उसने बीस करोड़ सुवर्ण की वेदी बनाकर उस पर मुझे स्थापित किया तभीसे मेरा नाम राजराजेश्वरी करके प्रख्यात हुआ ऐसा कहकर देवी अन्तर्ध्यान हो गई राजा मत्सांच रणभूमि में जाकर फिर कोलासुर का शिर काट डाला उसके सिर और रुण्ड को अलग अलग फेंक दिया। नैऋत्य दिशा में एक योजन पर कोलासुर का सिर और पूर्व भाग में ३ योजन पर उसका रुंड जा गिरा। यहाँ चार योजन लम्बा और तीन योजन चौड़ा श्री क्षेत्र श्रीनगर का प्रमाण हुआ। अब तक भी उसके सिर का स्थान कोलसिर करके प्रसिद्ध है। और उसके रुंड के देश में कोल नामक पर्वत है (कुइला] इनके मध्य में जो प्राणी शरीर त्याग करता है उसको शिव लोक प्राप्त होता है।

तीसरा अध्याय—कोलासुर के सिर के भाग में मेनका नदी की समीप मेनकेश्वर महादेव हैं उससे एक कोस दूर देवतीर्थ में भुवक्रुटेश्वर महादेव स्थित हैं उस स्थान पर सूर्य चन्द्र अग्नि तीन धारा देखने में आती हैं। गंगा के उत्तर तीर पर श्यामला नदी बहती है

संगम के निकट शिवतीर्थ में शिवप्रयाग प्रसिद्ध है जिस में स्नान करने से बहुत फल होता है उससे एक कोस दूर गजवती धारा, गजवती से आधे कोस पर गङ्गा के दक्षिण तट पर पुष्पदन्तिका नदी और पुष्पदन्तिका से एक बाण दूर गङ्गा के निकट भानुमति शिला है जिसके स्पर्श करने से सौन्दर्य प्राप्त होता है अलकनन्दा के समीप इन्द्रप्रयाग है उसी स्थान पर राज्य भ्रष्ट इन्द्र ने तप करके अपना राज्य पाया। उस से दो बाण पर दर्पदती नदी, दर्पदती से आधा कोस पर अहिकण्डिका गिरी, उस से दो कोस दूर पर्वत के ऊपर अहिकण्डिका देवी है, गङ्गा के उत्तरी किनारे पर शक्तिजा नदी के तट में गणेश्वर महादेव है गणेश्वर से आधे कोस पर श्मशान वासिनी देवी, उस से एक कोस दूर शक्तिजा और शंखवती का संगम, और उस स्थान से शक्तिजा के पश्चिम तट से आधे कोस पर महादेव का मन्दिर है, उसी स्थान में सोमवंशीय राजा नहुष ने कठोर तप करके इन्द्र का राज्य पाया था। उस से ऊपर दो कोस प्रमाण का देव पीठ है। शक्तिजा के संगम के ऊपर गङ्गा के दक्षिण तट पर उपेन्द्रा नदी का सङ्गम है उसके ऊपर चार बाण पर इन्द्र के स्थापित किये हुये कन्दुकेश्वर स्थान है।

खांडव नदी और गङ्गा के सङ्गम के निकट शिवप्रयाग हैं। भोलेश्वर की कथा में धनुष कोटी तीर्थ से दो बाण की दूरी पर भैरवी तीर्थ में अनेक नाम की भैरवी रहती हैं। उनके दक्षिण भाग में २५ धनुष पर भैरवी पीठ है, पूर्वकाल में सत्यसंध राजा ने उस स्थान पर देवी का पूजन किया था तब से वहां देवीजी स्थित हो गईं गंगा के उत्तरी तीर पर कौबेर कुन्ड है उसी स्थान पर कुवेर ने देवी की आराधना की थी।

(१० वां अध्याय) श्री क्षेत्र में चामुन्डा पीठ, भैरवी पीठ, कंसमर्दिनी पीठ, गौरी पीठ, महिष मर्दिनी पीठ, और राजराजेश्वरी पीठ, सद्यः प्रभाव को दिखलाने वाले हैं, राजराजेश्वरी और भैरवी पीठ तो मैं कह चुका हूँ अब चामुण्डा पीठ, की उत्पत्ति की कथा सुनो।

पूर्व काल में शुम्भ और निशुम्भ दैत्यों ने सम्पूर्ण देवताओं के अधिकार को छीन लिया था तब देवताओं ने हिमवान पर्वत पर जाकर पार्वती जी की प्रार्थना की, भगवती पार्वती ने कहा कि तुम सब निर्भय होकर रहो मैं शुम्भ और निशुम्भ को मारूँगी सब देवता जाकर अपने २ स्थान में रहने लगे इस के अनन्तर किसी काल में शुम्भ और निशुम्भ के कर्मचारी चण्ड और

मुण्ड ने देवी को गंगा में स्नान करते हुए देखकर उनके रूप से मोहित हो शुम्भ और निशुम्भ के निकट जाकर उनके रूप का वर्णन किया शुम्भ और निशुम्भ ने सुग्रीव नामक दूत को देवी के पास भेजा उसने हिमालय में जा भगवती से कहा कि शुम्भ और निशुम्भ दैत्यों के राजा हैं, यदि तू अपना कल्याण चाहती हो तो उनकी पत्नि बनो ऐसा नहीं करोगी तो वह तुझ को बलात्कारसे ले जायेंगे। भगवती बोली कि हे दूत! तुम. उन से कहो कि जो मुझको संग्राम में जीतेगा वही पाणी ग्रहण करेगा सुग्रीव ने शुम्भ और निशुम्भ के निकट आकर देवी के वचन कह सुनाया।

दैत्यराज की आज्ञा से धूम्रलोचन दैत्य चतुरंगिणी सेना लेकर हिमालय पर आ भगवती से बोला कि अब मैं, तुझको बांध कर ले जाऊँगा, देवी जी ने क्रोध कर के अपनी हुँकार ही से उसको भस्म कर दिया। शुम्भ ने धूम्रलोचन की मृत्यु सुन कर बड़ी भारी सेना के साथ चन्ड और मुन्ड दैत्यों को भेजा। दैत्य की भयंकर सेना देवी के पास आकर नाना प्रकार के अस्त्र शस्त्र चलाने लगी उस समय इन्द्रादिक देवताओं की करोड़ों सेना भगवती की सहायता के लिए यहाँ आकर उपस्थित हुई

देवता और राक्षसों का रोमहर्षण संग्राम होने लगा अब चण्ड और मुंड देवीजी के सन्मुख गये तब क्रोध के मारे अम्बिका का मुख श्याम वर्ण हो गया, उस समय उनके ललाट से अपने हाथों में [illegible] का [illegible] हुआ सिर, खंग, [illegible] [illegible], शक्ति-पाश, [illegible] धनुष और बाण इत्यादि अस्त्र शस्त्र लिये हुये, शिवा, प्रकट हो गई वह दैत्यों का मर्दन करने लगी। कितने दैत्य उसके महानाद से नष्ट हो गये कितने उसकी दृष्टि से मूर्छित हुए कितनों को उसने मार डाला उसके पश्चात् उन्होंने अपने खंग से चण्ड का सर काट डाला डाला और उसके उपरान्त मुंड के कंठ को अपने चरण से दबा कर खंग से काट कर वह दोनों दैत्यों के सर लेकर भगवती के समीप आई भगवती अति प्रसन्न हो बोली कि हे कालि तुमने चंड और मुंड को मारा इस कारण अब से तुम लोक में चामुंडा करके प्रसिद्ध होगी उसके पश्चात् चामुंडा ने दोनों दैत्यों के सरों को फेंक दिया श्रीक्षेत्र में चार बाण की दूरी पर गंगा के उत्तर तीर पर [illegible] कुंड के निकट मुंड का सर और चार बाण की दूरी पर गंगा के दक्षिण किनारे पर चंड का सर जा गिरा चामुंडा देवी [illegible] करने लगी ॥

श्रीक्षेत्र में माहेश्वरी पीठ कमलेश्वर पीठ, कटकेश्वर पीठ और कोटिश्वर पीठ, सम्पूर्ण सिद्धि को देने वाले हैं, भैरवी तीर्थ से ऊर्ध्व भाग में दो बाण पर गंगाजी के दक्षिण तट में ब्रह्मा विष्णु और महेश्वर ये तीनों , देवता शिलारूप से स्थित है प्रत्येक शिलाओं के नीचे इनके नामो से प्रसिद्ध एक एक कुंड है ।

कमलेश्वर की उत्पत्ति इस भांति हुई कि एक समय काशी के रहने वाले ब्रह्मदेव इस तीर्थ में आकर ५ सहस्र ५ सौ वर्ष पर्यन्त शिवजी का तप किया तब भगवान शंकर प्रसन्न हुए। उस समय वहाँ की पृथ्वी फट गई उसके छिद्र से मणियों का समूह निकला। वह अध-रात्रि का समय था किन्तु उनके प्रकाश से मध्यान्ह सा हो गया उन मणियों में मरकतमणि का शिवलिंग दीख पड़ा। उस समय शिल्ह नामक मुनि वहाँ आ गये, वे बोले कि हे विप्र ! तुम धन्य हो कि तुम्हारे तप के प्रभाव से यह लिंग प्रकट हुआ उस समय ब्रह्मदेव और शिल्ह मुनि ने बहुत से मुनियों को बुला कर इस लिंग का अभिषेक करवाया, महादेव शिलेश्वर नाम से प्रसिद्ध हुए। शिल्ह मुनि शिवलोक में गए। उनके पीछे किसी समय श्री रामचन्द्र जी नित्य १०० कमलों से शिव की

पूजा करते थे तब ही से वे लिंग कमलेश्वर नाम से प्रख्यात हो गया, ब्रह्म पर्वत के नीचे के भाग में चार धारा पर कमलेश्वर महादेव हैं उनसे ऊपर एक वाण पर विष्णु तीर्थ और विष्णु तीर्थ से एक कोस की दूरी पर गंगा के दक्षिण तट में नागेश्वर महादेव हैं जहाँ पूर्वकाल में नागों ने शिव का तप किया था। कटकवती के संगम से आधे कोस पर कटकेश्वर महादेव हैं शिवजी के साथ क्रीड़ा करती हुई पार्वती जी का कटक अर्थात् कर्ण गिर गया इसलिए शिव का नाम कटकेश्वर पड़ा।

कमलेश्वर पीठ से ऊपर दक्षिण दिशा में वन्हि पर्वत है जहाँ अग्नि ने शिवजी का तप करके सम्पूर्ण इच्छित वर पाया था तब ही से वह सब देवताओं का मुख हो गया वन्हि पर्वत के नीचे वन्हि धारा और वन्हि धारा के ऊपर वन्हि पर्वत के मध्य में अष्टावक्र मुनि का पवित्र तपस्थल है।

कंस को मारने वाली देवी श्रीक्षेत्र में कंसमर्दिनी नाम से निवास करती है, गंगा के दक्षिण तीर पर श्रीशिला है। गंगा से डेढ़ कोस पर वेत्रवती नदी के पश्चिम भाग में चारों ओर एक-एक कोस के प्रमाण से

पुण्यक्षेत्र गौरी पीठ है जहाँ ब्रह्मादिक देवताओं ने परम सिद्धि पाई है। रत्नदीप के रहने वाले शशबिन्दु के पुत्र राजा देवल ने इस स्थान में गौरी का स्थापन किया था तब ही से यह महापीठ हो गया। गौरी के निकट महिष मर्दिनी देवी है उसी स्थान में कालिका देवी का परम पावन पीठ है, प्रथम कालिका का पूजन करना चाहिये श्रीनगर का महत्व आप पढ़ चुके हैं यह सिंह स्थान है और शक्ति दुर्गा शिव की जो यहाँ श्रद्धा भक्ति से पूजन अनुष्ठान करता है उसको मन वांछित फल प्राप्त होता है, साधकों के लिए यह सिद्धिप्रद स्थान है। जैन सम्प्रदाय के पार्त और साधकों ने इसी स्थान पर अनेक प्रकार की सिद्धियें प्राप्त की थीं।

नोट—श्रीनगर से रुद्रप्रयाग तक १९ मील लोरी जाती है लेकिन पैदल यात्रा करने वालो का मार्ग इस प्रकार हैं—

१—सुकरता—श्रीनगर से ४॥ मील है, यहाँ पर यात्रा के समय श्री बाबा काली कमली वाले की और से प्याऊ का प्रबन्ध होता है।

२—भट्टीसेरा—३। मील है, यहाँ पोस्ट आफिस है

तथा बाबा काली कमली वाले की धर्मशाला है, सदा॰
एवं प्याऊ का भी प्रबन्ध है, यहाँ से आगे १। म
चढ़ाई १॥ मील सीधा उतार है।

३–खांकरा—३ मील है, यहाँ पर अच्छा स्थ
है, आगे मोल डेढ़ मील की चढ़ाई है।

४–नरकोटा—३ मील है, चढ़ाई उतार है।

५–गुलाबराय चट्टी—खांकरा से तीन मील
यहाँ पर एक झरना है, स्थान बड़ा रमणीक है। चढ़
उतार है।

६–रुद्रप्रयाग—गुलाबराय चट्टी से सवा मील
है, यहाँ पर अलकनन्दा और मन्दाकिनी का संगम
तथा यहाँ पर मोटर-तारघर-डाकखाना, अस्पताल-था॰
डाक बँगला आदि सभी चीजें हैं। २००० फीट—य
श्री स्वामी सच्चिदानन्द जी के उद्योग से संस्कृत विद्य
लय, जूनियर हाईस्कूल, कन्या पाठशाला भी हैं।

रुद्रप्रयाग के बाजार के पास २१४ फीट लम्
३ फीट चौड़ा अलकनन्दा पर लोहे का एक पुल
इससे आगे श्री केदारनाथ जी के ठीक रास्ते पर २

बाबा काली कमली वाले की धर्मशाला है, बद्रीनाथ जाने वाले यहाँ से सीधा आगे अलकनन्दा के बायें किनारे कर्णप्रयाग, नन्दप्रयाग, चमोली होकर अलकनन्दा के किनारे किनारे बद्रीनाथ जाते हैं, और केदारनाथ के यात्री यहाँसे पुल पार होकर रुद्रनाथ के मन्दिर से आगे मन्दाकिनी नदी के किनारे किनारे केदारनाथ पहुँचते हैं। और केदारनाथ से नालाचेट्टी पर लौटकर ऊखीमठ, तुंगनाथ गोपेश्वर और चमोली होकर बद्रीनाथ को जाते हैं, रुद्रप्रयाग से कर्णप्रयाग १६ मील, नन्दप्रयाग ३२ मील, चमोली ३६ मील, जोशीमठ ६७ मील, बद्रीनाथ ८६ मील हैं। रुद्रप्रयाग से दूसरी ओर मन्दाकिनी के किनारे किनारे २४ मील गुप्त काशी, २६ नारायणकोटि, ४० मील त्रियुगी नारायण, ३६ मील सोनप्रयाग, ४१ मील गौरीकुण्ड और ४८ मील पर केदारनाथ है।

अलकनन्दा और मन्दाकिनी नदी के संगम पर एक छोटे गुम्बजदार मन्दिर में रुद्रनाथ शिवलिंग है मन्दिर के आगे जगमोहन की जगह पर एक कोठरी हैं एक कोठरी नारदेश्वर शिव और दूसरी कोठरी में कामेश्वर शिवलिंग हैं, खड़ी सीढ़ियों से उतर कर संगम पर

स्नान होता है, यहाँ जल का वेग तेज है, रुद्रनाथ के मन्दिर के थोड़ी दूर पर मन्दाकिनी नदी पर रस्सो का झूला है। लोहे के लटकाऊ पुल के समान रस्सों का झूला होता है, यह चढ़ने से हिलता है, इसलिये इसे झूला कहते हैं, इसमें लोहे के वरहों के स्थान पर रस्सों पर के वरहे होते हैं। झूले के दोनों बगलों पर लोहे के छड़ों की जगह वन के समान मोटी मोटी रस्सियाँ लगाइ जाती हैं, और पाटन के तख्तों के स्थान पर जंगल की लचकदार लकड़ियाँ लगाई जाती है ऐसे झूलों पर यात्री लोग बोझ लेकर नहीं चल सकते, पहाड़ी लोग इनकी वस्तुओं को दूसरे किनारे पहुँचा देते हैं।

रुद्र प्रयाग जो पंच प्रयागों में से एक है, देव-प्रयाग के बाद मिलता है, रुद्रप्रयाग ही में श्री महादेव जी ने महर्षि नारदजी को संगीत विद्या की शिक्षा दी थी।

रुद्रप्रयाग

रुद्रप्रयाग के सम्बन्ध में विशेष तौर पर श्रीनारदजी की तपस्या तथा उनको संगीत का वरदान इसी स्थान से प्राप्त हुआ था जिसका वर्णन नीचे दिया जाता है—

महामुनि नारदजी ने रुद्रप्रयाग में मन्दाकिनी गंगा के तट पर, जहाँ शैवादिक नाग तप करके सदाशिवजी के भूषण बन गये थे, एक चरण से खड़े होकर १०० वर्ष पर्यन्त महादेवजी का कठिन तप किया तब भगवान शिव श्री पार्वतीजी के साथ नन्दी पर चढ़े हुए आये और बोले कि हे नारद ! अब तुम्हारा तप पूर्ण होगया उसी समय श्री महादेव जी ने ६ रागों (संगीतों) को उत्पन्न किया। एक-एक राग की पाँच-पाँच रागनियाँ (स्त्रियाँ) और आठ-आठ पुत्र तथा आठ-आठ पुत्रवधू हुई, नारद जी सदाशिवजी के सहस्र नाम से स्तुति की, महादेव जी ने कहा कि हे नारद मैं प्रसन्न हूँ तुम इच्छित वर माँगो, नारदजी बोले हे वृषध्वज यदि आप प्रसन्न हैं तो मुझको संगीत विद्या प्रदान कीजिये आप नादरूप हो और नाद आपको परम प्रिय है इसलिये मैं उसको जानना चाहता हूँ संगीत शास्त्र का सर्वस्व मुझको आप सिखलाइये इसका जानने वाला आपके अतिरिक्त दूसरा कोई नहीं है। ऐसे नारद के वचन सुनकर शिवजी ने प्रसन्न होकर नाद के शस्त्र का संपूर्ण भेद उनसे कह दिया। महर्षि नारद नादों का सम्पूर्ण भेद और आवरणों को और महादेव जी की दी हुई

पवित्र वीणा को ग्रहण कर ब्रह्मलोक में गये। शिवजी यहाँ ही अन्तर्ध्यान हो गये, नारद जी ने अलकनन्दा और मन्दाकिनी के संगम के निकट रुद्र तीर्थ में स्नान करके परम सिद्धि को प्राप्त किया था इसलिए यह तीर्थ पृथ्वी में श्रेष्ठ है उस प्रदेश में तीन लाख दस सहस्र तीर्थ विद्यमान हैं और नाग पर्वत स्वर्ग के समान है।

गंगा और मन्दाकिनी के संगम के समीप रुद्र क्षेत्र और मन्दाकिनी और लशतर नदी के संगम के निकट सूर्यप्रयाग है।

१-छतोली—रुद्रप्रयाग से ४॥। मील पर है, अलकनन्दा और मन्दाकिनी के बायें किनारे से चलना पड़ता हैं, रुद्रप्रयाग के मन्दिर से आगे २ मील पर पीपल के पेड़ के पास एक छोटा झरना है।

२-तिलवाड़ा तथा मठचट्टी—छतोली से एक एक मील पर हैं, मठचट्टी के सामने सूर्यप्रयाग है वहाँ से दो मील मणागा में छिन्नमस्ता पीठ और दो मील जैली में कूर्मासना पीठ है।

३-रामपुर—मठचट्टी से ॥ मील पर है, रुद्रप्रयाग

से यहाँ तक का मार्ग सुगम है, यहाँ कई एक पक्की दुकानें हैं, मन्दाकिनी और कई झरनों के संगम हैं।

४-अगस्तमुनि—४ मील है, यहाँ डाकखाना, हाई-स्कूल, मन्दिर है, बाबा काली कमली वाले की धर्म-शाला है। ३००० फीट ऊँचाई है।

अगस्त मुनि

अस्गतमुनि के स्नान के सम्बन्ध में कई प्रकार की किंवदन्तियाँ सुनने में आई हैं, कहते हैं कि जब अगस्त जी ने समुद्र का शोषण किया उसके बाद उन्हे ध्यान आया कि समुद्र शोषण करने से पूर्व क्रोधाभिवेश हुआ और क्रोध आने पर कई प्रकार के दोष उत्पन्न हो जाते हैं। इसलिए अगस्त जी महाराज ने इस स्थान पर आकर बहुत काल तक तप किया था, यहाँ पर अगस्त जी का मन्दिर है अगस्त जी की ताम्रमयी मूर्ति के बगल में कटार और उनके दोनों ओर दो शिष्यों की ताम्रमयी मूर्तियाँ और पास ही नवग्रह हैं। मन्दिर के आगे जग-मोहन की जगह पर लम्बी कोठरी में गणेशजी महाराज की पुरानी मूर्ति तथा मन्दिर के दाहिने ओर एक कोठरी में शिवलिंग है।

इस मन्दिर में प्रत्येक बारह वर्ष के बाद यज्ञ होना बताते हैं, मन्दिर के आगे अगस्त जी की पीतल की चल-मूर्ति है जो उत्सव के समय बाहर निकाली जाती है, ऐसे यज्ञ पहले बहुत होते थे महाभारत आदिपर्व के चौथे अध्याय में लिखा है कि लोमहर्षण के पुत्र उग्रश्रवादि नैमिषारण्य में शौनकजी के द्वादश-वार्षिक यज्ञ में गये थे। यहाँ १९९५ में अष्टादश महापुराण समारोह हुआ जो बारहवें वर्ष २००७ में होगा। यहाँ हाईस्कूल भी है।

गंगा मन्दाकिनी के उस पार दो मील पर शीलेश्वर महादेव हैं लोगों का कहना है कि अगस्त जी ने इसी स्थान पर तप किया था।

अगस्त चट्टी से केदारनाथ की हिमाच्छादित पर्वत श्रेणी दीखती है।

५-सत्यनारायण मन्दिर—अगस्तमुनि से आध मील पर हैं स्थान अच्छा है।

६-सौड़ी चट्टी—मन्दिर से दो मील पर है। यहां से ५ मील पहाड़ पर स्वामी कार्तिकनाथ जी हैं यहां एक छोटे चौक में हजारों आदमी बैठ सकते हैं।

७-चन्द्रापुरी—सौड़ी से २ मील पर है यहाँ पर अच्छी अच्छी दुकानें हैं चन्द्रशेखर महादेव, दुर्गाजी का मन्दिर है मन्दाकिनी और चन्द्रानदी का संगम है, पुल पार करना पड़ता है स्थान अच्छा है। यहां से दो मील पिल्लु में कर्माजीत का स्थान है सांप का काटा हुआ आदमी इस मन्दिर में रखके मरेगा नहीं।

८-भीरी चट्टी—चन्द्रपुरी से ३॥ मील है, यहाँ पर भीमजी की विशाल मूर्ति है और मन्दाकिनी के ऊपर ७२ फीट लम्बा और ५ फीट चौड़ा लोहे और काठ का पुल है, यहाँ से मन्दाकिनी के बायें किनारे की सड़क ऊखी मठ को और दाहिने की गुप्त काशी होकर केदार-नाथ को गई है, केदारनाथ को यात्री यहाँ से पुल पार होकर मन्दाकिनी के दाहिने किनारे से चलते हैं, यहाँ से १॥ मील फेत्कारिणि पर्वत पर श्री दुर्गापीठ है वहीं विद्याधर महादेव जी भी हैं। यहां पर शोणितपुर एक मील है।

९-कुण्ड—३॥ तीन मील पर है, कुण्ड से आगे २ मील गुप्त काशी है और बड़ी चढ़ाई है, कुण्डचट्टी से १ मील आगे से जहाँ भिक्षुक की कोठरी है, पहाड़ के ऊपर २ मील के फासले पर शोणितपुर की एक सड़क

जाती है। शोणितपुर एक महत्वपूर्ण स्थान है इसलिये पाठकों की जानकारी के लिये उसका विवरण दे देते हैं शोणितपुर में बाणासुर के गढ़ की निशानी तथा बाणासुर अनिरुद्ध और पंचमुखी महादेव की मूर्तियाँ है, श्री केदारनाथ जी के पण्डे अधिकतर शोणितपुर में ही रहते हैं।

राजा बलि के रसातल जाने के उपरान्त उसका पुत्र बाणासुर पृथ्वी में शोणिताख्यापुर रच कर दानवों के साथ रहने लगा

श्रीमद्भागवत दशमस्कन्ध ६२वाँ अध्याय राजा बलि के सौ पुत्रों में से ज्येष्ठ पुत्र बाणासुर शोणिताख्य-पुर में राज्य करता था शिव जी उसकी ताण्डवगति के नृत्य से प्रसन्न हो उसकी इच्छानुसार अपने कुल समेत उसके घर में स्थित हुए एक समय बाणासुर ने शिवजी से कहा कि आपके अतिरिक्त मुझसे युद्ध करने वाला कोई नहीं। बिना युद्ध किये मेरी भुजायें खुजलाती हैं इसलिए कृपा करके आप मुझसे युद्ध कीजिये तब तो शिवजी क्रुद्ध होकर बोले कि मेरे समान बलवान से जब तेरा युद्ध होगा तब तेरा गर्व टूट जायगा।

बाणासुर की ऊखा नामक कन्या थी स्वप्न में अनिरुद्ध के साथ उसका समागम हुआ। जागने पर वह हे कान्त! तुम कहाँ गये इस प्रकार पुकारती पुकारती सखियों के बीच गिर पड़ी। तब बाणासुर के मंत्री कुमाण्ड की पुत्री चित्ररेखा देवता मनुष्य सबके चित्र लिख लिख कर उसको दिखाने लगी। अन्त में अनिरुद्ध का चित्र देख कर ऊखा ने कहा कि मेरा चित्तचोर तो यही है। तब योगबल से चित्ररेखा आकाश मार्ग से होकर द्वारिकापुरी में जा पहुँची उस समय अनिरुद्ध पलंग पर सो रहे थे उन्हें वह योगबल से उठाकर शोणितपुर में ले आई। वे दोनों गुप्तभाव से घर में रहने लगे। कुछ दिनों के पश्चात् बाणासुर ने पहरेदारों के मुख से यह वृत्तान्त सुना। कन्या के महल में जाकर अनिरुद्ध को देखा और कुछ युद्ध होने के बाद अनिरुद्ध को नागफांस से बाँध दिया।

चार महीने बीत जाने पर नारदजी ने द्वारिका में श्री कृष्णचन्द्र से अनिरुद्ध के कारागार का समाचार सुनाया तब श्रीकृष्णचन्द्र ने बड़ी भारी सेना के साथ बाणासुर के नगर को घेर लिया अपनी सेना लेकर बाणासुर भी पुर से बाहर निकला और

उसकी सहायता के लिए महादेव जी भी अपने गणों के संग रणभूमि में सुशोभित हुए भयानक युद्ध होने के बाद श्रीकृष्णचन्द्र ने जृंभण अस्त्र चलाया जिससे शिव जी जंभाई लेने लगे। तब श्रीकृष्णचन्द्र ने असुर की सब सेना का विनाश करके बाणासुर की चार भुजाओं को छोड़ शेष सबको काट डाला उसके पश्चात् बाणासुर ने श्रीकृष्णचन्द्र को प्रणाम करके उखा के सहित अनिरुद्ध को रथ में बिठाल कर बिदा कर दिया। श्रीकृष्णचन्द्र अपनी सेना के संग द्वारिका में आये और बाणासुर शिवजी का मुख्य पार्षद हुआ।

शोणितपुर की पश्चिम दिशा में बाणासुर दैत्य ने अजय वरदान पाने के लिए शिवजी को प्रसन्न करने के लिए कठिन तप किया तहां बाणेश्वर महादेव स्थित हो गये बाणासुर ने उनके प्रसाद से सम्पूर्ण जगत को जीत लिया।

गुप्त काशी नाम कैसे पड़ा

—:o:—

गुप्त काशी—शोणितपुर से ४ मील पर है। यहाँ पोस्ट आफिस और बाबा काली कमली की धर्मशाला है, यहाँ मन्दिर में दो चौगान हैं, उनमें से दक्षिण के चौगान में चारों ओर पक्के दो मंजिले दोहरे मकान हैं, जिनमें यात्री टिकते हैं, और उत्तर के चौगान में तीन ओर पक्के दो मंजिले दोहरे मकान तथा धर्मशाला है। पश्चिम की ओर पहाड़ के नीचे विश्वनाथ शिव का पूर्वाभिमुख मन्दिर है, मन्दिर साधारण डौल का है, उसके शिखर पर छोटी बारहदरी तथा सुवर्ण का कलश है, विश्वनाथ शिवलिंग अनगढ़ है, शिव का अर्घा जलधरी का घड़ा और ऊपर का पर्दा (छत्र) चाँदी का है, शिवलिंग के पास चाँदी से बनी हुई उनकी शृंगार मूर्ति और नाक में चाँदी ही से बनी हुई डेढ़ हाथ की अन्नपूर्णा की चतुर्भुजी मूर्ति है, मन्दिर के आगे पत्थर के टुकड़ों से छाया हुआ एक द्वार वाला जगमोहन है, जिनमें नन्दी की पीतल की छोटी मूर्ति और गणेशजी की एक मूर्ति बनी है, यह ४८०० फीट है, यहाँ सेकेण्डरी हाई स्कूल भी है।

शिव मन्दिर के आगे लगभग १५ हाथ लम्बा और इतना ही चौड़ा मणिकर्णिका कुण्ड है, कुण्ड के पश्चिम की दीवार में एक ही पत्थर पर हाथी का मुख और पीतल का गोमुख बना है, इन दोनों से झरने का जल कुण्ड में गिरता है, और कुण्ड का जल बाहर निकला करता है। हाथी के मुख पर शाका १६६४ सं० १७९९ और गोमुख पर संवत् १९३२ तथा टिहरी के राजा रणवीरसिंह का नाम खुदा हुआ है, कुण्ड के पूर्व की ओर पुराना नन्दी रक्खा हुआ है, और उसके चारों ओर पत्थर का फर्श है।

विश्वनाथजी के मन्दिर के पास ही एक छोटा गुम्बजदार मन्दिर है उसमें सावल पत्थर के बैल पर बैठी हुई गौरीशंकर की मूर्ति है, मूर्ति के दाहिने भाग में शिव तथा वाम भाग में पार्वती दिखलाई पड़ती है, उसके नीचे पत्थर पर सं० १९३३ खुदा हुआ है, मन्दिर के सामने नन्दी की मूर्ति है।

चौगान के उत्तर के एक मकान में पांडवों की प्राचीन मूर्तियाँ हैं, सामने मन्दाकिनी के उस पार ऊखी मठ है।

१-नाला चट्टी—गुप्त काशी से एक मील पर है,

नारायणकोटि
देवगण
श्री त्रियुगी नारायण जी
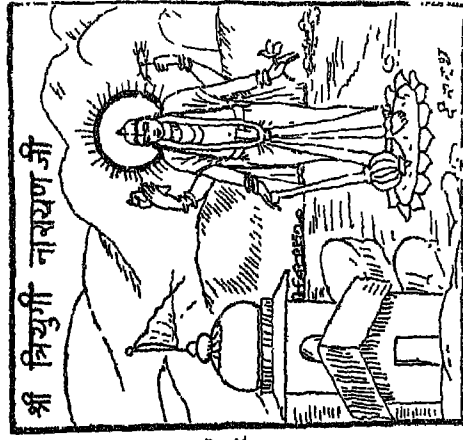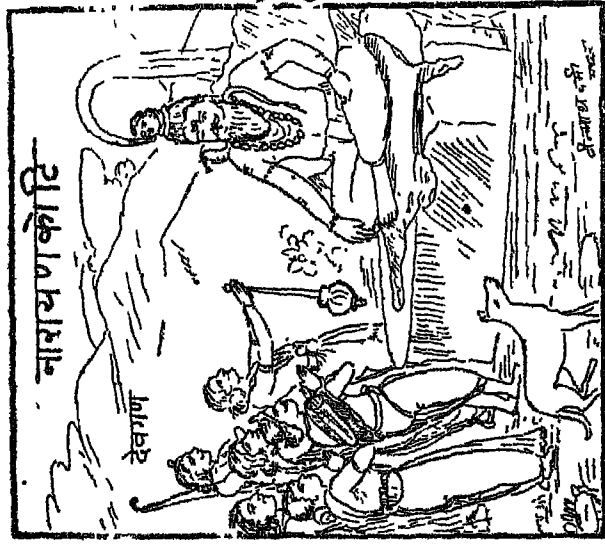
केदारेश्वर
श्री मध्यमेश्वर
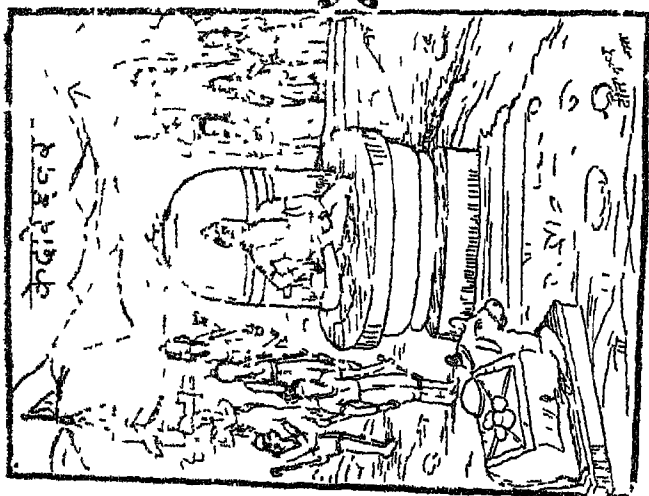
यहाँ पर ललिता देवी का तथा गरुड़ का छोटा मन्दिर है. ललिता देवी के पास ही में शिवजी की मूर्ति है, मन्दिर के पास एक भूला है। नाला से श्री बद्रीनारायण जी को उखी मठ होकर सड़क गई है नाला मिलते ही प्रथम मोचियों की दुकानें मिलती हैं ये लोग अव्वल दर्जे के जूते और बूट बनाते हैं आरम्भ में हरिजन बस्ती है हरिजन लोग ताँबा के कंकण बनाते लोहे का तरह तरह का औजार बनाते और कपड़े मिलते है साथ ही यह छोटी चट्टी है पानी का तथा टट्टी पेशाब का कष्ट है।

२-नारायण कोटि तीर्थ—एक मील है। यहाँ ६७० फीट प्राचीन तीर्थ ३६० देवमन्दिर नारायण कुण्ड में दो गोमुख झरनों से गिरने वाला मीठा पानी स्नान करने का माहात्म्य श्री लक्ष्मीनारायण जी की प्राचीन विचित्र मूर्ति का दर्शन इस मूर्ति की कारीगरी और दिव्य आकृति देखते ही चंचल मन आनन्द प्राप्त करता है। यहाँ अनेक देवताओं के मन्दिर और दर्शन हैं। पास में ही एक विचित्र कारीगरी की बावड़ी और गढ़काली के दर्शन हैं। यहाँ पं० बच्चीराम नाम का एक आदमी अपने चमत्कारिक गुण से भूत, भविष्य, वर्तमान तीनों कालों की बातें बतलाता है। नारायण कोटि का नाम मूर्ख और दानव लोग भेता भी कहते हैं

यहाँ भस्मासुर दानव का तपस्थान भी रहा है। भस्मासुर ने अपने तथा अपने अनुचरों के रहने का स्थान बनाने को ३६० देवमन्दिरों में से निकम्मे मन्दिरों को उखाड़ चीर फाड़ कर तपस्थान बनाया। किसी विद्वान् ने उस स्थान को "भेता" अर्थात् नाश किया हुआ कहा।

दैत्य नारायण नाम लेते ही नहीं थे अतः भेत था भेता कहने लगे, जिसे उनके अनुगामी अब तक भी कहा करते हैं, नारायण कोटि बड़ी भारी चट्टी है। यहाँ हर प्रकार का माल बहुत सस्ता मिलता है इसे सस्ती चट्टी भी कहते हैं। यहाँ बड़े-बड़े मकानात मुकाम करने करने का, कपड़ा धोने का, साग सबजी का सुभीता, यात्रियों का सामान लौटने तक मुफ्त रखने का प्रत्येक दुकानदार का बढ़िया इन्तजाम है, यहाँ कई पनचक्कियाँ ताजा आटा पीसने वाली हैं। नारायण कोटि में प्रसिद्ध-विशाल कार्यालय में हर प्रकार की पुस्तकें, तीर्थों के माहात्म्य, फोटो, चँवर, कस्तूरी शुद्ध शिलाजीत, शुद्ध ऊन का टिकाऊ माल और हर प्रकार की दवाइयाँ सस्ते दामों मे हर वक्त मिल सकती हैं।

नारायण कोटि से दो मील 'कालीमठ पीठ' है। यहाँ से तीन मील उत्तर गया श्यामण्डना देवी और राकेश्वर महादेव हैं। कालीमठ से पूर्व तीन मील पहाड़ पर मतंग शिला (काली शिला) है और पाँच मील

आगे श्री राकेश्वरी देवी के दर्शन है। चन्द्रमा का क्षय-रोग इन्ही देवीजी के तप से दूर हुआ था। राकेश्वरी से आठ मील मध्यमेश्वर द्वितीय केदार के दर्शन हैं। यहाँ से पन्द्रह मील ऊखी मठ है।

नारायणकोटि से एक मील पश्चिम पहाड़ पर जाख (यक्ष) देवता है। मेष संक्रान्ति के दूसरे दिन यहाँ मेला लगता है और यह जाख देवता एक आदमी पर आता है। जो एक बड़ी भारी आग की ढेरी में तीन बार कूदता है लेकिन पैरों के बाल तक नहीं जलते।

३-व्यूंगतल्ला दो मील हैं यहाँ पर काठ के बर्तन बनते हैं लेकिन यह वर्तन यात्रियों के पास फूट जाते हैं।

४-व्यूंगमला—पाव मील पर है चढ़ाई है कुल चढ़ाई डेढ मील की है जो सहज में ही कट जाती है।

५-मैखण्डा—यह स्थान ५५०० फीट है यहां चढ़ाई समाप्त है।

महिष मर्दिनी देवी की कथा

महिष मर्दिनी देवी का मन्दिर है देवी का चित्र एक फीट ऊँचा आठ भुजा वाला श्रेष्ठ धातुका बना हुआ है। इसी के पास अन्य भी कई मूर्तियाँ हैं। मन्दिर के बाहर बीस हाथ लम्बे दो खम्भ गड़े हैं जिन पर चैत्र तथा

आश्विन में देवी की चल मूर्ति झुलाई जाती है इस झूले में कई यात्री भी झूला करते हैं।

केदार के दक्षिण भाग में महिषखंड हैं पूर्वकाल में श्री देवीजी ने महिषासुर को काटकर उसके शरीर के टुकड़े इसी स्थान पर फेंक दिये थे इसलिए यहां पर देवी महिष मर्दिनी नाम से विख्यात हो निवास करने लगी जिसका दर्शन करने से मनुष्य शिव लोक को प्राप्त करता है इसके दक्षिण भाग में कुंभिका धारा है।

६-फांटा चट्टी—मैखण्डा से डेढ़ मील है यहाँ दुकानें अच्छी हैं रास्ता अच्छा है डाकखाना है यहाँ से थोड़ी दूर डाक बँगला है। पास ही दो फर्लांग पहाड़ पर जमदग्नि ऋषि का आश्रम और जमेश्वर महादेव हैं।

७-बादलपुर तीन मील रास्ता चढ़ाई उतार का अच्छी चट्टी है।

८-रामपुर—दो मील है यहाँ भी बाबा काली कमली की धर्मशाला है और यात्रियों को पट्टू तथा कम्बल भी दिये जाते हैं यहाँ से डेढ़ मील पाटी गाड़ नदी का पुल है यहाँ से त्रियुगी नारायण के लिये चढ़ाई आरम्भ होती हैं। दो मील पर शाकाम्भरी देवी है।

शाकाम्भरी

९—कोठरी के सामने एक छोटे मन्दिर में ताँबे के के पात्र में देवी की मूर्ति है. उसी के पास इसी तरह से

पत्तों पर बनी हुई देवियों की बहुत सी मूर्तियाँ हैं।

तीनों लोकों में विख्यात शाकाम्भरी देवी का स्थान है, वहाँ हजारों वर्षों तक प्रति वर्ष में एक मास शाक मात्र खाकर तप किया था, देवी की भक्ति से पूरित मुनीश्वर वहाँ आये, देवी ने उसी शाक से उनका भी सत्कार किया, उसी दिन से उस देवी का नाम शाकाम्भरी हुआ, यहाँ पर तीन दिन शाकाहार करने का महत्व है। आगे एक मील सीधा रास्ता त्रियुगी नारायण का है।

त्रियुगी नारायण

[शिव पार्वती के विवाह का वर्णन]

—:o:—

१०—त्रियुगी नारायण—रामपुर से साढ़े चार मील मील है, डेढ़ मील पाटी गाड का पुल है, तीन मील चढ़ाई का रास्ता है, सेठ हजारीमल जी दूध वाले ने इस मार्ग को सात हजार धन से बना कर यात्रियों को बड़ी सुविधा दी हैं, यहाँ बाबा काली कमली वाले की धर्मशाला है।

त्रियुगी नारायण में ब्रह्मकुण्ड नामक एक चतुष्कोण कुण्ड है, उसके पास ही एक छोटा रुद्रकुण्ड, रुद्रकुण्ड के निकट गोलाकार विष्णुकुण्ड हैं ब्रह्मकुण्ड तथा रुद्रकुंड में भी लोग स्नान करते है और विष्णुकुंड का जल पीते हैं, इसके पास ही एक सरस्वती कुंड है इसमें पंडे लोग यात्रियों को तर्पण कराते हैं, चारों कुण्डों में झरने का जल आता है और ब्रह्मकुण्ड से बाहर निकल जाता है, कुण्डों के पास नारायण का मन्दिर है जिसमें नारायण की मूर्ति धातु की बनी हुई है और लक्ष्मी, अन्नपूर्णा, सरस्वती आदि की मूर्तियाँ हैं, मन्दिर के आगे एक चतुष्कोण कुण्ड है जिसमें निरन्तर अग्नि जलती रहती है, लोग कहते हैं कि यह शिव पार्वती के विवाह की अग्नि है, इसी स्थान पर शिव पार्वती का विवाह हुआ था यह कुण्ड वैवाहिक कुण्ड है, कई यात्री लकड़ी मोल लेकर कुण्ड में डालते हैं और भस्म ले जाते हैं, नारायण के मन्दिर में अन्धकार प्रायः रहता है इसलिए अखंड दीप जलता है मन्दिर के पास अन्य छोटे-छोटे गरुड़ आदि देवताओं के मन्दिर हैं।

गंगोत्री के यात्री जो अधिकांश देवप्रयाग से गंगोत्री जाते हैं पगडंडी से यहाँ आकर केदारनाथ की राह लेते हैं।

केदारमंडल में त्रिविक्रमा नदी के तट पर डेढ़ कोस

के फासले पर यज्ञ पर्वत में नारायण क्षेत्र है, जहाँ पर ही ब्रह्मादिक देवताओं ने हरि का यज्ञ किया था। यहाँ सदा अग्नि विद्यमान रहती है, वहीं पर गौरी से श्री शंकरजी का विवाह हुआ था, वहाँ पर दश रात्रि वास करने वाला वैकुंठ का अधिकारी हो जाता है जो प्राणी वहाँ पर बहती हुई सरस्वती धारा का जल पान करता है वह कोटिशः पापों से मुक्ति हो जाता है, वहां का भस्म धारण करने वाला सर्वदेवमय हो जाता हैं।

शिव पार्वती का विवाह तृतीया को हुआ इसलिए तृतीया का दिन उनको प्रिय हैं।

१—सोनप्रयाग (सोमद्वार) त्रियुगी नारायण से ढाई मील पर है, शाकाम्भरी से सोनप्रयाग तक उतराई है, यहाँ जोर से मन्दाकिनी का जल ऊपर से नीचे गिरता है, वासुकी गंगा और मन्दाकिनी का संगम यहाँ होता है, यहाँ से बारह मील वासुकी तालाब है। सोन-प्रयाग के पास अनेक भिकारियों का स्थान है, इस देश के लोग माँगना छोड़कर ही इन्सान बन सकते हैं। सोन-प्रयाग में मन्दाकिनी का जल शुक्ल तथा वासुकी गंगा का जल हरित देख पड़ता हैं। वासुकी गंगा पर १७० फीट लम्बा पुल है।

कालिका नदी जिसमें वासुकी आदि नाग नित्य

स्नान करते हैं गंगाजी के अंग से उत्पन्न हैं। जहाँ सरोवर में शंखेश्वर महादेव स्थित हैं, नदी के निकास स्थान पर कालिका देवी का मन्दिर है, मन्दाकिनी और त्रिविक्रमा नदी के संगम पर कालीश नामक शिव विराजते हैं।

सोनप्रयाग से आगे आध मील पर मुंड कटा गणेश का स्थान है।

मुण्ड कटा गणेश

[सब प्रथम पूजा का कारण]

यहाँ एक कोठरी में बिना सिर की श्री गणेशजी की मूर्ति है उसके दाहिनी ओर पार्वती जी और बायें एक शिवलिंग स्थापित है।

संक्षिप्त प्राचीन कथा—स्कन्द पुराण (केदारखंड प्रथम भाग ४२वाँ अध्याय) गौरी तीर्थ से एक कोस दूर विनायक द्वार पर गणेशजी स्थित हैं। जिनको पार्वती जी ने स्नान करते समय अपने अंगराग से बना कर द्वार पर बैठा दिया था और शिवजी ने उनका सिर काट डाला पीछे महादेव जी ने हाथी का सिर जोड़ कर गणेशजी को जिला दिया तब से वह गजानन हो गये, जो मनुष्य गणेशजी का पूजन करते हैं उनको शिवलोक मिलता है।

शिवपुराण—(ज्ञान संहिता ३२वाँ अध्याय) एक समय श्री पार्वती जी स्नान कर रही थी नन्दी द्वार पर स्थित था श्री शंकरजी ने अन्दर जाने के लिये अन्दर पग रक्खा कि नन्दी ने अन्दर जाने से रोक दिया इससे क्रुद्ध होकर श्री शंकरजी ने उसका सिर काट डाला और अन्दर चले गये इससे क्रुद्ध होकर पार्वती जी ने अपने प्रताप से सहस्रों नन्दी उत्पन्न कर दिये और शंकरजी से युद्ध करने को कहा वह शक्तियाँ क्रुद्ध होकर श्री शंकर जी तथा सभी देवताओं को पकड़ कर अपने मुख में डालने लगीं भय के मारे ब्रह्मादि देवता पार्वती जी से क्षमा माँगने लगे पार्वती जी ने कहा कि यदि मेरा पुत्र जीवित हो जाय और उसका पूजन सभी देवताओं से पूर्ण होने लगे तब यह शक्तियाँ शान्त हो सकती हैं, सभी देवता उस शरीर का विधिवत् पूजन कर उत्तम दशा की ओर चल पड़े मार्ग में सर्व प्रथम उन्हें एक दाँत वाला हाथी मिला देवताओं ने उसका सिर काटकर बालक के शरीर से जोड़ दिया जिससे कि वह बालक जीवित हो गया और इसकी पूजा सबसे पहले ब्रह्मा विष्णु तथा शिव तीनों ने मिलकर की तभी से इनका पूजन सर्व प्रथम होने लगा।

मुंड कटा गणेश से दो मील पर एक झरना है सोनप्रयाग से गौरी कुंड तक मन्दाकिनी के निकट पहाड़

और उसकी घाटी बड़े बड़े वृक्षों के हरे जंगल से ऐसी भरी हैं कि दूर से पर्वत के पत्थर नहीं देख पड़ते और करारे के ऊपर से बहुतेरी जगह मन्दाकिनी का जल नहीं देख पड़ता।

त्रियुगी नारायण से श्री केदारनाथ जी १२॥ मील हैं उसका रास्ता इस प्रकार है।

त्रियुगी नारायण से सोनप्रयाग (सोमद्वार) तीन मील सीधा रास्ता है।

सोमद्वार से गौरीकुंड २॥ मील है।

गौरी कुण्ड

२—गौरीकुंड में बाबा काली कमली की धर्मशाला है अच्छी अच्छी दुकानें हैं, डाक बँगला है।

यहाँ एक गरम जल का झरना है जिसका कुछ पानी मन्दाकिनी में तथा कुछ गोमुख होकर तप्त कुंड में गिरता है, तप्तकुंड १७ फीट लम्बा और इतना ही चौड़ा है इस झरने का जल इतना गर्म है कि मनुष्य अन्दर घुस कर ठहर नही सकता, तप्त कुंड से आगे खारे जल का कुंड हैं इसी का नाम गौरीकुंड है यात्री सर्व प्रथम इसी में स्नान करते हैं।

कुंड से दक्षिण की ओर ६ हाथ लम्बी उमा

महेश्वर नामक शिला है, इसी के पास एक छोटे मन्दिर में गौरी-महादेव-राधाकृष्ण ज्वाला भवानी की मूर्तियाँ हैं मन्दिर के पीछे मीठे जल का अमृत कुण्ड है।

केदारेश्वर से तीन कोस दक्षिण की ओर मन्दाकिनी के किनारे सभी सिद्धियों को देने वाला गौरीकुण्ड है, वहीं पर श्री महादेवजी पार्वती सहित निवास करते हैं, जो मनुष्य वहाँ स्नान करके वहाँ की मिट्टी को अपने मस्तक पर चढ़ाता है वह श्री महादेव का बड़ा प्रिय होता है, उसके दक्षिण स्थित गौरखाश्रम तीर्थ में सिद्ध गोरखनाथ नित्य निवास करते हैं। यहाँ का जल सर्वदा तप्त रहता है।

गौरीकुण्ड से डेढ़ मील पर चीरवासा है, यहाँ भैरव का मन्दिर है और चढ़ाई का रास्ता है इससे कुछ आगे आधा मील पर जंगलचट्टी है आगे दो मील पर रामवाड़ा है यहाँ का शीतप्रधान वायु बड़ा खतरनाक है, प्रायः यहाँ कई यात्री चलते चलते मूर्छित हो जाते हैं इसलिए यहाँ पर यात्री को मुँह में बादाम मिश्री आदि रखना चाहिये और थोड़ा थोड़ा चलना चाहिये।

श्री केदारनाथ जी

५—केदारनाथ रामवाड़ा से सवा तीन मील पर हैं यह तीन मील बड़ी कठिनता से यात्री पार करते हैं

श्वांस फूलता है दम घुटता है, पोस्ट आफिस डाकबँगला तथा काली कमली वाले की धर्मशाला है।

यहाँ पर सरस्वती-मन्दाकिनी-दूध गंगा स्वर्गद्वारी और महोदधि इन पाँच नदियों का संगम है, जिसमें सभी यात्री स्नान करते हैं इसके पास ही संगमेश्वर महादेव हैं केदारनाथ के यात्री रुद्रप्रयाग से १८ मील मन्दाकिनी के बायें किनारे और इसके आगे दायें किनारे चलते हैं।

केदारपुरी जाड़ के दिनों में बर्फ से ढकी रहती है, मेष (वैशाख) संक्रान्ति से पन्द्रह दिन पीछे मन्दिर के पट खुलते हैं और (वृश्चिक) अगहन संक्रान्ति के आस पास बन्द होते हैं, उस समय वहाँ के पण्डे पुजारी अपने अपने घर चले जाते हैं और केदारनाथ भगवान की पूजा ऊखीमठ में होती है यात्रा के समय में भी यहाँ के रावल (पुजारी) बाहर रहते हैं, यह मन्दिर इस वर्ष से यू० पी० सरकार ने अपने प्रबन्ध में ले लिया है जिससे काफी आय हुई है।

केदारपुरी के चारों ओर बर्फीले पहाड़ हैं केदारनाथ के पहाड़ की सबसे ऊँची चोटी समुद्र से २२८५० फीट और साधारण ११ हजार फीट ऊँची है। वैशाख ज्येष्ठ में भी भूमि पर जगह जगह बर्फ रहती है, सर्दी अधिक होने के कारण यहाँ यात्री अधिक नही रह सकता।

ओं की शृङ्गार मूर्तियाँ पंचमुखी हैं, यह हर समय वस्त्र तथा आभूषणों से सुसज्जित रहती हैं।

मन्दिर के पीछे दो तीन हाथ लम्बा अमृतकुंड है जिसमें दो शिवलिंग स्थित है, पूर्वोत्तर भाग में हंसकुंड तथा रेतस कुंड हैं, रेतस कुंड में जंघा टेक कर तीन आचमन बायें हाथ से तीन आचमन दाहिने हाथ से लिये जाते हैं, यहीं पर ईशानेश्वर महादेव हैं पश्चिम में एक सुवलक कुंड है, केदार मन्दिर के सामने एक छोटे अन्य मन्दिर में लम्बा उदक कुंड है इसमें भी रेतसकुंड की तरह आचमन किया जाता है, इस मन्दिर के पीछे मीठे पानी का एक और कुंड है इसका ही पानी पिया जाता है।

केदार महात्म्य का वर्णन

संक्षिप्त प्राचीन कथा—व्यास स्मृति (चौथा अध्याय) केदार तीर्थ करने से मनुष्य सब पापों से छूट जाता है।

महाभारत शल्य पर्व—(३८वाँ अध्याय) संसार में सात सरस्वती हैं (१) पुष्कर में सुप्रभा (२) नैमिषारण्य में कांचनाक्षी, (३) गया में विशाला (४) अयोध्या में मनोरमा (५) कुरुक्षेत्र में ओघवती (६) गंगाद्वार में सुरेणु (७) हिमालय में विमलोद का (शान्ति पर्व ३१वाँ अध्याय) महाप्रस्थान यात्रा अर्थात् केदाराचल पर

गमन करके प्राण त्याग करने से मनुष्य शिवलोक को प्राप्त करता है। (वनपर्व ८३वाँ अध्याय) केदार कुंड में स्नान करने से सब पाप नष्ट हो जाते हैं, कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी के दिन शिव के दर्शन करने से स्वर्ग मिलता है।

लिङ्ग पुराण—(९२वाँ अध्याय) जो मनुष्य संन्यास लेकर केदार में निवास करता है वह शिव के समान हो जाता है।

वामन पुराण—(३६वाँ अध्याय) केदार क्षेत्र में निवास करने से तथा डींडी नामक रुद्र का पूजन करने से मनुष्य अनायास ही स्वर्ग को जाता है।

पद्म पुराण—(पा० खं० ९१वां अध्याय) कुम्भ राशि के सूर्य तथा बृहस्पति हो जाने पर केदार का दर्शन तथा स्पर्श मोक्षदायक होता है।

कूर्म पुराण—(३६वाँ अध्याय) महालय तीर्थ में स्नान करने से केदार के दर्शन करने से रुद्र लोक मिलता है।

गरुड़ पुराण—(८१वाँ अध्याय) केदार तीर्थ सम्पूर्ण पापों का नाश करने वाला है।

सौर पुराण—(६९वाँ अध्याय) केदार शंकरजी

का महातीर्थ है जो मनुष्य यहाँ स्नान करके शिव जी के दर्शन करता है, वह गणों का राजा होता है

ब्रह्म वैवर्त पुराण—(कृष्ण जन्म खंड १७वाँ अध्याय) केदार नामक राजा सतयुग में सप्तद्वीप का राज्य करता था, वह वृद्ध होने पर अपने पुत्र को राज्य दे वन में जा तप करने लगा, जहाँ उसने तप किया वह स्थान केदार खंड प्रसिद्ध हुआ। राजा केदार की पुत्री वृन्दा जो कमला का अवतार थी अपना विवाह नहीं किया घर छोड़कर तप करने लगी, उसने जहाँ तप किया वह स्थान वृन्दावन प्रसिद्ध हो गया।

शिव पुराण—(ज्ञान संहिता ३८वाँ अध्याय) शिव जी के १२ ज्योतिर्लिंग विराजमान हैं, उनमें से केदारेश्वर लिंग हिमालय पर्वत पर स्थित है, इसके दर्शन करने से महापापी भी पापों से छूट जाता है, जिसने केदारेश्वर लिंग के दर्शन नहीं किये उसका जन्म निरर्थक है।

स्कन्द पुराण—(केदार खंड प्रथम भाग ४०वाँ अध्याय) युधिष्ठिर आदि पांडव गण ने गोत्र हत्या तथा गुरु हत्या के पाप से छूटने का उपाय श्री व्यासजी से पूछा व्यास जी कहने लगे कि शास्त्र में इन पापों का प्रायश्चित नहीं है, बिना केदार खंड के जाये यह पाप

नहीं छूट सकते, तुम लोग वहाँ जाओ निवास करने से सब प्रकार के पाप नष्ट हो जाते हैं, तथा वहाँ मृत्यु होने से मनुष्य शिवरूप हो जाता है, यही महापथ है।

गंगा द्वार से लेकर बौद्धाचल तक पचास योजन लम्बा और तीस योजन चौड़ा स्वर्ग का मार्ग केदार मंडल है, जिसमें निवास करने मात्र से मनुष्य शिवरूप हो जाता है केदार मंडल के अनेक तीर्थ है सैकड़ों शिव लिंग सुन्दर बन नाना प्रकार की नदियाँ, तथा पुण्यपीठ विद्यमान हैं।

हिमालय पर गढ़वाल जिले में ५ केदार हैं (१) केदारनाथ (२) मध्यमेश्वर (३) तुङ्गनाथ (४) रुद्रनाथ (५) कल्पेश्वर।

केदारपुरी में जाने की इच्छा करने वाला भी मनुष्य लोक में धन्य है, उसके ३०० पीढ़ियों तक के पितर शिव लोक में चले जाते है केदार क्षेत्र सब क्षेत्रों में उत्तम हैं।

केदार शिवजी की दक्षिण दिशा में रेतस कुंड है इसका जल पीने से मनुष्य शिवरूप हो जाता हैं, इससे उत्तर में स्फटिक लिंग है जिसके पूर्व सात पद पर बन्हि तीर्थ में बर्फ के बीच में तप्त जल हैं इसी स्थान पर भीम-

मैन ने मुक्ताओं से श्री शंकरजी की पूजा की थी, इससे आगे महापथ है, वहाँ जाने से मनुष्य आवागमन से छूट जाता है।

मधु गंगा और मन्दाकिनी के संगम के पास क्रौंच तीर्थ है, क्षीर गंगा और मन्दाकिनी के संगम पर ब्रह्म तीर्थ है, उसके दक्षिण में बुदबुदाकार जल देख पड़ता है शिवजी के वाम भाग में इन्द्र पर्वत है। यही पर इन्द्र ने तप किया था। यहाँ एक शिव लिंग है। केदारनाथ से दस दण्ड पर हंस कुंड है जहाँ ब्रह्मा ने हंस रूप में रेत पान किया था। जो मनुष्य केदारनाथ के दर्शन कर रेतस कुंड का जल पीता है उसके हृदय में श्री शंकरजी स्थित हो जाते हैं। चाहे वह कितना भी पापी क्यों न हो किसी स्थान में किसी समय मरे किन्तु शिवलोक में निवास करेगा।

यहाँ श्राद्ध तथा तर्पण करने से पितर लोग परमपद को प्राप्त हो जाते हैं। 'केदारपुरी से भीमशिला तक महादेव जी की शैय्या है। इस केदार क्षेत्र में वर्षा काल में कमल और पुष्प होते हैं, श्रावण मास में यात्री उन कमलों द्वारा ही शिव जी का पूजन करते हैं। केदारनाथ जी से दो फर्लांग भुक्कुण्ड भैरव और आधा मील चन्द्र शिला तथा डेढ़ मील चोराबाड़ी ताल है। केदारनाथ से

तीन मील एक बड़ा भारी बासुकी ताल है। श्रीकेदारनाथ जी सम्वत् २००६ की आय सेक्रेटरी श्रीनारायणदत्त बहुगुणा के प्रबन्ध से ७५ हजार के रही है।

ऊखी मठ

—:※:—

केदारनाथ से वापसी का रास्ता नाला चट्टी तक वही है। नाला चट्टी से एक रास्ता गुप्त काशी को चला जाता है, और दूसरा ऊखीमठ को नाला चट्टी से ऊखी मठ ३ मील के लगभग है, पहले उतराई है और पुल से ऊखी मठ तक कड़ी चढ़ाई है।

ऊखी मठ और गुप्त काशी के मध्य में गंगा नदी बहती है पहाड़ की चोटियों से दोनों स्थान दिखाई देते हैं, ऊखी मठ में डाक बंगला, हस्पताल, पोष्ट ओफिस और बाबा काली कमली की धर्मशाला है।

मन्दाकिनी के दक्षिण तट पर उत्तराखंड विद्यापीठ जनता की ओर से स्थापित हैं इस में संस्कृत तथा आयुर्वेदादि सब पढ़ाई होती है। यात्री लोग इस में विशेष दान देते हैं।

गुप्त काशी के विश्व नाथ मंदिर के समान ऊखी मठ में भी एक शिखर दार मंदिर है उसका द्वार दक्षिण की ओर है मंदिर में ओंकार शिव लिंग है उनके पूर्व राजा मान्धाता की बड़ी मूर्ति और आस-पास कई मूर्तियाँ हैं तीन सिंहासनों पर क्रमशः बद्रीनाथ, केदारनाथ तथा तुंगनाथ की मूर्तियां हैं, मन्दिर से पूर्व उत्तर मुख की कोठरी में ऊषा और अनुरुद्ध की मूर्तियां हैं, धातु के पत्र पर चित्ररेखा मूर्ति है, कोठरी से बाहर प्राचीन मूर्तियां हैं।

ओंकार के मन्दिर से पश्चिम की ओर दो-मंजिला मकान है, उसके नीचे की मंजिल में केदार नाथ गद्दी है, गद्दी के पास सुनहरे सिंहासन पर पंचमुखी महादेव हैं, जिनका एक मुख सोने का है, इनका छत्र चाँदी का है, शिव के पास में वस्त्र और आभूषणों से सजी हुई पार्वती की मूर्ति हैं, दूसरे कमरे में कुन्ती और द्रोपदी की मूर्तियाँ और युधिष्ठिर आदि पाँचों पांडवों की मूर्तियाँ हैं। यह स्थान ४५०० फीट है।

संक्षिप्त प्राचीन कथा—स्कन्द पुराण (केदार खंड उत्तर भाग २४ वां अध्याय) गुप्त काशी के पूर्व मन्दाकिनी नदी के दूसरे पार राजा नल ने तप और राजेश्वरी देवी का पूजन किया था, वहाँ के नल कुण्ड

में स्नान करने से जन्म भर के पाप नष्ट हो जाते हैं सूर्यवंशी राजा युवनाश्व के पुत्र मान्धाता ने उस स्थान पर तप करके परम सिद्धि प्राप्त की थी।

मध्यमेश्वर

पंच केदारों में से एक मध्यमेश्वर ऊखी मठ से लगभग १५ मध्यमेश्वरका मन्दिर पक्का बना हुआ है, मन्दिर के निकट धर्मशाला है मार्ग में खाने पीने का सामान नहीं मिलता, साथ में ले जाना उचित है।

शिवजी के ५ क्षेत्र हैं, (१) केदार नाथ (२) मध्य-मेश्वर (३) तुंगनाथ (४) रुद्रालय (५) कल्पेश्वर इनमें से केदारेश्वर का वर्णन हो चुका केदारपुरी से ३ योजन दक्षिण मध्यमेश्वर क्षेत्र है, जिसके दर्शन मात्र से मनुष्य स्वर्ग में निवास करता है।

पूर्व समय में गौड़ देश का एक ब्राह्मण दर्शन की इच्छा से गंगा द्वार में गया, वह वहाँ से अनेक मुनियों को नमस्कार व दर्शन करता हुआ शिव क्षेत्र में पहुँचा फिर वहाँ से मध्यमेश्वर जाकर तीन रात्रि जागरण कर सरस्वती में स्नान तथा पितरों का तर्पण किया, आते समय मार्ग में उस ब्राह्मण के दर्शन मात्र से एक राक्षस शिवरूप होकर कैलाश में चला गया, ब्राह्मण ने अन्त में ब्रह्म सायुज्य पाया।

ऊखी मठ से ५॥ मील दूर ग्वालिया बगड़ में पुल तक सीधा है, इसके बाद चोपता तक सात मील की सख़्त चढ़ाई है, इस सात मील की चढ़ाई के अन्दर कई स्थानों पर तो बहुत ही कठिन चढ़ाई है, यहाँ से इस चढ़ाई के खत्म होने पर चमोली तक उतराई हैं कहीं कहीं सीधा भी रास्ता हैं इस मंजिल में निम्नलिखित चट्टियाँ आती हैं। ऊखी मठ से चमोली २७ मील है और तुङ्गनाथ १५ मील वनियां कुंड १२ मील है, गणेशचट्टी (कंथा) ऊखी मठ से ३॥ मील है। ग्वालिया बगड़ गणेश चट्टी से दो मील है।

हैंड़ा ग्वालिया बगड़ से १ मील है।

गोंद हैंड़ा से आधा मील है।

पोथी वासा, गोंद से डेढ़ मील है।

दोगल भीटा, पोथी वासा से सवा दो मील है।

वनियां कुंड, दोगल भीटा से आधा मील है, वनियां कुंड में बाबा काली कमली की धर्मशाला है।

चोपता, वनियां कुंड सवा मील है।

चोपता से एक रास्ता तुङ्गनाथ जी को जाता है तुङ्गनाथ की दो मील की चढ़ाई है। तुंगनाथ की ऊँचाई १४ हजार फुट है यहाँ बाबा काली कमली वाले

की धर्मशाला है, तुंगनाथ की सड़क रा० ब० हजारीमल जी दूध वाले ने बनवाई है।

तुङ्गनाथ

यह पंचकेदारों में से तीसरा है यहाँ के पर्वत पर सर्दी अधिक होने के कारण पेड़ भी पैदा नहीं होते हैं, पवत के शिखर के पास तुंगनाथ का मन्दिर है मन्दिर के शिखर पर से चन्द्रशेखर का मन्दिर दीख पड़ता है।

मन्दिर के पश्चिम का द्वार पत्थरों का बना है, मन्दिर के शिखर पर १६ द्वार की बारहदरी के अन्दर ही मन्दिर का गुम्बज है तुंगनाथ अनगढ़ प्राकृतिक शिवलिंग है लिंग के सामने दो हाथ ऊँची शंकराचार्य जी की मूर्ति है मन्दिर के सामने एक और छोटा शिव मन्दिर हैं। जाड़े के दिनों में वहाँ के पुजारी पट बन्द करके १२ मील पर नीचे मक्कूमठ चले जाते हैं मन्दिर के आस पास धुआँ के से बादल हर समय देख पड़ते हैं, मन्दिर के पास ही एक गुफा है जिसमें वर्षा के समय यात्री बच सकते हैं, यहाँ से एक मील दूर चन्द्रशेखर का मन्दिर है, तुंगनाथ में बाबा काली कमली वाले की धर्मशाला है।

मान्धाता क्षेत्र (ऊखी मठ) से दक्षिण की ओर दो योजन लम्बा और दो योजन चौड़ा तुंगनाथ क्षेत्र है जिसके दर्शन से मनुष्य सब पापों से छूट जाता है। प्रथम भैरव को नमस्कार फिर क्षेत्र में प्रवेश करना उचित है यहाँ ब्रह्मादिक देवता हर समय महेश्वर की स्तुति करते हैं यहाँ जितने कण जल चढ़ाया जाय उतने सहस्त्र वर्ष तक मनुष्य शिव लोक में निवास करता है बिल्व पत्र से पूजा करने वाला आवागमन से छूट जाता है।

तुंगनाथ क्षेत्र में आकाश गंगा के तीर पर पितरों का तर्पण करने से २१ कुल शिवलोक में निवास करते हैं शिव जी की मूर्ति के पास ही स्फटिक मणि का बना हुआ शिव लिंग है उससे दक्षिण की ओर गरुड़ तीर्थ है। उससे सवा कोस पर मानसर नामक सरोवर है इससे आगे श्री मर्कटेश्वर शिव लिंग हैं, जिनके दर्शन मात्र से मनुष्य शिव लोक में निवास करता है उसके दक्षिण भाग में मृकण्ड ऋषि के आश्रम में महेश्वर देवी विराजती हैं।

भुलकनाचट्टी दो मील उतार है।

जंगल चट्टी दो मील पर है इसको पांगरवासा भी कहते हैं।

मण्डल चट्टी---पांगरवासा से ३॥ मील है रास्ता जंगल का है यहाँ बाबा काली कमली वाले की धर्मशाला है डाक बँगला बड़ा सुन्दर मैदान है चट्टी अच्छी है।

मण्डल गाँव

मण्डल चट्टी बालखिला में पुल है, दूसरी नदी अनसूया और अमृतकुण्ड से आकर मंडल के पास बालखिला नदी में मिल गई है, यहाँ के संगम को व्योम प्रयाग कहते हैं यहाँ पर राजा सगर ने अश्वमेध यज्ञ किया था, पहले वहाँ बहुत मन्दिर थे अब एक देवी का मन्दिर है, इसको मंडल तीर्थ भी कहते हैं।

कथा बालमीकि रामायण (बालकांड) सूर्यवंश में राजा असित हुए जिनको हैहय तालजंघ और शशिविन्दु इन तीन राजाओं ने मिलकर निकाल दिया था तब राजा अपनी पत्नियों सहित हिमवान पर्वत पर रहने लगे वहाँ भाग्यवश दो रानियाँ गर्भवती हुईं एक ने द्वेषवश दूसरी का गर्भ विष देकर गिराना चाहा लेकिन उसने च्यवन ऋषि की सेवा से पुत्र लाभ प्राप्त कर अपना गर्भ सुरक्षित रख लिया, समय पाकर उसके एक पुत्र उत्पन्न हुआ जिसका नाम सगर रक्खा गया।

सगर के भी कोई सन्तान न हो सकी, इससे सगर ने १०० वर्ष तक तप किया फिर भृगु मुनि ने उनसे प्रसन्न होकर पुत्र प्राप्ति का वरदान दिया जिसके कारण सगर की ज्येष्ठ रानी एक पुत्र तथा छोटी रानी के साठ हजार पुत्र हुये।

रुद्रनाथ

यह पाँच केदारों में से चौथा है मंडल गाँव वाले पुल के पास में होकर एक पहाड़ी रास्ता गया है मंडल गाँव से रुद्रनाथ का मन्दिर १२ मील पर है कोई विरला यात्री ही यहाँ जाता है।

सदाशिव जी रुद्रालय का कभी त्याग नहीं करते इस क्षेत्र के दर्शन मात्र से मनुष्य का जन्म सफल हो जाता है पूर्वकाल में देवताओं ने अन्धकासुर से पराजित हो हिमालय पर रुद्रालय में जा शिवजी से अपना दुःख कह सुनाया और उनसे यह वर माँगा कि तुम सर्वदा यहाँ निवास करो श्री शिवजी ने कहा कि मैं अन्धकासुर को मारकर यहीं निवास करूँगा, इसके पश्चात् सभी देवता अपने स्थान को चले गये।

यहाँ पितरों को तारने वाली वैतरिणी नदी बहती है यहाँ पिण्डदान करने से गया के समान फल मिलता है।

पूर्वकाल में युधिष्ठिर आदि पाँडवगण गोत्रहत्या के पाप से छुटकारा पाने को रुद्र क्षेत्र में आये और महादेवजी के दर्शन कर पापों से छूट जाता है।

वैरागना चट्टी दो मील सीधा रास्ता है।

गोपेश्वर

—:०:—

गोपेश्वर—३॥ मील है, गोपेश्वर का शुद्ध नाम गोस्थल है, गोपेश्वर का मन्दिर एक बड़े चौगान के मध्य में खड़ा है, चौगान के चारों ओर मकान धर्मशालायें हैं, यह मन्दिर ३० फुट लम्बा और इतना ही चौड़ा है, मन्दिर के शिखर पर २४ द्वार की बारहदरी है, गोपेश्वर शिवलिंग के पास में चाँदी की शृंगार मूर्ति है, पश्चिम की ओर पार्वती की मूर्ति है। मन्दिर के बाहर पश्चिमोत्तर में वृक्ष पर लपटी हुई कल्पलता है जो बहुत पुरानी है और प्रत्येक ऋतु में फूल देती है मन्दिर से बाहर चौगान में ६ हाथ ऊँची कई धातुओं का बना हुआ त्रिशूल खड़ा हैं। त्रिशूल के समीप गंगीजी की छोटी मूर्ति है।

अग्नि तीर्थ के पश्चिम भाग में गोस्थल नामक स्थान है जहां पार्वती सहित श्रीमहादेवजी निवास करते हैं उस स्थान में त्रिशूल बड़ा आश्चर्यजनक है। वह बलपूर्वक हिलाने से भी नहीं हिलता। उस स्थान में पाँच रात्रि निवास कर जप करने से देव दुर्लभ सिद्धि प्राप्त होती है जहां से पूर्व की ओर चपकेत नामक महादेव हैं, पूर्वकाल शिव जी ने इसी स्थान पर काम को भस्म किया था और फिर कामदेव की स्त्री रति ने भगवान शंकर की आराधना की थी तभी उस स्थान पर रतीश्वर नाम से प्रसिद्ध हो निवास करने लगे, यहाँ रतिकुण्ड है इसमें स्नान करने से शिवलोक मिलता है।

चमोली—गोपेश्वर से २॥ मील है, चमोली इस यात्रा में प्रधान स्थान है, यहां डाकखाना, तारघर, थाना, अस्पताल और कचहरी है, डाक बँगला आदि सभी आवश्यक सामग्री यहाँ पर है। ३१५० फीट है। पक्का बाजार है जो यात्री गोपेश्वर से आते हैं और सीधे ही बद्रीनाथ जी जाना चाहते हैं वह अलकनन्दा के किनारे किनारे सीधे मठचट्टी चले जाते हैं। जो यात्री चमोली में अन्दर जाना चाहते है उनको अलकनन्दा का लोहे का पुल पार करना होता है, पुल के उतरते ही ५० गज के फासले पर श्री काली कमली

वाले की धर्मशाला है, चमोली से नन्द प्रयाग ७ मील है और कर्णप्रयाग २० मील है, कर्णप्रयाग से नन्द प्रयाग तक मोटर लोरी चालू है।

चमोली से ४ मील के फासले पर बिरहि नदी के किनारे गोहना गाँव है, १८९३ ई० की ६ सितम्बर को गोहना गाँव के पास पर्वत का ४०० गज ऊँचा शृंग (खण्ड) बिरही नदी में गिर गया था, उसी के गिरने से नदी का प्रवाह रुक गया, जो एक किनारेसे दूसरे किनारे तक प्रायः १॥ मील लम्बा और एक मील चौड़ा मिटी का ढेर हो गया था और पानी के रुक जाने से एक बड़ा तालाब बन गया, कोई बिरही ताल और कोई गोहना ताल इसे कहते हैं। सन् १८९४ ई० की २५ अगस्त शनिवार को १२॥ बजे रात को ८५० फुट ऊँची डाट अर्थात् पानी का रुकाव होने के कारण ३२० फुट बह गई, पानी विकराल रूप से आगे बढ़ा, पानी बढ़ने से अलकनन्दा की धारा १२ मील तक हो गई एक घंटे में लगभग २० मील पानी की रफ्तार हो गई। जिससे अलकनन्दा के दोनों किनारों पर बसने वाले कई गाँव व कस्बे बह गये जिनमें पुराना श्रीनगर भी शामिल है हजारों व काफी मनुष्यों की क्षति हुई।

कथा इस प्रकार लिखी है :—

नन्द प्रयागमे एक योजन शिवलिंग है, उससे उत्तर की ओर ब्रिहि नदी है, इसमें स्नान करने से सभी पाप नष्ट हो जाते हैं, इससे आगे बिरही नदी है, इसके तट पर पूर्वकाल में सती के विरह से संतप्त होकर श्रीमहादेव जी ने तप किया था, फिर चण्डिका ने प्रसन्न होकर कहा था कि हे देवेस ! मैं हिमवान् गृह में जन्म लेकर आपकी पत्नी बनूँगी उसके उपरान्त महादेवजी कैलाश चले गये, किन्तु उस स्थान पर विरहेश्वर नाम से स्थित हो गये, यहाँ स्नान करने का बड़ा महात्म्य है।

चमोली से बद्रीनाथ ४८ मील है और पहले मठ चट्टी आती है।

मठचट्टी—चमोली से २। मील पर है, चट्टी बहुत सुन्दर वाटिका व वृक्ष सुन्दर हैं।

छिनका चट्टी—मठचट्टी से १॥ मील पर है।

सियासैण (सीताशयन) चट्टी ३ मील पर है। इस पहाड़ी पर ३ मील दूर एक सुन्दर पत्थर पर श्रीरामचन्द्र जी के चरणचिन्ह हैं इस सीता शयन चट्टी पर गंगा किनारे महादेवजी का मन्दिर है। जो ता० ४ अगस्त ४६ की रात के महारोड़े से बचा है।

हाट चट्टी—सियासैण से एक मील पर है।

पीपल कोटी—हाट चट्टी से तीन मील पर है और चढ़ाई है। हाट से आधा मील अलकनन्दा का पक्का पुल है फिर पीपल कोटी की चढ़ाई शुरू होती है यहाँ पर डाक बँगला-डाकघर-टेलीफोन-अस्पताल आदि हैं। बाबा काली कमली वाले की धर्मशाला है।

नोट—चमोली से जोशीमठ तक मोटर की सड़क पीपल कोटी होकर बनाई जा रही है।

गरुड़गंगा—पीपलकोटी से ३॥ मील गरुड़गंगा है, गरुड़गंगा में बाबा काली कमली वाले की धर्मशाला है गरुड़गंगा की धारा पर्वत से नीचे जोर शोर से गिरती है जिसमें यात्री स्नान करते हैं, सर्प के भय से बचने के लिए इसके छोटे-छोटे पत्थरों के टुकड़े यात्री अपने घर ले जाते हैं, यहाँ पर गंगा के किनारे छोटा सा गरुड़ का मन्दिर है यात्री लोग गरुड़जी को पेड़ा चढ़ाते हैं, और यात्रीगण मार्ग की सफलता के लिये गरुड़ जी का प्रसाद भी बाँटते जाते है महाभारत के शान्तिपर्व अध्याय ३२७ में लिखा है कि हिमालय पर्वत पर गरुड़जी सदा निवास करते हैं यहाँ खड़ी पहाड़ी गुफा है और कोठरी में दाहिने गरुड़ और बायें विष्णु की मूर्ति है गंगा पर पुल बना है।

टंगन चट्टी—२ मील पर है चढ़ाई है।

पाताल गंगा—२ मील पर है पाताल गंगा का रास्ता बड़ा भयानक है बड़ी सावधानी से चलना होता है, वर्षा होने पर रास्ता टूट जाता है ऊपर से पत्थर गिरते रहते हैं नीचे से पैर फिसल जाता है नीचे कच्चा पहाड़ है बद्रीनाथ की यात्रा में यह रास्ता बड़ा भयानक है।

गुलाब कोटी—दो मील है यहाँ डाक बँगला है। हेलंग (कुम्हार चट्टी) गुलाब कोटी से दो मील पर ३००० फीट है, यहाँ बाबा काली कमली वाले की धर्मशाला है जगह अच्छी है। पूरब की ओर पहाड़ पर श्री राजराजेश्वरी पीठ है यहाँ नवरात्र में मेला होता है हेलंग के पास डुंगरी गाँव में नारायणसिंह रावत लोगों को ठगने में बड़ा निपुण है अतः इस ठग से बचना चाहिये।

आदि बद्री

कुम्हार चट्टी से ६ मील पश्चिमोत्तर अलकनन्दा के उस पार ऊर्गम गांव है जहां अजमुनि ने तप किया था, उसी स्थान पर पंचबद्री में से आदि बद्री विराजते हैं, अजमुनि की कथा मंडल गांव की कथा में देखे।

श्री जगन्नाथजी

श्री गंङ्गोत्रीजी
श्री जमुनोत्री जी
श्री बद्रीश पचायतन
श्री बद्री
नरबजी
लक्ष्मी जी
गणेशजी
कुबेर जी
नर
नारायण जी
गरुड
भक्त
नारद जी
दीनानाथ
मथुरा
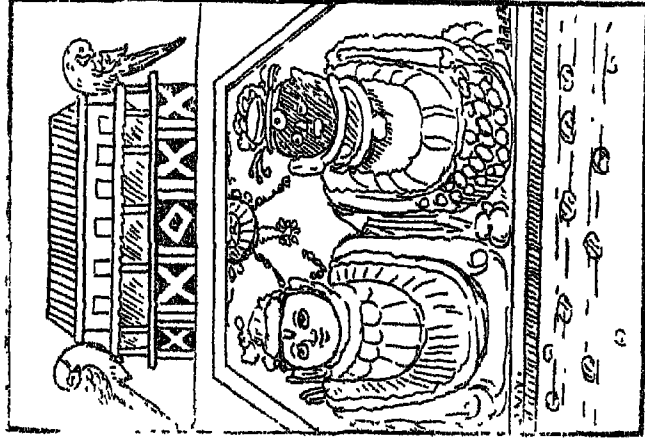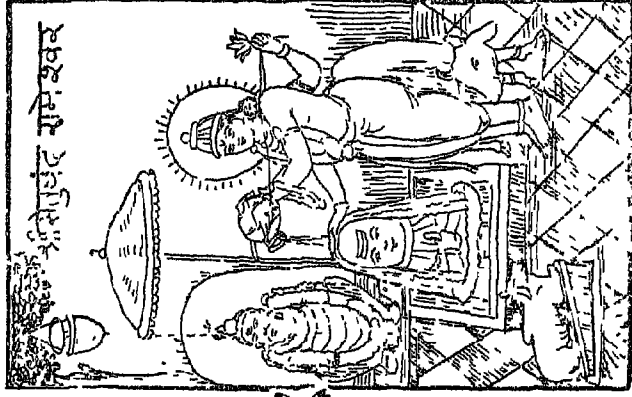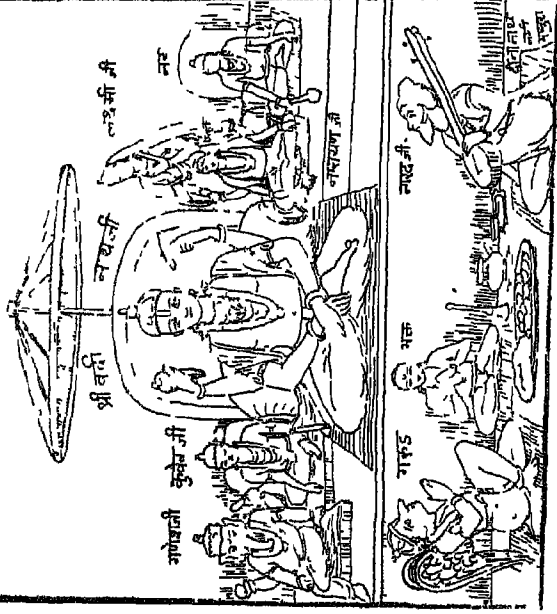
कल्पेश्वर

आदि बद्री से २ मील आगे पंच केदारों में से कल्पेश्वर महादेव का मन्दिर है, कुम्हार चट्टी से आदि बद्री और कल्पेश्वर का दर्शन करके फिर कुम्हार चट्टी पर लौट कर आना होता है यहाँ कोई कोई यात्री जाते है।

शिवजी के पाँच स्थानों में से पांचवां स्थान कल्प-स्थल नाम से प्रसिद्ध है उसी स्थान पर देवराज इन्द्र ने दुर्वासा जी के शाप से श्रीहत होने के पश्चात् महादेव जी का पूजन किया था और कल्पवृक्ष प्राप्त किया था तभी से शिवजी यहाँ कल्पेश्वर के नाम से प्रसिद्ध हुये कथा निम्न प्रकार है—एक समय इन्द्र ऐरावत हस्थी पर चढ़ कर कैलाश में गया, वहाँ पर महर्षि दुर्वासा ने एक स्त्री से फूलमाला मँगा कर इन्द्र को दी इन्द्र ने अभिमान के कारण उस माला को हस्थो के सिर पर रख दिया तब दुर्वासा ने अपना तिरस्कार समझ कर शाप दिया कि तुमने लक्ष्मी से प्रमत्त हो मेरा तिरस्कार किया है इसलिये तुम श्रीहीन हो जाओ तब इन्द्र ने प्रार्थना की कि हे प्रिय ! मैंने अज्ञान से तुम्हारा अपमान किया है अतः क्षमा करो दुर्वासा बोले कि हे दुर्बुद्धि इन्द्र मेरा शाप अमोघ है तुम महादेव जी की आराधना करो

फिर अपना पूर्व पद प्राप्त कर सकोगे, इसके पश्चात् इन्द्र ने अपने शत्रुओं से पराजित होकर राज्य भ्रष्ट हो गया और उसकी लक्ष्मी नष्ट हो गई जंगल में हाहाकार मच गया, तब इन्द्र के सहित सभी देवताओं ने श्री महादेव जी की स्तुति की और कल्पवृक्ष पाकर पुनः अपनी लक्ष्मी प्राप्त की।

इन्द्र ने दस हजार वर्ष तक शिव जी की आराधना कर अपने शाप की व्यथा सुनाई इससे प्रसन्न हो महादेव जी ने कहा कि मेरे तृतीय नेत्र का जल समुद्र में गिरा कर पुनः मन्थन करो, इससे लक्ष्मी पुनः प्रकट होगी, इन्द्र सहित सभी देवताओं ने इसी प्रकार किया और लक्ष्मी तथा कल्पवृक्ष को प्राप्त किया जिस स्थान पर इन्द्र ने तप किया था वह कल्पस्थल नाम से प्रसिद्ध हुआ।

कल्पस्थल में शिवलिंग के दक्षिण की ओर कपिल लिंग है, जिसके दर्शन मात्र से मनुष्य शिवलोक में पूजित होता है, उसके नीचे हिरण्यवती नदी बहती है, इसके तीर पर श्री भृङ्गेश्वर महादेव हैं, इस क्षेत्र का विस्तार २ कोस है।

केदार, मध्यमेश्वर, तुंगनाथ, कल्पेश्वर और महा-

लय रुद्रनाथ के यह पाँच महा स्थान हैं, जो मनुष्य भक्ति भाव से ज्ञान से अज्ञान से इन क्षेत्रों में जाते हैं और दर्शन मात्र से ही पापी मनुष्य भी पवित्र हो जाते हैं और इस लोक में सुन्दर भोगों को भोग कर अन्त में मोक्ष पाते हैं।

वृद्ध बद्री

कुम्हारचट्टी से एक पगडंडी गई है यहाँ पर दो मकान और वृद्ध बद्री का मन्दिर है। दाहिने ओर पहाड़ पर पैनी गाँव है, और कई गुफायें यहाँ पर पहाड़में पाई जाती हैं, इस स्थान के देखने से पता चलता है कि पूर्व-काल में यहाँ साधु महात्मा तप करने वाले रहते रहे हैं।

खनोटी चट्टी—हैलंग से १ मील पर है।

झरकुला—खनोटी से २॥ मील पर है।

सिंह धार—२ मील है, यहाँ से जोशीमठ तक तमाम वस्ती और दुकान मकानात ही हैं।

जोशीमठ—सिंहधार से १ मील ७५०० फीट है।

जोशी मठ

जोशी मठ का नाम ज्योतिष्पीठ है श्री आदि भगवान शंकराचार्य जी ने यहाँ पर अपना मठ स्थापित किया इसी लिये यह जोशीमठ प्रसिद्ध हुआ यहाँ पर

भगवान शंकराचार्य ने मठ की स्थापना की थी यहीं पर शंकर गुफा है जहाँ बैठ कर उपनिषद् और शांकर भाष्य लिखा गया है कहा जाता है कि जो शहतूत का पेड़ वहाँ है वह आद्य शंकराचार्य के समय का है जिसको २४ सौ वर्ष के लगभग होते हैं बहुतकाल तक मठ की प्रक्रिया यहाँ से चलती रही और धर्म प्रचार का कार्य होता रहा और बद्रीनाथ के मन्दिर की सब व्यवस्था इस मठ के आधीन रहती चली आई और पूजा का प्रबन्ध मठ द्वारा ही होता रहा।

बड़े हर्ष का विषय है कि १० वर्ष से इस मठ में अनन्त श्री विभूषित जगद्गुरु शंकराचार्य श्री ब्रह्मानन्द सरस्वती जी हैं और अब इस मठ का कार्य आप के द्वारा हो रहा है ज्योतिष्पीठ के मठ में किसी प्रकार का चढ़ावा भेंट आदि कुछ न ली जाती है इस ज्योतिष्पीठ मठ को किसी प्रकार की किसी की दी हुई कोई आमदनी नहीं है यह एक महापुरुष की दैवी शक्ति का विकास है ज्योतिष्पीठ में बड़ा सुन्दर स्थान बना हुआ है और श्री पूर्णागिरि देवीका मन्दिर है और पीठाश्रम में ब्रह्मचर्याश्रम संस्कृत विद्यालय की स्थापना हो चुकी है।

जोशीमठ में डाकखाना, तारघर, शफाखाना, पुलिस, डाकबँगला आदि सभी स्थान हैं बाबा काली कमली वाले की धर्मशाला है बड़ी अच्छी सुन्दर बस्ती है शीत-

काल में श्री बद्रीनाथ की पूजा और चल मूर्ति यहां पर रहती है और मन्दिर का कार्यालय दीपमालिका के बाद पट खुलने तक यहीं रहता है। यहाँ पर नृसिंह जी का मन्दिर तथा वासुदेव मन्दिर है। नृसिंह जी के मन्दिर में राम लक्ष्मण बद्रीनाथ और चण्डी की मूर्तियाँ हैं।

वासुदेव के मन्दिर में भगवान कृष्ण की श्याम मूर्ति व बलदेव की मूर्ति हैं, दोनों मूर्तियाँ बहुत पुरानी हैं लोगों का कहना है कि इनकी स्थापना भगवान शंकराचार्य ने की थी, इस मन्दिर में गणेश जी की ८ भुजा की विचित्र मूर्ति है, ९ दुर्गाओं की ९ मूर्तियाँ हैं एक स्थान पर शिव पार्वती की मूर्ति है, जिसको लोग तांडव शिव मूर्ति कहते हैं, मन्दिर के बाहर चबूतरे पर पीतल की गरुड़ की मूर्ति है।

ज्योतिर्मठाम्नाय

इस अम्नाय का नाम ज्योतिर्मठ है जो उत्तर में है। इसका दूसरा नाम श्रीमठ है। सम्प्रदाय आनन्दवार है। अंकित पद का नाम गिरि, पर्वत तथा सागर है, क्षेत्र का नाम बदरिकाश्रम है, देवता का नाम नारायण है, देवी का नाम पूर्णागिरी है, आचार्य का नाम तोटक है, तीर्थ का नाम अलकनन्दा है, ब्रह्मचारी का नाम

'आनन्द' है, महावाक्य 'अयं आत्मा ब्रह्म' वेद अथर्व है, गोत्र भृगु है, कुरु, कारमीर, काम्बोज, पांचाल देश जो उत्तरीय भाग में हैं वह ज्योतिर्मठ के अन्तर्गत हैं, इस मठ का निर्माण ग्यारह वर्ष की आयु में जगद्गुरु भगवान शंकराचार्य ने कलिसम्वत् २६४२ में किया था इस मठ के जगद्गुरु तोटकाचार्य (त्रोटकाचार्य) शंकराचार्य हुए ।

जगद्गुरु श्री आद्य शंकराचार्य

वैशाख शुक्ल पंचमी आचार्य शंकर की जयन्ती की तिथि है। उसी तिथि को आचार्य इस धराधाम पर अवतीर्ण हुए थे। धर्म की मर्यादा तथा वैदिक धर्म की रक्षा के लिए हमारे शंकर ने जितना अनमोल काम किया है उसके लिये हमें उनका परम कृतज्ञ होना चाहिए। आचार्य द्वारा प्रतिष्ठित अद्वैत मार्ग सारे संसार का व्यावहारिक धर्म है।

आज से लगभग तेरह सौ वर्ष पूर्व शङ्कर का जन्म केरल प्रान्त के कालटी ग्राम में नम्बूदरी ब्राह्मण शिवगुरु (केशव भट्ट) की धर्मपत्नी सती देवी के गर्भ से हुआ था। उनके जीवन की घटनाओं में से एक ही श्लोक यहाँ काफी होगा। 'अष्ठ वर्षे चतुर्वेदी द्वादशे

सर्व शास्त्रवित् । षोडशे कृतवान् भाष्यं द्वात्रिंशे मुनि-रभ्यगात्' ॥ १ ॥ आठवें वर्ष में उन्होंने चारों वेदों का अध्ययन समाप्त कर दिया, बारहवें वर्ष में सब शास्त्रों के पण्डित बन गये, सोलहवें साल में उन्होंने भाष्योंकी (ब्रह्मसूत्र, गीता तथा उपनिषदों पर भाष्यग्रन्थों की) रचना की और बत्तीसवें वर्ष वे कैलाशवासी हो गये। इन बत्तीस वर्षों के अन्दर उन्होंने वह कार्य कर दिखाये जो आज भी हमें आश्चर्य चकित कर देते हैं।

भारत के प्रसिद्ध सुधारक आचार्य शंकर व्यवहार-कुशल यथार्थवादी थे। यही तो उनकी भारी विशेषता है। ऊँचे अध्यात्मवेत्ता होने पर भी वे अत्यन्त व्यवहार-कुशल हैं। वेद तथा धर्म के रक्षण कार्य को भविष्य में सुचारु रूप से चलाने के लिये उन्होंने परोप-कार परायण सन्यासियों को संघरूप में संघटित किया तथा भारत के चारों धामों में उन्होंने चार मठों की स्थापना की—शृङ्गेरीमठ (दक्षिण भारत मैसूर में) गोवर्धन मठ (जगन्नाथपुरी में) शारदा मठ (द्वारिका में) तथा ज्योतिर्मठ (बदरी-नारायण में) इन दोनों संस्थाओं ने आचार्य के उद्देश्यों की पूर्ति अच्छे ढंग से की है।

भविष्य बद्री

---:०:---

जोशी मठ के शफाखाने के पास से एक मार्ग जाता है वहाँ से ६ मील तपोवन है, इस तपोवन के सम्बन्ध में महाभारत शान्तिपर्व ३२७वें अध्याय में लिखा है कि व्यासदेव हिमालय की पूर्व दिशा को अवलम्बन करके यहाँ आये थे और अपने शिष्यों को वेद पढ़ाते थे और उनके पुत्र सुकदेव भी इस आश्रम में आये। इस तपोवन से ५ मील आगे धौली गंगा के निकट पंच बद्री में से भविष्य बद्री का मन्दिर है जिसको तप बद्री भी कहते हैं।

विष्णु प्रयाग

जोशी मठ से विष्णु प्रयाग ३ मील ४५०० फीट है, बद्रीनाथ को जाते हुए बड़ी उतराई है और आते हुए बड़ी चढ़ाई है, नीचे जाकर धौली गंगा का १३० फुट लम्बा काठ का पुल है जब यात्री पुल पर चलते हैं तो पुल हिलता है। यहाँ पर उत्तर की तरफ से अलकनन्दा आई है और पूर्व की नीची घाटी से धौली गंगा आई है जिसको लोग विष्णु गंगा भी कहते हैं यहाँ पर अलकनन्दा और धौली गंगा का संगम है।

श्री केदारेश्वर जी

इसके सम्बन्ध में यह लिखा है कि विष्णु प्रयाग में १० प्रधान तीर्थ हैं ब्रह्मकुण्ड, शिवकुण्ड, गणेशकुंड, भृङ्गीकुण्ड, ऋषिकुण्ड, सूर्यकुण्ड, दुर्गाकुण्ड, धनद और प्रह्लादकुण्ड हैं। महर्षि नारद ने इस प्रयाग में विष्णु की आराधना की सर्वज्ञत्व लाभ किया तभी से यह विष्णुकुण्ड या प्रयाग प्रसिद्ध हुआ शेष ८ कुण्ड इसके थोड़े फासले पर हैं लेकिन आना जाना कठिन है।

बलदौड़ा चट्टी—विष्णु प्रयाग से १॥ मील है यहाँ बाबा काली कमली वाले की धर्मशाला है रास्ता साधारण चढ़ाई का है।

घाटचट्टी—बलदौड़ा से ३ मील पर है रास्ता साधारण चढ़ाई का है।

———

पाण्डुकेश्वर नाम कैसे पड़ा

—:*:—

पांडुकेश्वर—घाटचट्टी से दो मील ६००० फीट है यहाँ पर डाकबँगला, पोस्ट आफिस तथा बाबा काली कमली वाले की धर्मशाला है। पूर्वकाल में राजा पांडु ने मृग रूपी मुनि के शाप से दुखी होकर इस स्थान पर तप किया था तभी से यह स्थान पाण्डु स्थल नाम से प्रसिद्ध हो गया, उस समय विष्णु भगवान प्रकट होकर बोले कि हे पाण्डु ! तुम्हारे नेत्र धर्मादिकों के अंश से बलवान् पुत्र उत्पन्न होंगे, ऐसा कह विष्णु भगवान अन्तर्ध्यान हो गये, उस स्थान पर पाण्डवीश्वर महादेव विराजते हैं।

योग बद्री

पाण्डुकेश्वर में योग बद्री का शिखरदार मन्दिर है यह बहुत प्राचीन होने के कारण जर्जर हो गया है, योग बद्री पाँच बद्रियों में से एक है।

वासुदेव का मन्दिर—योग बद्री से आगे पास ही सामने इसी के आकार का एक बासुदेव जी का मन्दिर है।

शेष धारा

शेष धारा—पाण्डुकेश्वर से १ मील पर था और यहाँ पर शेषजी का मन्दिर व रामानुज कोट की धर्मशाला थी किन्तु सम्वत् १६६८ की बाढ़ में सब कुछ बह गया अब किसी स्थान का भी पता नहीं है। यह शेष की तपस्या का स्थान था। अब पास ही में धर्मशाला बन गई है।

हनुमान चट्टी—यह बद्रीनाथ से चार मील पर है। यहाँ पर आमने सामने नई और पुरानी धर्मशालायें हैं, और हनुमान जी का बड़ा दिव्य मन्दिर है पहले यहाँ पर हनुमान जी निवास करते थे, महाभारत में उसकी बड़ी रोचक कथा है, जब पाण्डव वनवास के दिनों में गन्धमादन पर्वत पर विचरण कर रहे थे तब बद्रीनाथ (अलकापुरी) जाते समय भीम यहाँ से जा रहे थे रास्ते में उन्हें एक पतला दुबला बन्दर पड़ा दिखाई दिया, उसकी पूँछ बड़ी थी, रास्ते को रोके पड़ा था भीमसेन को बल का बड़ा गर्व था इन्होंने कहा ओ बन्दर रास्ते को रोके हुए क्यों पड़ा है पूँछ हटा ले बन्दर ने विनीत भाव से कहा—भैय्या मैं बूढ़ा हो गया हूँ, मुझमें इतनी शक्ति नहीं रही थोड़ा तुम ही कष्ट करो, मेरी पूँछ को हटा कर उधर कर दो भीम ने उपेक्षा से एक हाथ से पूँछ

को हटाना चाहा लेकिन पूँछ नही उठ पाई, फिर भीम ने पूरी शक्ति लगाई, मगर पूँछ टस से मस नहीं हुई, भीमसैन के आश्चर्य का ठिकाना न रहा, दोनों पवन पुत्र थे, परिचय पाकर दोनों गले लगे भीमसैन की प्रार्थना पर हनुमान जी ने अपना असली रूप दिखाया जिसे देखते ही भीम चकित हो गया, वहाँ अब भी हनुमान जी की मूर्ति है।

वैखानस मुनि का स्थान

हनुमान चट्टी के पास अलकनन्दा के उस पार पर क्षीर गंगा और घृत गंगा का संगम है उस स्थान पर वैखानस मुनि ने तप किया था लोग कहते हैं कि यहाँ पर किये गये यज्ञ की भस्म अब तक पाई जाती है, राजा मरुत ने भी यज्ञ इसी स्थान पर किया था।

संक्षिप्त प्राचीन कथा स्कन्द पुराण केदारखंड (५८ वाँ अध्याय) बद्रीकाश्रम से २ कोस पर वैखानस मुनि का आश्रम और यज्ञ भूमि है। जिस स्थान पर देवताओं को यज्ञ की आहुति दी गई थी, उसे आजकल 'औत' कहते हैं यह गांव ८–१० घर का है। जिसके पास विन्दुमती नदी बहती है, यहाँ पर अब तक भी जले हुए यव (जौ) तिल तथा अङ्गार देख पड़ते हैं। उससे

आगे पर्वत पर योगेश्वर नामक भैरव हैं, उसका पूजन सर्व-पाप-भञ्जन है।

राजा मरुत के यज्ञ में बृहस्पति सहित सम्पूर्ण देव हिमालय पर्वत पर एकत्रित हुए थे, युधिष्ठिर आदि पाण्डव गण व्यासदेव जी की आज्ञानुसार राजा मरुत के यज्ञस्थल में रत्न लाने के लिये अपनी सेनाओं सहित एकत्रित हुए और भेंट में ऊँट घोड़ों हाथियों एवं रथों में भर कर नाना प्रकार के रत्न हस्तिनापुर को ले गये। यह स्थान वैखानस तीर्थ ही है।

हनुमान चट्टी से १ मील घोर सिल पुल और उससे आगे १ मील चढ़ाई से रडंग का लोहे का पुल है आगे १ मील चल कर सीधा रास्ता है। यहाँ पर एक चाय की दुकान मिलती है आगे आधा मील पर कांचन गंगा की चढ़ाई है यहाँ से श्री बदरी नारायण पुरी के दर्शन होते हैं। श्री बद्रीकापुरी के दर्शन करते ही सारे पहाड़ों की थकान दूर हो जाती है और मन प्रफुल्लित हो जाता है। आगे आधी मील पुरी है। पहले अलकनन्दा का पुल पार कर ऋषि गंगा का पुल लांघते ही श्रीबदरी विशाल पुरी जो १०२४४ फीट है और नर नारायण पर्वतों के बीच अलकनन्दा के दक्षिण तट पर २ फर्लांग लम्बी है जिसके आखीरी हिस्से में भगवान् का मन्दिर

है। उस पुरी में अनेक जन्मों के पुण्य उदय होकर आप पहुँचे हैं एक बार प्रेम से बोलिये भगवान बदरी विशाल की जय।

श्री बद्रीनाथ

बद्रीनाथ में अलकनन्दा नदी उत्तर से आई है, यहाँ चारों तरफ़ पर्वतों के ऊपर बर्फ़ जमी है, जाड़े के दिनों में भूमि और मकानों पर सर्वत्र बर्फ का ढेर लगा रहता है, बद्रीनाथ की सबसे ऊँची चोटी समुद्र की सतह से २३२०० फुट है।

बद्रीनाथ का मन्दिर—इसके शिखर पर दोहरी चकूटी है, इसमें चार द्वार हैं, मन्दिर के अन्दर सामने ही एक हाथ ऊँची बद्रीनारायण की द्विभुजी श्यामल मूर्ति है, बहुमूल्य वस्त्र आभूषण तथा विचित्र मुकुट से सुशोभित ध्यानमग्न बैठे हैं, इनके ललाट पर हीरा लगा हुआ है, ऊपर सोने का छत्र है, बद्रीनारायण के पास लक्ष्मी जी, नर, नारायण, नारद, गणेश, गरुड़, कुबेर, तथा उद्धव जी की मूर्तियाँ हैं, कुबेर का मुख मण्डल मात्र है, कहा जाता है कि बद्रीनाथ जी पहले गुप्त थे लगभग ९वीं शताब्दी में भगवान श्री शङ्कराचार्य जी ने इनकी

मूर्ति को नदी में पाया और मन्दिर बनवा कर स्थापित किया।

कूर्म पुराण ब्राह्मी संहिता २९वें अध्याय में लिखा है कि नील लोहित शङ्कर भक्तों के हितार्थ श्रौत तथा स्मार्त मत की प्रतिष्ठा के लिये सकल वेदान्त सार ब्रह्मज्ञान तथा वास्तविक सनातन धर्म का उपदेश अपने शिष्यों को देंगे। शिव पुराण सातवें खण्ड के प्रथम अध्याय में श्री शंकराचार्य जी को शिव का अवतार माना है।

बद्रीनाथ जी के पट नियत समय पर दिन में चार बार खुलते हैं, यात्री लोग किसी समय बीच वाले दालान में जाकर, और किसी समय जगमोहन में रहकर दूर ही से दर्शन करते हैं। साधारण यात्री अनेक भाँति के मेवे और चने की दाल, वस्त्र, भूषण, रुपये पैसे भी बद्रीनाथ जी के अर्पण करते हैं कुछ यात्री सोने, चांदी या ताम्बे के पतरों पर लिखी हुई प्रतिमा को बद्रीनाथजी से स्पर्श करके अपने साथ घर ले जाते हैं, भगवान् बद्रीनाथ जी का प्रातःकाल जलपान एवं मध्यान्ह के समय ३ मन का भोग लगता है, जिसको यात्री जाति-भेद विचार के बिना बड़े प्रेम तथा श्रद्धा के साथ खाते हैं, पूर्व समय की अपेक्षा अब मार्ग सुगम हो गया है, यहाँ प्रतिवर्ष लाखों की संख्या में यात्री आते हैं।

बद्रीनाथ के मन्दिर के पीछे धर्मशाला नाम की एक शिला है, बायें ओर एक कुण्ड है, उत्तर की ओर एक कोठरी में घंटाकर्ण की बिना धड़ की मूर्ति है इन्हें भगवान का द्वारपाल या कोतवाल कहते हैं इनकी कथा हरिवंश पुराण ७६वें अध्याय से १३ अध्याय में बड़ी सुन्दर वर्णित हैं और पूर्व मैदान में पाषाण की गरुड़ की मूर्ति है, मन्दिर के आस पास अन्य कई मूर्तियाँ हैं। मन्दिर से दक्षिण की ओर एक गुम्बजदार लक्ष्मीजी का मन्दिर है, इसमें लक्ष्मीजी की श्याम वर्ण मूर्ति वस्त्र व आभूषणों से सुसज्जित है मन्दिर के पास ही एक बड़ा भंडार है जिसमें श्री बद्रीनाथ जी के प्रसाद स्वरूप ३ मन भात पकते हैं।

पंच तीर्थी—बद्रीकाश्रम में ऋषगंगा, कूर्मधारा, प्रहलाद धारा, तप्त कुंड और नारद यह पाँच पावन कुंड हैं इन्ही का नाम पंच तीर्थी है। (१) ऋषिगंगा–यह बद्रीनाथ के मन्दिर से सवा मील पर है और थोड़ा आगे अलकनन्दा में मिली है इसमें यात्री स्नान व मार्जन करते हैं जल साफ है। कूर्म धारा–बद्रीनाथ मन्दिर से कुछ दूर दक्षिण की ओर एक दीवार में कूर्म का मुख बना है, (३) प्रहलाद धारा–कूर्म धारा से उत्तर की ओर एक चबूतरे के नीचे एक नल के द्वारा पानी

गिरता है, इसको प्रह्लाद धारा कहते हैं। (४) तप्तकुंड–बद्रीनाथ मन्दिर के सामने ६५ सीढ़ियों के नीचे १५ हाथ लम्बा १२ हाथ चौड़ा एक कुंड है, इसमें जल हर समय गरम रहता है, इसी का नाम तप्त कुंड है। (५) नारद कुंड—तप्त कुंड के पास ही पूर्वोत्तर के कोने पर अलकनन्दा में नारद कुंड है, यहीं पर एक नारद शिला है, जिसके नीचे अलकनन्दा का पानी बड़ी संकीर्ण गुफा से गिरता है, इस जगह भी यात्री स्नान या मार्जन करते हैं।

पंचशिला—बद्रीकाश्रम में नारद शिला, वाराह शिला, मार्कण्डेय शिला, नृसिंह शिला, और गरुड़ शिला यह पाँच शिला प्रसिद्ध हैं।

मातामूर्ति २। मील है।

वसुधारा—बद्रीनाथ से २। मील उत्तर मानां गावाँ बस्ती और २। मील पर वसुधारा तीर्थ है, आषाढ़ और श्रावण के महीनों में बर्फ कम होने पर कोई कोई यात्री वसुधारा में स्नान करने जाते हैं, यहाँ पूर्वकाल में अष्ट वसुओं ने तप किया था, यहाँ ऊंचे पहाड़ से यह धारा गिरती है। पुरी के पीछे चरणपादुका और पुरी के सामने अलकनन्दा पार शेष नेत्र है यहाँ तारघर, डाक-खाना, अस्पताल धर्मशाला, सदावर्त है।

ब्रह्मकुंड से मातामूर्ति तक—ब्रह्मकुंड मां ब्रह्मतीर्थ, अग्नि अनसूया तीर्थ, इन्द्रपद तीथ या इन्द्रधारा, धर्मक्षेत्र या मातामूर्ति।

मातामूर्ति से सतपथ या स्वर्गारोहण यात्रा

मातामूर्ति से इसी ओर—लक्ष्मीवन, सहस्रधारा (१) पञ्चधारा तीर्थ (२) द्वादशादित्य तीर्थ (३) चतुःश्रोत तीर्थ और आगे सत्यपद, सत्पथ या संतपथ तीर्थ १०० गज लम्बा स्वच्छ सुन्दर सरोवर है। आगे सोमकुंड, सूर्यकुंड, विष्णुकुंड, श्रीराम गुफा, बसुधारा, और अलकापुरी है।

नीचे आने में तिब्बत से उतर कर सरस्वती गंगा अलकनन्दा से आकर मिलती है। वह 'केशब प्रयाग' है। पास ही सम्याप्रास तीर्थ भगवान् वेद व्यास जी का स्थान है, व्यास गुफा, गणेश गुफा, मुचुकुन्द गुफा कलाप ग्राम, चतुर्वेद धारा, और शेषनेत्र होते हुए श्री पुरी में पहुँचे, बोलो बद्री विशाल लाल की जय।

मन्दिर की आय—प्राचीन राजाओं के भेंट किये गाँव गढ़वाल, कमायूँ तथा टिहरी में हैं जिनकी वार्षिक आय २० हजार के लगभग है, इसके अलावे चढ़ावा भगवान की भेंट, पूजा, अटका, भोग, गद्दी भेंट, नित्य

भोग, जीर्णोद्धार कोष, सहस्त्रार्चन, अष्टोत्तरी, कपूर आरती, बड़ी आरती, बाल भोगादि कई जरिये आमद के हैं।

रावल (पुजारी) श्री बदरी नारायण जी की पूजा दक्षिणी नम्बूद्री ब्राह्मण करते हैं, गत १५० वर्ष तक इनका ही एक मात्र आधिपत्य इस स्थान पर रहा लेकिन इन लोगों के कुप्रबन्ध के कारण ही एक नया कानून बना और अब प्रबन्ध से उनका कोई मतलब नहीं रहा वे सिर्फ तनख्वाह पाकर भगवान की पूजा के अधिकारी ही रह गये हैं।

(विशेष व्यवस्था का वर्णन पुस्तक के प्रारम्भ में देखें)

पेश्तर श्री बदरी नारायण मन्दिर श्री शंकराचार्य के ज्योतिर्मठ के मठाधीशों के प्रबन्ध में ही रहता था वे ही इसकी पूजा आदि की व्यवस्था करते थे। महाराजा टिहरी नरेश के किसी पूर्वज महाराज अजयपाल ने पन्द्रहवी संदी में जो ३७वें राजा थे, अनेक छोटे छोटे गढ़वाली ठाकुरों को जीत कर विशाल राज्य स्थापित करके कई गाँव जागीर भोग पूजा के लिये लगादी।

सम्वत् १५०० से १५५७ तक ज्योतिर्मठ के मठाधीश या श्री बदरीनाथ के रावल, श्री बालकृष्ण स्वामी रहे हैं इनके बाद २१वें मठाधीश श्री रामकृष्ण

स्वामी सम्वत् १८२३ से १८३३ तक आचार्य रह कर सं० १८३३ में देहान्त हुए तो वहाँ न कोई दूसरा सन्यासी ही था और न कोई ब्रह्मचारी ही सिर्फ केवल था तो उस समय उनका रसोइया गोपाल नामक नम्बूद्रि ब्राह्मण ही था। टिहरी गढ़वाल नरेश महाराज प्रदीप शाह जो ५१वें राजा थे वे उस समय यात्रा करने को पुरी में पहुँचे थे, उनके सामने यही प्रश्न आया तो उन्होंने रसोइये को पूजा का अधिकारी नियुक्त कर दिया।

मन्दिर श्री बदरीनाथ जी के आधीन ३० मन्दिर हैं उनमें से (१) श्री बासुदेव मन्दिर जोशीमठ (२) भविष्य बदरी सुभांई (३) सीतामठ चांई (४) ध्यान बदरी उर्गम (५) श्री वृद्ध बदरी अणिमठ (६) श्री नृसिंह जी दाड़मी (७) श्री नृसिंह जी पाखी (८) श्री लक्ष्मीनारायण डिम्बर (९) श्री लक्ष्मीनारायण कुलसारी इन नौ मन्दिरों की पूजा डिमरी लोग करते हैं।

बदरी पाँच हैं।

(१) श्री बदरी विशाल (२) नृसिंह बदरी, जोशीमठ (३) वृद्ध बदरी, अणिमठ (४) भविष्य बदरी तपोवन (५)

प्रयाग पाँच हैं।

(१) देव प्रयाग (२) रुद्रप्रयाग (३) कर्णप्रयाग (४) नन्दप्रयाग (५) विष्णु प्रयाग (प्रयागराज)।

केदार पाँच हैं।

(१) श्री केदारनाथ (२) मध्यमेश्वर (३) तुङ्गनाथ (४) रुद्रनाथ (५) कल्पेश्वर।

काशी तीन हैं।

(१) गुप्त काशी (२) उत्तर काशी (३) काशी-वाराणसी।

पुरी सात हैं।

(१) अयोध्या (२) मथुरा (३) मायापुरी (हरद्वार) (४) काशी (५) काञ्ची (६) अवन्ती (उज्जैन) (७) द्वारकापुरी।

कुछ प्रसिद्ध दर्शनीय स्थान

—:०:—

हेमकुण्ड (लोकपाल) पाण्डुकेश्वर और घाट चट्टी के बीच एक धर्मशाला और एक कच्चा पुल है उस पुल को पार कर साधारण बटिया द्वारा नदी के किनारे २ मील पर पुन गाँव मिलता हैं। वहाँ से आगे भ्यूंडार गाँव ४ मील है इस घाटी में यही आखिरी गाँव है। भ्यूंडार से घांगरिया ३ मील यहाँ पर एक धमशाला है यहाँ से दो रास्ते फटे हैं, बायें हाथ वाला हेमकुंड (लोकपाल) को जाता हैं। दाहिना नदी किनारे फूलों की घाटी को गया है। घाघरिया से १ मील नाराथोर गुफा है इससे १ मील लोकपाल (हेमकुंड) है। हेमकुंड १४२०० फीट की ऊँचाई पर है रास्ता कड़ी चढ़ाई का है, यह सिक्खोंका तीर्थ स्थान है। गुरु गोविन्दसिंह ने २० वर्ष यहाँ तप किया था। जिस समय भारत पर औरंगजेब का राज्य था और उसने हिन्दुओं पर बहुत कुछ अत्याचार किये, उसी वक्त गुरु गोविन्दसिंह का पुनर्जन्म हुआ और उन्होंने खालसा पन्थ चलाया। अपनी आत्मकथा में गुरु गोविन्दसिंह ने इस स्थान का वर्णन किया हैं। सिक्ख जाति इसकी खोज कर रही थी अन्त में सोहन-

सिंह आदि लोगों ने सन् १६३६ में इसका पता लगा ही दिया। यहाँ एक गुरुद्वारा एक धर्मशाला बन गई अब सड़क भी शीघ्र बनने वाली है। हेमकुंड १ मील लम्बा चौड़ा है इसके चारों ओर बर्फ के पहाड़ हैं। इस कुंड के जल में कोई वस्त्र डाल कर जिस ओर आप जायँगे वहीं वह वस्त्र भी जाता रहेगा। यह स्थान अति सुन्दर है। किन्तु रास्ता बहुत ही कठिन है। गुरु गोविन्दसिंह का जन्म १६६१ ई० में पटने में हुआ था, १७०८ ई० में गोदावरी के तट पर नादर स्थान में ४८ वर्ष की अवस्था में धोखे से पठानों द्वारा मारे गये, खालसा अरबी शब्द है इसका अर्थ पवित्र एवं विमुक्त माना गया है।

फूलों का स्वर्ग

इसी भ्यूंडार और घांघरिया से बायें हाथ को दो मील द्वारी नामक जगह पर कच्चा पुल पार कर इस १ मील लम्बी चोड़ी ढलुवा भूमि के दर्शन होते हैं। यहाँ हजारों तरह के रंग बिरंगे फूल खिले रहते हैं। सन् १६३१ में एफ० एस० स्माईथ साहब कामेट पर्वत पर चढ़कर भोटियों के गाँव गमशाली आये और धौली नदी को पार कर भ्यूंडार कांठा पार कर इस फूलों के स्वर्ग को देख दंग रह गये। वारिस होने पर भी वह कुछ

फूल तोड़ कर विलायत ले गये। बाद सन् ३७ में स्माईथ, इडिनवरा—श्रोटा निकल गार्डन की ओर से आकर ३ महीने यहाँ रहकर २५० किस्म के फूलों के बीज विलायत ले गये इन बीजों की सफलता देख कर सन् ३९ में क्यूबोटे निकल गार्डन की ओर से कुमारी जोनलेग फूलों के बीज लेने आई उसने सोखता कागज पर सभी तरह के फूलों को विलायत भेजा आखीर एक फूल के निकालने में वह पहाड़ से गिर कर देह त्याग गई उसकी कब्र वहीं बनाई गई। अब यह स्थान अंग्रेजों का तीर्थ भी हो गया। यह स्थान संसार में ख्याति प्राप्त है प्रसिद्ध पर्यटक हर साल यहाँ आते ही रहते हैं किन्तु रास्ता कठिन है।

नन्दादेवी—२५६४५ फीट यह भारत में सबसे ऊँची चोटी है सन् १९३६ में दो अमेरिकन इस चोटी पर चढ़कर बहुत दिनों की आकांक्षा पूरी कर सके।

२—कामेट—२५४४७ फीट है। सन् १९३१ में मि० एफ० एस० स्मिथ और उनके साथी इस पर्वत पर चढ़े।

३—त्रीसूल—२३३६० फीट है, सन् १९०७ में डा० लौंगस्टाफ और १९३३ में कैप्टन ओलीवर इसकी चोटी तक चढ़े।

४--दुनागिरी—२३१८४ फीट है, सन् १६३६ में स्वीस आरोहणदल इसकी चोटी तक पहुँचा।

५--माना चोटी २३८६० फीट है, सन् १६३७ में मि० स्मिथ इसकी चोटी तक सफलता पूवक पहुंचे।

६--अवीगामिन २४१८० फीट चौखम्भा २३४२० केदारशृङ्ग २२७७० हाथीपर्वत २२७७० गौरीपर्वत २२०२७ रानावन २०१०० फीट हैं।

हिन्दू धर्म पर श्रद्धा

स्व० कर्नल ईट्स ब्राउन ने भारत पर कई रोचक पुस्तकें लिखी हैं, हाल की एक पुस्तक "मार्शल इण्डिया" में उन्होंने कई प्रकार के पराक्रमों का वर्णन किया है। वे लिखते हैं कि जिस धम में पच्चीस करोड़ हिन्दुओं का विश्वास है उसके सिद्धान्त भारत में-मोटर या हवाई जहाज से यात्रा करने या बड़े-बड़े होटलों में विशिष्ट भारतीयों से बातचीत करने से समझ में नहीं आ सकते। शिक्षित युवक भले ही कहें कि जनता पर अब धर्म का प्रभाव नहीं पर यह बात सत्य नहीं है, जो अपने को नास्ति कहते हैं, यदि उनके कपड़े उतारे जायँ तो उनके गले में भी जनेऊ देखकर आश्चर्य होगा। पुनर्जन्म के विश्वास से हिन्दू धर्म की बहुत सी बातें

स्पष्ट हो जाती हैं और करोड़ों मनुष्यों को सन्तोष प्रदान किया है। हिन्दू धर्म में बहुत कुछ सहानुभूति और भ्रातृभाव है जो लगभग साढ़े तीन हजार वर्ष से अबतक चला आ रहा है और जिससे उच्च दर्शनों का प्रादुर्भाव हुआ है।

सत्यपथ यात्रा

बद्रीनाथ से तेरह मील है

—:०:—

यह मार्ग केवल आषाढ़ और श्रावण मास में खुलता है। बद्रीनाथ से आगे दो मील तक सीधा है। फिर पाँच मील कुछ कठिन मार्ग से चलकर लक्ष्मीवन तथा अलकनन्दा नदी का अल्कापुरी से बर्फ के अन्दर आने के पश्चात् सबसे पहले भूमण्डल में प्रवाह स्वरूप में प्रकट होने का अच्छा मनोरंजक और चित्ताकर्षक दृश्य है। इससे आगे कुछ और विकट मार्ग से होकर चार मील की चढ़ाई चढ़कर नर-नारायण पर्वत से गिरती हुई शतधाराओं का दर्शन करते हुए चक्रतीर्थ पहुँचते हैं। यह वर्तुलाकार बहुत बड़ा मैदान है। वहाँ पहुँचते ही चित्त प्रकृति देवी के सौन्दर्य की पराकाष्ठा को प्राप्त कर

ऋषिभावों को अनुभव करता है और इस निर्जन स्थान में भी चित्त स्वतः स्थायी निवास करने को चाहता है फिर सीधी आध मील की चढ़ाई चढ़कर सामने के बड़े पत्थर के समीप पहुँचना पड़ता है, वहाँ से डेढ़ मील सीधे पश्चिम की ओर चलकर बर्फ की बांकों पर से होकर चलना पड़ता है। सामने काले पहाड़ की तरेटी में सत्यपथ (सतोपंथ) सरोवर डेढ़ मील के घेरे का त्रिकुटी के आकार का शुद्ध, निश्चल जलपूर्ण है। इससे आध मील आगे चन्द्रकुण्ड, चन्द्रकुंड से आगे एक मील आगे सूर्यकुंड है। सामने हिमालय के शृङ्गों की श्रेणी सीढ़ियों की तरह दिखलाई देती है जिसे स्वर्गारोहण कहते हैं। वास्तव में यह स्थान स्वर्ग तुल्य ही है और यदि शीत न सतावे तो साक्षात् बैकुण्ठ ही प्रतीत होवे।

चक्र तीर्थ प्रातःकाल जाना चाहिये। वहाँ लकड़ी नहीं होती है, साथ में खटाई का बनाया हुआ शुष्क भोजन, ले जाना चाहिये। टिकने के लिए गुफायें हैं, किन्तु वे वर्षा में टपकती भी हैं।

वापिसी यात्रा

बद्रीनाथ जी से वापिसी का रास्ता—चमोली तक वही है, जिस रास्ते आप यात्रा कर चुके हैं।

चमोली वापिसी ४७ मील।

कुहेड़ चट्टी—दो मील पर है।

मैठाना—दो मील पर है।

नन्द प्रयाग तीन मील पर है, यहां डाकबँगला, पोस्ट आफिस, तारघर, टेलीफोन आदि सभी चीजें हैं, बाजार अच्छा है, यहाँ से कर्णप्रयाग तेरह मील है।

नन्द प्रयाग से पंच प्रयागों में से एक है, नन्द प्रयाग बस्ती से आध मील नीचे नन्दाकिनी नदी पूर्व की ओर से आकर अलकनन्दा में मिली है, नन्दा के बायें बालू का मैदान है, नन्दा नदी पर १५५ फुट लम्बा लोहे का पुल बना है।

सोलना चट्टी—तीन मील पर है। यहाँ इन्सपेक्शन बँगला है।

लंगासु—तीन मील पर है।

जयकंडी—दो मील पर है।

उमट्टा—दो मील पर है।

कर्ण प्रयाग—तीन मील पर है, यहाँ पर पोस्ट आफिस, डाकबँगला, पुलिस चौकी, तारघर, टेलीफोन, लारी सरविस तथा बाबा काली कमली वाले की धर्मशाला है।

अलकनन्दा पूर्वोत्तर से आकर पश्चिम रुद्र प्रयाग को गई है, पिंडारकनदी, जिसको कर्ण गंगा भी कहते हैं दक्षिण नन्दा कोटी से आकर कर्ण प्रयाग बाजार से आध मील उत्तर अलकनन्दा में मिल गई है, पिंडारक नदी का पानी हरित एवं साफ है, नदी पर लोहे का पुल था, लेकिन अब टूट गया है।

कर्ण गंगा के दाहिने किनारे पर कर्ण का मन्दिर संगम पर कर्ण शिला।

संक्षिप्त प्राचीन कथा—स्कन्द पुराण (केदारखंड प्रथम भाग ८१वाँ अध्याय) महाराज कर्ण ने कैलाश पर्वत पर नन्द पर्वत के निकट शिव क्षेत्र में सूर्य का बड़ा भारी यज्ञ किया और वह शिवजी की आराधना करके देवीजी के भवन में स्थित हुआ, सूर्य भगवान ने "सूर्य अभेद्य" कवच, अक्षय तूणीर तथा अजेय धनुष कर्ण को दिया, और उस क्षेत्र का नाम कर्ण प्रयाग रक्खा तब से ब्रह्मवादी मुनि वहाँ स्थित हुए, उनके नामों से बहुत से कुंड प्रसिद्ध हुए, जिनमें स्नान करने से सूर्यलोक मिलता हैं, यहाँ सूर्य कुंड है जिसमें स्नान करने से चारों वर्ग मिलते हैं, यहाँ पर उमा नाम की देवी तथा उमेश्वर नामक महादेव स्थित हैं, जब कर्ण ने वहाँ शिवजी की आराधना की थी तभी से यहाँ पर कर्णेश्वर नाम से

स्थित हुए, इनकी पूजा करने से सौ यज्ञ का फल मिलता है, यहाँ रक्तवर्ण विनायक शिला है, जिसका स्पर्श तथा प्रदक्षिणा करने से विघ्नों का नाश होता है, जो मनुष्य कर्ण प्रयाग में शरीर त्याग करते हैं, वह एक कल्प तक शिव लोक में निवास करते हैं।

नोट—कर्ण प्रयाग से एक रास्ता पैदल का रामनगर व काठगोदाम को जाता है, पहले यात्री इस रास्ते से भी जाया करते थे, अब इस रास्ते के विवरण की जरूरत नहीं है, यात्री बहुत कम जाते हैं।

वापसी के मार्ग तो बहुत हैं, किन्तु इन सब में सुगम और सुलभ मार्ग हरिद्वार ऋषिकेश का ही है, क्योंकि कुली डंडी आदि करने में सहूलियत रहती है, और कम खर्च करना पड़ता है, रास्ते में चढ़ाई कम पड़ती है, मार्ग देखा हुआ रहता है, और शास्त्रानुसार उत्तराखण्ड के तीर्थ—यमुनोत्तरी, गंगोत्तरी, केदारनाथ और बद्रीनाथ की यात्रा हरिद्वार ऋषिकेश से आरम्भ कर फिर वापिस ऋषिकेश हरिद्वार को ही लौट आने से पूरी यात्रा और 'परिक्रमा' होती है, मोटर की सवारी कर्ण प्रयाग से श्रीनगर और कीर्तिनगर से ऋषिकेश तक चालू है।

गोचर—६ मील पर है, यहां काली कमली वाले

की धर्मशाला है, यह बड़ा सुन्दर समतल मैदान है, यहाँ पहले हवाई जहाज भी उतरता था, डाकघर है। नवम्बर में मेला लगता है।

नगरासु—चार मील है, डाकबँगला है।

शिवानन्दी—तीन मील है।

रुद्र प्रयाग—सात मील है।

नोट—रुद्र प्रयाग से श्रीनगर का वही पूर्वोक्त रास्ता है, जो यात्री श्रीनगर से पोड़ी होकर कोटद्वार जाते हैं, वह सीधे चले जाते हैं, श्रीनगर से कोटद्वार ५६ मील है, कोटद्वार में रेल मिल जाती है, यहां से यात्री अपने-अपने घर चले जाते हैं, कुछ यात्री कोटद्वार से नजीबाबाद होकर वापिस हरिद्वार आ जाते हैं।

गंगोत्री यमुनोत्री यात्रा मार्ग

गंगोत्री यमुनोत्री के ऋषिकेश से दो मार्ग हैं। कुछ यात्री देव प्रयाग स्नान श्राद्ध करके टिहरी आ जाते हैं, देव प्रयाग होकर यमुनोत्री १५२ मील होती है, ऋषिकेश से देवप्रयाग ४४ मील है, देव प्रयाग से रास्ता इस प्रकार है।

खरसाड़ा—देव प्रयाग से १० मील, यहाँ पर धर्मशाला है।

कोटेश्वर—चार मील है।

बंडरीया—६ मील है।

क्यारी—८ मील है।

टिहरी—क्यारी से ६ मील है। यह रियासत का प्रधान स्थान है, यहाँ बद्रीनाथ, केदारनाथ जी के विशाल मन्दिर हैं, टिहरी राज्य अब मर्ज हो गया है। इस रियासत ने वीरनर श्री देवसुमन को जो एक होनहार नेता थे, बुरी तरह जेल में मारा जो दो महीने की भूख हड़ताल के बाद शहीद हुए।

ऋषिकेश से टिहरी

नोट—जो यात्री ऋषिकेश से टिहरी जाते हैं, ऋषिकेश से टिहरी ५१ मील है, उसका रास्ता इस प्रकार है—ऋषिकेश से लारी टिहरी तक जाती है, और अब धरासु तक भी सड़क बनने लगी है।

नरेन्द्र नगर—ऋषिकेश से ६ मील दूर है, मोटर के रास्ते ९ मील है, यह टिहरी स्टेट की वर्तमान राजधानी रही है, यहाँ डाकखाना, तारघर, डाकबँगला, मोटर सरविस, पुलिस थाना, अस्पताल आदि सभी स्थान हैं।

हिण्डोला चट्टी—नरेन्द्र नगर से ५ मील पर है।

यहाँ पर भगवती को हिण्डोला झुलाया जाता था इसका नाम हिण्डोला पड़ गया। यहाँ दायें हाथ पहाड़ की चोटी पर कुंजापुरी देवी का मन्दिर, यह सिद्ध देवी है, यहाँ मनोकामना पूर्ण होती है, ऐसा यहाँ की जनता का विश्वास है।

अगर खालचट्टी--३ मील पर है।

फकोट चट्टी---३ मील है, यहाँ रेंज क्वार्टर है।

जाजल---५ मील है।

नागनी---५ मील है।

चम्बुआ---५ मील है। यह स्थान सबसे ऊँचा है यहाँ से केदारनाथजी के पीछे वाले पर्वत का हिमाच्छादित शिखर दिखाई देता है, यहाँ से एक रास्ता मंछरी को जाता है और एक रास्ता भलडियाना को जाता है, यहाँ डाकखाना भी है। एक रास्ता टिहरी को भी जाता है।

टिहरी---१२ मील है।

गोदी सराय---५ मील है।

भलडियाना---६ मील है।

छाम---५ मील है।

नगून---५ मील है।

धरासु—५ मील है।

नोट—धरासु से एक रास्ता लालूरी होकर मंसूरी जाता है और दूसरा चापड़ा होकर भी मंसूरी जाता है और एक रास्ता सीधा उत्तर काशी को जाता है, धरासु से ही एक रास्ता यमुनोत्री को जाता है, धरासु से यमुनोत्री ४८ मील है, उसका विवरण निम्न प्रकार है

कल्याणी ४ मील है, यह चढ़ाई उतराई का रास्ता है, पानी का कष्ट है।

ब्रह्मखाला—(गेऊँला) ५ मील है, मार्ग सीधा है।

सिल्कयारी—५ मील है, यहीं से आगे चढ़ाई शुरू होती है, यहाँ बाबा काली कमली वाले की धर्मशाला है, जल का यहाँ भी कष्ट है, पगडण्डी का मार्ग कठिन है इसलिये सड़क के रास्ते जाना चाहिए।

राड़ीधार (खाला) पाँच मील है, यहाँ से एक सड़क बड़कोट और चकरोती को जाती है और एक सड़क उत्तर काशी को भी जाती है।

डंडाल गाँव—२ मील है, यहाँ पानी नहीं है।

सिमली—२ मील है, यमुनोत्री के यात्री जब वापिस गंगोत्री जाते हैं तो सिमली आकर ही उत्तरकाशी का रास्ता मिलता है।

गंगानी---२ मील है, यहाँ काली कमली वाले की धर्मशाला है। थोड़ी दूर पर तिलवाड़ी नामक स्थान है जहाँ पर अपने अधिकारों की भोग करने वाली प्रजा को ३० मई सन् ३० को टिहरी की सामन्तशाही ने भारी तादाद में मौत के घाट उतारा था।

जमना चट्टी—६ मील है, यहाँ भी काली कमली वाले की धर्मशाला है

ओजरी चट्टी—दो मील हैं।

डडोड़ी---२॥ मील है।

राणा गाँव—२ मील है।

हनुमान चट्टी—२ मील है।

खरसाली—४ मील हैं। यहाँ काली कमली की धर्मशाला है।

यमुनोत्री (जमनोत्री)

जमुनोत्तरी के मार्ग में चढ़ाई उतराई दोनों ही हैं, अब सेठ चांदमल जी 'गोयन्का' क्लोथ मारकेट देहली वालों ने सड़क बनवा दी है यमुनाजी का मन्दिर है और यह स्थान समुद्र की सतह से १००००(दस हजार) फुट ऊँचा है, यमुनोत्री में खौलते हुए गर्म जल के स्रोत हैं, जहाँ आटा, चावल आदि डाल देने से स्वयं उचित समय पर

सिद्ध हो जाते हैं, दूसरे ऐसे भी श्रोत हैं, जहाँ यात्री लोग स्नान कर सकते हैं।

यमुनोत्री से वापिसी मार्ग सिमली होकर वही है, जहां होकर अभी गये थे।

सिंगोट—७।। मील है।

नाकोरी—३।। मील हैं।

उत्तर काशी—६ मील है; यहाँ पर डाकघर, तार-घर, पुलिस, मजिस्ट्रेट की कचहरी आदि स्थान हैं। यहाँ विश्वनाथ जी का मन्दिर है। तथा परशुरामजी का मन्दिर, शक्ति मन्दिर अन्नपूर्णा तथा काली आदि के मन्दिर हैं, बाबा काली कमली वाले की ओर से धर्म-शाला और घाट बने हुए हैं।

विश्वनाथ जी का मन्दिर

विश्वनाथजी के मन्दिर के सम्बन्ध में इस प्रकार की किंवदन्ती है, कि किसी समय टिहरी नरेश को स्वप्न आया कि तुम उत्तर काशी में मन्दिर बनवाओ, जब राजा ने मन्दिर बनवाना प्रारम्भ किया तो उस समय विश्वनाथ लिंग जमीन से कुछ ऊपर था, ज्यों ज्यों लिंग के पास चबूतरा बनता गया त्यों-त्यों लिंग ऊँचा होता गया, इस प्रकार १० फुट तक लिंग की ऊँचाई हो

गई, तब पुनः स्वप्न आया कि चबूतरा इससे आगे ऊचा न किया जाय, इस पर फिर उस पर मन्दिर बिना दिया गया, यहाँ पर रात्रि जागरण करने से नि सन्तानों को पुत्र लाभ होता है।

श्री परशुराम जी का मन्दिर

पच्चीस तीस साल पहले यहाँ कोई भी क्षत्री राजा दर्शन को परशुरामजी के भय से नहीं आते थे, लेकिन अब यहाँ त्योहार पर्व आदि पर सभी लोग एकत्रित होते हैं, अभी भी कई दफा श्वेत घोड़े पर सवार हुये परशुराम जी के दर्शन होते हैं।

शक्ति मन्दिर

यह मन्दिर विश्वनाथ जी के मन्दिर के सामने है, इसमें एक शक्ति शस्त्र है, यह अष्ट धातु का बना हुआ तथा १५ फुट लम्बा है, इसकी मूठ घड़े के आकार की है, इसकी मोटाई ७ फुट चौड़ी है, इसके विषय में यह किंवदन्ती है कि यह शक्ति देवासुर संग्राम में आकाश से गिरी थी और जमीन में गड़ गई उसी समय से यहाँ स्थापित है। इसके सम्बन्ध में एक और किंवदन्ती है कि दो सौ साल पहले राजा नैपाल ने टिहरी नरेश पर चढ़ाई कर दी, इनकी सेना बढ़ती-बढ़ती उत्तर काशी तक

चली गई, वहाँ नैपाल महाराज ने उस शक्ति को देखकर नैपाल ले जाना चाहा लेकिन खुदाई करने पर उसका कोई अन्त नही आया, जिससे महाराज हार मानकर चले गये।

इसके अतिरिक्त यहाँ बिड़ला की धर्मशाला है तथा घाट हैं, यहाँ थोड़ी दूर तक गंगा उत्तरमुखी बहती है, यहाँ से २॥ मील आगे वरुणानदी ह, यहाँ से तीन मील पर मंय डंडा के शिखर पर बिमलेश्वर महादेव हैं, इनके पास ही एक बड़ी गुफा है, यहाँ से २२ मील आगे एक बड़ा ताल है, जिसको डूंडी ताल कहते हैं, यहीं पर गणेश जी का जन्म हुआ बतलाते है।

संक्षिप्त पौराणिक कथा—स्कन्द पुराण में लिखा है कि पूर्वकाल में जमदग्नी की पत्नी रेणुका जल लेकर आश्रम की ओर जा रही थी, उसका रास्ते में कीर्तवीय को रास्ते में सजधज के साथ जाते देख कर मन लाला-यित हो गया, यह जान कर जमदग्नि महाराज ने क्रुद्ध होकर अपने बड़े पुत्रसे अपनी माता के शिर काट देनेको कहा, इस पर उसने अस्वीकृति करी, उसको ब्रह्म राक्षस हो जाने का शाप दिया, यह प्रस्ताव अपने छोटे पुत्र परशुराम जी के सामने रक्खा, उन्होंने इसको स्वीकार कर अपनी माता का शिर काट लिया, इस पर प्रसन्न

होकर जमदग्नी ने वर मांगने को कहा, परशुराम जी ने कहा भगवन् ! मेरी माता पुनः जीवित हो जाय. यही वर दो। प्रसन्न हो जमदग्नि ने कहा कि हे पुत्र! तुम बड़े सौम्य हो, आज से यह स्थान तुम्हारे नाम से प्रसिद्ध होगा. उसी समय से यह स्थान सौम्य काशी या उत्तर काशी नाम से प्रसिद्ध हुआ। इसके अतिरिक्त हूढाचट्टी से १॥ मील नीचे, गंगा पर उद्दालक मुनि ने तपस्या की थी, इस स्थान का नाम उद्दालका है उद्दालक का पुत्र नचिकेता ने १० मील के फासले पर तप किया था उस स्थान का नाम नाचिकेता तालाब है, इस नचि- केता तालाब से धनारी नदी निकलती है और धनारी नदी निकलती है, और धनारी का जहाँ गंगा से संगम हुआ है उसके दायें भाग को उद्दालका तथा बायें भाग को शृंगेरी कहते हैं, उत्तर काशी से ५ मील नीचे नाकोरी से १ मील ऊपर कपिल मुनि का स्थान है, इस प्रकार यह उत्तर काशी क्षेत्र ऋषियों की तपोभूमि का स्थान रहा है।

नोट—उत्तर काशी से गंगोत्री ५७ मील है, उसका मार्ग इस प्रकार है। उत्तर काशी से गंगोरी ३ मील है, यहाँ पर डोडीताल से निकली हुई उसी गंगा भागीरथी में मिलती है, यह भाग सुप्रसिद्ध डोडीताल को करीब १६-१७

मील चला जाता है, यहाँ २ मील के घेर का ताल है बर्फानी पहाड़ों के बीच में हैं, इसका दृश्य बड़ा मनोरंजक है।

मनेरी—उत्तर काशी से १० मील है, चढ़ाई है तथा यहां बाबा काली कमली वाले की धर्मशाला है।

भटवाड़ी—८ मील है, चढ़ाई उतराई हैं, डाक-बंगला है, काली कमली वाले की धर्मशाला है।

गंगनानी—९ मील है चढ़ाई है, काली कमली कमली वाले की धर्मशाला है।

सूखी—९ मील है, यहाँ काली कमली वाले की धर्मशाला है तथा उतराई है।

झाला—३ मील हैं, यहाँ काली कमली वाले की धर्मशाला है।

हरसिल (हरिप्रयाग)—२ मील है, धर्मशाला है डाकबंगला है।

धराली—२॥ मील धराली है, यहाँ काली कमली वाले की धमशाला है। यहाँ धरियाल लोग बसते हैं, जो कि नैलङ्ग घाटी से तिब्बत में व्यापार करते हैं। इस मार्ग से कैलाश और मानसरोवर इन लोगों की सहायता से जा सकते हैं, धराली के आसपास साधुओं की कुटियाँ हैं और अच्छे प्रसिद्ध महात्मा निवास करते

हैं, गंगाजी के दूसरी तरफ मूखी मठ है, यहां पर गंगोत्री के पंडे लोग रहते हैं।

यहाँ पर १ मील आगे मार्कण्डेय जी का स्थान है, शरद ऋतु में ६ मास तक श्री गंगाजी की पूजा इसी स्थान पर होती है।

जाँगला—४ मील है, यहाँ डाकबंगाला है। भैरोघाटी २॥ मील है गंगोत्तरी ६॥ मील गोमुख १८ मील कठिन रास्ता बस यहीं गंगा महारानी के दर्शन कर पुण्य लूटिये।

नोट—गंगात्री से यात्री श्री केदारनाथ जी को जाते हैं, गंगोत्री से ४०मील वापिस उसी रास्ते जाना होता है जिस रास्ते से उत्तर काशी से आये थे, मनेरी चट्टी और भटवाड़ी चट्टी के मध्य में एक मल्लाचट्टी नामक स्थान है, वहाँ से श्री केदारनाथ जी का रास्ता जाता है और मार्ग इस प्रकार है—

यहाँ बाबा काली कमली वाले की धर्मशाला है।

फ्यालु—३ मील पर है, मार्ग कठिन चढ़ाई का है।

कुंथाचट्टी—३ मील है, १ मील चढ़ाई का है तथा बाबा काली कमली वाले की धर्मशाला है।

बेलख—४ मील है चढ़ाई कठिन है।

पंगराना—५ मील है, उतार तेज है।

झल्लाचट्टी—४ मील है।

बूढ़ा केदार–५ मील है, बाबा काली कमली वाले की धर्मशाला तथा शिवजी का दर्शन स्थान अच्छा है।

ताला चट्टी ४ मील है, कुछ चढ़ाई है।

भैरव चट्टी—२॥ मील है, यहाँ भैरवजी का मन्दिर है तथा हनुमान जी के भी दर्शन हैं।

मोटा चट्टी--२ मील है, साधारण चढ़ाई है।

धुत्तु चट्टी—७ मील है, मार्ग चढ़ाई उतार का है यह भिलगांना नदी के किनारे पर है, बाबा काली कमली वाले की धर्मशाला है।

गंधाना–१ मील पर है।

गुमांडा—२ मील है, रास्ता चढ़ाई का है।

दुफन्दा–२ मील है, यहाँ की चढ़ाई प्रसिद्ध है।

पंवाली–२ मील है, बाबा काली कमली वाले की धर्मशाला है।

मग्गु चट्टी–१० मील है, पंवाली से मई, जून में

४ मील तक बर्फ पर चलना होता है यह स्थान ११ हजार फुट की ऊँचाई पर है बाबा काली कमली की धर्मशाला है।

त्रियुगी नारायण—मग्गु से ५ मील है, यहाँ बाबा काली कमली वाले की धर्मशाला है, हरिद्वार से सीधे जो केदारनाथ को जाते हैं उसमें यह मिल गया है, जिसका वर्णन दिया जा चुका है।

चारों धाम की यात्रा का विधान

जो यात्री चारों धाम की यात्रा करते हैं वह ऋषि-केश से जमनोत्री और जमुनोत्री से उत्तर काशी होते हुए गंगोत्री जाते हैं, और श्री गंगोत्री से श्री केदारनाथ जी और केदारनाथ जी से श्री बद्रीनाथजी और बद्रीनाथ जी से वापिस नन्द प्रयाग, कर्णप्रयाग होते हुए ऋषि-केश आ जाते हैं। इस तरह से ५०० मील के लगभग इस हिमाचल प्रदेश की परिक्रमा हो जाती है।

कैलास मानसरोवर के लिए ११ रास्ते

—:०:—

(१) अल्मोड़ा, धौलबीना, वेरीवाग, असकोट, धारचुला, काला पानी, लिपुलख, गोरी, बड़िपार मानसरोवर २३७ मील है जिसकी परिक्रमा ३२ मील है। कैलाश और मानसरोवर दोनों की परिक्रमा ३२-३२ मील के है।

(२) अल्मोड़ा से घर्मघाटी होकर २३३ मील (३) अल्मोड़ा से उठाधुरा घाटी होकर २०६ मील (४) जोशीमठ से गुलाबिती होकर २०२ मील (५) जोशीमठ से दमजन निती होंकर १६३ मील (६) जोशीमठ से होती नीती घाटी होकर १६० (७) बद्रीनाथ से--माणा घाटी होकर २४० मील (८) गंगोत्री मुखबासे-जेलूखागा घाटी होकर २४५ मील (९) शिमला से ४४५ मील (१०) शिमला से धुलिंग होकर ४७५ मील (११) कारमीर (श्रीनगर) से लद्दाख गढ़तोक होकर ६०३ मील है।

चोटी, पास, घाटी, धुरा, जोत, कोठा, आदि नाम

यह नाम उन स्थानों के हैं जहाँ से आदमी पर्वत (हिमालय) लांघते हैं। कैलाश को जाने वाले लोग बद्रीनाथ से २८ मील माणा पास होकर भी जाते हैं लेकिन यह रास्ता अव्वल तो महा कठिन है दूसरे दूर भी है।

नीति के रास्ते अलपत दूर कम हैं किन्तु नीती पास १६६२८ फीट होने से यह रास्ता भी भारतवासियों को कष्टप्रद ही है।

इसलिये भारतीय यात्रियों को सबसे अच्छा और सुगम रास्ता अल्मोड़ा होकर ही है जो उठाधुरा पूलेक) के नाम से प्रसिद्ध है, इस रास्ते घाटी सबसे कम ऊँची है रास्ता अच्छा है और नजदीक भी है।

पर्वतीय दृश्य

गर्मियों में जब भारत की मैदानी जगह ताँबे की कढ़ाई के समान तपने लगती है तब साधारण मनुष्य की इच्छा भी पहाड़ों की यात्रा करने को होती है इसलिये लोग काश्मीर, बद्रिकाश्रम, कैलाश आदि स्थानों की यात्रा करने आ जाते हैं।

कैलाश, मानसरोवर जाने को—काठगुदाम रेलवे स्टेशन द्वारा २२ मील ७ हजार फीट नैनीताल झील और सुन्दर बस्ती की शोभा देखने में आती है यहाँ से पैदल ६ मील भुवाली ५५०० फीट क्षयरोग के निवारण का अस्पताल है, यहाँ से ४ मील भीमताल है जहाँ एकान्त स्थान है। इसके किनारे सुन्दर निवास स्थान बना हुआ है जो ४५०० फीट है यह स्थान हवादार अच्छा

स्वास्थ्यवर्धक है यहाँ से २ मील नल दमयन्ती नामक ताल है यह स्थान बहुत अच्छा है यहाँ से १ मील की चढ़ाई पर सात ताल, पन्नाताल, रामसीता ताल, गरुड़ ताल, पास पास में एक दूसरे से बढ़ चढ़ कर हैं, पन्ना-ताल के किनारे प्रसिद्ध ईसाई पादरी डा० स्टनले जौन्स का प्रार्थना स्थान है। यह तालों का प्रदेश है जहां कुल मिलाकर ६० ताल हैं, भीमताल से ७ मील चढ़ाई और दो मील उतराई में रामगढ़ सेब के पेड़ों का बाग नदी किनारे आर्यसमाज के नेता श्री नारायण स्वामी जी का आश्रम है, रामगढ़ से ९ मील मुक्तेश्वर नाम का नैनी-ताल जिले का ऊँचा शिखर है लेकिन यहां अत्यन्त ठंडा होने पर भी अच्छी बस्ती बसी हुई है, यहाँ भारतीय जानवरों के रोगों की खोज की प्रयोगशाला है, इस संस्था में सारे भारत के पशु चिकित्सक ज्ञानवृद्धि को आते हैं। यहाँ से श्वेताम्बरधारी हिमालय पंक्ति का दर्शन होता है, यहां से १४ मील अल्मोड़ा प्रसिद्ध नगरी है। यह विकास का केन्द्र ५००० फीट स्वास्थ्य-वर्धक है।

अल्मोड़े से उत्तर दिशा में ८ मील ३००० फीट बाराछीना बड़ी गर्म जगह है आगे ६ मील चढ़ाई से ६००० फीट धौलछीना बहुत अच्छा स्थान है, यहाँ से

५ मील उतारसे कनारीछीना स्थान है आगे सीधा रास्ता द्वारा ५ मील सीरा घाट अत्यन्ह गर्म स्थान है, यह स्थान सरयू नदी के तट पर सुन्दर मनोरम है, यहाँ से ३ मील चढ़ाई चढ कर नरवाधोल जल का कष्ट है आगे ३ मील की उतार से गर्णाई अच्छा स्थान है यहाँ डाकखाना, स्कूल, डाकबँगला है। आगे ६ मील चढ़ाई, उतराई से जाकड़ी गांव के पास एक दुकान बड़ी मनोहर आसाम प्रान्त की याद दिलाती है इसे बास पटान भी कहते हैं आगे ६॥ मील की दूरी चढ़ाई से ७ हजार फीट की चढ़ाई उतर कर ६ हजार फीट बेरीनाग सुन्दर नगर मिलता है, यहाँ डाकखाना, सफाखाना, स्कूल और डाकबँगला है यहाँ सब किस्म की दुकानें मिलती हैं लेकिन पानी की कमी है आगे २॥ मील गढ़तल (गढ़तीर) स्थान है यहाँ से ७॥ मील रामगंगा के किनारे 'थल' नामक स्थान ३ हजार फीट है, यहाँ भी स्कूल, डाकखाना आदि अच्छा स्थान है।

बन, जंगल, पर्वत, हिम आरम्भ

इन पहाड़ों (पर्वतों) पर ३ हजार फीट मे ६ हजार फीट तक चीड़ का जंगल है, ६ हजार से ९ हजार तक देवदार ९ हजार से १२ हजार तक भोजपत्र के पेड़ हैं १२ से १५ हजार तक नंगे पर्वत हरी घास कहीं

कहीं पर उगी हुई है आगे बर्फानी चोटियाँ हैं बर्फ के पिघलने के बाद अनेक रंगों के फूल तथा जड़ी-बूटियाँ इन स्थानों पर प्राप्त होती हैं। थल से ३ मील चढ़ाई और ७ मील सीधा मार्ग द्वारा दीदी हाट ५५०० फीट पर है इस मार्ग में बांज वगैरह का घोर जंगल है जिसमें बाघ, भालू आदि वन्य जीवों की पैदायश भी है, यहाँ डाकखाना, पाठशाला और अच्छी दुकानें हैं, यहाँ से ७ मील अच्छे मार्ग द्वारा ५ हजार फीट असकोट सुन्दर नगर है यहाँ डाकखाना, सफाखाना, स्कूल, डाक-बंगला, धर्मशाला बाजार आदि सुलभ स्थान हैं यहाँ राजवंशी, रजवार, सुशिक्षित सम्पन्न लोग रहते हैं जो तमाम कैलाश यात्रियों की हर प्रकार मदद करते और अपना अतिथि मानते हैं। अब यहाँ से ३ मील उतार उतर कर गोरि गंगा का पुल मिलता है आगे ९ मील बलवा कोट है इससे आगे मामूली चढ़ाई उतार के बाद काली नदी के किनारे "कालिका" नामक स्थान है यहाँ मामूली दुकानें हैं यहाँ से १० मील सीधा रास्ता से धारचुला अच्छा स्थान है, यहाँ डाकखाना, स्कूल तथा बाजार भी है।

कठिन रास्ता

धारचूला से २ मील रूमादेवी का स्थान आगे

८ मील 'खेला, ५५०० फीट पर चढ़ाई के रास्ते से है, खेला से २ मील सीधी उतार उतर कर नदी पार करके ३ मील कठिन चढ़ाई से पांगू गाँव मिलता है यहाँ स्कूल में सुन्दर विश्राम स्थान है। यह भूटिया राजपूतों की बस्ती है ये ऊन का व्यापार तथा खेती करते हैं, यह मंगोलियन जाति के हिन्दू हैं, इनका रंग गोरा, मुँह चौड़ा, नाक चपटी होती है, कद के छोटे और पुष्ट होते हैं। धारचुला से इनकी बस्ती लग जाती है यह लोग पेश्तर ईमानदार होते थे लेकिन अब इनमें कई लोग व्यापार करने बाहर जाते हैं। पाँगू गाँव से २ मील चढ़ाई द्वारा ९ हजार फीट "तिथल" बड़ा ठंडा स्थान है। यहाँ से १॥ मील का उतार उतर कर छद्धांग व तेजा ग्राम होकर सिर्खा ग्राम जो खेला से ६ मील है मिलता है यहाँ अच्छे रईस लोग बसते हैं स्कूल में ठहरने को सुन्दर स्थान है यहाँ सब प्रकार की खेती होती है। यहाँ से २ मील उतार उतर कर रास्ता बाँझ के घोर जंगल होकर २॥ मील चढ़ाई ३ मील उतराई से ५॥ मील का गया है जहाँ बाघ भालू का डर है। आगे २॥ मील अच्छे रास्ते द्वारा जिप्ति गाँव ८ हजार फीट है यहाँ एक दुकान और ठहरने को सुन्दर स्थान है। अब आपका आधा मार्ग रह गया है।

इससे आगे रास्ता और भी कठिन है। रास्ता नदी के किनारे ही गया है जो ७ मील मालया एक बड़े गन्दे गाँव में पहुँचता है। यहाँ मच्छर, मक्खियाँ, भेड़, बकरियों की दुगन्ध का घर है। मालया से बुधी ७ मील रास्ता सरल है यहाँ काली नदी फिर मिल गई है। बुधी से ३ मील खड़ी चढ़ाई व १ मील मामूली उतार से "गर्ब्याङ्ग" डाकखाना, डाक बँगला है यह स्थान १०५०० फीट पर है जो भारत सरकार की आखीरी सीमा का गाँव है यहां से कैलाश को कुली बदलने और सारा इन्तजाम करना पड़ता है अब आगे डेरा के लिये तम्बू या छोलदारी और भोजन आदि का तमाम प्रबन्ध करना पड़ता है।

इस यात्रा के लिये अमीर या फकीर यही दोनों समुदाय अच्छी तरह जा सकते हैं। औसत दर्जे के लोगों को या अकेले दुकेले जाने वालों को डाकुओं का बड़ा भय है कम से कम १२ दिन का खाने पीने का सामान सूखे फल, चटनी, मेवा, सत्तू ओढ़ने बिछौने और पहनने को काफी गर्म कपड़े, रबड़ के बूट, बरसाती टॉर्च, स्टोव, दूरबीन, कैमरा, बन्दूक साथ में रखना जरूरी है १५ जून तक अल्मोड़े से चल देना चाहिये इन दोनों भोटिया व्यापारी हर रोज तिब्बत जाते रहते

हैं इनके साथ जाने से सुभीता रहता है गर्व्याङ्ग मे एक दुभाषिया तिब्बत और भारतीय बोली का जानने वाला पथप्रदर्शक साथ ले जाना चाहिये। इस यात्रा में जितना भय और कष्ट पहले था वह अब नहीं रह गया दिन-बदिन रास्ता ठीक हो रहे हैं और अब तरह तरह से सुभीता हो रहा। लेकिन बन्दूक पास न हो तो गर्व्याङ्ग या तकला कोट से किराये पर ले जानी चाहिये। कैलाश प्रान्त की बोली एक अजनबी है कुछ थोड़े से शब्द आप लोगों के समझने को यहाँ रख रहा हूँ, देखियेगा।

कैलाश—मानसरोवर

संक्षेप में कैलाश प्रान्त (भोट) में जो बोली, बोली जाती है वह यों है—गिनती १ को चिक, २ को नी, ३ को सुम, ४ को जी, ५ को गां, ६ को टू, ७ को दुन, ८ को ग्यद, ९ को गु, १० च्यु २० को नीस, ३० को सुंज्यू ४० को ज्यूपच्यू, ५० ङपच्यू, ६० डुकच्यू, ७० दुनज्यू, ८० ग्यूज्यूं, ९० गुपच्यु, १०० ग्या थाम्बा १००० त्वंग, लाख-ठो, करोड़-भुम, चाँदी को फुल, १) रु० गोरमो, ॥) टंका, ।) गों, ज्यों ≈) आना, ≋) ज्यो, ।≈) टांका, सोना-सर, ताँबा-ज्या, पीतल-रगन, लोहा-च्यक, कांसी-ली, वर्तन-नोद, कागज-शिशु, स्याही-नकुंग, कलम-निगु, दिन को निमा, रात-

छान, आग को मै, तारा-डकार, वस्त्र-गोलाक, हाथ-लक्या, पाँव-काम्बा, शिर-गो, आंख-मिक, नाक-ना, दांत-स, बाल-टा, डाढ़ी मूछ-खप्पू, पेट-डोटपा, घोड़ा-ता, वर्षा-छरपा, गाय-भलांग, बैल-लौं, खच्चर-टे, बकरी-लुक चँवर, गाय-यक, धूप-पो, गुगुल-गुलगुल, माचिस-चकटा, महादेव को माने, देवी-डोएमाल्हा, चावल को डा, आटा-बकपी, गेहूँ-डो, घी-मार, दाल-ठलमा, लाल-मस, काला-लगु, निमक-छा, मिर्च-छोदमरू, मठा-दरा, केशर-गुरगुम, जौ-स्वा, देवता-ल्हा, दूध-होमा, दीपक-क्यूबार, कपड़े को रा, जरी कपड़ा-नाक्षरा, तम्बु-गुर, रास्ता-ग्रेरलम, पानी-ती-छू, लकड़ी-सीग, सत्तु-चम्फा, गुड़-गुरम भेली, चाय-ज्या, कस्तूरी-लरछी, गोला-भेरा, तैल-मरकू, मिश्री-करा, शक्कर-जीमाकरा, छुवारा-खसुर, बादाम-ग्यखर तरका, राम-मैं, कैलाश-डारेपो, खसजाम-नमस्कार, खेरा काना डोम कहां जाते हो, खरांगना टूगे-तुम्हारे पास है, खरांगलो छो छी छीद-तुम्हारे पास क्या सौदा है, ओं मणि पद्मे हुँ-महादेव पार्वती, इसी मंत्र को तिब्बती लोग जपा करते हैं।

गर्ब्याङ्ग—चौदास और दारमा में भोटिये लोग बसते हैं इनमें सिर्फ दो ही जातियां हैं १-राजपूत २-डोम डोम अछूत जाति प्रायः सारे उत्तराखण्ड में काफी संख्या

में है। भूटियों का धर्म रीति रिवाज एकसा है यह लोग गोवला नामक और क्वाग रंग चुम जो कि एक ही में संयुक्त स्त्री पुरुष हैं पूजा करते हैं प्रत्येक ग्राम का एक विशेष देवता भी इनका होता है, नागजुंग भी इनका एक आराध्य शक्तिशाली देवता है, यह तिब्बत के बौद्ध मठों में भी श्रद्धा से पूजा पाठ करते हैं।

काला पानी—गर्व्याङ्ग से ११ मील है बीच में २ मील पर चांगरू २॥ मील पर कनवा नामक ग्राम नैपाल की सरहद में आते हैं बाकी सब निर्जन वन ही दीखता है यहां एक छोटी धर्मशाला है यह स्थान १२००० हजार फीट है मछांग घाटी से आने वाली वेगवती 'कुटीयाक्ती' नदी इस स्थान के आगे 'काली' नदी नाम से पुकारी जाती है जो ७५ मील चलकर जौलजीवी में गोरी गंगा से मिल कर पांचेश्वर में अपनी सहायक सरयू नदी से भेंट करती है।

शंगचुम—काले पानी से ६ मील १४६०० फीट चढ़ाई का रास्ता है यह भारत का अन्तिम पड़ाव है।

लिपुलेख घाटा—शंगचुम से ३ मील चढ़ाई द्वारा १६७५० फीट को पार कर एक अनोखे देश तिब्बत में प्रवेश कर मामूली उतार द्वारा ५ मील पाला में पहुँचते हैं यहां पर दो विश्राम घर हैं जहां एक चौकी-

दार भी रहना बताया जाता है पर रहता नहीं है। आगे १॥ मील पर "होपी गांग" नामक ग्राम में हरे भरे अन्न के खेत दिखाई देते हैं आगे मतंग और छुड़-तन जो कि लम्बी लम्बी दीवारों और छोटे छोटे चोकोर मठों के रूप में गेरूये रंग से रंगे हुए तिब्बती लोगों के पूजन का ज्ञान कराते हैं। पाला से ४ मील-तक लाकोट या पुरांग मण्डी करनाली नदी के तट पर सुन्दर नगरी के समान है जहाँ चारों ओर अनेक रंग बिरंगे झँडे झँडियाँ फहरा रहे हैं।

लामाओं के देश तिब्बत का हाल

भारत के उत्तर में सबसे बड़ा पहाड़ हिमालय है उसमें तिब्बत बड़ा अजीब देश है। वहाँ हजारों मील लम्बा चौड़ा पठार है वह जितना ऊंचा है उतना ही ठंडा भी है। प्रायः बारहों महीने वहाँ के नदी नालों और झीलों का पानी जमकर बर्फ बना रहता है। हड्डियों तक को कंपाने वाली वहां की ठंड में, बीच, बीच में जमीन को फोड़कर गर्म पानी के फब्बारे उठते रहते हैं। यह मानो पृथ्वी माता की तपी हुई स्नेह धारा है। इस पथरीले देश में नतो बहुत घास उगती है और न हरे-भरे मैदान ही हैं। हमारे देश की तरह वहाँ जंगल नहीं हैं, वहाँ तो छोटे बड़े पहाड़ ही हैं। तिब्बत के मनुष्यों की

शकल सूरत का कहना ही क्या है शिर पर गोल टोपी शरीर पर पाँच-छः ढीले-ढाले लटकते हुए कुर्त्ते और पैरों में अजीब शकल का बूंट जूता। नतो वहाँ के लोग नहाते धोते हैं और नन्दात ही मांजते है। उनकी देह पर मैल की मोटीसी तह जमी रहती है। तिब्बतियों के वदन से ऐसी बदबू निकलती है कि दूसरे देश का कोई आदमी उनके पास खड़ा नहीं ठहर सकता। वे जितने गन्दे रहते हैं उतने ही भाग्यवान् समझे जाते हैं। तिब्बती भूत प्रेतों से बहुत डरते हैं और भूतों को भगाने की अच्छी तरकीबें भी जानते हैं। तिब्बत में जौं के सिवाय खाद्य अन्न होताही नहीं है, इनका मुख्य भोजन जौ, सुखाया हुआ कच्चा माँस चाय और मक्खन है, पुराना मक्खन तो यहाँ तारीफ करनें लायक होता है। दूध से वे बड़ी नफरत करते हैं। चाय भी उनकी विचित्र ही बनती है वे चाय, सोडा, मक्खन, नमक इनको एक साथ उबा-लकर आँखें मूँद-मूँद बड़े आराम से गर्म चाय पीते हैं।

तिब्बत के लोग बौद्ध मत को मानते हैं। लामा या पुरोहित लोग ही देश के कर्त्ता धर्त्ता हैं। इन पुरोहितो के मुखिया को दलाई लामा कहते हैं। दलाई लामा लासा में रहते हैं इसलिये लासा शहर तिब्बत की राज

धानी (लामा धानी) है। यह सब होते हुए भी ये लोग स्वाधीन हैं, देशभक्त हैं, अपने देश की रचा करने के लिये चारों ओर गुप्तचर दिन रात चौकसी करते रहते हैं। यहाँ पुलिस व सेना नाम मात्र को नहीं हैं। यहाँ का शासन भी सब अनियमित और अनि यंत्रित है। यद्यपि शासन कठोर और एक तंत्र है दण्ड विधान बहुत ही निर्दयता से प्रयुक्त किया जाता है। यहाँ मृत्यु दण्ड तक भी सिर्फ कोड़े मारकर दिया जाता है और नाक कान भी कटवा दिये जाते हैं। व्यभिचार को तो यहाँ भयानक अपराध माना गया है। मृत्यु दण्ड की सजा १ हजार रुपये देकर हटादी जाती है। तिब्बत राज्य केवल धार्मिक भावनाओंसे ही पोषित होकर पुष्टि पाताहै। राज्य की सारी शक्ति प्रजाकी अन्ध धर्म भक्ति में ही है।

लासाका दलाई लामा तिब्बत का सर्वमान्य धर्म गुरू और सर्वोच्च राज्याधिकारी है। उसीके अधीन सर्व राज्य और सम्पूर्ण धार्मिक संगठन का संचालन होता है यहाँ धर्म और राज्य एक ही व्यक्ति में केन्द्रित और एकही संगठन के अधीन है।

तिब्बत का बौद्ध मत या लामावाद एक विशेष ही धर्म है। यहां पर अन्य रूढ़ी, रीति रिवाज आचार और व्यवहार, धार्मिक तथा सामाजिक कृतियां भारतियों

से सर्वथा भिन्न ही हैं । यहापर भारतीय रुपआं नोट आदि सिक्का प्रचलित नहीं । इनके अपने सिक्के तनखा आधा तनखा तथा चीनी और नैपाली रुपये प्रयोग में आते हैं । इन सब बातों की भिन्नता होने पर भी तिब्बत और भारत का आपस में अच्छा सम्बन्ध है ।

तकला कोट के पास अल्मोड़े के महात्मा गांधी जी के भक्त सच्चे कांग्रेसी राष्ट्रीय साधु आनसिंह की समाधि है उनकी स्मृति में वहाँ पर एक जल धारा बनी हुई हैं । तकला कोट से २ मील टोकी नामक स्थान से काश्मीर नरेश गुलाबसिंह के वीर सेनापति जोरावरसिंह की समाधि के दर्शन होते हैं, इस वीर ने लद्दाख के धावे में अपनी सेनाओं से तिब्बत पर चढ़ाई की और सेना को छोड़ अपनी धर्मपत्नी को लद्दाख भेजकर तकलाकोट जाती बार तिब्बती सेना ने रास्ते में ही घेर लिया और अन्त में बड़ा निर्दयता तथा अमानुषिकता के साथ मार डाला, परन्तु उनके नाम का भय अब तक भी तिब्बत के बच्चे बच्चे को इसी समान है जिस प्रकार कि नैपोलियन का भय अंग्रेजों को, इस वीर योधा का शिर काट कर उसके टुकड़े टुकड़े कर तिब्बत के घर, घर में बांटा गया जिसको भावी सन्तान के हृदयों में भय और साहस पैदा कराके के लिये यादगार सुरक्षित रखते हैं । यहाँ से आगे निर्जन मार्ग से ८ मील एक छोटा सा रूँगुंग ग्राम

है यहाँ गाय, चंवरीगाय का दूध मिलजाता है यह स्थान १४४०० फीट है। यहाँ से आगे मार्ग सीधा सरल और समतल है। गोरि ओडियार और बलडाक या गुरला पास पास करते समय कुछ थोड़ा चढ़ाई उतराई है शेष मार्ग एकसा है। यहां प्रातःकाल का शीत मध्यान्ह का सूर्यताप और साम के वक्त बर्फ का पड़ना मामूली बात है वर्षा यहाँ नाम मात्र को होती है। रूँगुंग ग्राम से ...मील राक्षस ताल के पास—रहसंग १४८५० फीट है यहाँ से राजा मान की तपस्या का श्वेत पर्वत मानधाता का रमणीय स्थाम दिखाई देता है इसी राजा मान के नाम से 'मानसरोवर' भी है। इस स्थान की किसी भी पहाड़ी पर चढ़कर पवित्र मानसरोवर के दर्शन होते हैं। साथ अन्य पहाड़ियोंसे राक्षसताल के भी दर्शन होते हैं।

रहसंग से साधारण उतराई चढ़ाई करते ८ मील मानसरोवर के पश्चिमी किनारे डेरा डालने का स्थान है, प्रायः इस प्रान्त में डाकू यात्रियो को अवसर पाकर लूट लेते थे लेकिन इस सन् १९४९ ई० यानी २००६ विक्रमी को खम्पें डाकुओं का प्रसिद्ध मुखिया 'नाक छाक डाकपो पाँच साथियों' के सहित गरपन लोगों ने मार डाला, हथियार, धन, सम्पत्ति और काफी तादाद में जानवर भी डाकुओं से मिले, अब डाकुओं का भय दूर हो गया है।

मानसरोवर के चारों ओर बौद्ध मठ हैं जिन्हें गुम्फा अर्थात् एकान्त स्थान कहते हैं। मानसरोवर के किनारे आठ गुम्फायें हैं।

वर्खा से ७ मील बुन्दु स्थान दरचन के पास ही है, यही से कैलाश परिक्रमा आरम्भ होती है और दर्शन भी होते हैं। इधर के सभी शृंगों से कैलाश ऊँचा अर्थात् २२६८० फीट ऊँचा है, यह त्रिकोणाकार मन्दिर की तरह है एक ओर वर्फ की सीढ़ियां जैसी मालूम देती है। कैलाश की परिक्रमा में पाँच प्रसिद्ध बौद्ध मठ पड़ते हैं एक दरचन जंगड़ा, शिर लुंग, छुकड़म, बोर ची गुम्फा होकर ही कैलाश परिक्रमा की जाती है। कैलाश के उत्तर में सिन्धु नदी अर्थात् सिंह चुम-कम्बा कहते हैं, पूरब में सीपों या ब्रह्मपुत्र है, इसे तमजफ-कम्बा कहते हैं, पश्चिम में सतलज है जिसे लाचु-कम्बा कहते हैं, दक्षिण में करनाली नदी जिसे माचु-कम्बा कहते हैं, इनमें से तीन नदियाँ भारत में प्रवेश करती हैं और करनाली तिब्बत में ही विहार करती है। कैलाश परिक्रमा के पहले देवालय (गुम्फा) में सोना, चाँदी, ताम्बा, पीतल, अष्टधातु आदि की अनेक देव मूर्तियां हैं और महादेव, पार्वती की संगमरमर की दिव्य मूर्तियाँ हैं वहाँ पर अखण्ड दीपक घृत के जला करते हैं पुजारी

लामागुरु सत्यवादी और दीर्घजीवी हुआ करते हैं। पहली गुम्फा में ४ हाथ लम्बे २ दांत हाथी के नुमा-यशी हैं अन्य गुम्फाओं में भी इसी तरह सब जगह दर्शन हैं हां चौथी गुम्फा में विशेष इन्तजाम हैं, इन मठों में पाली भाषा के पुस्तकालय भी हैं और लामा लोग हर वक्त ॐ मने पद्मे हुँ का जप करते रहते हैं डेरफू गुम्फा में ४ हाथ लम्बे भैंस के सींग हैं, जुमलफू गुम्फा में स्फटिक शिला मूर्ति है। ग्यांग-टांग गुम्फा में १५ हाथ लम्बी शेर की खाल है। कैलाश की परिक्रमा २५ मील की है जो ३ दिन में अच्छी तरह हो सकती है। जो लोग खुद परिक्रमा नहीं कर सकते वे लामाओं को मजदूरी देकर उनसे करा लेते हैं लामा एक ही दिन में परिक्रमा कर देते हैं।

लामाओं को पञ्चशील बनाया जाता है जैसे पु० शा० शेङ् (किसी जीव की हिंसा न करना) पु-ताउ-तो (चोरी में विरत रहना) पु-सेह-इन (व्यभिचार न करना (पु-चैड-यि० (झूठ न बोलना) पु-यिन-चिउ (मदिरा आदि से विरत रहना) और पूर्ण दीक्षित होने के लिये पांच शिक्षाप्रद और भी ग्रहण करने होते हैं जो यों हैं—हुआ-यंङ् (गन्ध पुष्पमाला आदि से विरत रहना) को-चेङ् (नृत्य गीत से विरत रहना) ता-

तुआङ् (उच्चासन या महासन से विरत रहना) फे-शिह-शेह (विकाल भोजन से विरत रहना) चो-सै-पाओ (सोना चाँदी ग्रहण करने से विरत रहना) ये लोग अपनी उन्नति के छ मार्ग मानते हैं— १ आरोग्य, २ शील, इसका मतलब सदाचार से है। खाना खाते वक्त १५ बातें इनकी जरूरी हैं इसी तरह टट्टी पेशाब आदि आदि सब जगह शिष्टाचार। ३ वृद्धों की अनुमति, ४ श्रुत अर्थात् नाना प्रकार की विद्याओं को जानकर जीवन सुखमय बनाना, ५ धर्माचरण तीन कायिक कुशल कर्म चार वाचिक कुशल कर्म तीन मानसिक कुशल कर्म यह दश कुशल कर्म सबके लिये इस लोक परलोक की उन्नति के सूचक हैं। ६ अनालस्य आलस्य रहित मनुष्य ही सच्ची उन्नति कर पाता है। तिब्बती लामा देखने में भयानक एवं गन्दे हैं किन्तु वह अपने मजहब में बहुत ही ऊँचे हैं अतः आदरणीय हैं।

ग्याङ ठाङ—दरचिन से २ मील उत्तर की ओर है। यहाँ भी लामा ब्रह्मचारी रहते हैं। प्रबन्ध पहले की तरह है वापिस दर चिन मण्डी में ही आना पड़ता है।

मानसरोवर—दरचिन से १२ मील है मार्ग में ८ मील पर नभन ठाङ की एक विशाल गुफा मिलती है जिस में पचासों यात्रि रह सकते हैं पास ही में सतलज

नदी बहती है। कहते हैं कि इसके आस पास पहाड़ियों की ओट में तिब्बती डाकुओं का गिरोह पंच हथयारी पहने घुड़ सवार हो यात्रियों को लूटने के लिये छिपे रहते हैं अतः सावधान रहना चाहिए। मार्ग में झुण्ड के झुण्ड श्याम कर्ण घोड़े व खरगोस मिलते हैं। राक्षस ताल—मान सरोवर से निकली हुई नहर से दरांती की तरह का मुड़ा हुआ बना है जो ३५ मील लम्बा २० मील चौड़ा है। बीच में ऊंचे टापू बने हुए हैं पूरब की ओर मान सरोवर ५० मील लम्बा ३० मील चौड़ा है। किनारे पर कमल व तरह तरह के फूल खिले हैं। सरोवर जिस समय लहरें मारता है मछलियां लहरों के साथ दूरतक शुष्क भूमि में जा गिरती हैं जिस को यात्रि प्रसाद के रूप में उठा लाते हैं और ओपधी के उपचार में लाते हैं। ज्यू गुम्फा मानसरोवर के दाहिने किनारे गुम्बजा कार है।

करदम—मानसरोवर से २० मील है। यहाँ पर तिब्बतियों की घनी बस्ती है। गांव घाटी में बसा है, जौ, मटर, लाई, सरसों की खेती होती है। ग्रामीण लोग भेड़, बकरी गाय और चंवरी गाय पालते हैं। यहाँ पर घी के स्थान पर मक्खन बिकता है। पास ही कर्दम मुनिके आश्रम के चिन्ह मिलते हैं। पुड़ाङ—कर्दम से

६ मील दो ढ़ाई हजार घर तिब्बतियों की बस्ती है ? ये लोग-कच्ची ईंटों के तिमंजिले मकानो पर रहते खेती करते हैं इस मम घाटी में लम्बे चौड़े खेतों में सैकड़ों नर नारी काम करते दिखाई देते हैं खेतों के बीच बड़ी बड़ी गूलें बहती हैं जिनसे पानी के घराट (चक्की) चलते हैं। यहा से ६ मील ताकला कोट तक मार्ग के किनारे बौद्ध मंत्र लिखे हुए पत्थरों के चट्टे मिलते हैं। आज से २ हजार वष पहले तिब्बत में बौद्ध धर्म का प्रचार किया गया यह उस समय ने चिन्ह है। पुड़ाङ से २ मील पर लकड़ी की अपने ढंग की निराली पुल है जो रंग, बिरंगे वस्त्रों की पताकाओं से सुसज्जित रहती है। कहते हैं कि तिब्बत सरकार ने इस पुल को बनाने के लिये जुमला नेपाल से तीन लट्ठे मंगाये थे।

ठोकर गुम्फा—मानसरोवर से दूसरे मार्ग द्वारा १६ मील है। यह बड़ी मण्डी है यहाँ-जोहार, दारमा, जुमला नेपाल व तिब्बतियों की १ महिने मण्डी लगती है, मठ का प्रबन्ध पहिले की तरह है।

गोरी गुफा—ठोकर मण्डी से १६ मील है यहां ब्रह्मपुत्र नदी निकलती है।

ताकला कोट—गोरी गुम्फा से १८ मील हैं यहाँ १५ हजार फीट की ऊंचाई पर विशाल दुर्ग बना हुआ

है जिसमें लासा सरकार का प्रान्तीय गवर्नर अपने ठाट में सेकड़ों दास दासियों के बीच में रहता है।

दुर्ग के बीच में दरारें पड़ी हैं कि सन् १६६२ में कुमायूं के राजा बहादुरचन्द ने तिब्बत पर चढ़ाई की। कुमयें सैनिकों की गोलियों की बौछारों से ये दरारें हैं। उस समय की अंकित शिला न्यास की शिला भी अब तक मौजूद है। कोट में चढने के लिये पहाड़ की कैंची काटकर मार्ग निकाला गया है जो मण्डी से १ मील की गगन चुम्बी ऊंचाई पर है। पीने तक को जल इसी चढ़ाई द्वारा पहुँचाया जाता है। नीचे दो नदियों के संगमपर तिब्बत और व्यासियों की मंडी लगती है घाटी गम और वस्ती घनी है। ताकला कोट के आस पास की जनसंख्या लगभग सात आठ हजार के बराबर होगी अधिकाँश लोग दो मंजिली ऊँची कन्दराओं में रहते हैं। यहाँ से गर्ब्यांग को पहले लिखा मार्ग लेना चाहिए।

खोचर नाथ—ताकला कोट से १० मील उत्तर पूर्व की ओर है मार्ग के दोनों ओर बराबर बस्ती है यहाँ वर्षात में खेति बोई जाती है। खोचर नाथ में भारतीय कलाओं से पूर्ण अनुपम सिंहासनों के ऊपर श्रीराम, लक्ष्मण सीताजी की पञ्च धातु से बनी हुई ९-१० हाथ ऊंची विशाल मूर्तियां हैं। यह दीवाल उत्तम कोटि की बनी

हुई है। पास में एक धर्म शाला है जिसमें सैकड़ों यात्री ठहर सकते हैं, मनों घी से भरा हुआ एक दीपक कुंड है। कहते हैं कि सतयुग से यह बराबरज लता आरहा है। यहां लामा के भिक्षुक-ब्रह्मचारी, भारत के पण्डे-पुजारियों की तरह तंग नहीं करते हैं न कुछ मांगते हैं, बड़े शान्त हँसमुख होते हैं। यात्री को बड़ी श्रद्धा से देखते और बड़ी सेवा सुश्रुसा करते हैं। इन मठों पर यात्री अपनी इच्छा से चँवरगाय तथा बकरी चढ़ाते हैं जिनके घी से यात्री के नाम दीया जलाया जाता है।

डिपुंग—खोचरनाथ से लामा की ओर पूरब में १२ मील की विकट घाटी मिलती है बीच बीच में बर्फ के ढाल मिलते हैं उनको पार करके ही डिपुंग गुम्फा मिलता है जो रमणीय स्थान में सूर्य की ओर मुँह करके बनाया गया है, मठ अपनी कला कौशल से परिपूर्ण सुसज्जित है इसके आगे ४ मील की चढ़ाई के बाद १४ हजार फाट से ३ मील का साधारण उतार पार कर एक लम्बी चौड़ी घाटी मिलती है जहाँ भेड़ बकरियों के चरने के लिये लम्बे चौड़े हरे भरे घास के मैदान हैं जिनमें तिब्बती गड़रिये भेड़ बकरियों को लिये इधर उधर फिरते हैं पचासों मील तक तम्बू ही तम्बू दिखाई देते हैं, पहाड़ी की तलहटी में गैनडेज नाम का

विशाल वृत्ताकार मठ बना हुआ है जिसमें सैकड़ों भिक्षुक गेरुआ वस्त्र धारण किये मिलते हैं पास ही एक प्राकृतिक एक मील लम्बा चौड़ा सरोवर है जिसमें श्वेत वर्ण के हंस व बतख तैरते रहते हैं।

नेसी—गैनडेन से १६ मील है, यहाँ भी एक मठ है जिसके आस पास खेती होती है और गाँव भी बसे हुए हैं। यहां के लोग कुछ सभ्य और शिक्षित जान पड़ते हैं। मठ के पास एक आश्रम में लामा लोग धार्मिक उपदेश दिया करते हैं और कुछ ब्रह्मचारी हाथ में त्रिशूल, डमरू, ध्वजायें तथा रंगीन लाठी लिये तिब्बती भाषा के मंत्र—ओं मणि पद्मे हुं—जपा करते हैं। प्रत्येक मठ में सैकड़ों लामा भिक्षुकों का, शिक्षालय, निवास गृह, खान पानादिक का सुव्यवस्थित प्रबन्ध रहता है। इसके आगे हिमालय की श्रेणियां हैं जो नैपाल राज्य से मिली हुई मानधाता के नाम से पुकारी जाती है पूर्व उत्तरी भाग में ब्रह्मपुत्र नदी अपनी विभिन्न धाराओं को एकत्र कर बहती है जिसमें बर्फ के बड़े बड़े टुकड़े बहकर आते हैं नदी के दोनों तरफ का दृश्य देखने के काबिल है जहां सुन्दर हरी भरी जमीन में नाना प्रकार के सुगन्धित पुष्प ही क्या बल्कि मिट्टी भी सुगन्धित ही है।

यथार्थ में यह भूमि स्वर्ग भूमि ठीक ही है। यहां दिव्य बूटियों का घर है, विष उपविष, संखिया, तेलिया भी यहां प्रचुर मात्रा में है। कस्तूरा, थार, हरिण, सफेद खरगोश, जंगली चूहे, बुकिया, गून्याल तो यहां इतने अधिक हैं कि मानो कैलाशपति भगवान ने यह भूखण्ड इन्हीं के लिये बनाया हो।

हां, मक्खी, मच्छर, बिच्छू, सांप, मेढक, जोंक आदि सताने वाले जन्तु तो यहां स्वप्न में भी नही हैं। इस प्रकार रमणीक भूखण्ड २० मील पार करके पिङ्-नामक दर्शनीय ऐतिहासिक मठ मिलता है यह गर्म घाटी है यहाँ के लोग नैपाली बोली भी जानते हैं यह बस्ती धनाढ्यों की है नैपाल काठमाण्डू से व्यापार करते हैं और अपने बालकों को पढ़ाने लिखाने के लिये हमारे देश तक भेजने लग गये हैं। यहां पर महाराजा हर्षवर्द्धन अशोक के बनाये मठ, मन्दिर अब भी अच्छी तरह से सुरक्षित हैं। इन मठों के अन्दर प्राचीन दशा को याद दिलाने वाले बुद्ध भगवान की मूर्तियां हैं। धूप, दीप और पुष्पों के अलावे यहां के देवता दान, दक्षिणा कतई नहीं लेते हैं। मन्दिर मठों का खर्चा "दलाई लामा" लामा की सरकार की ओर से चलता है, मठों के नाम पर हजारों की संख्या में भेड़, बकरी, चँवर गाय पाली

जाती हैं और उन्ही की आय से काम चलता है। मठों में पुजारी "लामा" प्रसन्न हँसमुख मिलनसार होते हैं, यहां प्रत्येक गृहस्थ को अपने बालकों को बौद्ध धर्म का ज्ञान करा लेना अनिवार्य है। बालक, बालिकायें गेरुआ वस्त्र पहिने मठों में शिक्षा प्राप्त करते दिखाई देते हैं।

काश्मीर

सैलानियों के लिये काश्मीर अति उत्तम स्थान है। यह जितना रमणीय है उतना ही स्वास्थप्रद भी है। यहां के सुन्दर प्राकृतिक दृश्यों को देखने के लिये देश विदेश के यात्री आते हैं।

काश्मीर का स्वास्थ्यप्रद जलवायु, उद्यान और सरोवर पुष्प और पक्षी, घाटियां और नयनाभिराम दृश्य सभी उसे विश्राम और मनोरंजन का आदर्श स्थान बनाने में सहायक हैं। काश्मीर की घाटी में इस्लामाबाद, बीइना, रूच, चस्मा-ए-शाही, कूकर नाभ, अचवल और गन्धर्वल नामक स्थानों पर ऐसे झरने हैं जिनके जल में रोग नाशक गुण भी हैं। काश्मीर के जंगलों और लद्दाख, गुरेज, अस्तोर और किस्तवार आदि सीमा स्थानों में रीछ जंगली बकरे, जंगली भेड़ और तेंदुए पाये जाते हैं। गुलमर्ग में गोल्फ खेलने का सुन्दर मैदान हैं। तोस मैदान, खुमियां बाली गली

और सोनमर्ग में गर्मियों में जाड़ों में बर्फ पर फिसलने के खेल खेले जा सकते हैं।

कारमीर की केशर, रेशम, रेशम की बनी चीजें, ऊनी माल, लकड़ी तथा पत्थर की नक्काशीदार चीजें तमाम भारत में जाती हैं। पठानकोट रेलवे से जम्मू सड़क ६५ मील है जो सभी ऋतुओं में यातायात को अच्छी है। भारत से हवाई जहाज भी आते जाते हैं। कारमीर में यात्री विभाग खुला हुआ है जिसकी शाखायें रियासत भर में फैली हुई हैं प्रवेश पत्र प्रणाली सरल कर दी गई है।

कारमीर का सामाजिक जीवन

इतिहास के आदि काल से कारमीर में अनेक सभ्यताओं का उदय हुआ है। परिणामतः कारमीर निवासियों की संस्कृति–बौद्ध, हिन्दू, और इस्लामी परम्पराओं का सम्मिश्रण है। कारमीर के लोग अपने व्यवहारिक जीवन में जाति-पांति के भेद-भाव को नहीं मानते, हिन्दू, मुसलमान एक दूसरे के धर्म के आध्यात्मिक उपदेशकों और महात्माओं का समान रूप से आदर करते हैं। कारमीर में ऐसे बहुत से धार्मिक स्थान और मकबरे हैं जिन्हें हिन्दू और मुसलमान दोनों ही

पवित्र मानते हैं, मेले और त्योहार भी मिल जुलकर मनाते हैं। नेशनल कान्फ्रेंस के अधिकांश नेता कट्टर मुसलमान होने पर भी हिन्दुओं के धार्मिक कृत्यों और सामाजिक उत्सवों में सम्मिलित होकर अत्यन्त खुशियां मनाते हैं।

जन्म, विवाह और मृत्यु में किये जाने वाले कृत्यों में भी यही बात है। ग्राम्य गीत भी एक ही हैं स्त्रियों में पर्दा प्रथा नहीं है। बेश-भूषा भी एकसा ही है। अगस्त १९४९ में जब गान्धीजी ने काश्मीर की यात्रा की तो वे हिन्दू और मुसलमानों को पहचान न सके थे, लालदेह जो सुलतान शहाबुद्दीन के राज्यकाल १३५० में जीवित थे और रूपा भवानी जो १६वीं शताब्दी के अन्त में हुई उनकी सूक्तियां आज तक भी दुहराई जाती हैं।

सन्तों और ईश्वरीय ज्ञान के खोजने वालों ने सदा ही हिमालय के अद्भुत और मनोहारी सौन्दय से प्रेरणा प्राप्त की है। पहाड़ों की निस्तब्धता और वैभव के बीच सांसारिक कामनाओं को भूलकर जिज्ञासुओं ने योग साधना की है इसलिये काश्मीर में ऐसे अनेक पवित्र और तीर्थ स्थान यत्रतत्र बिखरे हुए हैं जो अतीत के आध्यात्मिक चिन्तकों की याद दिलाते हैं।

अमरनाथ—हिमालय के एक विस्तृत बर्फीले प्रदेश में समुद्रस्तर से १२७२६ फीट की ऊँचाई पर अमरनाथ की प्रसिद्ध गुफा भारत के महत्वपूर्ण तीर्थ स्थानों में है।

इस गुफा का आकर्षण केन्द्र एक हिमलिंग है जो चन्द्रमा के साथ साथ घटता बढ़ता रहता है। जुलाई अगस्त के महीने में पूर्णिमा के दिन भारत के सब भागों से हजारों हिन्दू यात्री दर्शन को आते हैं। अमरनाथ पहल गांव से ३२ मील है और यहीं से पैदल यात्रा प्रारम्भ होती है। मार्ग में चन्दनवाड़ी, बावुजान और पंच तरणी के तीन पड़ाव डालकर चौथे दिन अमरनाथ के दर्शन करते हैं लेकिन वापिस आने में दो ही दिन लगते हैं इस अवसर पर स्थान स्थान पर अस्थाई दुकानें और छप्परों का प्रबन्ध रहता है।

खीर भवानी का मन्दिर—श्रीनगर से १४ मील उत्तर तुला-मुला का मन्दिर है जिसमें खीर भवानी के दर्शन हैं। पास में एक झरना है जिसका रंग कभी हरा और कभी बैंजनी बदलता रहता है जून में यहाँ भी मेला लगता है।

कपाल मोचन—श्रीनगर से २४ मील कपालमोचन तीर्थ है पास में ही तीन झरने हैं मुख्य झरने में एक प्राचीन लिंग है, कहते हैं कि ब्रह्मा का पांचवा सिर

कटने के बाद शिवजी ने इस स्थान पर ही उस पाप को धोया था, इस स्थान पर मृत आत्मा का श्राद्ध करते हैं अगस्त में यहां भी एक मेला लगता है।

गंगाबल झील—श्रीनगर से ३४ मील उत्तर सिन्ध की घाटी में गंगाबल झील है मालूम पड़ता है कि गंगा यहीं से निकली है। हरिद्वार की भाँति इसका भी बड़ा महात्म्य है अगस्त से पूर्णिमा के आठवें दिन यहाँ भारी मेला लगता है।

मार्तण्ड—श्रीनगर से १४ मील एक छोटी पहाड़ी पर ज्वाला जी का एक प्रसिद्ध मंदिर है जुलाई में यहाँ भी बड़ा मेला लगता है। श्रीनगर से ४० मील दक्षिण दूसरा मार्तण्ड है यहाँ सूर्य भगवाग की प्रसिद्ध मूर्ति है लोग यहाँ श्राद्ध करते हैं।

अनन्त नाग तथा वैरीनाग—श्रीनगर से ३४ मील दक्षिण अनन्त नाग है, सितम्बर में अनन्त चौदस को यहाँ भी बड़ा मेला लगता है। पीर पंजाल प्रदेश की ओर बनिहा लाग दर्रे में वैरीनाग विरहानाग है कहते हैं कि काश्मीर की सबसे प्राचीन पुस्तक नीलपत पुराण यहीं लिखी गई थी।

शंकराचार्य—श्रीगगर शहर में शंकराचार्य का

प्राचीन मंदिर है जिसे काश्मीर के राजा गोपादित्य ने बनवाया था और मुसलमान बादशाह जेनुल ने इस मन्दिर की मरम्मत करवाई थी।

हजरतबाल—नसीमबाग के समीप डल झील के किनारे मुसलमानों का एक सबसे अधिक पवित्र स्थान हजरतबाल है जिसमें पैगम्बर का पवित्र बाल रखा हुआ है हर शुक्रवार को और ईद के त्योहार को यहाँ पर मुसलमान भक्तों की बड़ी भीड़ जमा होती है।

मखदूम शाह का मकबरा—मुसलमानों के अत्याधिक प्रिय तीर्थ स्थानों में यह मकबरा हरिपर्वत की तलहटी में बना हुआ है। बीमारी के समय हिन्दू और मुसलमान दोनों ही इनके दर्शन करते हैं।

शाह हमदान मस्जिद—श्रीनगर में जलम नदी से दायें किनारे पर शाह हमदानकी लकड़ी की शानदार मस्जिद है जिसे हिन्दू और मुसलमान दोनों ही पवित्र मानते हैं। इस मस्जिद में काली भवानी का एक झरना है प्रति दिन सैकड़ों हिन्दू यहाँ धर्म कर्म के लिये आते हैं।

तरार शरीफ—श्रीनगर से १६ मील दक्षिण मुसलमानों का तीर्थ स्थान है जो कि तरार गांव में है। पतझड़ के महीनों में हिन्दू और मुसलमान भक्त कश्मीर के दूरस्थ भागों से प्रार्थना और उपासना के लिये यहाँ आते हैं।

कश्मीर के देखने योग्य स्थान

अमिराकादल—कश्मीर की सुन्दर नगरी भेलम नदी के दोनों किनारों पर स्थित है। अमिरा का दल जो कि नदी में एक प्रसिद्ध पुल है, दोनों किनारों पर बसे हुए शहर के दोनों बड़े बाजारों को मिलाता है। रावल पिण्डी और जम्बू के बीच वाली सभी सवारियों को इसे पार करना पड़ता है।

शाही चस्मा काश्मीर

यह सभी मुगल उद्यानों में अपने पवित्र व उत्तम पानी के सुन्दर झरने के लिये प्रसिद्ध है श्रीनगर से मोटर रोड़ होकर ५ मील की दूरी पर स्थित है। गर्मियों मे इसका सौन्दर्य देखने योग्य रहता है।

निशान बाग—यह उद्यान श्रीनगर से मोटर रोड़ होकर ७॥ मील और जलमाग होकर ६ मील है। यह बगीचा दश चौतरों में अच्छी तरह सजा हुआ है प्रत्येक पर्वत पर एक से दूसरा कुछ ऊंचाई पर चढ़ता हुआ चला गया है। उद्यान के मध्य में अनगिनत झरने जो कि नियमा नुसार तालाब या झीलों में सजे हुए हैं-रविवार के दिन काम करते हुए एक शानदार दृश्य उत्पन्न करते हैं।

झेलम नदी में हाउस बोट की शोभा भी देखने ही योग्य है डल झील–यह झील ५ मील लम्बी २ मील चौड़ी है किन्तु अधिक गहरी नहीं है। यह सिटी लेक कहलाती है। सुन्दर कमल और अन्य पुष्प लहराते हुए जल में बहते हुए बहुत सुन्दर दिखलाई देते हैं। यात्रियों का एक बड़ा समूह नाव से इस झील को पार कर शाला-मार बाग में जाता है।

हरि पर्वत किला—यह किला सम्राट अकबर ने हरि पर्वत की चोटी पर बनवाया था। किले के दो वर्ग हैं, एक में एक हिन्दू मन्दिर है। वहां एक शस्त्रशाला भी है जहां कतिपय पीतल की तोपें सुरक्षित हैं। इसके चारों ओर की दीवाल सम्राट ने १ करोड़ रुपये में सन् १५९० में बनवाया था किले के निचले भागतक एक रास्ता गया है जिसमें तांगा आदि सरलता के साथ पहुंच सकता है।

अवन्तिपुर–झेलम नदी के दाहिने किनारे पर सन् ८२५ से ८३३ तक राजा अवन्त बर्मा ने बसाया था और यही काश्मीर राजधानी थी। यहाँ दो प्राचीन मन्दिर भग्न नजर आते हैं। वर्तमान अन्वेषक कार्य जो कि रास्ते के पास ही हैं देखने योग्य है।

अकबाल—यह सम्राट जहाँगीर ने हृदयग्राही दृश्यों से युक्त सबसे अधिक चित्रित परम सुन्दर बारह दरी,

तालाब एंव झरनों के साथ बनवाया था। जो साम्राज्ञी नूरजहां का स्मारक है। यह उद्यान काश्मीर के सबसे प्रसिद्ध स्रोत वाला है।

वेरिंग—यह जम्बू के मार्ग में श्रीनगर से ५० मील पर ६१०० फीट है इसमें अष्ठ भुज स्रोत है जिसका जल नीला है झेलम नदी यहीं से आगे बढ़ती है।

गुलमर्ग—श्रीनगर से २८ मील ८७०० फीट बहुत ही सुन्दर स्थान है गर्मियों में बहुत से दर्शक लोग वहाँ जाते हैं और ठहरते हैं।

सिन्ध घाटी का पुल—यह पहल गाँव के निकट है सिन्ध नदी यहाँ से अपने सम्पूर्ण सौन्दर्य के साथ दिखलाई देती है दर्शक आराम एवं शान्ति के लिए इसे अच्छा पाते हैं।

लद्दाख

श्रीनगर से २४५ मील ११ हजार फीट की ऊंचाई पर एक नया संसार बसा हुआ है। हिमाच्छादित शैल शिखरों और नंगी चट्टानों में घिरी हुई यह घाटी श्रीनगर की फूलों से लहलहाती घाटी से कितनी भिन्न है यह लद्दाख है। १ घन्टे २० मिनट में हवाई जहाज श्रीनगर से लद्दाख की राजधानी लेह में पहुँचता है। पैदल तथा

घोड़े खिचर १५-१५ रोज में पहुँचते हैं। लद्दाखमें हिमा-लय की ऊंची पर्वत माला जिनपर बर्फ से ढकी हुई गगन चुम्बी चोटियाँ हैं सांसारिक अपराधों और पापों का अभी प्रवेश नहीं हो पाया है हाल ही में प्रधान मंत्री पं० जवाहर लाल नेहरू की लद्दाख यात्रा के समय उनके साथ रहने वाले प्रेस ट्रस्ट के एक सम्वाद दाता ने लिखा है। कि अधिकारियों के लिये इस घाटी में जेल बनाने की आवश्यकता नहीं पड़ी है। लद्दाख गर्मियों में अत्यन्त गर्म और सरदियों में अत्यन्त सर्द रहता है। यहाँ आने जाने के आधुनिक साधन बहुत कम हैं पर इसकी राज धानी लेह में कई महत्त्व पूर्ण व्यापार मार्ग मिलते हैं जो भारत को तिब्बत, यारकन्द और पूर्वी तुर्किस्तान से मिलाते हैं। यद्यपि यह हिम नदियों का देश है और सिन्ध नदी इसमें होकर ३०० मील तक बहती है। फिर भी यह इतना सूखा है कि पानी की कमी सदा बनी ही रहती है यह वर्ष में लगभग ६ मास संसार से कटा हुआ रहता है किन्तु आश्चर्य यह है। कि यहाँ के लोग फी सदी ६० शिक्षित हैं।

भारतीय प्रभाव—लद्दाख की बोली रहन सहन और वेश भूषा में बड़ा भेद होने पर भी यहाँ पहुँचने पर कोई भी भारतीय अपना पनसा अनुभव करता है शहर में

हर जगह ऐसे प्राचीन चिन्ह दिखाई पड़त हैं जो सुदूर प्रदेश के साथ भारत का सम्बन्ध प्रकट करते हैं। लद्दाख बौद्धों का केन्द्र ह भगवान बुद्ध की जन्म भूमि भारत के साथ लद्दाखी अपना नैसर्गिक सम्बन्ध समझते हैं। अनेक सिरों वाले देवी देवताओं, कांसे की मूर्तियों और प्राचीन हस्त लेखों से मालूम होता है कि लद्दाख पर भारत का प्रबल प्रभाव रहा है लद्दाखी लिपि देवनागरी से मिलती जुलती है। लद्दाखी नृत्योंमें भारतीय नृत्यों की झलक है यहाँ तक की गाँव वालों के घर भी पूर्वी पंजाब के घरों के सदृश होत हैं। आभूषणों चित्रों नकाशी के कामों, मन्दिरोंकी चित्रकारी के कामों आदि में लद्दाख पर भारतीय प्रभाव है। साधारण तथा लद्दाखी अपनी सुरक्षित घाटी में प्राचीन परम्पराओं का अनुसरण करते हुए सन्तोष के साथ जीवन व्यतीत करते हैं। ये लोग सीधे सादे परिश्रमी अत्यन्त धर्म परायण और प्रसन्न चित्त होते हैं उत्सवों और भोजों के अवसरों पर स्त्रियां सुन्दर आभूषण पहन कर नाचती हैं। लगभग सभी लद्दाख बौद्ध है यहां बौद्ध मठों और भिक्षु (लामा) ओंका सुन्दर दृश्य दिखाई देता है कुछ मठ तो गाँव से भी बड़े हैं कोई गाँव मठों से रिक्त नहीं सम्पन्न लोगों के अपने घरमें भी मठ हैं जिनमें लामा रखे हुये है लामाओं

की संख्या अधिक होने पर भी उनका बड़ा आदर करते हैं। उत्सवों में लोग मठों में इकत्र होकर भजन, प्रार्थना और नाच गान भी करते हैं।

लद्दाख में सबसे बड़े भाई का विवाह होता है और जितने भी भाई हों उन सबकी वही औरत समझी जाती है उनके जो लड़के होते हैं वे बड़े पिता छोटे पिता कहा करते हैं यह प्रथा परम्परा से चली आती है इस प्रथा के कारण जन संख्या भी बढ़ने नहीं पाती।

लद्दाख में बाल्टियों से बोटियों का जीवन मान अधिक ऊँचा है वे बड़े सन्तोषी सदा प्रसन्न, हंसमुख, विनोद प्रिय और हर काम के लिये तैयार रहते हैं। लद्दाख में अधिकतर खेती जौ की ही होती है गेहूँ भी कुछ होते हैं ऊन और ऊनी वस्त्र काफी मात्रा में होता है।

कुल्लु और बुशाहर

एक बार मेरा स्वास्थ्य खराब था विशेषज्ञों की राय थी कि मैं कम से कम १ हजार मील पहाड़ों की यात्रा करूं स्वास्थ्य लाभ करना जरूरी चीज समझ कर मैं सितम्बर शुरू होते ही रेल मोटर द्वारा काश्मीर पहुँचा वहाँ कतिपय स्थानों की यात्रा कर चम्बा, भरमोर के पहाड़ों का भ्रमण कर महर्षि व्यास, वशिष्ठ के दर्शनों को करके

बड़ी ऊँची चढ़ाई, उतार का रास्ता, देवदार, चीड़ आदि के घनघोर जंगल, अकेला यात्री जिधर दिल चला देखते ही चला, कुछ दिन के बाद कुल्लु आया कुल्लु अच्छी घाटी है यहाँ हर प्रकार की फसल होती है कुल्लु से २१ मील मुडाली तक मोटर सड़क गई है, कुल्लु से आगे लल, पित्ति, यारकन्द आदि तिब्बत प्रदेश हैं, कुल्लु में विजया दशमी का बड़ा भारी व्यापारिक मेला लगता है जिसमें ऊनी माल बड़ी तादाद में आता है और घोड़े भी अच्छे अच्छे बिकने को आते हैं। कुल्लु से २ मील पर बिजली महादेव हैं जहाँ प्रतिवर्ष बिजली-महादेव के लिंग में गिरकर उनके टुकड़े टुकड़े कर डालती है पुजारी उन टुकड़ों को इकट्ठा करके मक्खन के साथ जोड़ कर फिर से लिंग तैयार कर देता है यदि कोई टुकड़ा नहीं मिलता तो रात को स्वप्न में वह टुकड़ा पुजारी बताया जाता है जिसे पुजारी दिन में लाकर उस स्थान पर लगा देता है और उसके दूसरे ही दिन वह शिवलिंग पेश्तर जैसा बन जाता है।

यहाँ मनीकर्ण भी देखने योग्य स्थान है जहाँ गर्म पानी के कुण्ड और स्रोत हैं। इस पानी के स्नान करने से गठिया बायु को दूर होना कहा गया है। इस प्रदेश में भी काश्मीर की तरह फल फूल मेवे की उपज अच्छी

होती है। कुल्लु से बिसलेड जोत (शिखर) तय कर रामपुर बुशाबर आया, यह प्रदेश सतलज के दोनों ओर बसा हुआ है यह घाटी कुल्लु की तरह उपजाऊ तो नहीं है किन्तु यहां कतिपय स्थान देखने योग्य हैं। यहाँ नरमण्ड में परशुराम आश्रम है जो दर्शनीय है। रामपुर से १८ मील आगे सराण-भीमा कालीजी और गर्मियों में राजधानी रहती है, नवम्बर शुरू में तिब्बत प्रदेश की चीनी तहसील तक और बीच के कुनौरे लोग ठंड के कारण सब नीचे आने लगते हैं उस वक्त सराण जिसे-शोणितपुर भी कहते हैं वहाँ कुनोरों (किन्नरों) का नाच गान होता है यहाँ से पश्चिम की पहाड़ी पर श्रीखण्ड नामक स्थान में महादेव जी के दर्शन हैं यहाँ यात्री नई चिलम पर चरस भरके आगीश्वर महादेव जी के सामने रख देते हैं चिलम में अपने आप लटायें उठती हैं और चरस भाँग जलकर चिलम फूट जाती है लोगों का कहना है कि भगवान शंकर ही उस चरस की दम लगाते हैं। यहाँ से कुछ थोड़ी दूर पर स्वामी कार्तिक का स्थान है जहाँ केवल अस्थि पंजर के रूप में ही दर्शन हैं। रामपुर में ६ नवम्बर के लगभग ३-४ रोज का मेला (लोई) लगती है जिसमें ऊनी माल घोड़े आदि का बड़ा व्यापार होता है यह मेला रामपुर मण्डी देखने को बहुत लोग

आया करते हैं। यहाँ से सुंगरी, बागी, होकर पावर नदी मिलती है, इस नदी के किनारे हाट कोटि देवीजी का स्वतन्त्र स्टेट है यह भूमि षट्कोण है इसे ही पाण्डवों की अज्ञात वास की विराट नगरी कहते हैं। यहाँ से जुब्बल होकर दूसरे दिन चूड़ेश्वर श्रंग पर महादेव जी के दर्शन हैं। इस श्रंग पर चढ़ने में पहले मयदानव की शिलामय भव्य मूर्ति दिखाई देती है उससे आगे शिवजी के घोड़े के दर्शन करने के बाद शंकर भगवान के दर्शन होते हैं। उससे पूरब की ओर पावर नदी के पास सासण महादेव हैं। वहा ३६० शिवलिंग हैं जिनमें जल टपका करता है, कहते हैं कि प्रधानलिंग में पहले दूध टपकता था किसी मूर्ख साधु ने उस दूध को एकत्र कर उसमें खीर बनाकर खाया तो तब से वह दूध भी पानी ही बन कर टपकने लगा, इधर पावर और तौंस दोनों नदियों का संगम हुआ, कहते हैं कि दोनों नदियों का उद्गम स्थान एक ही है फते पर्वत के आखीर मयदानव की लार से पावर और पसीने से तौंस नदी का जन्म है। यहाँ से दूसरे दिन लाक्षागृह और तीसरे दिन शमीवृक्ष जिस पर अर्जुन ने अपना बाण रक्खा था मिलता है, इस स्थान का नाम कालसी कहते हैं। यहाँ सारी संसार के मनुष्यों की ४ दिन की खुराक का धन जमा है जिसे

निकालने की कोशिश में अंग्रेज भी सफल न हो सके। यहाँ से चकरौता छावनी नजदीक ही पड़ती है इस प्रकार मैंने इन सघन पर्वतीय प्रदेश की १३ सौ मील लम्बी यात्रा की जिसके अन्दर अनेकों ऐतिहासिक स्थानों का भ्रमण देवदार चीड़ आदि के सुन्दर वन पर्वतों का दुर्गम मार्ग स्वास्थ्यप्रद जलवायु का सेवन करते ५ पाँच दिसम्बर को अपने मकान पर आ पहुँचा। स्वास्थ में जितनी खराबियाँ थी वे सब दूर होकर प्रायः रोगमुक्त हो गया। हिमालय की दिव्य बूटियों की सुगन्ध से ही अनेक रोग मुक्त होते हैं फिर सेवन से तो कहना ही क्या है।

हरिद्वार में कुम्भ पर्वयोग और उसका फल

पद्मिनीनायके मेषे कुम्भराशि गते गुरौ।
गङ्गाद्वारे भवेद्योगः कुम्भनामा तदोत्तम ॥१॥

जब मेष राशि में सूर्य और कुम्भ राशि में बृहस्पति होवे, उस समय हरिद्वार में कुम्भ नामक पर्व होता है।

पृथिव्यां कुम्भपर्वस्य चतुधा भेद उच्यते ।
चतुस्थले च पतनात् सुधा कुम्भस्य भूतले ॥२॥

जिस समय कुम्भपर्व लगता है उस समय पृथ्वी के चार स्थानों में घड़ों से अमृत की वर्षा होती है। इसलिये चार स्थानों में ही कुम्भपर्व योग होता है।

गङ्गाद्वारे प्रयागे च धारा गोदावरी तटे ।
कलशाख्यो हि योगो यं प्रोच्यते शंकरादिभिः ॥३॥

यह योग पहिले हरिद्वार में, दूसरा प्रयागराज में और तीसरा गोदावरी के सुरम्य तट पर ही कुम्भ पर्वका का माहात्म्य शंकरादियों ने कहा है।

हरिद्वारादि तीर्थेषु चतुर्षु च पृथक् पृथक् ।
कुम्भ पर्वस्य समयो यथा कुम्भमुदीर्यते ॥४॥

हरिद्वारादि चार तीर्थों में कुम्भ पर्व का अलग अलग समय निश्चित किया गया है।

मकरे च दिवानाथे वृषगे च बृहस्पतौ ।
कुम्भयोगो भवेत्तत्र प्रयागे ह्यति दुर्लभः ॥५॥

जब मकर राशि में सूर्य और वृषराशि में बृहस्पति हों, उस समय प्रयाग में अत्यन्त दुलभ पुण्यप्रद कुम्भयोग होता है।

माघे वृषे गते जीवे मकरे चन्द्रभास्करौ ।
अमावस्या ततो योगः कुम्भाख्यस्तीर्थनायके ॥६॥

माघ के महीने अमावस्या में जब वृषराशि में बृहस्पति हों और मकर राशि में चन्द्र सूर्य हों तो उस समय प्रयाग में कुम्भपर्व योग होता है।

सहस्त्रं कार्तिके स्नानं माघे स्नानं शतानि च ।
वैसाखे नर्मदा कोटि-कुम्भस्नानेन तत्फलम् ॥७॥

कार्तिक के महीने सहस्त्रबार स्नान करने से माघ के महीने सैकड़ी बार स्नान करने से और वैसाख में जल के करोड़ों घड़ो के स्नान से जो फल होता है वह फल केवल कुम्भपर्व में स्नान करने से होता है।

अश्वमेध सहस्राणि, वाजपेय शतानि च ।
वैसाखे नर्मदा कोटि—कुम्भस्नानेन तत्फलम् ॥८॥

हजारों अश्वमेध यज्ञों के करने से सैकड़ों वाजपेय यज्ञों के करने से और वैसाख में नर्मदा जल के करोड़ों घड़ों के स्नान करने से जो फल होता है, वह कुम्भ पर्व में स्नान करने से होता है।

अश्वमेध सहस्त्राणि वाजपेय शतानि च ।
लक्षं प्रदक्षिणा पृथिव्यां कुम्भस्नानेन तत्फलम् ॥९॥

जो फल सहस्त्रों अश्वमेधों के करने से मिलता है

और जो फल सैकड़ों वाजपेयों के करने से मिलता है और जो फल पृथ्वी की लक्ष परिक्रमा करने से मिलता है वह फल केवल कुम्भ स्नान से मिलता है।

अश्वमेधफलं चैव लक्ष गौदानजं फलम्।
प्राप्नोति स्नान मात्रेण गंगायां कुम्भगे गुरौ ॥१०॥

जो फल अश्वमेध यज्ञ करने से होता है और जो फल एक लाख गौदान करके होता है वह फल कुम्भराशि के गुरु के समय गंगा स्नान करने से होता है।

यह योग सम्वत् २००७ के विक्रमीय वैसाख कृष्ण एकादशी गुरुवार की साम को ठीक सात बजे को हो रहा है।

अतः कुम्भ पर्व का योग हुआ है जिसका पुण्यकाल ठीक १ बज कर ३० मिनट पर आरम्भ होकर पूरे एक महीने तक अनन्त पुण्य का देने वाला है अतः इस पर्व पर हरिद्वार में स्नान, दान, यज्ञादि सत्कार्य करने से १२ वर्ष के लिये अनन्त पातक नष्ट होकर पुण्य फल प्राप्त होता है।

गङ्गा भागीरथा

भारत की सर्वश्रेष्ठ पवित्र सलिला भागीरथनन्दिनी गंगाजी के विषय में वृद्ध वशिष्ठ सिद्धान्त में लिखा है कि—

भद्राश्ववर्षे सीताख्या चत्तुःस्यात् केतुमालके।
भारते लक नन्देयं कुरुवर्षे च भद्रिका॥

विष्णु पद से निकलने पर इनका नाम विष्णुपदी हुआ और वहाँ से देवलोक आने पर सुरनिम्नगा हुआ। जब देवलोक से यह गिरी तो इनकी चार धारायें हुईं, जिनमें चीन (भद्राश्ववर्ष) में सीता, योरोप (केतुमालका) में चत्तु, भारत में अलकनन्दा और अमेरिका (कुरुवर्ष) में भद्रा नाम हुआ। गंगाजी की उत्पत्ति विष्णु भगवान के चरणों से हुई। जब वामनावतार धारण कर विष्णु भगवान ने राजा बलि से तीन पग भूमि मांगली और उसे नापने के समय विशाल विराट स्वरूपी त्रिविक्रम होकर इन्होंने तीनों लोक नाप लिया तब उस समय ब्रह्माजी ने इनका चरणोदक लेकर अपने कमण्डल में भर लिया था, जिससे गंगाजी निकली हैं। दूसरी कथा यह भी है कि एक बार श्री विष्णु भगवान के सामने श्री महादेव जी नृत्य करने लगे, जिससे प्रसन्न होकर इतने

पुलकित हुए कि द्रवित होकर जलरूप हो गये। ब्रह्मा जी ने यह देख दौड़कर अपना कमण्डलु भर लिया और इसीसे उत्पन्न होनेके कारण गंगा जी ब्रह्मद्रव स्वरूपिणी कहलाई।

कमण्डलु से भारत में आने की कथा इस प्रकार है कि—राजा सगर जब अश्वमेध यज्ञ कर रहे थे उस समय देवताओं ने यज्ञ में विघ्न डालने के लिये अश्व को चुरा लिया और उसे कपिलदेव जी आश्रम में बांध दिया, राजा सगर के साठ हजार पुत्र घोड़े की खोज में निकले और बहुत प्रयत्न करने पर कपिलदेव जी के आश्रम में पहुँचे वहाँ घोड़े को देखकर उन्होंने कपिलदेव जी को चोर समझकर ललकारा। ऋषिश्रेष्ठ उनके इस कृत्य से अत्यन्त क्रुद्ध हो गये और उनके एक ही हुँकार में सब भस्म की ढेर हो गये।

इन लोगों के न लौटने पर राजा सगर ने अपने नाती अंशुमान को इन लोगों और घोड़े की खोज में भेजा, जो कुछ समय बाद वहाँ पहुँचा, उसे अपने मामा से पता लगा कि इस प्रकार उसके पितृगण ऋषि की कोपाग्नि से भस्म होगये और यह भी कि उनकी मुक्ति के लिये स्वर्ग से गंगाजी पृथ्वी पर लाई जाकर उनके जल

का स्पर्श कराया जावे। अंशुमान घोड़े को लेकर लौट आया राजा सगर ने सभी समाचार मालूम कर यज्ञ पूरा किया। इसके बाद राजा सगर और उसके वंशजों ने कई पीढ़ी तक गंगाजी की तपस्या की और उन्हें प्रसन्न किया पर उनके इस प्रकार कहने पर कि पृथ्वी पर जब धारा गिरेगी तब छिन्न भिन्न हो जावेगी, इसलियें इसकी रक्षा का पहले प्रबन्ध करो। तब भागीरथ ने महादेव जी की बड़ी भारी तपस्या की और प्रसन्न होकर महादेव जी ने अपने शिरपर गंगाजी को रोकने को कहा। दशमी शुक्ल पक्षेतु जेष्ट मासे बुधे हनि। अवतीर्णा यतः स्वर्गात हस्त र्क्षेत्र सरिद्वरा॥ हरतें दशयापानि तस्माद् दशहरस्मृताः॥ १॥ ज्येष्ठ मास की शुक्ला दशमी बुधवार हस्त नक्षत्र में गंगा जी पृथ्वीपर अवतीर्ण हुई इस कारण इस शुभ दिन को गंगा दशहरा कहा गया है। अतः गंगा स्नान दशपापों का हरण करता है। जब गंगाजी देवलोक से पृथ्वी पर आई तो उसको अहंकार हुआ कि सदा शिवजी को लेकर भी पाताल चली जायंगी, लेकिन उस अहंकार को मिटाने के लिये शिवजी ने अपनी जटा ही में रोक लिया जिसके कारण भगीरथ जी को फिर तप करके शिवजी को प्रसन्न करना पड़ा, जिससे उन्होंने गंगा जी को अपनी जटा में से छोड़ कर भागीरथ के पितरों को मुक्त किया।

गंगा त्रिपथ गामिनी—गंगा की तीन धारा होने से त्रिपथ गामिनी भी कही जाती है। इनकी एक धार गंगोत्तरी, उत्तर काशी, टिहरी होकर भागीरथी नाम से देवप्रयाग में अलकनन्दा से आ मिली। दूसरी धार कुबेर की अलकापुरी हो कर अलकनन्दा बदरी नाथ होती हुई पाँच प्रयाग १ विष्णु प्रयाग २ नन्द प्रयाग ३ कर्ण प्रायग ४ रुद्रप्रयाग होकर पाँचवें देवप्रयाग में भागीरथी से मिलती है। तीसरी धारा मन्दाकिनी श्रीकेदारनाथ होकर उत्तरा खंड विद्यापीठ होती हुई रुद्रप्रयाग में अलक नन्दा से आ मिली है। वेद में गंगा की अलौकिक शक्ति का वर्णन करते हुए लिखा है "इमम्मे गंगे शतद्रु व०" इसी प्रकार मनुजी महाराज ने भी गंगा जल को पाप नाशक मानकर लिखा है "गंगामां कुरून गमः श्रीगंगा जी की स्तुति में यह पद्य प्रसिद्ध है।

"गंगा गंगेति यो ब्रूयात् योजनानां शतैरपि।
मुच्यते सर्व पापेभ्यो विष्णु लोकं सगच्छति ॥

जब गंगा जी का जल वेग से प्रवाहित होते हुए जह्नु ऋषि के आश्रम में पहूँच कर उनका सामान बहाने लगा तो क्रुद्ध होकर ऋषि ने एक दो आचमन में ही गंगा को पीलिया। भगीरथ जी ने फिर ऋषि की प्रार्थना की, प्रसन्न होकर ऋषि ने बगल चीर कर गंगाजी को

बाहर निकाला तभी से उसका नाम जन्हुनन्दिनी या जाह्नवी हुवा। इस प्रकार गंगाजी सागर पहुंची और सगर पुत्रों को मुक्ति प्रदान किया।

यद्यपि आजकल के लोग गंगाजी का उद्गम स्थान मानसरोवर बतलाते हैं जो कि गंगोत्तरी से १० मील गोमुख जहाँ कि गंगा की धारा बड़े वेग से निकलती है वहाँ से ११० मील से कम नहीं लेकिन वास्तव में गंगा जी बिन्दुसर तालाब जो गोमुख से २५ मील उत्तर पूर्व के बीच सोने के समान चमकते हुये एक महान् शृंग के पास है वहीं से गंगा जी के निकाश हुवा है गंगाजी की पन्द्रह कला राजा भगीरथ के साथ चलीं किन्तु सोलहवीं कला श्रीबदरी नारायणजी के दर्शन को करने अलका पुरी हो कर चली किन्तु कुवेरे ने उसे छै मास वहीं रोक दिया। श्रीगंगाजी का आगमन जानकर देवता लोग देव प्रयाग में इकट्ठे हो गये थे, भगीरथ गंगा को लेकर देव प्रयाग पहुँचे देवताओं ने भगीरथ को धन्यवाद दे भगी रथी का स्नान, तथा जल पान करके कहाकि, महाराज इस गंगा जी की सोलहवीं कला कुवेरने रोकली है अतः जब तक वह इसमें नहीं मिलेगी तब तक यह कलापूर्ण नहीं है। राजा भगीरथ कुवेर के साथ युद्ध की तैयारी करने लगे ही थे कि देवताओं ने कुवेर के माता, पिता,

विश्रवा, मन्दाकिनी को अलकापुरी भेजा वहां जाकर उन्होंने कुबेर को गंगा छोड़ने को कहा गंगा वहाँ से मुक्त होकर भगवन बद्रीश के दर्शन कर ने चली और इधर कुबेर की माता ने भी श्री केदार नाथ जी का दर्शन कर ने को प्रस्थान किया जो केदार नाथ में गंगा रूप होकर आई और उसी नाम (मन्दाकिनी) से लोक विख्यात हो रुद्रप्रयाग में अलक नन्दा से आमिली। उधर देवप्रयाग में अलक नन्दा की प्रतीक्षा में भगीरथ तथा देवताओं को परेशान देखकर भागीरथी के क्रोध का पार न था लेकिन अलक नन्दाने बहुत प्रेम एवँ शान्ति के साथ भागरथी का आलिंगन किया जिससे भागीरथी भी चन्दन के समान शीतल हो गई। देवताओं ने प्रथम पिण्ड भगीरथ से पितरों का यहीं पर दिलाया जिसके कारण वह स्थान देव प्रयाग कहलाया। देव प्रयाग से व्यास-घाट लक्ष्मण झूला ऋषिकेश होकर गंगा जी हरिद्वार जिसे गंगा द्वार भी कहते हैं—यह नगर "मायापुरी" के नाम से शास्त्रों में वर्णित है। यहाँ से गंगाजी दाहिने ओर मेरठ, आगरा, तथा इलाहबाद कमिश्नरी और बाईं ओर रुहेलखण्ड लखनऊ तथा फैजाबाद कमिश्नरियों की सीमा बनाती हुई यमुनाजी में मिल गई हैं।

हरिद्वार से ३ मील कनखल तीर्थ है जो दक्षिण

तट पर है। मेरठ जिलेमें दक्षिण तट पर गढ़ मुक्तेश्वर है यहाँ शिवजी का एक विशाल मन्दिर है और कार्तिकी पूर्णिमां को एक बड़ा भारी मेला लगता है जो १०-१२ दिन रहता है और २-३ लाख यात्री स्नान को मेले में आते हैं यहाँ का पुल भी देखने लायक है, इसके बाद अनूपशाही जहाँ कि पहले ईस्ट इण्डिया कम्पनी की एक कोठी थी। उस समय तक यहाँ बड़ी बड़ी नावें आया करती थी। इसके बाद एटा जिले में सोरों एक तीर्थ स्थान है जिसके पक्केघाट गंगाजी के पाँच मील हट जाने से बेकार पड़ गये, इन घाटों के पास अनेक मन्दिर हैं किन्तु चतुर्भुज बाराह जी का मन्दिर प्रधान है। इसके बाद फर्रूखाबाद, फतेहगढ़ कन्नौज पड़ता है ये नगर पहले गंगा तट पर थे लेकिन अब दो ढ़ाई मील दूर हो हैं। कन्नौज (कान्यकुब्ज) प्राचीन ऐतिहासिक स्थान है। और मुसलमानों के प्रभुत्व कालके आरम्भ तक यह हिन्दू राज वंशों की बहुत दिनों तक राजधानी रही। इसके पास ही काली नदी तथा राम गंगा आकर मिली हैं इस स्थान को अश्वतीर्थ भी कहते हैं। इसके बाद कानपुर जिले में बिठूर तथा कानपुर नगर विशेष महत्व के स्थान हैं। बिठूर नया बिठुर पुराना दो हैं कहते हैं ब्रह्मावर्त का नाम बिगड़ कर बिठुर हो गया है, पुराने बिठुर के घाटों

में ब्रह्माघाट प्रधान है और इन घाटों के ऊपर अनेक देव मन्दिर बने हुए हैं। कार्तिक की पूर्णिमां पर यहाँ बड़ा मेला लगता है। यही पेशवा बाजी राव द्वितीय के दत्तक पुत्र नाना साहब का महल था। इसके बाद प्रसिद्ध नगर कानपुर जो उत्तर प्रदेश का सबसे बड़ा व्यापार का केन्द्र है। और उत्तरी भारत का मैनचेस्टर कहलाता है, यहाँ कपास, ऊन, और चमड़े के बड़े बड़े कारखाने हैं। इसके बाद रायबरेली जिले में डलमऊ का पुराना दुर्ग जो खण्डहर हो रहा है पड़ता है यहां कार्तिक पूर्णिमां को एक बड़ा मेला लगता है और महादेव जी का एक विशाल मन्दिर भी है। आगे इलाहाबाद जिले में मानिक पुर तथा कड़ा भी पुराने स्थान है जिनका समय बीतगया है।

प्रयाग में गंगा जी की सबसे बड़ी सहायक नदी यमुना जी आकर मिली हैं कहते हैं कि गुप्त रूप से सरस्वती नदी भी आकर मिली है जिससे यह संगम त्रिवेणी कहा जाता है। यह पहले केवल तीर्थ स्थान था और तीर्थ पण्डों की साधारण बस्ती थी। किन्तु सम्राट अकबर ने संगम पर किला बनवा कर नगर बसाया जिसका नाम इलाहाबाद रखा। श्री रामचन्द्र जी के समय जो अक्षय वट यमुना जी के उस पार नील कानन में था वही अक्षय वट अब किला के अन्दर है। प्रयाग तीर्थ राज

कहलाता है और प्रतिवर्ष माघ मेला पूरे एक माहका लगता है। हर छटे वर्ष अर्द्ध कुम्भी का तथा हर बारहवें वर्ष कुम्भ का बड़ा भारी मेला लगता है जिनमें लाखों मनुष्य दूर दूर से स्नान के लिये आते हैं।

प्रयाग के बाद प्रसिद्ध तीर्थ स्थान विंध्याचल है जहाँ देवी जी के दर्शन के लिये बराबर ही लोग आते हैं लेकिन दोनों नवरात्रों में तो इतनी भीड़ हो जाती है कि जिसके कारण कहीं पर पाँव रखने तक की जगह नहीं मिलती। इसके बाद मीर्जापुर नगर है यहाँ गंगाजी के दोनों तटों की काफी ऊंचाई हो गई जिसके कारण गंगा जी संकरी हो गई हैं। इसके बाद प्राचीन प्रसिद्ध चुनार का गढ़ है। यहाँ से गंगा जी ने गाजीपुर तक उत्तर की ओर घुमाव लेलिया है। इसीके पास सुलतानपुर की छावनी है यहाँ से २०,२२ मील संसार की प्रसिद्ध काशी पुरी है यह भारत की सात पुरियों में एक है और प्राचीन महा नगरी हैगंगा की ओर इसकी धनुषाकार दृश्य भी अति सुन्दर है, घाटों तथा देव मन्दिरों की मिलावट एक मील से भी अधिक दूरी तक देखने पर परम सौन्दर्य प्रकट करती है उस पार रामनगर दुर्ग काशीराज की छोटी सी बस्ती है। और राजघाट का डफरिनपुल बहुत मजबूत और देखने लायक है। काशीसे आगे गंगा जी

कुछ फैलती हुई गाजीपुर पहुँचती है। आगे मार्कण्डेय में गोमती नदी आकर मिलगई है, इसके बाद बलिया है जो काशी तथा गाजीपुर के समान बायें तट पर बसा हुआ है। बलिया जिले की पूर्वी सीमापर घाघरा या सरयू नदी गंगा में आकर मिलती है। इस संगम को भृगुतीर्थ अथवा महाप्रयाग कहते हैं। यह बलिया नगर बाढ़ से कईबार दह चुका है, इसी कारण अब नदी से हट कर बसाया गया है। गाजीपुर तथा बलिया के बीच में दाहिनी ओर बक्सर है तथा गंगा-सरयू संगम के पास बाँई ओर छपरा नगर है। गाजीपुर तथा बक्सर के बीच में इतिहास प्रसिद्ध स्थान चौसा के पास दक्षिण से आई हुई कर्मनाशा गंगा जी में मिली है। बक्सर में भी गंगा तट पर एक पुराना दुर्ग है जहाँ पर एक युद्ध का स्मारक भी है।

गंगा-सरयू संगम के बाद पटना से पश्चिम और दक्षिण से आया हुआ महानद शोण अथवा सोन गंगा में मिला है। यह संगम पहले पटना के पास में था पर अब काफी पश्चिम की ओर हट गया है। इस संगम पर बालू के पहाड़ बन जाते हैं। जिससे बड़ी नावों का आना जाना रुक जाता है। ईस्ट इण्डिया कम्पनी के समय से स्टीमरों के यातायात के लिये इसे साफ करने

में बहुत धन व्यय होता आ रहा है। इस संगम के अनन्तर दानापुर, बाँकीपुर तथा पटना नगर पास ही पास में हैं जो सब मिलकर लगभग आठ कोस तक गंगा जी के दाहिने किनारे तक चले गये हैं। पटने से कलकत्ते तक अब भी स्टीमर चलता है। पटना (पाटलिपुत्र) प्रसिद्ध मगध नरेशों की राजधानी थी, इस समय भी यह बिहार प्रान्त का शासनकेन्द्र है। पटने के पास उत्तर से आकर गण्डक (नारायणी) नदी गंगा में आकर मिली है। जिसके संगम पर स्थित सोनपुर में सुप्रसिद्ध हरिहर क्षेत्र का मेला कार्तिक-पूर्णिमा पर लगता है। यहीं पर हरिहरनाथ महादेव का मन्दिर है। यह मेला पन्द्रह दिन तक रहता है और बड़ी भीड़ रहती है। यहीं दक्षिण की ओर से फल्गु नदी आकर मिली है जो अमरकंटक के पास से निकलती है।

पटना से आगे बढ़ने पर गंगाजी मुँगेर जिले में पहुँचती हैं, जिसे दो भागों में विभाजित कर देती है। इस जिले में बड़ी गण्डक, तिलगुजा और छोटी गंडक आदि कई नदियां आगे जाकर गंगाजी में मिली हैं। यहाँ कई बड़े ताल हैं जिनमें वर्षा ऋतु में बड़ी बड़ी नावें भी चलती हैं। यहाँ गंगाजी में कई छोटे छोटे द्वीप भी बन गये हैं। मुँगेर नगर गंगाजी के दाहिने तट पर बसा

है जिसका दुर्ग भी इतिहास में प्रसिद्ध है। यह दुर्ग पहाड़ी टीले पर बसा है, जो कुछ दूर तक गंगाजी में चला गया है। उत्तर की ओर गंगाजी दीवाल तक पहुँच गई है और अन्य दिशाओं में खाई है। इसके बाद भागलपुर जिला पड़ता है यहाँ दोनों तटों पर बहुत सी पहाड़ियाँ हैं जिससे यहाँ का दृश्य बहुत रमणीक हो चुका है इसी जिले में सुलतानगंज के पास जांघिरा की पहाड़ी गंगाजी के बीच में ऊपर निकली हुई है जिसकी चोटी पर शिव-मन्दिर हैं जो परम पावन माना जाता है। इस पर कुछ वृक्ष उगने से और भी सुन्दरता दिखाई देती हैं। मन्दिर के सामने तट पर भी एक पहाड़ी है जिस पर मसजिद बनी हुई है। यहाँ से कुछ दूर पूर्व भागलपुर नगर गंगाजी के दायें तट पर बसा हुआ है। इससे २५ मील पूर्व में उत्तर से कई नदियों को अपने में मिलाती हुई कोशी नदी गंगाजी में आ मिली हैं, यह संगम कहल गाँव के सामने है लेकिन पश्चिम की ओर हटता जा रहा है। व्यापारिक नगर नाथपुर पहले सन् १८५० में संगम के पश्चिम में था पर वह बह जाने से उसका स्थान अब कई मील पूर्व होगया है। कहल गाँव के पास भी नदी की मध्य धारा में एक छोटा सा ऊँचा पहाड़ी टापू है, जिस पर वृक्षों का

दर्शनीय झुरमुट है। इस टापू के सामने विक्रमशिला का पुराना टीला है, जहाँ बौद्ध काल में एक प्रसिद्ध विद्यापीठ था, यह हिन्दुओं का भी पवित्र स्थान है और वहीं से राजमहल के पर्वत भी दिखाई देने लगते हैं। कहलगाँव से आगे गंगा जी तेलिया गढ़ी दर्रे से निकलती हैं और कुछ आगे बढ़ कर दक्षिण की ओर घूमती है तथा कुछ पूर्व झुकती हुई समुद्र की ओर जाती है। राजमहल मुगल काल में राजा मानसिंह की सूबेदारी के समय से बंगाल तथा बिहार की राजधानी रह चुका है। इसमें पत्थर के तथा संगमरमर के बने हुए अनेक महल अब भी मौजूद हैं पर अब उजड़ते जा रहे हैं और साहिबगंज का महत्त्व बढ़ता जा रहा है। संगीदालान नामक पुरानी इमारत कम्पनी के कोयले घर का काम देता था, जो स्टीमरों के लिए वहाँ संग्रह किया जाता था। एक सौ वर्ष पूर्व मिस एम्मा राबर्ट्स ने लिखा था कि जहाँ हीरों से लदे दरबारी एकत्र होते थे वहाँ अब ग्रेट ब्रिटेन का हीरा कोयला संचित होता है। राजमहल के पहाड़ों के कारण यहाँ की प्राकृतिक शोभा बहुत अच्छी है। गंगा की धारा के परिवर्तन से कई नगर नदी से दूर पड़ गये हैं जिनमें उजड़ा हुआ गौड़ भी है। इसके बाद मुर्शिदाबाद जिले में सूती के पास छापघाटी से गंगाजी की दो

प्रधान शाखायें हो जाती हैं। भागीरथी पर जंगपुर पड़ता है जहाँ पर कम्पनी पहले कर उगाहती थी।

सबसे पूर्व की तथा प्रधान धारा राजशाही तथा पावना जिले की सीमा बनाती हुई ग्वालन्दों में ब्रह्मपुत्र नदी की प्रधान शाखा गंगाजी से मिलकर पद्मा कहलाती है। ग्वालन्दो की स्थिति विचित्र है, यह रेलवे का स्थान भी है किन्तु दो विशाल नदियों का संगम होने से स्थान घटता बढ़ता रहता है, इसके मकान आदि गार्डर, चद्दर के बनाये जाते हैं जो जल्द हटाये बढ़ाये जा सकते हैं। यह धारा ग्वालन्दो से आगे बढ़ने पर एक ओर फरीद-पुर तथा बाकरगंज की ओर दूसरी ओर टिपरा, ढाका तथा नोआखाली जिलों की सीमा बनाती हुई समुद्र में जा मिलती है। पद्मा जब ढाका की दक्षिणी सीमा पर पहुँचती हैं, तब पूर्वोत्तर से आती हुई मेघना नदी इसमें मिलती है तब इसको मेघना कहते हैं

सबसे पश्चिम की तथा पवित्र धारा भागीरथी की है जो सीधी दक्षिण की ओर जाती है इसके तट पर जंगपुर मुर्शिदाबाद, ब्रह्मपुर (बहरामपुर) कटवा पलासी तथा नदिया नगर हैं। मुर्शिदाबाद बंगाल के नवाबों की राजधानी बहुत दिन तक रही जो अब भी अच्छा नगर है। नदिया या नवद्वीप वैष्णवों का पवित्र तीर्थ है और

संस्कृत का एक प्रमुख केन्द्र है। इसके पास आकर गंगा जी की मध्य धारा जालन्धी भागीरथी में मिल गई और हुगली के नाम से कही जाने लगी, इसके तट पर हुगली चिनसुरा, चन्दन नगर श्रीरामपुर तथा बारकपुर बसे हुए है, जिनके दक्षिण कलकत्ता महानगरी है इसके दक्षिण में बजबज तथा नाम मात्र का डायमण्ड बन्दरगाह है, गंगा जी यहाँ से चौड़ी होती हुई सागर द्वीप के पास समुद्र में जा मिली हैं। यहाँ पर मकर संक्रान्ति पर गंगा सागर का भारी मेला लगता है। यह वही स्थान है जहाँ कपिलदेव जी के कोप से भगीरथ जी के पूर्वज भस्म हुए थे। यह गंगा की धारा विष्णु चरणोदक ब्रह्मा के कमण्डलु अर्थात बिन्दुसर से कैलाश पहुँचती है यह महादेव जी का स्थान है और 'ईशस्य केशान् विदुरम्बु-वाहान्' अर्थात महादेव जी की जटा बादल है, जिससे सभी नदियों को जल मिलता है। वास्तव में भारतवर्ष के इतिहास काप्रधान अंश गंगाजी की घाटी का ही इतिहास है और यही गंगाजी के महत्व को प्रकट करता है। भारतवासी यदि गंगाजी को माता से बढ़कर मानते हैं तो इसमें आश्चर्य ही क्या है? इनके महत्व को योरप के विद्वानों ने मुक्त कण्ठ से स्वीकार किया है। इसलिये प्रेम से श्रीगंगा भागीरथी की जय और राजा भागीरथ की जय बोलते रहें इसी में हमारा कल्याण है॥

शिवलिंग पूजन की महिमा

आज श्री आद्य शंकराचार्य जी का जन्म दिन है श्री शंकर भगवान आज से लगभग बारह सौ वर्ष पूर्व और कई गवेषकों के मत से इक्कीस सौ वर्ष पूर्व भारत के दक्षिण प्रान्तवर्ती द्रविण देश में उत्पन्न हुए थे, 'गीता-रहस्य में इनके पिता का नाम केशव भट्ट और माताजी का नाम सतीदेवी लिखा है, जिस समय आचार्य चरण अवतरित हुए थे, उस समय संसार भर में नास्तिकता का साम्राज्य था, वेदादि शास्त्रों पर अश्रद्धा हो गई थी, भारत समान धर्मप्राण देश का भी एक तिहाई जनसमुदाय सर्वथा नास्तिक बन चुका था जो खुल्लमखुला पुकार कर कहता था कि—

'त्रयो वेदस्य कर्तारो भण्ड धूर्त निशाचराः'

अर्थात् वेदों के बनाने वाले भाँड, धूर्त और राक्षस हैं। ऐसे विकट समय में भगवान् शंकराचार्य ने अवतार धारण किया था, उनके जीवन का उद्देश्य नास्तिकता का समूलोन्मूलन करके पुनः आस्तिकता स्थापित करना था। स्वामीजी ने वेद का झंडा हाथ में लेकर धूर्त नास्तिकों को ललकारा, नास्तिक हारे सत्य की विजय हुई। श्री शंकर भगवान् ने धर्म-विजय को सुस्थिर रखने

के लिए भारत की चारों दिशाओं में चार विजय-मठ गोवर्द्धन, श्रृंगेरी, शारदा और ज्योतिर्मठ स्थापित कर यह अटल घोषणा की कि वेद में ब्रह्म के अवतार शिव भगवान की उपासना का स्पष्ट शब्दों में वर्णन है ? क्या केवल भारतवर्ष में ही सनातनधर्मी लोग शिवलिंग पूजन करते हैं या अन्यान्य देशों में भी।

शिवलिंग पूजन विश्वव्यापी है

काशी निवासी बाबूशिवप्रसाद ने "पृथ्वीप्रदक्षिणा" नामक एक सचित्र बृहद्ग्रन्थ में अपने आँखों देखा वर्णन किया है। "शिवलिंग पूजन पृथ्वी के तमाम भागों में और समस्त जातियों में भिन्न, भिन्न प्रकार से पूजन हुआ करता है जो इस तरह पर है।

(१) अफ्रीका के इजिप्त मिसर देश में "असिरिस" और "आईसिस" नामक लिंग का पूजन होता है। "असिरिस,, के मस्तक पर तथा गले में सर्प हाथ में त्रिशूल और अङ्ग पर शिव के समान व्याघ्र चर्म है और "ऐपिस,, नामक नन्दी पर सवार है तथा विल्व-पत्र के समान किसी वृक्षपत्र को पूजन में ऊपर अर्पण किये जाते हैं। हमारी काशीपुरी की भाँति वहाँ भी "मेम्पिस,, नामक प्रसिद्ध यात्रा का धाम है।

(२) उत्तरी अफ्रीका की अर्ब जातियें भी लिंग द्वारा ही ईश्वरोपासना करती हैं।

(३) ग्रीस-यूनान में 'बेसक,, और 'प्रियेसस,, लिंग की पूजा होती है।

(४) इटली की राजधानी प्रसिद्ध रोम नगर में रोमन कैथोलिक सम्प्रदाय के ईसाई शिव-लिंग पूजन करते हैं।

(५) स्काटलैंड के ग्लासगो शहर में एक सुवर्ण जड़ित बृहत शिवलिंग पूजा जाता है।

(६) नार्वे और स्वीडन में भी शिवलिंग पूजन होता है।

(७) आस्ट्रिया-हंगरी में "तंत्रिस्वक" नामक लिंग की पूजा होती है।

(८) रूम-असीरिया देश के बिलन नगर में तीनसौ घन हस्त प्रमाण का बड़ा भारी शिवलिंग का पूजन होता है।

(६) श्यामदेश में "एकोनिस,,और "ऐस्टरगोटिस,, नाम के पाषाणमय शिवलिंग पूजे जाते हैं।

(१०) अर्बस्तान के मक्का शरीफ में "सगेअसवद,, (मक्केश्वर) नामक शिवलिंग को हज करने वाले तमाम मुसलमान श्रद्धापूर्वक चूमते हैं।

(११) सुमात्रा और जावा द्वीप में भी शिवलिंग पूजन होता है।

(१२) यहूदिया देश में इस राइली तथा यहूदी सम्प्रदाय का एक प्रतिष्ठित शिवलिंग है, जिसे स्पर्श करके आज तक भी शपथ (कशम) ली जाती है।

(१३) जापान के आइस नगर में भी लिंग पूजन होता है।

(१४) सिलोन [लंका] में शिवलिंग पजा होती है।

(१५) साइबेरिया के तासकन्द नामक शहर में सिबिलियन लोग लिङ्ग पूजा करते हैं।

(१६) अफ्रीदीस्तान के चित्राल, स्वाद, बलख, बुखारा, कोहेकाफ आदि स्थानों में "चंच शेर" लिंग की पूजा होती है।

(१७) हवाई टापू के आदिम निवासी ईति भीति [अतिवृष्टि, अनावृष्टि, मूषक, टीडि आदि उपद्रव के] अवसर पर शान्ति के लिए शिवलिंग पूजा करते हैं।

(१८) ईरान में ज्वालामय लिंग की पूजा होती है।

(१९) दक्षिणी अमेरिका के ब्रजिल स्थान में शिव, गणेश, आदि देवताओं की प्रतिमायें पुराने खण्डहर खोदते हुये मिली हैं जो ईसा के जन्म से सहस्रों वर्ष पूर्व

की ख्याल की जाती है इससे सहज ही अनुमान किया जाता है कि वर्तमान सभ्य कही जाने वाली जातियों के उद्गम से पूर्व वहाँ प्रतिमा पूजन का प्रचार था।

(२०) पेरू में मिट्टी का शिवलिंग [पार्थिवेश्वर] पूजा जाता है।

(२१) अमेरिका के पेम्बु को शहर में गोल-सरल द्विमुखी शिवलिंग है।

(२२) यूनाईटेन्ड स्टेट्स आफ अमेरिका U. S. A. के टेन्सी नगर में एक बृहत शिवलिंग पूजा जाता है।

(२३) स्वामी रामतीर्थ और स्वामी विवेका नन्द के प्रचार से अमेरिका में अनेक मन्दिर बने और लन्दन में भी शिवालय बन चुके हैं।

(२४) केनिया की राजधानी नैरोबी का गगन चुम्बी शिवमन्दिर शास्त्रार्थ महारथी पं० माधवाचार्य शास्त्री गौड द्वारा प्रतिष्ठित हुवा है और मुम्बासा तथा जांजीबार के शिवालय भी प्रतिष्ठित हुये हैं।

(२५) दक्षिणी अफरीका, माडागास्कर, फीजी, मारिशस, गायना और वेस्ट इन्डिज आदि उपद्वीपों में भी शिवालय बन चुके हैं।

क्राँतिकारी भगवान श्री कृष्ण

भगवान् श्रीकृष्ण एक प्रसिद्ध क्रान्तिकारी महापुरुष थे, जिन्होंने अपनी और अपने देश की स्वतंत्रता के लिये साम्राज्य वाद का विरोध किया। देश वासियों की पीड़ा उन पर होने वाले अत्याचारों के बिरुद्ध कदम उठाया और (१) मथुरा में कंस का साम्राज्य, (२) मगध में जरासन्ध का (३) प्राग्ज्योतिष पुर में भौमासुर का उनके क्रूर कर्मी साथियों के सहित अन्त करके कंस का राज्य उसके पिता उग्रसेन को, जरासन्ध का राज उसके पुत्र सहदेव को, भौमासुर का उसके पुत्र भगदत्त को राज्य पर नियुक्त कर दिया।

श्रीकृष्ण सब की स्वतंत्रता के लिये वेदोक्त राज्य व्यवस्था से कर्म करने वाली, केन्द्रीय शासन सत्ता स्थापित करना चाहते थे। प्रजा प्रतिनिधि सभा द्वारा हमारे देश में सदा प्रजा के अधिकारों की रक्षा होती रही है।

(१) पुरोहितों की सभा धर्म—व्यवस्था बता कर धार्मिक कृत्यों का संचालन करती रही थी,

(२) स्वास्थ सभा—समस्त जन पदों को स्वच्छ रख कर राजा और प्रजा को आरोग्य रखने का प्रयत्न रखती थी, ज्योतिर्विद परिषद सम्पूर्ण राष्ट्र का कार्य-क्रम बनाती

थी और वर्तमान तथा भावी अनिष्टों से बचने का उपाय करती थी, मंत्री सभा प्रजा की शान्ति सुरक्षा और स्वतंत्रता के लिये प्रयत्न शील रहती थी। शुक्र नीती में और अथर्व वेद में इस प्रकार पाया जाता है।

श्रीकृष्ण के अवतीर्ण होने के समय देश की राज्य व्यवस्था बिगड़ी हुई थी, प्रजा कष्ठ के साथ पराधीन थी, राजाओं में वैदिक सना तन-संस्कार शेष नहीं रहे थे।

कौरवों की सभा यद्यपि राज सभा के रूप में थी, परन्तु उसके सभासद, मंत्रीमण्डल, पुरोहित वर्ग तथा सभी केवल राजा को प्रसन्न करने के लिये उसके हाथ की कठ पुलती से अधिक नहीं थे और यही कारण था कि जूआ खेलने की दुर्म त्रथाओं को कोई नहीं रोक सका।

इतना ही नहीं वरन् द्रौपदी जैसी विदुषी राज-महिषी पर सब नेथाचार होते देखा। श्रीकृष्ण जवदूत रूप में पाण्डवों का सन्देश लेकर गये थे उन्होंने स्वयं भी उस सभा की धांधली और मनमानी देखी।

यही कारण था कि कंस, जरासंघ, भौमासुर, कौरवादि साम्राज्य वादी राजाओं का दमन कर कराके

धर्म राज्य का विधान करके केन्द्रीय शासन सत्ता राजा युधिष्ठिर के आधीन स्थापित की।

युधिष्ठिर को राज्य नियम समझाने के लिये भीष्म पितामह के पास लेगये और उनसे समस्त राजकीय विषयों पर उपदेश दिलवाया।

काम, क्रोध, मद, लोभ, मान, और हर्ष बुरे राजाओं के नाश के कारण होते हैं। लोभ से राजा ऐल, मद से द्विजों द्वारा राजा वेन, अभिमानी होने के कारण आयुष का पुत्र और हर्ष के कारण पुरंजय मारा गया।

गढ़वाल का संक्षिप्त इतिहास

(१) महाभारत, पुराणादि प्राचीन ग्रन्थ (२) जातीय उत्सव त्योहार और उनकी कथायें (३) पुराने जागर पवाड़े रांसे और गीत (४) परवाणे अर्थात् लोकोक्तियाँ (५) विदेशी यात्रियों के यात्रा वर्णन (६) सरकारी गजेटियर (७) शिला लेख और ताम्र पत्र आदि [८] पुराने गढ़ कोट, इत्यादि के भग्नावशेष, [९] प्राचीन कालके मन्दिर और मूर्तियां [१०] पुराने तीर्थ स्थान और मेले गढ़वाल का इतिहास मुख्य तीन भागों में विभाजित किया जासकता है १ देवासुर काल २ खासिया काल ३ क्षत्रिय काल—

देवासुर काल में यहाँ देवता, ऋषि, मुनि, यक्ष, राक्षस, असुर, दानव, सिद्ध, गन्धर्व, किन्नर निवास करते थे। भगवान् शंकर श्रीकेदार नाथ जी, बदरी नारायण जी, लक्ष्मीजी, पार्वतीजी, चामुण्डा, चण्डिका, कालिका- नर, नारायण, कुबेर, कृष्ण, अनिरूद्ध, राम, लक्ष्मण आदि देवता, व्यास-घाट, वशिष्ट-आश्रम, परशुरामआश्रम, शुकआश्रम, च्यवनआश्रम, भृकण्डाश्रम, उत्फालकाश्रम, यमदग्न्याश्रम, आदि आदि ऋषियों के निवासस्थान भी यहीं है। पांचों पाण्डव भी अधिकतर यहीं रहे है पाण्डुकेश्वर, भ्यूंडार, भ्यूंचुला, भ्यूंसेरा, पञ्चौं ताल, पञ्चौं सेरा वगैरह पाण्डवों के स्थान भी यहीं हैं-यह ही नहीं यहां प्रायः सभी गांवों में पाण्डव नचाये जाते और पूजे जाते हैं। महाकवि कालिदास जी की जन्म भूमि भी यहीं है।

इनके अलावे दैत्यराज वाणासुर, कोलासुरादि दैत्यों की राजधानियां भी यहीं रही, बाणासुर की राजधानी शोणितपुर और कोलासुर की राजधानी कुईला, भरदार रुद्रप्रयाग पास में है महाबली राक्षस घन्टा कर्ण भी श्रीबदरी पुरी में है। पाण्डवों को जलाने के लिये कौरवों ने लाक्षागृह भी यमुना नदी के किनारे मुप्रशन्ती पास ही बनवाया था उसी ओर पावर नदी के किनारे

बिराट राज की राजधानी रही, जिसका नाम आजकल हाटकोटि स्टेट कहते हैं। द्रौपदी के पाँच पति होने के नाते, उस प्रान्त में अब भी एक घर के कई मर्दों की एक ही औरत हुवा करती है।

खसिया काल में खसिया लोग आसाम प्रान्त से आकर नेपाल, कमायूँ, गढ़वाल, शिमला अर्थात हिमाञ्चल प्रदेश में सर्वत्र बस गये जो अब भी पाये जाते हैं इस प्रान्त के आदि निवासी कोल, भील, किरात इत्यादियों ने खसियों का विरोध किया और बार बार लूटकर उन्हें तंग किया तो तब खसियों ने ऊंचे ऊंचे स्थानों पर अपने गढ़ बनाकर आत्मरक्षा की और सारे प्रान्त में गढ़ ही गढ़ बनगये जिनके खण्डहर अब भी मौजूद हैं। गढ़ों में बसकर भी खसिये तंग किये गये तो खसियों ने दुश्मनों में विवाह सम्बन्ध जोड़ कर मित्रता बढ़ा के अन्त में उनको अपने ही में मिला दिया वे लोग जंगली जानवरों का शिकार खेलकर अपना पेट पालते और अशिक्षित होने के नाते अन्ध विश्वासी रह कर भूत, प्रेत, गोरील कलुवा, गड़देवी, कचिया, भैरव, उफराई, कैलाखुर, विष्कुम, बगडुवाल बिगराल, भराड़ी, ऐराड़ी, सिद्ध नाथ, निरंकार वरादेऊ, आछरी, मुण्डण, मासू आदि आदि अनेकों को देवता मानकर पूजते थे, जिनमें से कई एक अभी भी गढ़वाल में पूजे जाते हैं।

खसियों के समय में ही गढ़वाल में बौद्ध मत का प्रचार हुआ है। उनमें से अनेकों ने बौद्ध मत को स्वीकर लिया था, गढ़वाल में प्रायः सभी बौद्ध मन्दिर हैं, इन मन्दिरों की बनावट ठीकबुद्ध गया और सार नाथ के पुराने मन्दिरों की तरह है। श्रीकेदारनाथ जी का मन्दिर भी बौद्ध मन्दिर है इस मन्दिर के दरवाजे के ऊपर बाहर की तर्फ एक अश्लील चित्र पत्थर पर बना था जो स्वामी शंकराचार्य ने कटवा डाला लेकिन उसका मामूली चिन्ह अभी भी दिखाई देता है। हिन्दुओं के प्रसिद्ध तीर्थ बदरीनारायण की मूर्ति भी बौद्ध मूर्ति है इधर जन श्रुति भी है कि बदरीनारायण ही बौद्धावतार हैं किन्तु इस मूर्ति में आकर्षण इतना है कि हिन्दु नारायण ऋषि की ध्यान मग्न मूर्ति, बौद्ध बुद्ध भगवान की, और जैन अपने पारस नाथ की मूर्ति मानते हैं।

गढ़वाल के कुछ मन्दिर में शिवलिंग हैं और वे लिंग भी बहुत जगह टूटे और फूटे हैं उनका कारण यह है कि शंकाराचार्य के अनुयायी शिव लिंगों की स्थापना करते और बौद्ध उन्हें तोड़ते जाते थे।

गढ़वाल में बौद्ध मत की स्मृति उन दो प्राचीन त्रिशूलों से भी पाई जाती है जो गोपेश्वर और उत्तर काशी में गड़े हुये अब भी मौजूद हैं। इन त्रिशूलों पर

पाली भाषा में कुछ लिखा हुआ है। गोपेश्वर का त्रिशूल नेपाल के माला वंशीय राजा अनिरूपाल का विजय स्तम्भ और उत्तर काशी वाला त्रिशूल किन्हीं दो राजाओं के जो पिता पुत्र थे जिनके नाम घिस जाने के कारण पढ़े नहीं जाते विजय स्तम्भ हैं मालूम होता है कि वे बौद्ध मत का प्रचार कर इन स्थानों तक पहुंचे थे।

क्षत्रियकाल—दक्षिण भारत में स्वामी शंकराचार्य का आविर्भाव हुआ वे धर्मगुरू माने जाने लगे उन्होंने बौद्धों को भी वैदिक धर्म में मिलाया, उत्तराखण्ड में आये और बद्रीनाथ में स्थापित बुद्धमूर्ति को ही वैदिक देवता तपस्वी भगवान् नारायण की मूर्ति के नाम से घोषित कर दिया और साथ ही इसके जोशीमठ में एक वैदिक मठ स्थापित कर अपने एक शिष्य को शंकराचार्य के नाम से उस मठ का अधिष्टाता बना दिया।

बद्रीनाथ के उद्धार एवं ज्योतिर्मठ की स्थापना के समाचार तुरन्त भारतवर्ष में फैल गये और लोग यात्रा को आने लगे, जिनमें से कितने ही ब्राह्मण क्षत्रिय यहीं बस गये। क्षत्रिय लोग शिक्षित और राजनीति निपुण थे, उनकी नीति निपुणता ने यहाँ के खसिया गढ़ाधि-

पतियों का मनमुटाव कर कलह फैलाया और लड़ाई जारी कर दी।

"तोपवाल की तोपताप, चौंड्याल को राज तोप वाले जो उन दिनों चांदपुर गढ़ के मालिक थे चौंड वालों ने उनको वहाँ से भगाकर गढ़ अपना बना दिया और वे चांदपुर गढ़ पर अजेय हो गये।

टिहरी नरेश के मूल पुरुष कनकपाल इसी चाँदपुर गढ़ के मालिक के दामाद होकर राज्य के उत्तराधिकारी हुए, उस वक्त १५ गांव ही उनके पास थे लेकिन धीरे धीरे कनकपाल ने सब गढ़पतियों से मित्रता कर उनको आपस में ही लड़ा कटा दिया। उन्हीं दिनों गढ़वाल की उत्तरी सीमा से कैंतूरा सरदारों ने कमायूं से चढ़ाई करके खसिया सरदारों को भगाकर जोशीमठ में अपनी राजधानी कायम कर दी। कैंतुरों का बढ़ाव देख कर राजा कनकपाल ने खसिया सरदारों, क्षत्रिय सरदारों को साथ लेकर कैंतुरों पर चढाई कर दी अब कैंतुरा टिकनम के कैंतुरों से छुड़ाई भूमि उन्हीं सरदारों को लौटा दी जो कि पहले वहाँ के मालिक थे। कनकपाल की यह उदारता देखकर सभी गढ़ोंके सरदार चाँदपुरगढ़ के गढ़ाधीश को कर देने लगे, अब सिर्फ कपड़ारागढ़ का सरदार कपड़ारी ही ऐसा रहा जो चांदपुर गढ़ को कर

देने से इन्कार कर गया, चांदपुर गढ़ के सरदार ने कण्डारा गढ़ से लड़ाई ठहरा दी तब कण्डारी सरदार ने अपने पायक याने सिपाही जो फेगू के नेक थे, उनसे सलाह पूछी उन्होंने तलवारों द्वारा एक केले का बगीचा बात की बात में काट कर कण्डारी सरदार को यह विश्वास दिलाया कि इसी तरह हम चांदपुर गढ़ की सेना को भी काट देंगे। कण्डारी इसी विश्वास पर था कि चांदपुर गढ़ के सैनिकों ने कण्डारा गढ़ को घेर लिया, तब कण्डारी सेना ने हाथों में मंजीरा पकड़ा और उन्हें बजाकर चांदपुर गढ़ की विजय गाने लगे। कण्डारी सरदार ने अपनी सेना की हालत देख कर मन्दाकिनी नदी में अपने प्राण त्याग दिये। यह कंडारा गढ़ चन्द्रापुरी के पास में है। तब से यह कहावत प्रसिद्ध है कि—"कण्डारी के पैक, फेगूकेनैक" पैक माने सिपाही के हैं। अब चांदपुर गढ़ का राज्य बड़े लम्बे चौड़े मुल्क पर हो गया। चाँदपुर गढ़ किनारे होने से कनकपाल के वंशज सैंतीसवें राजा अजयपालने श्रीयंत्र के पास श्रीनगर में अपनी राजधानी बसाई और राजधानी की तैयारी तक देवलगढ़में राजा अजयपाल रहने लगा इसी कारण देव-लगढ़ भी उनकी राजधानी के नाम से प्रसिद्ध है।

श्रीनगर राजधानी होने पर अजयपाल की गणना

राजाओंमें होने लगी दक्षिणी गढ़वालके गढ़ाधीश खसिया और धकिग रुहेलों के आतंक से पीड़ित थे अतः कैंतुरों की तरह अजयपाल ने रुहेलों को भी मार भगाया अब दक्षिणी गढ़वाल के सरदार भी राजा अजयपाल को कर देने लगे सिर्फ उपूगढ़ का सरदार कफ्फू ही ऐसा रह गया जो अपनी स्वतन्त्रता को खोके कर देना नहीं चाहता था। अजयपाल का धनमद उपूगढ़ की स्वतंत्रता का हरण करने को सदलबल चढ़ाई कर गया, इधर नौजवान वीर कफ्फू ने भी अपनी मुट्ठी भर सेना से नेपोलियन बोनापार्ट की तरह वीर सेनानी बनकर अजयपाल की बड़ी भारी सेना को चीर दोनों हाथों से तलवार चलाकर अजयपाल की सारी सेना को काट डाला, जिससे उसके वीर सैनिकों का उत्साह भी चौगुना हो गया और वे भी पूरे जोश से अजयपाल की सेना का नाश करने लगे, कफ्फू की विजय हुई।

लेकिन अजयपाल की सेना के बीच कफ्फू को घुसते देख उनके एक दरबान देबू ने गढ़ में गलत सूचना दे दी जिससे कफ्फू की माता ने गढ़ पर आग डलवा दी और बात की बात में सारा गढ़ जन धन के सहित श्मशान हो गया वीराङ्गनाओं ने स्वाधीनता यज्ञ में अपनी अन्तिम आहुति दे डाली। यही पहाड़ी ललनाओं का जौहर था।

अब सर्वत्र से घायल शेर कफ्फू अजयपाल के सामने कैदी के रूप में दरबार में खड़ा है।

महाराज अजयपाल कहने लगे—वीर मुझे तुम से समवेदना है। तुम जीत कर भी हारे। तुम्हारा सर्वस्व नष्ट हो गया। खैर ईश्वरेच्छा! मुझे अब विश्वास है कि तुम हमारी अधीनता स्वीकार कर हमारे द्वारा सम्मानित होकर छोटा गढ़पति होकर भी बड़ा गढ़पति हो जाओगे।

लेकिन आजादी के दीवाने—कफ्फू ने हँस कर कहा राजन् मुझे आजादी खोकर आपके सम्मानित गढ़ों की कतई आवश्यकता नहीं।

अजयपाल बोले—वीर तुम गलती पर हो, तुम पछताओगे तुम्हें मेरी आधीनता स्वीकार करनी ही होगी, रस्सी जल गई पर अभी ऐंठ नहीं गई।

कफ्फू लाल हो गया—ऐ राजा! यह शिर अभी तक न किसी के सामने झुका और न झुकेगा।

अजयपाल भभक उठा—मुझे सिर झुकाना ही होगा। जल्लाद बुलाओ, और इसका सिर पीछे से काट कर मेरे पैरों में डालो। जल्लाद आया और उसने—कैदी कफ्फू के हाथ बांधकर तलवार गरदन पर मारी।

जिससे गरदन कटकर सिर चार गज पीछे जा गिरा। खून की नदियां बहीं, अजयपाल का सारा शरीर खून से लथपथ हो गया।

अजयपाल सिंहासन से उठे, अन्य गढ़पति भी उठे। अजयपाल ने कफ्फू के मृत शरीर को शिर झुकाया उस समय उनके मुख से निकला कि वीर तुम जीते मैं हारा। कफ्फू गया पर वीरता शेष रह गई।

सारे गढ़वाल का इकछत्र राजा अजयपाल की एक रानी गोली रावतों की लड़की थी इस नाते से गोला प्रधान सरदार राजा के थे इसी पर यह कहावत पड़ी कि— "भीतर गोरली, भैर गोरली—फिराद कैमू करली। श्रीनगर के दरबार में गोलों का ही बोल बाला था। राजा अजयपाल के सातवें पुश्त के राजा बलभद्रपाल को दिल्ली के बादशाह जलालुद्दीन अकबर ने शाह पदवी से विभूषित कर दिया।

दिल्ली के दरबार शाही खिताब पाने के बाद श्रीनगर के राजा का बल इतना बढ़ गया कि कर देने वाले गढ़ाधिपति अब केवल प्रजा से जमीन लगान वसूल करने वाले ओहदेदार, थोकदार, सयाणे, कमीण इत्यादि पदाधिकारी मात्र रह गये और उनका अस्तित्व केवल राजा की कृपा पर निर्भर रह गया।

गढ़वाल के राजा ने जैसी पदवियाँ क्षत्रियों को दी थीं वैसी ही ब्राह्मणों को भी दी थी अब भी गढ़वाल के कई ब्राह्मण नेगी, बिष्ठ कहलाते हैं इसी तरह नौटियाल, हटवाल, डिमरी, केड़ियाल, हौंडियाल, थपलियाल, बौड़ाई, डबराल, बड़थ्वाल आदि ब्राह्मणोंमें थोकदारियाँ चली आ रही है।

वर्तमान गढ़वाल निवासियों में भी अधिकांश खसिया और क्षत्रिय ही हैं, शेष में से कुछ तो ऐसे ब्राह्मण हैं जो क्षत्रियों के गुरू होने के नाते उनके मूल पुरुषाओं के साथ इस मुल्क में आकर बसे और कुछ ब्राह्मण ऐसे भी हैं जो कि मुसलमानी शासन से तंग हो जाने के कारण अपना धार्मिक जीवन बिताने को यहां आकर बसे। यहाँ ब्राह्मण राजपूतों में पेश्तर बहुत अच्छा मेल चला आया देखकर अंग्रेजों ने ट्रिंडम कमिश्नर के द्वारा जातीयता के विषवृक्ष का बीजारोपण कराया, आज ट्रिंडम ही नही सारी गोरी जाति के हट जानें पर भी वह विषवृक्ष समय समय पर अपने फूलों और फलों से स्वार्थियों के द्वारा गढ़वाल को महान हानिकर सिद्ध हो रहा है।

गढ़वाल के कुछ महापुरुष—१ लोधी रिखोला गढ़वाल राज्य की सेना का रखवाला होने से रिखोला कहे

जाते हैं । एक बार तिब्बतियों ने नीतिघाटे के रास्ते गढ़वाल पर आक्रमण किया, महाराज की आज्ञा से गढ़वाल के शूरवीरों ने लोधी जी की अध्यक्षता में दुश्मनों से लोहा लिया, नीतिघाटा शीतप्रधान होने से रोटी, छुंगोली साग की पवित्रता का रिवाज चलाया, इस रिवाज को सारे हिमालय प्रान्त ने कायम रक्खा, लोधी की नीति ने तिब्बतियों को ऐसा मार भगाया जो कि कभी भूलकर भी गढ़वाल पर धावा बोलनेको समर्थ न हुए तब से हमारे मारछा जाति के व्यापारी बेफिक्र तिब्बत से व्यापर करने लगे। लोधी जी संगूर पट्टि के रहने वाले थे, इस जीत में लोधी जी को बदल पुर और पैनी में जागीरें मिलीं । तब लोधी रिखोला बयाली ग्राम में रहकर शेष जीवन बिताने लगे बयाली में इन वीर की एक पत्थर की महान शिला जो आज कल के एक सौ आदमी भी नहीं ला सकते १० मील से लाकर अपनी यादगार रख छोड़ी है। वीर लोधी की सन्तान अब भी थोकदार कही जाती है किन्तु हमारे लोधी का नाम अमर है। (२) लाट सूबेदार बलभद्रसिंह इस वीर ने अफगान युद्ध में साहस और वीरता के वह काम किये जिसे सुनकर लार्ड रौबर्ट तक अचम्भित रह गये। सरकारी रिपोर्टों में हमारे बलभद्र के गीत गाये गये

और वीरता का इतिहास लिखा गया बल्कि यहाँ तक लिखा गया कि जो देश और जो जाति बलभद्रसिंह सरीखा वीर पैदा कर सकती है वह अपने नाम की अलाहदा पल्टन रखने की इज्जत प्राप्त कर सकती है, नतीजा यह हुआ कि गोरखाओं से अलाहिदा ही गढ़वाल रेजिमेन्ट कायम की गई। बलभद्रसिंह मेजर सूबेदार से पेन्सन पर आये और बड़े लाट अर्थात वायसराय के ए० डी० सी० नियत किये गये। लाट साहब के हमराह रहने के कारण गढ़वालियों में लाट सूबेदार के नाम ख्याति हो चली। बृटिश सरकार से १३ सौ बीघा जमीन भावर में इन्हें जागीर मिली जो कि आजकल बलभद्रपुर के नाम से प्रसिद्ध है इस वीर की वीरता के फल-स्वरूप आज हजारों क्षत्रिय घरोंका पालन पोषण हो रहा है। और होता रहेगा। किन्तु अफसोस है कि गढ़वालियों ने इस वीर के प्रति कृतज्ञता प्रकट नहीं की, लेकिन वीर के वीरत्व के नाते उनके बड़े पुत्र को घर पर ही वर्दी और खिताब मिला। अब चाहे विश्वका सेनापति ही क्यों न हो जाय किंतु बलभद्रसिंह की बराबरी नहीं कर सकता इन्होंने न तो "थल" और "थू" की हवा फैलाई न छोटे बड़े की और न क्षत्री ब्राह्मण की। वैसे सिंह जी बहुत हैं लेकिन इस सिंह की बराबरी का सिंह सायद

और नहीं हैं। ३ पं० घनानन्द खण्डूड़ी का नाम गढ़-वाल में प्रातःस्मरणीय हो गया है। व्यवसायी, बहुत हुए हैं येन केन धन भी बहुतों ने समेटा लेकिन गढ़वाल कमायूं के इतिहास में सबसे बड़ा दानी यही सपूत यही माईका लाल दीवान ब्राह्मण कौम का भूषण निकला। गढ़वाल के सैकड़ों, बाहरके बिसियों, जो रोटी से हैरान थे आपकी शरण में गये और उनको सहारा मिला। जिनमें से दर्जनों सेठ हो गये, लखपति हो गये, नामी ठेकेदार हो गये और प्रसिद्ध विद्वान भी हुए किन्तु हाय! अफ-सोस!! और भारी अफसोस!!! इस शरण गत बत्स-लका साथ किसीने न दिया। यह शिकायत उनको रह ही गई। उनकी शिकायत को लिखना व्यर्थ है क्योंकि नेता हीन गढ़वाल, संगठन रहित गढ़वाल, फूट का घर गढ़ वाल, अपने पड़ोसी से ईर्षा करने वाला गढ़वाल, जाँति पांति का स्वार्थी गढ़वाल कुछ करने को समर्थ नहीं हुआ यद्यपि महापुरुष अपने स्मारक के लिये किसी के पीछे नहीं पड़ते और वे न कोई काम अपने नामके लिये करते हैं। पं० घनानन्द परोपकारी थे उनका पतन संभव नहीं किन्तु जिस पुरुष के दान से हजारों पले, हजारों पलेंगे उस समूह ने कम से कम अपनी कृतज्ञता प्रकाशित करना ही था लेकिन हम अभी इतने योग्य हैं कहाँ कर्मवीर पं०

घनानन्द खण्डूड़ी अपने पिताजी की मृत्यु के बाद असह्य ऋण भार से दब गये थे लेकिन उन्होंने अपने छोटे से जीवन काल में अटल कर्मयोग द्वारा लक्ष्मीपति बन कर बिमल यश प्राप्त किया है आपका जन्म सम्वत् १९३९ बिक्रमी ३० भाद्रपद को हुआ था लेकिन कराल काल ने ४२ वर्ष की जवानी में ही १२ श्रावण १९८१ को हमसे छीन लिया जिसके लिये गढ़माता को महान् वेदना है। ४ बद्रीमहाराज पं० बद्रीदत्त बमोला संसार के उन दीन हीन, कुली कबाड़ियों से लेकर बड़े बड़े तपस्वियों के लिये नमूना हैं, उनका जीवन अनुकरणीय है। उन्होंने गढ़वाल के सामने भारतवर्ष के आगे एक उदाहरण रख दिया है कि अपनी बुद्धि कौशल से अपनी ही योग्यता से बिना किसी के सहारे हजारों कठिनाइयाँ सहन कर अर्थात जिन जिन यातनाओं को उन्होंने फौजी में सहन किया क्या उनके असहयोगियों को उनका स्वाद चखने का सौभाग्य भारतवर्ष में प्राप्त हुआ। गढ़वाल में बड़े बड़े नामी कवि हो रहे हैं। नामी लेखक हो रहे हैं नामी पत्र, पत्रिकायें निकली, निकल रही हैं। लेकिन मालूम नहीं हुआ कि क्यों इनकी विस्तृत जीवनी प्रकाशित नहीं हुई। इनकी जीवनी आदर्श जीवनी है ऐसा कौन अभागा होगा जो इनकी जीवनी स्वयं पढ़ने

परिचित व्यक्तियों का कर्तव्य है कि वे उनके कामों को प्रकाशित कर आगे के किये हुए अपने काम भी लोगों को दृष्ठि गोचर करायें।

६ माधोसिंह—इस वीर की गाथा आज भी अनुकरणीय है वीर माधोसिंह ने अपने बल पौरुष से कीर्ति नगर के पास मलेथा की ऊसर जमीन को २ फर्लाङ्ग पहाड़ के अन्दर सुरंग काटकर पानी की गूल निकाल सारी जमीन को पनचर (तालाऊ) बनाया जो आज प्रान्त भर में हर एक चीज की पैदावार का केन्द्र कहा जाकर देखने योग्य स्थान हो रहा है।

गढ़वाल में एक नहीं अनेकों धीरवीर बुद्धिवान, बलवान हो चुके हैं जिनकी वीरता के कई एक स्मारक अनेक स्थानों पर मौजूद हैं।

यहाँ इन लोगों के अनेक गढ़ याने किले थे जो ऊंचे पहाड़ी टीलों पर होने से इसका नाम सन् १४६५ ई० से गढ़वाल पड़ा जो सन् १८०३ तक गढ़वाल टिहरी नरेश के अधीन था। सन् १८०३ गोरखों ने गढ़वाल पर अपना प्रभुत्व जमाया जिसे सन् १८१५ में अंग्रेजों की सहायता लेकर गढ़वाल नरेश ने निकाल फेंका फलस्वरूप आधा गढ़वाल ईस्ट इण्डिया कम्पनी को मिला। आज कल दोनों गढ़वाल के १३ लाख मनुष्य ७ हजार

गाँव में बसते हैं। यह सबसे ऊँचा हिमालय २५६४५ फ़ीट, नन्दादेवी २५४४७ कामिट २३३६० त्रिशूल २३१८४ दुनागिर २३८६० माना चोटी २३४२० चौखम्भा २३२४० सतोपथ २२७२० केदार शृंगादि अनेक ऊंचे पर्वत हैं जिनमें से अनेक झरने बहकर बड़ी नदियों में आते हैं इसलिये ही स्कन्द पुराण में यहां करोड़ गंगाओं का होना बताया गया है। यहीं कुबेर भण्डार है और सभी धातुओं की खानें भी यहाँ हैं यहां तक कि हीरा, पन्ना, पुखराज, नीलम आदि रत्न भी यहां हैं। जड़ी बूटियों का तो यहाँ घर ही है।

जिला-टिहरी गढ़वाल

पहली अगस्त सन ४९ को रियासत टिहरी विलीन होगई। जिसकी स्थापना आज से १२६० वर्ष पूर्व राजा कनकपालने की थी। और उन्ही के वंशज राजा अजेयपाल जो बोलान्दा बदरीनाथ कहलाये। तब से टिहरी का राज सिंहासन बदरीनाथ की गद्दी तथा शासक राजा 'बोलान्दा-बदरीनाथ' कहलाता था। गढ़वाल राज्य हिमालय के विस्तृत भूभाग में फैला हुआ था जिसकी परिधि सहारनपुर, बिजनौर आदि तक फैली हुई थी सन् १८१५ के गोरखा युद्ध के बाद अंग्रेजों ने इसके

टुकड़े कर दिये और वर्तमान टिहरी उसके शासक को देकर शेष अपने अधिकार में ले लिया। तब से 'गढ़राज्य' टिहरी राज्य के नाम से प्रचलित हुआ। आज १३ सौ वर्षों की सामन्तशाही के बाद टिहरी की जनता पूर्ण स्वतंत्र हुई और अब टिहरी यू० पी० का ५० वां जिला होगया।

प्राचीन बावनगढ़ के नाम से गढ़वाल

१ चान्द्पुर गढ़	१४ कुजणीगढ़	२७ तोपगढ़	४० अजमीरगढ़
२ दशोली गढ़	१५ भरपुर गढ़	२८श्रीगुरूगढ़	४१ साबलीगढ़
३ बधाण गढ़	१६ लोदगढ़	२९ धौनागढ़	४२ बदलपुरगढ़
४ नागनाथगढ़	१७ रैकागढ़	३० लंगूरगढ़	४३ संगेलागढ़
५ कण्डारागढ़	१८ मुगरागढ़	३१ बागगढ़	४४ गुजड़ू गढ़
६ बांगर गढ़	१९ ऊपूगढ़	३२फरासूगढ़	४५ जौंटगढ़
७ भरदार गढ़	२० मोल्यागढ़	३३लोद्नगढ़	४६ जौनपुरगढ़
८ सिलगढ़	२१ सांकरीगढ़	३४रतन गढ़	४७ चम्पा गढ़
९ लोह्बागढ़	२२ नालागढ़	३५गढ़कोटगढ़	४८ कोरा गढ़
१० कोल्लीगढ़	२३ रामीगढ़	३६गाड़तांगगढ़	४९ भुवना गढ़
११ रबाड़गढ़	२४ विराल्टागढ़	३७ वनगढ़	५० कांडा गढ़
१२ फल्याणगढ़	२५ चौंडागढ़	३८चौंधकोटगढ़	५१ देवल गढ़
१३ कुईलीगढ़	२६ रानीगढ़	३९ नयालगढ़	५२ ईडियागढ़

तीर्थ-वर्णन

जिसके हाथ पैर और मन काबू में हों तथा जिसमें विद्या तप और कीर्ति हो, वह मनुष्य तीर्थ के फल का भागी होता है। पुरुष का शुद्ध मन, शुद्ध वाणी तथा वश में की हुई इन्द्रियाँ ये शारीरिक तीर्थ हैं जो स्वर्ग का मार्ग सूचित करती हैं। भीतर का दूषित चित्त तीर्थ स्नान से शुद्ध नहीं होता। जिसका अन्तःकरण दूषित है जो दम्भ में रुचि रखता है तथा जिसकी इन्द्रियाँ चञ्चल हैं, उसे तीर्थ, दान, व्रत और आश्रम भी पवित्र नहीं कर सकते। मनुष्य इन्द्रियों को वश में करके जहाँ जहाँ निवास करता है वहीं वहीं कुरुक्षेत्र, प्रयाग और पुष्कर आदि तीर्थ वास करने लगते हैं। पृथ्वी के पवित्र तीर्थों का संक्षेप में वर्णन किया जाता है जिनके सुनने और पढ़ने से अश्वमेध फल की प्राप्ति होती है और मनुष्य सम्पूर्ण पापों से मुक्त हो जाता है। सो भक्तिभाव से सुनिये।

पुष्कर, नैमिषारण्य, प्रयाग, धर्मारण्य, धेनुक, चम्पकारण्य, मगधारण्य, सैन्धवारण्य, दण्डकारण्य, गया, प्रभास, श्रीतीर्थ, कनखला, भृगुतुङ्ग, हिरण्याक्ष, भीमारण्य, कुशस्थली, कुशस्थली, लोहाकुल, केदार, मन्दरारण्य, महाबल, कोटितीर्थ, रूपतीर्थ, शूकर,

चक्रतीर्थ, योगतीर्थ, सोमतीर्थ शाखोटक, कोकामुख, बदरीशैल, तुंगकूट, स्कन्दाश्रम, अग्निपद, पञ्चशिख, धर्मोद्भव, बन्धप्रमोचान, गंगाद्वार, पञ्चकूट, मध्यकेशर, चक्रप्रभ, मतंग, कुशदंड, दंष्टाकुंड, विष्णुतीर्थ, सर्वकामिक तीर्थ, मत्स्यतिल, ब्रह्मकुंड, सत्यपद, बाहूकुंड, चतुःस्रोत, चतुःशृंग, द्वादशधार, मानस, स्थूलशृंग, स्थूलदंड, उर्वशी, लोकपाल, मनुवर, सोमशैल, सदाप्रभ, मेरुकुंड, सोमाभिषेचन तीर्थ, महास्रोत, कोटरक, पञ्चधार, त्रिधार, सप्त धार, एकधार, अमर कन्टक, शालग्राम, कोटिद्रुम, बिल्व प्रभ, देवहृद, विष्णुहृद, शंखप्रभ, देवकुंड, वज्रायुध, अग्निप्रभ, पुंनाग, देवप्रभ, विद्याधरतीर्थ, गान्धर्वतीर्थ, मणिपूर, गिरि, पञ्चहृद, पिण्डारक, मलव्य, गोप्रभाव, गोवर, वटमूल, स्नानदण्ड, विष्णुपद, कन्याश्रम, वायु कुण्ड, जम्बूमार्ग, गभस्ति-तीर्थ, ययाति पतन, भद्रवट, महाकालवन, नर्मदातीर्थ, तीर्थवज्र, अर्बुद, पिंगतीर्थ, वासिष्ठ-तीर्थ, पृथु संगम, दौर्वासिक, पिञ्जरक, ऋषि तीर्थ, ब्रह्मतुंग, वसुतीर्थ, कुमारिक, शुक्रतीर्थ पञ्चनद, रेणुकातीर्थ, पैतामह, विमलतीर्थ, रुद्रपाद, मणिमान, कामाख्य, कृष्णतीर्थ, कुलिंगक, यजनतीर्थ, याजनतीर्थ, ब्रह्मवालुक, पुष्पन्यास, पुण्डरीक, शिवोद्भेद, नर्मदोद्भेद, दीर्घसत्र, हयपद, अनशन तीर्थ, गंगोद्भेद, वस्त्रा

पद, दारूबल, छायारोहण, कौशाम्बी, सिद्धेश्वर, मित्र-
वल, कालिकाश्रम, वटावट, भद्रवट, दिवाकर, सारस्वतद्वीप
विजयतीर्थ, कामदतीर्थ, रुद्रकोटि, सुमनस्तीर्थ, समन्त
पंचक, ब्रह्मतीर्थ, सुदर्शनतीर्थ, पारिप्लव, पृथूदक, दशाश्व-
मेधिक, साच्चिद, विजय, पञ्चनद, वाराह, यत्तिणीहृद, पुण्डरीव
सोमतीर्थ, मुञ्जवट, बदरीवन, रत्नमूलक, स्वर्लोकद्वार, पञ्च
तीर्थ, कपिलातीर्थ, सूर्यतीर्थ, शंखिनीतीर्थ, गोभवनतीर्थ
यक्षराजतीर्थ, ब्रह्मावर्त, कामेश्वर, मातृतीर्थ, शातवनतीर्थ
स्नानलोमापह, मॉँससंसरक, ब्रह्मोदुम्बर, सप्तर्षिकुण्ड, देवी
तीर्थ, जम्बुकतीर्थ, ईहास्पद, कोटिकूट, किंदान, किंजय,
कारण्डव, अवेध्य, त्रिविष्ठप, पाणिखात, मिश्रक, मधुवट
मनोजव, कौशिकीतीर्थ, देवतीर्थ, ऋणमोचनतीर्थ, नृगधूम
अमरहृद, श्रीकुञ्ज, शालितीर्थ, नैमिषेयतीर्थ, ब्रह्मस्थान,
कन्यातीर्थ, मानसतीर्थ, कारुपावनतीर्थ, सौगन्धिकवन,
मणितीर्थ, सरस्वतीतीर्थ, ईशानतीर्थ, पाञ्चयज्ञिकतीर्थ,
त्रिशूलधार, माहेन्द्र, देवस्थान, कृतालय, शाकम्भरी,
देवतीर्थ, सुवर्णतीर्थ, कलिहृद, चीरसव, विरूपाल, भृगुतीर्थ,
कुशोद्भवतीर्थ, ब्रह्मयोनि, नीलपर्वत, कुब्जाम्बक, वशिष्ठप
स्वर्गद्वार, प्रजाद्वार, कलिकाश्रम, रुद्रावर्त, सुगन्धाश्व,
कपिलावन, भद्रकर्ण हृद, शंखुकर्णहृद, सप्तसारस्वत,
औसनसतीर्थ, कपालमोचन, अवकीर्ण, काम्यक, चतुःसामुद्रि

शतिक, सहस्रिक, रेणुक, पञ्चवटक, विमोचन, स्थाणुतीर्थ, कुरुतीर्थ, कुशध्वज, विश्वेश्वर, मानवकूप, नारायणाश्रम, गंगाहृद, बदरीपावन, इन्द्रमार्ग, एकरात्र, चीरकावास, दधीच श्रुततीर्थ, कोटितीर्थ, स्थली, भद्रकालीहृद, अरुन्धतीवन ब्रह्मावर्त, अश्ववेदी, कुब्जावन, यमुना, प्रभव, वीर, प्रमोक्ष सिन्धुत्थ, ऋषिकुल्या, कृत्तिका, उर्वसिंक्रमण, मायाविद्योद्भव, महाश्रम, वेतशिका, सुन्दिरकाश्रम, बाहुतीर्थ, चारूनदी, बिमलाशोक, मार्कंडेयतीर्थ, सितोद, मत्स्योदरी, सूर्यप्रभ, अशोक वन, अरुणास्पद, शुक्रतीर्थ, बालुकातीर्थ, पिशाचमोचन, सुभद्राहृद, विरलदंडकुंड, चंडेश्वरतीर्थ ज्येष्ठस्थानहृद, ब्रह्मसर, जैगीषव्यगुहा, हरिकेशवन, अजामुखसर, घन्टाकर्णहृद, कर्कोटक, वापी, सपर्णस्पोदपान, श्वेपतीर्थहृद, घर्घरिकाकुंड, श्यामाकूप, चन्द्रिकातीर्थ, श्मशानस्तम्भकूप, विनायकहृद, सिन्धूद्भवकूप, ब्रह्मसर, रुद्रावास, नागतीर्थ, पुलोमतीर्थ, भक्तहृद, चीरसर, प्रेताधार, कुमारतीर्थ, कुशावर्त, दधिकर्णोदपानक, शृंगतीर्थ महातीर्थ, महानदी, गयशीर्ष, अक्षयवट, कपिलाहृद, गृध्रवट, सावित्रीहृद, प्रभासन, शीतवन, योनिद्वार, धन्यक कोकिलातीर्थ, मतंगहृद, पितृकूप, ससकुन्ड, मणिरत्नहृद, कौशिक्यतीर्थ, भरततीर्थ, जेष्ठालिका तीर्थ, कन्यसर, कुमारधारा, श्रीधारा, गौरीशिखर, शुनःकुंड, नन्दितीर्थ

कुमारवास, श्रीवास, कुम्भ कर्णहृद, कौशिकीहृद, धर्मतीर्थ कामतीर्थ, उद्दालकतीर्थ, संध्यातीर्थ, लोहितार्णव, शोणो द्भव, वंशगुल्म, ऋषभ, कालतीर्थ, पुंड्यावर्तिहृद, बदरिका-श्रम, रामतीर्थ, पितृवन, विरजातीर्थ, कृष्णातीर्थ, कृष्णवट, रोहिणी कूप, इन्द्रद्युम्न, सरोवर, सानुगर्त, माहेन्द्र, श्रीनन्द इषुतीर्थ, वार्षभीतीर्थ, कावेहृद, गोकर्ण, गायत्री स्थान, बदरीहृद, मध्यस्थान, विकर्णक, जातिहृद, देवकूप, कुशप्रथन, सर्वदेवव्रत, कन्याश्रमहृद, बालखिल्यहृद तथा अखंडितहृद ये सबपवित्र तीर्थ हैं। जो मनुष्य इन तीर्थों में उत्तम श्रद्धा से सम्पन्न हो उपवास एवं इन्द्रिय संयम पूर्वक विधिवत स्नान देवता ऋषि मनुष्य तथा पितरों का तर्पण देवताओं का पूजन एवं तीन रात्रितक निवास करता है वह महापापी होनेपर भी सम्पूर्ण पापों से छूट कर परमपद प्राप्त करता है इसमें सन्देह नहीं है। धन्यास्ते पुरुषालोके ये च यति सदा हरिम् ॥
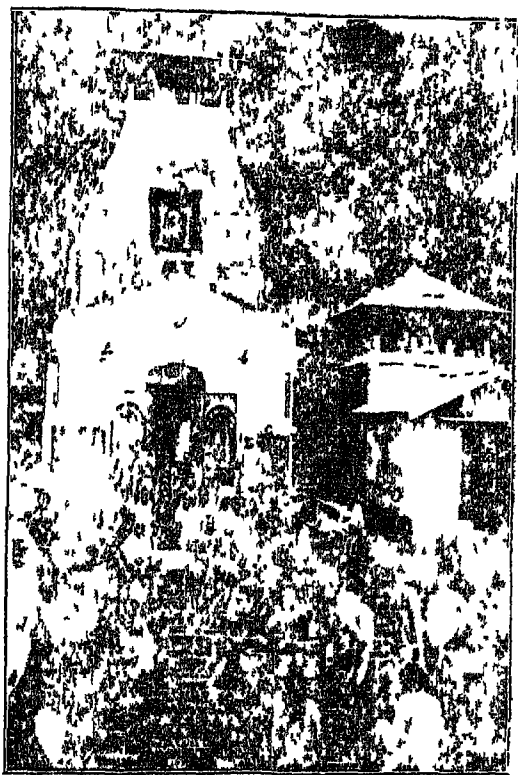
गुप्त काशी देवालय
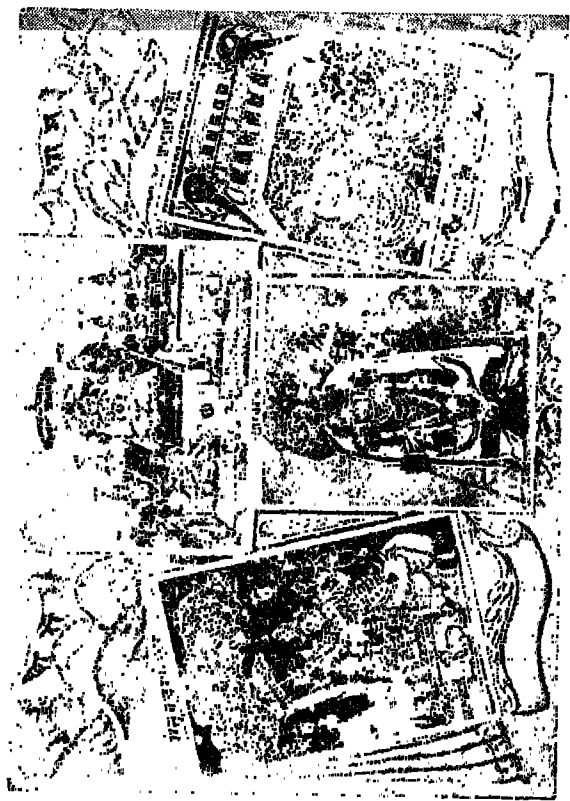
चारों धाम

काशीपुरी (बनारस)

भारतवर्ष के तीर्थों में काशी अपना एक विशिष्ट स्थान रखती है। अत्यन्त प्राचीन काल से काशी "विद्या का घर" के नाम से प्रसिद्ध है। भारतीय इतिहास के वैभव काल में यह पुरी अपने महत्त्व पूर्ण विद्या विमर्ष के लिये सारे देश में पथ दर्शक रही है। अपने विषय के प्रत्येक विद्वान के लिये अपने सिद्धांत की सार्वभौमता प्रमाणित करने को काशी में उसकी मान्यता स्वीकार करानी पड़ती थी और प्रत्येक धार्मिक मामलों में किसी युग में काशी के पंडितों की व्यवस्था सर्वोपरि समझी जाती थी काशी सप्त पुरियों में अपना विशेष स्थान रखती है, कहते हैं जिस प्रकार मथुरापुरी विष्णु भगवान के सुदर्शन चक्र पर स्थित है उसी प्रकार काशी भगवानशंकर के त्रिशूल पर स्थापित है दोनों ही पुरी तीन लोक से न्यारी हैं और दोनों का ही प्रलय में नाश नहीं होता यथा—

तीन लोक ते मथुरा न्यारी, तीनलोक से काशी।
प्यारी एक श्याम सुन्दर की, दूजी प्रिय अविनाशी ॥
तीन काल में रहैं निरन्तर, लीला धाम विलासी।
भगवद्रूप मुक्ति की दाता, पूरण ब्रह्म प्रकाशी ॥

एक विद्वान के शब्दों में हमारी यह सातोंपुरी भार-

तवर्ष के धार्मिक देह में सप्त प्राण के समान हैं जो समय समय पर हमारी अध्यात्मिक चेतना को जाग्रत रख कर हमें विश्व कल्याण के मार्ग में बढ़ने के लिये अनुप्रेरित करती रहती हैं। काशीपुरी हमारी इन्हीं पुरीयों में से एक है। प्राचीन शास्त्रों में स्थान स्थान पर इसकी महिमा का वर्णन पाया जाता है। प्रसिद्ध सत्यवादी राजा हरिश्चन्द्र को इसी पुरी में डोम के घर रह कर उसकी सेवा करनी पड़ी थी, गौतम बुद्ध ने यही सारनाथ में अपने धार्मिक सिद्धान्तों का उद्घोष किया था। जगद्गुरू शंकराचार्य ने यहीं बौद्ध धर्म को परास्त कर सनातन धर्म की ध्वजा फहरायी थी। काशी शंकर की पुरी है अतः यहाँ गली गली में आपको शिव मन्दिर देखने को मिलेंगे फिर भी "रांड सांड सिढी सन्यासी इनसे बचे तो सेवै काशी" के अनुसार यदि आप देखगे तो आपको इसकी भी सत्यता अनुभव हो ही जागयी। भीख मांगने वाली स्त्रियाँ साँड घाटों की टूटीफूटी और बहुत दूर तक ऊँची नीची सीढियाँ और साधु संन्यासी सचमुच इन सभी का यहाँ काफी जोर है। कहते हैं काशी में मरने से मुक्ति मिल जाती है अतः अनेक लोग देह त्यागने के विचार से ही यहाँ आकर रहते हैं। यहाँ की गली भी तीन लोक से न्यारी ही होती है।

इतनी तंग गली जहाँ दिन में भी सूर्य की किरणें शायद ही प्रवेश पासके इस स्थान को छोड़ और कहीं देखने को नहीं मिलेंगी। यह पुरी गंगा के किनारे पर बसी है और करीब ५० घाट इसकी शोभा को बढ़ाते हैं। इनकी शोभा राजघाट के पुल से अथवा माधवराय के धरहरे से देखी जा सकती है। रात के समय जब बिजली बत्तियां घाटों पर जगमगा ने लगती हैं उस समय काशी की शोभा कहने की नहीं देखने की ही वस्तु होती है।

बूँटी (भंग) छानना और नाव में सैर करना काशी के लोगों की एक परमप्रिय वस्तु है। इसके लिये यहाँ बड़ी बड़ी सुन्दर नौकायें हैं जिनमें गाने बजाने और नाच रंग खास अवसरों पर किये जाते हैं। गाने की चोजों में बनारस की ठुमरी कजली प्रसिद्ध है। बनारस में विश्वनाथ जी का मन्दिर दर्शनीय है यह द्वादश ज्योति लिंगों में से है अतः इसकी बहुत महिमा हैं विश्वनाथ जी का मन्दिर बहुत छोटा है और मूर्ति भूमि में नीची होने के कारण पुष्प माला और बिल्व पत्रों से प्रायः ढकी रहती है। मन्दिर लाल पत्थर का प्राचीन बना है इसके दरवाजे छोटे हैं फर्श में कहीं कहीं रूपये जड़े गये हैं। मंदिर की शिखर सोने के पत्र से मढ़ी हुई है

और रणजीत सिंह महाराणा की बनाई हुई कही जाती है। चारों ओर अनेक देवी देवताओं की मूर्तियाँ हैं। यहीं ज्ञान वापी नाम का एक प्रसिद्ध कुआ है, कहते हैं जब अत्याचारी औरंगजेब ने जब मन्दिर पर आक्रमण किया तो विश्वनाथ जी इसी ज्ञानवापी में प्रवेश कर कर गये थे। भक्त लोग यहां पुष्प और पैसा चढ़ाते हैं। यहाँ नन्दीश्वर जो ७ फीट ऊँचा विशालकाय पाषाण निर्मित हैं दर्शनीय है, यह नैपाल महाराज द्वारा भेंट किया गया है।

मन्दिर के समीप ही शनिश्चरदेव का मन्दिर, महावीर, अक्षयवट और फिर अन्नपूर्णा जी का मन्दिर दर्शनीय है। भगवान शंकर जगत प्रतिपालिनी अन्नपूर्णा के यहाँ भिक्षा ग्रहण करते हैं, किसी कवि ने ठीक ही कहा है "दिगम्बर कंथ जीवेत् अन्नपूर्णा न चेद्गृहे" आप नंगे, विष का भक्षण, पुत्र हाथी से आहार वाला, बैल, सिंह, मूषक, मोर, सर्प, भूत, प्रेतों की जमात परन्तु आमदनी के नाम डमरू की डिमडिमराती स्थिति में शंकर कैसे निर्वाह करते यदि अन्नपूर्णा घर में न होती? अतः भगवती अन्नपूर्णा का मन्दिर अवश्य दर्शनीय हैं। यहीं लक्ष्मी नारायण की स्त्री का मन्दिर है जिसमें कालीजी, कृष्णजी, रामसीता, शिव और गंगा

जी की मूर्ति दर्शनीय है। काशी के कुछ प्रसिद्ध मन्दिर इस प्रकार हैं—

(१) भैरवनाथ (२) गोपाल मन्दिर (यह चौखम्भा पर वल्लभकुल सम्प्रदाय का मन्दिर है) (३) मुकुन्दरायजी (यह भी वल्लभकुल का मन्दिर है) (४) रणछोर जी का मन्दिर (५) बड़े महाराज का मन्दिर (६) बल्देव जी का मन्दिर (७) दाऊजी (८) गोरखनाथजी का मन्दिर (मन्दाकिनी मुहल्ले में गोरख टीले पर) (९) राम मन्दिर (देखने योग्य सुन्दर) (१०) दुर्गाजी (११) वागीश्वरी देवी (यहाँ नाग कुआ भी है) (१२) लाट भैरव (समीप ही कपाल मोचन कुण्ड है) (१३) भारतमाता मन्दिर (कई लाख की लागत से श्री शिवप्रसादजी गुप्त ने इसका निर्माण किया है इसमें संगमरमर से भारतवर्ष का मानचित्र (नकशा) नदी पर्वतादि सहित बहुत सुन्दर बनाया गया है जो दर्शनीय है । ।

यहां के कुछ और दर्शनीय स्थान इस प्रकार हैं—

(१) बाबू शिवप्रसादजी गुप्त की कोठी—यह नगवा नाम के मुहल्ले में है, काशी आने वाले नेतागण प्रायः यहीं ठहरते हैं।

(२) राजा मोतीचन्द की कोठी—यह बहुत आली-

शान और अमीरी ठाठ की चीज है। यहां मोतीझील नाम का तालाब भी है जो दर्शनीय है।

(३) काशी नरेश की कोठी—नन्देश्वर मुहल्ले में है।

(४) कबीर चौरा—यहाँ कबीर के स्मारक रूप उनके चरणचिन्ह चित्र और टोपी सुरक्षित है यहाँ उनकी गद्दी भी पूजी जाती है।

(५) अढ़ाई कंगूरा मसजिद।

(६) हिन्दू विश्वविद्यालय—यह भारत धर्मप्राण पंडित मदनमोहन मालवीय जी के सद्प्रयत्न से सन् १९१६ में संस्थापित किया गया है। इसमें चालीस के करीब विभाग कार्य करते हैं प्रत्येक विभाग अपने कार्य क्षेत्र में विशिष्ट स्थान रखता है। इस एक ही कालेज ने हिन्दू गौरव को बहुत ऊँचा मान दिया है। इसके जोड़ की कोई संस्था भारत भर में नहीं है।

भारत की प्राचीन कला और विज्ञान को आधुनिक शोधों के आधार पर उन्नत करने का यह संस्था महान प्रयत्न करने में जुटी हुई है। हिन्दू चिकित्सा विज्ञान (आयुर्वेद) स्वास्थ विज्ञान (मल्लविद्या) आध्यात्मिक विज्ञान (दर्शनशास्त्र) नीति शास्त्र, भौतिक विज्ञान, संस्कृति विज्ञान, समाज शास्त्र आदि विषयों पर यहां

गहिरा अध्ययन शिक्षार्थियों को कराया जाता है। यहां लक्ष्मीनारायण मन्दिर तथा कैलाश मन्दिर भी दर्शनीय हैं। विश्वविद्यालय का विस्तार बहुत बड़े क्षेत्र में है और यहाँ की इमारतें बहुत विशाल दर्शनीय और हिन्दू स्थापत्य कला के आधार पर निर्माण की गई हैं। कुल घेरा मिला कर करीब ६ मील के है।

काशी के मुख्य मुख्य घाट—

(१) वरुणा संगम घाट (यहाँ वरुणा नदी गंगा में मिली है) (२) राजघाट (पीपी का पुल बना है) (३) प्रहलाद घाट (यहां कुछ समय अपने मित्र गंगाराम ज्योतिषी के घर श्री तुलसीदास जी ने निवास किया था) (४) त्रिलोचन घाट (यहाँ विष्णु भगवान द्वारा पूजन में १ कमल कम हो जाने पर चढ़ाये गये नेत्र को शंकर ने धारण किया और तभी से त्रिलोचन नाम पाया) (५) गायघाट (६) ब्रह्माघाट (७) दुर्गाघाट (दुर्गा और बिन्दुमाधव मन्दिर) (८) पंचगंगा और माधवराय घाट (यहाँ पंडितराज जगन्नाथ ने गंगालहरी प्रकट की और एक एक छंद पर गंगा माता एक एक सीढ़ी चढ़ती गई और पंडितराज के अन्तिम छंद पर अपनी गोद में ले लिया। प्रसिद्ध माधवराव का धरहरा भी यहीं है जिसे तोड़ कर औरंगजेब ने मसजिद बनादी है)

(९) भौसलाघाट (१०) सिन्धिया घाट (बहुत सुन्दर पक्का घाट है) (११) मणिकर्णिका घाट (यहां राजा अलवर अमेठी के तथा दाऊजी, नृसिंहजी, सिद्धविनायक के मन्दिर हैं यहाँ स्नान का बहुत महात्म है। काशी आने वाले यात्री एक बार यहाँ स्नान अवश्य करते हैं) (१२) चिता घाट (काशी महाश्मशान प्रसिद्ध है यहाँ प्रायः चितायें जला ही करतीं हैं) (१३) ललिता घाट (यहाँ ललिता जी का नैपाली का तथा और कई शिव मन्दिर हैं) (१४) मान मन्दिर घाट (यहाँ जयपुर के राजा मानसिंह की बनाई प्राचीन वेधशाला है जिसमें नक्षत्रों की गति जानने के कितने ही बहुमूल्य यन्त्र स्थापित हैं (१५) दशाश्वमेध घाट (यह काशी का जनप्रिय घाट है जहाँ हमेशा बड़ी भीड़ लगी रहती है इसे बम्बई की चौपाटी अथवा हरिद्वार का प्लेटफार्म (हरि की पैड़ी) कहें तो अत्युक्ति न होगी) (१६) अहिल्याबाई घाट (१७) केदारघाट (१८) हरिश्चन्द्रघाट (सत्य प्रतिज्ञ राजा हरिश्चन्द्र ने यहीं डोम की नौकरी स्वीकार करके कर वसूली का कार्य किया था) (१९) शिवाला घाट (२०) जानकी घाट (२१) तुलसीघाट (यहाँ तुलसीदास जी ने ग्रन्थ रचना की है) (२२) असी-घाट (यहाँ गोसाईं तुलसीदासजी ने देह छोड़ा है)।

काशीपुरी सभ्यता, कला और साहित्य का भी सदा से केन्द्र रही है। रामानन्द, कबीर, तुलसी, भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, राजा शिवप्रसाद सितारे हिन्द, पं० अम्बिकादत्त व्यास, श्री जयशंकर प्रसाद, डा० भगवान दास, बा० श्यामसुन्दरदास, हरिऔध जी आदि की यह निवास भूमि रही है साथ ही संस्कृत के धुरंधर विद्वान नारायन भट्ट, शंकर भट्ट, नीलकंठ भट्ट, कमलाकर भट्ट, लक्ष्मीधर सूरि, भट्टाजी दीक्षित, नागोजी, रघुनाथ, गोकुलनाथ, बापूदेव शास्त्री, सुधाकर द्विवेदी, शिव-कुमार शास्त्री यहीं के निवासी थे।

काशी का वर्णन अधूरा रह जायगा यदि हम यहाँ की संस्थाओं का वर्णन न करें। इनमें नागरी प्रचारिणी सभा का नाम प्रमुख उल्लेखनीय है। इस सभा ने हिन्दी की प्रशंसनीय रूप से सेवा की है, इसका अपना प्रकाशन विभाग है, बहुमूल्य संग्रहालय है जहाँ प्राचीन हस्त-लिखित ग्रन्थ, चित्र, मूर्तियाँ सुरक्षित हैं। भारत धर्म महामण्डल और कारमाईकल लाइब्रेरी भी यहाँ की प्राचीन संस्थायें हैं। यहाँ का मुख्य व्यापार जरी के काम का है, बनारसी साड़ी, दुपट्टे, बहुत कीमती और चित्ताकर्षक होते हैं। इनके अलावा यहाँ के रेशमी कपड़े लकड़ी के खिलौने, पीतल के बर्तन, सुरती (तम्बाकू)

गोटा पट्ठा, पीतल की देव मूर्तियां, चांदी की नक्काशी का काम, पान और लंगड़ा आम आदि अपनी कुछ खास खूबी रखते है। यहां से कुछ दूर पर रामनगर (काशी नरेश) का किला भी देखने योग्य है यहाँ की रामलीला बहुत नामी होती है और नाटीइमली का भरतमिलाप देखने को लोग दूर दूर से आते है।

काशी में रामनवमी, शिवरात्रि, बुढ़वा मंगल और सूर्य चन्द्र ग्रहण मेले बहुत भारी होते हैं जिनमें काफी भीड़ इकट्ठी होती है।

सारनाथ

सारनाथ बौद्ध धर्मावलम्बियों का प्रसिद्ध तीर्थ स्थान हैं। यह काशी से चार मील पड़ता हैं। यहाँ जाने के लिये बनारस से इक्के, तांगे मिलते हैं। बी० एन० डब्ल्यू रेलवे पर यह एक छोटा सा स्टेशन पड़ता है जहाँ से सीधी पक्की सड़क प्राचीन दर्शनीय स्थान की ओर को जाती है। यहाँ बौद्धकालीन मन्दिर के भग्नावशेष देखने को मिलते हैं। सम्राट अशोक के समय सारनाथ अपने चरम उत्कर्ष को पहुँच चुका था जिसका वर्णन बड़े प्रभावशाली शब्दों में चीनी यात्री ह्वेनसांग और फाहियान के यात्रा वृत्तान्तों में मिलता है। प्राचीन

काल में यहाँ बौद्ध का बहुत बड़ा शिक्षा केन्द्र एक विहार था जिसमें हजारों बौद्ध भिक्षु रह कर बौद्ध धर्म की शिक्षा ग्रहण करते और उसे आचरण में लाने का व्यवहारिक पाठ ग्रहण करते थे। यहां एक बुद्ध लाइब्रेरी बुद्ध अस्पताल एवं बुद्ध भगवान का मन्दिर है यह मंदिर बौद्ध धर्म की सम्मानित संस्था महाबोधी सोसाइटी द्वारा निर्माण कराया गया है और इसके लिये चीन जापान और बर्मा के बौद्ध धर्मानुयायियों ने मुक्तहस्त से दान दिया है। मन्दिर बौद्ध कला का एक बहुत सुन्दर नमूना है। बाहर दरवाजे पर एक बहुत बड़ा घंटा लगा हुआ है अन्दर ऊँचे चबूतरे पर बुद्ध भगवान की सिंहासन स्थिति मूर्ति है। मन्दिर में बुद्ध भगवान के जीवन से सम्बन्ध रखने वाली घटनाओं के बड़े सुन्दर चित्र अंकित किये गये हैं जो जापानी कलाकृति होते हुए भी भारतीय चित्र कला शैली के उत्तम नमूने प्रतीत होते हैं। यहाँ आपको स्वच्छता और शान्ति का अद्भुत साम्राज्य देखने को मिलेगा, आडम्बर शून्यता भी यहाँ की एक आकर्षक वस्तु है। थोड़ी ही दूर पर सामने बोधि वृक्ष की शाखा से लगाया गया एक वृक्ष है जो अत्यन्त पवित्र माना जाता है। भगवान बुद्ध ने बोधि सत्व की प्राप्ति के बाद सर्व प्रथम यहीं "धर्मचक्र प्रवर्तन" अर्थात

धर्म प्रचार का उद्घोष किया था। यहीं से उत्पन्न होकर बौद्ध धर्म की पतली सी शाखा ने सारे संसार में फैलकर करोड़ों आदमियों को अपनी आश्रय रूपी शीतल छाया देकर शान्ति प्रदान की थी। एक सौ दस फीट ऊँचा धम्मेख स्तूप इसी का प्रतीक रूप यहाँ अभी भी खड़ा है। दूसरा एक चतुर्दिक सिंहाकृति अशोक स्तम्भ भी यहाँ स्थित है जिसमें प्राचीन लिपि में अशोक की धर्म आज्ञायें अंकित हैं। और भी कितने ही शुंगकाल के, मौर्यकाल के, कुषाण काल के भग्नावशेष और स्मृति चिन्ह यहाँ उपलब्ध हैं जो पुरातत्व के विद्यार्थियों के लिये बड़ी ही उपादेय वस्तुएँ हैं। यहाँ आर्यधर्म संघ द्वारा निर्मित एक सुन्दर धर्मशाला भी है। एक चीनी यात्रियों की धर्मशाला भी यहाँ है। धम्मेखस्तूप, मूल-गंधकुटी, विहार आदि दर्शनीय हैं।

सारनाथ में एक प्राचीन वस्तुओं का संग्रहस्थान अजायबघर भी है, यहाँ दो आने का टिकट लेकर जाना पड़ता है। इसके अन्दर प्राचीन सिक्के, मूर्ति, टूटे फूटे पुराने बर्तन, शिलालेख आदि संग्रह किये गये हैं जिनमें बुद्ध की कुछ प्रतिमायें प्राचीन कला की दृष्टि से अत्यन्त मूल्यवान हैं।

अयोध्या (अवधपुरी)

अयोध्यापुरी भगवान रामचन्द्र की पुरी है। अत्यन्त प्राचीन काल से सूर्यवंश के प्रतापी राजा इस पुरी में शासन करते चले आये हैं जिनमें इक्ष्वाकु, मान्धाता, अम्बरीष, त्रिशंकु, हरिश्चन्द्र, सगर, दिलीप, भागीरथ, खड्वांग, रघु, अज, दशरथ आदि प्रसिद्ध हैं। सप्तपुरियों में अयोध्या की गणना सर्व प्रथम की जाती है, यथा—

अयोध्या मथुरा माया काशी कांची अवन्तिका।
पुरी द्वारावती चैव सप्तैते मोक्षदायिकाः॥

अर्थात् अयोध्या, मथुरा, हरिद्वार, काशी, काञ्ची, उज्जैन और द्वारिकापुरी ये सात पुरी मोक्ष की देने वाली हैं। अयोध्या का वर्णन अनेक प्राचीन ग्रन्थों में पाया जाता है इनमें बाल्मीकि रामायण, आध्यात्म रामायण, पद्मपुराण, श्रीमद्भागवत, महाभारत, शिव गरुड़ स्कन्द, पुराणादि मुख्य हैं। अयोध्या फैजाबादके समीप लखनऊ से ८६ मील की दूरी पर स्थित है। फैजाबाद से अयोध्या ४ मील की दूरी पर है और यहाँ रेलवे स्टेशन भी है। नगर सरयू नदी के किनारे बसा हुआ है, यहाँ सरयू नदी बहुत गहरी और बड़े दरिया के रूप में बहती है जिसमें बड़ी बड़ी नावें और स्टीमर तक चलते हैं,

नदी में बड़े बड़े जलजन्तु मगर, घड़ियाल, सूँस, कछुए वगैरह भरे पड़े हैं। नगर में बन्दरों का बड़ा जोर है, यहां पूड़ी मिठाई वगैरह सभी चीजें जाली के सीखचों के अन्दर बेची जाती हैं फिर भी टीन की छतों पर बन्दरों के कूदने से जो धमाके होते रहते हैं उनसे नये आये हुए यात्री को इनकी सर्वव्यापकता सहज ही में अनुभव हो जाता है। मैं जब अयोध्या जी देखने गया था तब मन में अयोध्या के मथुरा जैसी ही होने का अनुमान लगाता गया था परन्तु यहाँ सरयू नदी का विशाल आकार और बानर सेना का सार्वभौम आतंक देख कर अयोध्या की मथुरा से प्राथमिकता स्वीकार करनी ही पड़ी। आइये अब आपको पुरी के कुछ प्रसिद्ध स्थानों के दर्शन करादें, प्रथम यहां के घाट ही लीजिये—

[१] ऋणमोचन घाट [२] सहस्रधारा घाट [३] लक्ष्मण घाट (लक्ष्मण जी का मन्दिर) [४] स्वर्गद्वार घाट (यहाँ शाम को सरयू माता की आरती होती है, महाराज कुश के स्थापित किये शंकर भगवान के दर्शन हैं। भगवान रामचन्द्र जी का प्राचीन मंदिर है, जैनधर्म का आदित्यनाथ मन्दिर भी यहीं है) [५] गंगामहल घाट [६] शिवालय घाट [७] जटाई घाट [८] अहिल्या बाई घाट (यह इन्दौर की रानी अहिल्याबाई का बनवाया

है, यहाँ सोने की सीता बनाकर रामजी ने अश्वमेध यज्ञ किया था) [९] धौरहरा रूपकला घाट [१०] नयाघाट (समीप ही बाबा मनीराम जी का आश्रम, तुलसीदास जी का मन्दिर है, निकट ही रामजी का मन्दिर भी है) [११] जानकी घाट [१२] रामघाट ।

अयोध्या में हनुमान गढ़ी का मन्दिर सबसे प्रधान है यहाँ भगवान का प्रसाद दुकानों पर मोल बिकता है, मन्दिर काफी ऊँचाई पर बना हुआ है जहाँ हनुमान की विशाल छवि देखने ही योग्य है। मन्दिर का प्रबन्ध यहां के महन्तजी के हाथ में हैं। मन्दिर में बहुत सी कोठरियां हैं जिनमें साधू लोग निवास करते हैं। यहां से निकल कर कुछ ही दूर पर सुग्रीव और अंगदजी के टीले हैं। इनसे आगे रामजन्म स्थान, यज्ञवेदी है जिसे दुष्ट यवनों ने तोड़कर अपनी राक्षसी लीला के स्मारक स्वरूप मसजिद खड़ी कर दी है। ऐसी मसजिदें अनेक तीर्थ स्थानों पर हैं जो यह पुकार कर कहती हैं कि क्या हमारे रहते हिन्दू मुसलिम एकता की असली सड़क बनाई जा सकती है। यहीं पास में एक चबूतरे पर राम लक्ष्मण आदि चारों भाइयों के दर्शन हैं। छठी का चूल्हा, सीता रसोई, कोप भवन, आनन्द भवन, चौबीस अवतार दर्शन रतन सिंहासन, रंगमहल, साक्षी गोपाल आदि स्थान

यहां देखने योग्य है। यहां से लौटकर मार्ग में कनक महल है जो अपने सौन्दर्य और विशालता के लिए प्रसिद्ध है यहां की लावण्यमयी भगवद्मूर्तियां बड़ी ही मनोहारिणी हैं। थोड़ी ही दूर पर तुलसी चौरा नाम का वह स्थान है जहां गोस्वामी तुलसीदास ने रामायण की रचना की है। बस्ती के अन्दर सुरसरि रानी का मन्दिर नरहन रानी का मन्दिर, बेतिया राजा, टिकारी राजा, भिनगा राजा, रूसी बाबू के मन्दिर, राजा मोतीचन्द, गोविन्ददासजी के मन्दिर, राजद्वार, पंच मन्दिर, कनक भवन, सीता रसोई, राम कचहरी, कोप भवन, आनन्द भवन, राजमहल, रतन सिंहासन, अयोध्या महल आदि स्थान देखने के योग्य हैं। अयोध्यापुरी की परिक्रमा ६ कोस की हैं ८४ कोस की परिक्रमा भी कुछ धर्मप्रेमी करते हैं। परिक्रमा में रघुनाथदास का मठ, सीताकुण्ड, अग्निकुण्ड, विद्याकुण्ड, मणिवान पर्वत, कुबेर पर्वत, सुग्रीव पर्वत, लक्ष्मण टीला, स्वर्गद्वार और रामघाट आदि अनेक स्थान देखने योग्य हैं।

प्रयाग (इलाहाबाद)

तीर्थराज प्रयाग संयुक्तप्रान्त का एक प्रमुख नगर है। प्रयाग को सब तीर्थों के राजा होने का सौभाग्य प्राप्त है। यह नगर गंगा यमुना और सरस्वती के संगम पर

बसा हुआ है। गंगा और यमुना तो प्रत्यक्ष हैं परन्तु सरस्वती यहाँ गुप्त रीति से बहती है प्रकट में उनका कोई रूप देखने में नहीं आता किन्तु प्राचीन मान्यता यह बतलाती है कि किसी समय यहाँ तीनों ही नदियों का परम पावन समन्वय हुआ था। गंगा की धवल धारा और यमुना की श्यामसुन्दर छटा दोनों का मिलन देखने ही योग्य है, सचमुच वह प्राणी परम भाग्यवान है जो इस पुण्य संगमतीर्थ में स्नान का सुखद फल प्राप्त करता है। एक ओर भगवती भागीरथी की उछलती छलकती चंचल तरंगमयी दुग्धफेनोपम शुभ्रधारा दूसरी ओर कलिन्दनन्दिनी श्री यमुना महारानीजी की नीलछटामयी गम्भीर शान्त स्थिर धारा और जहाँ दोनों का मिलन होता है वहाँ का सुन्दर वर्ण सामंजस्य बड़ी ही अनुपम वस्तु है। संगम पर प्रायः जल थोड़ा ही रहता है किन्तु कभी गंगा यमुना को पीछे ढकेल देती है और कभी यमुना गंगा को ढकेलती आगे बढ़ती चली आती है साथ ही उस स्थान पर दो कदम इधर ही उथली धार और दो कदम उधर ही अथाह जलराशि बीच में स्नान का जो आनन्द आता है वह अवर्णनीय है।

प्रयाग में माघ के महीने में प्रतिवर्ष मेला लगता है, जहाँ विस्तृत रेती के मैदान में झोपड़ी लगाकर लोग

पूरे महीने तक कल्पवास करते हैं। इसी रेती में मेले के अवसर पर बाजार लगता है, साधू और पण्डों की झोंपड़ियाँ और अखाड़े भी यथास्थान यहीं पर जम-जाते हैं। प्रति बारहवें वर्ष यहाँ कुम्भ का बड़ा भारी मेला होता है और प्रति छठे वर्ष अर्धकुम्भी का समारोह एकत्रित होता है। इन अवसरों पर देशभर से लाखों संत-महन्त, सेठ-साहूकार, अमीर-गरीब, नरनारी जमा होते हैं। बिना किसी विज्ञापन के प्रत्येक अवसर इतने बड़े जन-समुदाय का समागम वास्तव में एक कुतूहल पैदा करने वाली वस्तु होती है साथ ही इससे यह भी अनुमान लगाया जा सकता है कि हजारों, लाखों वर्षों से हमारे धार्मिक संस्कार और विश्वास हमारे जीवन में कितने घुल मिल गये हैं कि उन्हें अनुप्रणित करने के लिये हमें किसी अन्य बाहरी आवाहन की आवश्यकता नहीं होती साथ ही इन विराट् धार्मिक आयोजनों से उन लोगों की भी कुछ आँखें चकाचौंध हो जाती हैं जो यह समझते हैं कि धर्म की जड़ खोखली हो गई है और आम जनता का अब उस पर से विश्वास उठता जाता है।

प्रयागराज में बेनीमाधव का मन्दिर और किला देखने योग्य स्थान है किला यमुना के तट पर बहुत बड़ा और मजबूत बना हुआ है। आपने दिल्ली और

आगरे के शाही किले भी शायद देखे होंगे, परन्तु इस किले की बनावट कुछ अजीब ही है। प्रायः किले ऊँचे स्थान पर और ऊँची दीवारों से घिरे हुए बनाये जाते हैं किन्तु यह किला जमीन के अन्दर जमीन की बराबर समतल बनाया गया है। केवल यमुना की ओर उसकी उँची उठी हुई दीर्घाकार दीवारें देखने में आती हैं। अंगरेजों के समय में यहाँ फौज रहती थी गोला बारूद फौजी सामान बनाने का कारखाना था। अतः जनता को इसमें जाने की आज्ञा नहीं दी जाती थी, केवल मेले के अवसर पर यात्री एक खास रास्ते से अन्दर की मूर्तियों को देखने जाने दिये जाते थे। यहाँ जमीन के अन्दर गुफा में धर्मराज अन्नपूर्णा, लक्ष्मी, गणेश, बालमुकुन्द, शंकर, सत्यनारायण, भैरव, ललिता गंगाजी, कार्तिकेय, नृसिंह, सरस्वती, विष्णु, यमुना, दत्तात्रेय, मार्कण्डेय, गोरख, जामवन्त, सूर्यदेव, अनुसूया वेदव्यास, वरुण, कुबेर, अग्नि, दुर्वासा, राम लक्ष्मण, शेषनाग, यम, काल आदि की अनेक प्राचीन और कलापूर्ण मूर्तियां हैं। यहाँ अक्षयवट के दर्शन का बहुत भारी महात्म है यह वृक्ष प्रलयकाल में प्रकट होता हैं और भगवान बालमुकुन्द का रूप इसके पत्ते पर शयन करते हैं। प्रयाग का यह किला अकबर बादशाह का

बनाया हुआ है और कहते हैं कि उसी ने अपनी हिन्दू रानी के लिये इन मूर्तियों का निर्माण कराया था।

किले के नीचे वेंड़ी महावीर की बड़ी विशाल मूर्ति है जो जमीन पर सीधे लेटे हुए हैं। इसके अलावा (१) विन्दुमाधव भगवान का मन्दिर (२) वासुकी सर्पराज का मन्दिर (३) शिव कचहरी (४) अलोपी देवी (५) भारद्वाज आश्रम (६) कल्याणी देवी देखने योग्य है।

आधुनिक वस्तुओं में यहां का प्रान्त भर का हाई-कोर्ट, खुसरूबाग, आनन्द भवन, हिन्दी साहित्य सम्मेलन के भवन, हिन्दी विद्यापीठ, प्रयाग विश्वविद्यालय हिन्दुस्तानी एकेडेमी के भवन, कमला नेहरू अस्पताल, आजाद पार्क, प्रान्तीय सचिवालय के भवन आदि देखने चाहिये।

काशी की तरह प्रयाग भी प्रान्त भर की राजनैतिक साहित्यिक जाग्रति का केन्द्र है। यहां के प्रमुख व्यक्तियों में नेहरू परिवार, मालवीय परिवार, पुरुषोत्तमदास जी टंडन, तेजबहादुर सप्रू, कवियों में 'बिस्मिल' धीरेन्द्र वर्मा महादेवी वर्मा, राजकुमार वर्मा, डा० रसाल आदि मुख्य हैं।

गोला गोकर्ण नाथ

खीरी लखीमपुर से २० कोस पर गोला गोकर्णनाथ स्टेशन है। यहाँ गोकर्णनाथ महादेव का विशाल मंदिर है, यहाँ फाल्गुन में शिवरात्रि पर और चैत्र में मेला जमा होता है जिसमें शिवभक्त शंकर पर गंगा जल चढ़ाने आते हैं। कहते हैं एक समय रावण इन्द्रपुरी को जीतकर गोकर्णेश्वर शिव को लंका पुरी ले चला रास्ते में शंकरभगवान की इच्छा सुन्दर स्थान देख कर यहीं ठहर जाने की हुई उन्होंने रावण की मति फेर दी वह उन्हें जमीन पर रख संन्ध्या करने चला गया। संन्ध्या करके आने के बाद उसने लाख यत्न किये भोले बाबा टस से मस न हुए। रावण ने स्तुति की तो आप बोले 'रे भक्त' मैं अब यहाँ से नहीं उठ सकता यह स्थान मुझे प्रिय है तू यहीं मेरा पूजन कर तभी से यह स्थान प्रसिद्ध हो गया।

बिठूर

बिठूर ई० आई० आर० पर स्टेशन है जहां कानपुर से गाड़ी जाती है। बिठूर का पुराना नाम ब्रह्मा वर्त है। शास्त्रों में ब्रह्मावर्त देश अत्यन्त पवित्र भूमि माना है। यह गंगा के किनारे पर स्थित है यहां पुरानी बस्ती ब्रह्मा घाट के समीप है। यहां ब्रह्मावर्त की खूँटी के नाम से प्रसिद्ध एक मन्दिर है जहां घाट की सीढ़ियों पर एक

फुट ऊँची लोहे की खूँटी गड़ी हुई है। यहां के घाट रानी अहिल्या बाई और बाजीराव पेशवा के बनवाये हुए हैं यहां बालमीकेश्वर, क्षीरेश्वर, भूतेश्वर, कपिलेश्वर महादेव, और पेशवाओं का दीप स्तंभ दर्शनीय हैं यहाँ के आस पास के स्थानों में बरहट [बर्हिष्मतीपुरी मनुजी का जन्म स्थान] ध्रुवटीला [ध्रुव जी का जन्म स्थान] बालमीक आश्रम ऋषि बालमीकि का जन्म स्थान और आश्रम है यहीं वन में परित्यक्त सीता के गर्भ से लव-कुश का जन्म हुआ और उन्हें ऋषि ने अमर महाकाव्य बाल-मीकि रामायण रचकर कंठस्थ कराया जिसे सुन राम स्तंभित से रह गये थे।

सन् १८५७ के सिपाही विद्रोह के कारण भी बिठूर का नाम बहुत प्रसिद्ध होगया है। बाजीराव पेशवा राज्य छिन जाने पर यहीं रहने थे। सिपाही विद्रोह के सूत्रधार महारानी लक्ष्मी बाई और बाजीराव ही थे और बाजी-राव के बेटे नाना साहब और पुत्री मैना बाई ने अंगरेजों के दांत खट्टे करने में जो बहादुरी दिखाई और कानपुर के आस पास जो अंगरेजों की दुर्गति की गई उसका सारा श्रेय बिठूर निवास पेशवा परिवार को ही है अतः राजनैतिक दृष्टि से भी बिठूर का महत्व कुछ कम नहीं है यहाँ पेशवाओं का बाड़ा अभी भी

देखा जा सकता है जहाँ बैठ कर उक्त विद्रोह की योजना सँगठित की गई थी।

नैमिषारण्य मिश्रक

नैमिषारण्य अत्यन्त प्राचीन तप और ज्ञान की भूमि है। पौराणीक काल में यहाँ हजारों ऋषि मुनि इकट्ठे होकर प्रसिद्ध कथा वाचक सूत जी शास्त्रों की अनेका नेक कथायें सुना करते थे। पुराणों में अनेक जगह इस प्रकार के प्रश्नोत्तरों के साथ कथायें वर्णित मिलती हैं। अनेक पुराण और शास्त्रों के ज्ञाता सूतजी बहुत बड़े विद्वान थे और वह अपनी कथाओं द्वारा शास्त्रीय ज्ञान का विस्तार अत्यन्त । वृहद् रूप में किया करते थे। नैमिषारण्य जाने के लिये हरदोई जिले के संडीला कस्बे से तथा बालामऊ होकर दो मार्ग हैं। संडीला से यह स्थान करीब १५ मील कच्चे मार्ग से जाना पड़ता है। एक रास्ता सीतापुर होते हुए भी जाता है। नैमिषारण्य एक छोटा सा स्टेशन है जहाँ से बस्ती १ मील के करीब पड़ती है। यहाँ का प्रसिद्ध तीर्थ चक्र तीर्थ नाम का एक पक्का बना हुआ कुंड है इस कुंड के पास ही यात्रियों के ठहरने के लिये कई धर्मशालायें हैं। यहाँ आम बहुत पैदा होता है चारों ओर सघन जंगल है जिनके कारण यह स्थान अत्यन्त सुहावना और

तपो बन जैसा ही प्रतीत होता है। यहां बस्ती में प्रायः पंडों के ही मकान हैं। छोटा सा बाजार है। कुंड में पानी गहिरा होने के कारण लोहे की जाली लगा कर डूबने का बचाव कर दिया गया है। यहां के मुख्य मन्दिर हैं (१) ललिता देवी का मन्दिर, (यहाँ ललिताम्बा देवी की बड़ी विशाल मूर्ति हैं) (२) भूत नाथ महादेव [यह यहाँ के प्रसिद्ध देवता हैं] (३) सप्त ऋषियों का टीला (यहाँ सतयुग में सातों ऋषियों ने मिलकर बड़ा भारी यज्ञ किया था) (४) गोवर्धन महादेव (५) क्षेमकाया देवी (६) विश्वनाथ अन्न पूर्ण जी (७) जान की कुंड (८) लोलार्क कुंड (९) वेद व्यास जी का आश्रम (यहाँ व्यास गद्दी मनु महाराज और सतरूपा रानी के सिंहासन, व्यास गंगा, ब्रह्मावर्त और गंगोत्तरी कुंड है जो अब मिट्टी से भर गये हैं।)

(१०) गोमती नदी (स्नान का महात्म है) (११) पुष्कर सरोवर (१२) दशाश्वमेध घाट पर राम मन्दिर है (१३) पांडव किला (यहां कृष्ण क मन्दिर है जिसमें पांचों पांडवा के भी दर्शन हैं) (१४) वाराह कूप (१५) सूत जी की व्यास गद्दी (१६) महावीर का टीला (यहां बहुत विशाल हनुमान जी की मूर्ति है

कहते हैं इससे बड़ी मूर्ति हनुमान जी की हिन्दुस्तान भर में कहीं नहीं है।)

नैमिषारण्य में पितरों को पिंड दान करने का बड़ा महात्म है। यज्ञ दान जप होमादि यहां करने से अनन्त फल की प्राप्ति होती है। एक बार सब ऋषियों ने पिता मह ब्रह्माजी से पूछा कि हे पितामह इस भरत भुखंड पर तपस्या के योग्य सब से उत्तम कौनसा प्रदेश है तो ब्रह्मा ने अपना चक्र छोड़ कर कहा इसके पीछे पीछे चले जाओ जहां यह रुक जाय उसी भूमि को तप के लिये सर्व श्रेष्ठ समझलेना। ब्रह्मदेव का चक्र चला और उसके पीछे चले ८४ हजार शौनकादि ऋषि गण यहां आकर चक्र का धुरा स्थिर होगया। अतः ऋषियों ने इसी स्थान को सर्वोपरिमान अनेक जप तप यज्ञादिक किये तभी से नेमि अर्थात चक्र स्थिर होने के कारण इसका नाम नेमिष बन पड़ गया है।

नेमिष से मिश्रिक ५ मील है। यह नेमिष की बस्ती से आबादी बनावट आदि में बड़ा है। यहां के दर्शनीय स्थान हैं—

१—बाँकेबिहारी धर्मशाला और मन्दिर २—महावीर गुफा में नीची महावीर के दर्शन ३—सीता रसोई यहाँ महावीर की मूर्ति के पैरों तले अहिरावण पड़ा है

४—सीताकूप ५—दधीच कुंड, यह यहां का प्रधान तीर्थ है। प्रसिद्ध असुर वृत्तासुर जब किसी प्रकार न मरा तब इन्द्र ने दधीच ऋषि से वज्र बनाने को उनकी शरीर की हड्डी मांगी, ऋषिने सम्पूर्ण लोकोंका उपकार विचार कर अपनी देह की हड्डी देना स्वीकार कर लिया और तब सम्पूर्ण तीर्थों का पानी मँगवा पवित्रता पूर्वक स्नान कर गौ से अपनी देह चटा कर प्राण विसर्जन कर दिये। दधीच ऋषि के इस दुर्लभ सत्साहस की सम्पूर्ण लोक में अपार प्रसंशा हुई। दधीच की ही अस्थि वज्र के लिये क्यों ली गई इस विषय में सुना जाता है कि एक समय जब परशुराम जी तपस्या करने उत्तरा खंड को गये तो अपना वज्र बाण दधीच ऋषि को सुपुर्द कर गये और कहा यदि मेरा बाण तुम से खोगया तो तुम्हारा परम अनिष्ट होगा हाँ तुम इसे चाहो तो अपने उपयोग में ले सकते हो। इसके बाद ऋषि वर्षों तक उनकी बाट देखते रहे परन्तु परशुराम जी न लौटे चिन्ता में ऋषि बड़े बेचैन थे क्योंकि परशुराम के क्रोध को झेलने की किस की सामथ है अतः ऋषि ने और कुछ उपाय न देख उस बाण को घिस कर पीलिया इस वज्रशर के कारण ही उनकी हड्डियाँ वज्र से भी अधिक कठोर होगई। अनेक तीर्थों के पानी के मिश्रण के कारण ही इस स्थान का

नाम मिश्रिक प्रसिद्ध होगया। होली के दिन मिश्रिक की परिक्रमा भी लगाई जाती है।

हत्या हरण

मिश्रिक से दस मील पर हत्या हरण तीर्थ है। यहाँ बड़ा पक्का बना कुंड है। रामचन्द्र जी को रावण का बध करने के कारण जो ब्रह्महत्या लगी उसे उन्होंने यहां स्नान करके दूर की है अतः हत्या का पातक दूर करने को दूर दूर से लोग यहां आते हैं। यहां भादों के महीने में बड़ा भारी मेला लगता है।

देवी पाटन

यह गौंडा जिले में बलरामपुर से ४ मील की दूरी पर है। यहां पाटेश्वरी देवी का मन्दिर है जहां नवरात्रि के दिनों में भारी मेला लगता है।

गढ़मुक्तेश्वर

गढ़मुक्तेश्वर को दिल्ली से गाड़ी जाती है। यहाँ गंगा का प्रसिद्ध तीर्थ है। पांडवों के समय हस्तिनापुर और इन्द्रप्रस्थ का सारा राजपरिवार प्रति वर्ष यहाँ गंगा स्नान को बड़ी धूम धाम से जाता था। यहाँ कार्तिक सुदी पूर्णिमा को गंगा स्नान का बड़ा भारी मेला होता है। गंगा के मेलाओं में यह मेला अपना खास स्थान

रखता है। यहाँ गंगा दशहरा बैशाखी पूर्णिमा, सोमवती अमावस, संक्रान्ति आदि पर्वों पर भी हजारों यात्री गंगा स्नान को आते हैं। मुक्तेश्वर शिव के दर्शन हैं। यहाँ किसी समय प्राचीन किला भी था जो अब नष्ट भ्रष्ट हो गया है। यहाँ से ५ मील आगे गंगा जी बूढ़ी गंगा नाम की नदी मिली है।

सोरों

सोरों अर्थात शूकर क्षेत्र बी० बी० सी० आई० की छोटी लाइन पर मथुरा से बरेली जाने वाली लाइन पर पड़ता है। यहाँ वाराह भगवान ने पृथ्वी उद्धार करके हिरन्याक्ष के बध के बाद अपना देह त्याग किया है। वाराह भगवान का जन्म पुष्कर में और प्राण त्याग सोरौं में हुआ है। यहाँ बस्ती से गंगाजी की धारा काफी दूर है अतः बैल गाड़ीयों और इक्कों में वहाँ तक जाना पड़ता है। यहाँ वाराह भगवान के दर्शन हैं। हड़ गंगा है जहां लोग अपने मृतक सम्बन्धियों की अस्थियाँ विसर्जन करते हैं। बस्ती से थोड़ी ही दूर पर भैरवनाथ का मन्दिर है जहां बच्चों के मुंडन कराये जाते हैं।

राजघाट

अलीगढ़ बुलन्दशहर रोड पर यह स्थान है। यहाँ गंगा

जी का घाट है जहां कार्तिकी पूर्णिमा को भारी मेला भरा जाता है। यहां कितने ही मन्दिर हैं। इसका असली नाम बलराम घाट है और इसे भगवान कृष्ण के बड़े भाई बलदेव जी ने प्रगट किया है।

राजघाट कर्णवास

सोरों से आगे राजघाट स्टेशन है जहाँ गंगा के किनारे सुन्दर घाट बना हुआ है। यह स्थान परम एकान्त और भजन ध्यान और शान्ति प्राप्त करने की जगह है। कितने ही साधू महात्मा यहां रह कर भजन करते हैं। यहां गंगा के तट पर तपो भूमि की तरह के आश्रम हैं शान्ति प्राप्त करने वालों को यहां निवास करने का अच्छा सुअवसर है।

आगरा—मथुरा से ३४ मील और देहली से १२२ मील की दूरी पर, यमुना नदी के किनारे १ प्रसिद्ध व बादशाही समय का नगर है। व्यापार की बड़ी मंडी है। यहां ताज बीबी का रोजा, मकबरा, इतमादोला, सिकन्दरा और कैलाश, तथा किला देखने योग्य स्थान हैं। फतहपुर सीकरी, यहां से २४ मील दूर प्रसिद्ध दरगाह है। यहां जी० आई० पी०, ई० आई० आर० और बी० बी० एन्ड सी० आई० की लाइन आकर मिली हैं।

कानपुर—व्यापार की बड़ी भारी मंडी, चमड़े और कपड़ा व अन्य उद्योग धन्धों का प्रसिद्ध नगर है। ई० आई० आर और बी० बी० एन्ड सी० आई का जंक्शन है। यहीं से लखनऊ को गाड़ी जाती है।

लखनऊ—कानपुर से ४५ मील दूर गोमती नदी के किनारे कई खण्डों में बसा हुआ बड़ा नगर है। यहीं प्रान्तीय सरकार की राजधानी है। अवध के नवाबों की भी राजधानी रहने का इसे ही सौभाग्य प्राप्त रहा है। अमीनाबादपार्क, इमाम बाड़ा, छतर मंजिल सेक्रेटेरियेट और अजायब घर आदि देखने योग्य स्थान हैं।

मथुरा—व्रज भूमि का केन्द्र है देहली से ८८ मील दूर इसका विस्तृत वर्णन मय व्रज भूमि के अन्य स्थानों के पुस्तक के अन्त में देखें।

द्वादश ज्योतिर्लिंग

सौराष्ट्रे सोम नाथंच श्री शैले मल्लिकार्जुनम् ।
उज्जयिन्यां महाकाल मोंकार ममलेश्वरम् ॥
परल्यां वैजनाथंच डाकिन्यां भीम शंकरम् ।
सेतु बन्धेतु रामेशं नागेशं दारुका वने ॥
वाराणस्योंतु विश्वेशं त्र्यम्बकं गौमती तटे ।
हिमालयेतु केदारं घृष्णेशंच शिवालये ॥
एतानि ज्योतिर्लिंगानि सायं प्रातः पठे नरः ।
सप्तजन्म कृतं पाप स्मरणेन विनश्यति ॥

एक समय ब्रह्माजी और विष्णु भगवान में सबसे बड़े होने का झगड़ा चला। उस समय लिंग रूप एक ज्वाला (ज्योति) प्रकट हुई। ब्रह्मा ने उसके ऊपर के भाग का पता लगाने के लिये हंस का रूप धारण किया और श्री विष्णु ने नीचे के भाग का पता लगाने के लिये वाराह रूप धारण किया। ब्रह्मा और विष्णु को बहुत प्रयत्न करने पर भी जब उस लिंग के अन्त का पता नहीं लगा—उस ज्वाला लिंग से सब ब्रह्माण्ड व्याप्त हो गया तब दोनों ने हार मानकर शिवजी काही सबसे बड़ा होना स्वीकार किया तभी से लिंग रूप में शिवजी की पूजा प्रारम्भ हुई।

प्राचीन समय में शिव भक्तों ने जिस किसी स्थान पर तपस्या करके भक्ति द्वारा लिंग रूप में ससार व्यापिनी ज्योति का अनुभव किया, वहां ज्योतिर्लिंग की स्थापना हो गई और उन्हीं भक्तों की तपस्या के कारण वह स्थान भी पवित्र माना जाने लगा। शिव पुराण के अनुसार भारत में बारह ज्योतिर्लिंग माने गये हैं। जो इस तरह से हैं।

सोराष्ट्र देश में सोमनाथ, श्री शैल पर्वत पर मल्लिकार्जुन, उज्जैन में महाकालेश्वर, ॐ कारमें अमलेश्वर, परली में वैजनाथ, डाकिनी में भीमशंकर, सेतुबन्ध के पास रामेश्वर, दारुका वनमें नागेश, काशी में विश्वनाथ, गोदावरी के किनारे त्र्यम्बकेश्वर, हिमालय में केदारनाथ और शिवालय में घृष्णेश्वर—नामक बारह ज्योति लिंग हैं। इन बारह ज्योति लिंगों का संक्षिप्त वर्णन कथा तथा महात्म्य सहित यात्रा की सुविधा के अनुसार एक विशेष रूप से दिया जाता है।

इन द्वादश ज्योतिर्लिंगों की यात्रा का प्रारम्भ तीर्थ-राज प्रयाग से ही किया जाता है। प्रयाग से सबसे नज-दीक ज्योति लिंग विश्वनाथ जी का काशी में है। प्रयाग से काशी ई० आई० आर० लाइन से जाने वाले को मुगल सराय में गाड़ी बदलनी पड़ती है। प्रयाग से एक गाड़ी

फाफामऊ जंकशन होती हुई सीधे काशी को जाती है। प्रयाग से ओ० टी० आर० की छोटी लाइन भी बनारस होकर कटिहार तक गई है।

काशी द्वादश ज्योतिर्लिंगों में है। इस नगरी का विशेष वर्णन व महात्म अन्यत्र छपा है, उसमें देखें।

काशी से आगे बढ़ने पर वैद्यनाथ धाम—नामक स्थान में रावणेश्वर वैजनाथ—ज्योतिर्लिंग का दर्शन होता है। कुछ सज्जन, हैदराबाद राज्य के "परली" नामक नगर में जो बैजनाथ जी का लिंग है उसे ही ज्योतिर्लिंग मानते हैं। शिवपुराण के आधार पर तो वैद्य नाथ धाम में ही ज्योतिर्लिंग होना चाहिये और इस माहात्म्य के आदि में जो श्लोक दिया गया है, उसके आधार पर उसे परली नगर होना चाहिये। यहाँ हम दोनों ही स्थान के ज्योतिर्लिंगों का वर्णन करते हैं।

काशी से मुगल सराय गाड़ी बदल कर कलकत्ते की तरफ को ई० आई० आर० की गाड़ी पर सवार होने से 'जसडीह' नामक स्टेशन पर गाड़ी बदल कर शाखा-लाइन से थोड़ी दूर जाने पर बैद्यनाथ नामक स्टेशन मिलता है। वहाँ से थोड़ी दूर पर एक सुन्दर तालाब है जिसपर पक्के घाट भी बने हुये हैं। इसी तालाब के पास एक धर्मशाला भी है। इस सरोवर से

थोड़ी दूर पर श्री वैद्य नाथ जी का प्रसिद्ध मन्दिर है। राक्षस राज रावण भगवान् शंकर का बड़ा भक्त था, उसने लंका में शिव लिंग स्थापित करने का निश्चय किया, कैलास में शिवजी को प्रसन्न कर वह वहाँ से एक लिंगमूर्ति अपने साथ ले आया रास्ते में लघुशंका निवारण करने के लिए उसने उस मूर्ति को एक अहीर को अपने हाथ में थोड़े समय के लिये रक्खे रहने को दे दिया। जब कुछ समय तक रावण नहीं आया तो अहीर ने उस मूर्ति को वहीं जमीन पर रख दिया, रावण ने उस मूर्ति को वहाँ से उठा लेने की बहुतसी कोशिश की परन्तु वह इस कार्य में सफल नहीं हुआ।

अन्त में उसने उस लिंग मूर्ति की वहीं विधिवत् पूजा की। तभी से रावणेश्वर वैद्य नाथ के नाम से वह ज्योतिर्लिंग प्रख्यात हुआ, कहते हैं इस लिंग के दर्शन पूजनसे सब पाप दूर होते हैं, और मनकी सब कामनायें पूर्ण होती हैं।

इसके बाद यात्री को रामेश्वर ही पहुँच ना चाहिए, रामेश्वर जाने के लिए यात्री यदि चाहे तो जसडीह से सीधा कलकत्ते जाकर श्री जगन्नाथपुरी होता हुआ मदरास पहुँचे और फिर वहीं से एस० आई० आर० द्वारा सीधा रामेश्वर पहुँच जाय, रास्ते में उसे अन्य कई तीर्थ स्थान भी मिलेंगे—

जैसे शिव काञ्चीं, कुंभ कोनम्, चिदांबरम्, श्रीरंगम्, मदुरा इत्यादि रामेश्वर–नगर स्टेशन से करीब १ मील की दूरी पर बसा हुआ है, यहाँ पर समुद्र किनारे श्री रामेश्वर जी का विशाल मन्दिर है। मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्री रामचन्द्र जी ने सेत के बंध जाने पर यहाँ पर शिवलिंग की स्थापना की थी, श्री रामेश्वर के दर्शन और पूजन का बड़ा माहात्म्य है। गोस्वामी तुलसीदास जी ने इस सम्बन्ध में लिखा है—

जे रामेश्वर दर्शन करहीं, ते बिनु अघ भवसागर तरहीं।

जे गंगाजल आनि चढ़ावहिं, ते सायुज्य मुक्तिनर पावहिं॥

द्वादश ज्योतिर्लिंगों में केवल रामेश्वर ज्योतिर्लिंग ही ऐसा है जहाँ पर यात्रिगण भीतर जाकर अपने हाथ से शिवजी की पूजा नहीं कर सकते, मन्दिर के नियमों के अनुसार दूर ही से यात्रियों को दर्शन कराया जाता है और कर देने पर पुजारी द्वारा गंगाजल चढ़ाया जाता है, मन्दिर के अन्दर नन्दी की विशाल मूर्ति है। शंकरजी और पार्वती जी की चलमूर्तियां हैं जिनकी उत्सवों के समय में भिन्न भिन्न वाहनों पर सवारी निकाली जाती है, मन्दिर के अन्दर सोने और चाँदी के कई तरह के तथा एक चाँदी का सुन्दर रथ भी है। रामेश्वर से १०—

१२ मील की दूरी पर धनुष कोटि—नामक सुन्दर स्थान है। यहाँ पर दो समुद्रों का मेल हुआ है।

रामेश्वर से एस०आई०आर०और एम० एस० एम० आर० द्वारा वापिस लौटने पर सबसे पहले मल्लिकार्जुन ज्योतिर्लिंग मिलता है, यह लिंग श्री शैल पर्वत पर है, यह स्थान दक्षिण का कैलास नाम से प्रसिद्ध है। वहाँ पहुँचना बहुत कठिन है, रास्ता जंगल में होकर गया है। इस जंगल में गोंड, भील कोरकु आदि जातियों के लोग रहते हैं जो यात्रियों को प्रायः लूट लेते हैं। जंगल समाप्त होने पर करीब १० मील की पहाड़ पर चढ़ाई और उतराई है, प्रतिवर्ष केवल महाशिवरात्रि के समय यात्रियों को सुविधा पूर्वक पहुँचने का प्रबन्ध सरकार द्वारा किया जाता है। उस समय मार्ग में तथा जंगल में पुलिस का पूरा इन्तजाम किया जाता है जिससे कोई यात्री लुट न जाय, पर्वतपर और मार्ग में उस समय जल आदिका भी प्रबन्ध किया जाता है।

श्रीमल्लिकार्जुन पहुँचने के लिए यात्रियों को महाशिवरात्रि के दो-तीन दिन पहले मदरास प्रान्त के करनूल नामक स्टेशन पर पहुँच जाना चाहिए। रामेश्वर से मदरास होकर बम्बई की तरफ आते समय एम० एस० एम० रेलवे लाइन पर गुंटकल एक जंक्शन है।

इस जंकशन से एक छोटी रेल द्रोणाचलम् स्टेशन को गई है। उस द्रोणाचलम् स्टेशन से निजाम राज्य की रेलवे लाइन आरम्भ होती है जो सिकन्दराबाद, हैदराबाद, होती हुई जी० आ० पी० रेलवे के मनमाड स्टेशन को मिलाती है। करनूल से ४४ मील आत्माकूर तक मोटर जाती है। आत्माकूर से ३० मील पेचरू ३० मील जंगल होकर खराब रास्ते से जाना होता है, इस रास्ते पर बैलगाड़ियाँ ही अधिक चलती हैं। पेचरू से श्री शैल पर्वत की चढ़ाई आरम्भ होती है। वहाँ पर सामान उठाने के लिए कुली मिल जाते हैं। डोली का भी प्रबन्ध हो जाता है पेचरू से थोड़ी दूर ऊपर चढ़ने पर एक जंगली सरदार प्रत्येक यात्री से अपना कर वसूल करता है। चढ़ाई का रास्ता साफ है। कहीं-कहीं पर सीढ़ियाँ भी बनी हुई हैं। रास्ते में पानी बहुत कम स्थानों में मिलता है, इसलिए यात्री आत्माकूर या पेचरू से अपने साथ स्वच्छ जल ले जाते है। करीब ५ मील की साधारण चढ़ाई पर एक छोटे से झरने में जल मिलता है और थोड़ी दूर से उतार लग जाता है। उतार खतम होने पर भीमतोला कुण्ड मिलता है जिसमें बरसाती जल इकट्ठा किया जाता है। यहाँ एक शिवजी का मन्दिर भी है। भीम-तोला से तीन मील की कड़ी

चढ़ाई आरम्भ होती है। चढ़ाई तीन पहाड़ों की हैं जो एक साथ नहीं दिखाई देती। चढ़ाई समाप्त होकर १ मील आगे श्री मल्लिकार्जुन के दर्शन होते हैं। महाशिवरात्रि पर यहाँ काफी जनसमूह हो जाता है। इस पर्वत पर एक तालाब में बर्सात का जल इकट्ठा कर इंजिन से नलों द्वारा पक्के हौजों में लाया जाता है और यही जल व्यवहार में लाया जाता है। मन्दिर के अन्दर भी एक जल का कुण्ड है' मन्दिर काफी बड़ा है। पास ही में श्री पार्वतीजी (जिन्हें यहाँ "भूमरांबा" कहते हैं) का भी मन्दिर है, दोनों मन्दिरों के दर्शनों का कुछ कर भी देना पड़ता है।

मल्लिकार्जुन के सम्बन्ध में जो कथा शिव-पुराण में दी हुई है वह संक्षेप में इस प्रकार है—एक समय भगवान् शिवजी और पार्वतीजी ने यह निश्चय किया कि उनके दोनों पुत्र स्वामिकार्तिक और गणेशजी में से उसका विवाह पहले किया जावेगा, जो पृथ्वी की परिक्रमा सबसे पहले कर आवे, स्वामिकार्तिक उसी समय चले गये। पेट बहुत बड़ा होने के कारण गणेशजी के लिए यह काम कठिन हो गया और उन्होंने श्री शिव जी प्रदक्षिणा करदी और कहा कि आप जगत के स्वामी और विश्वरूप हैं, आपकी प्रदक्षिणा कर देने से विश्व

की प्रदक्षिणा हो गई। इस बात को मानकर श्रीगणेशजी का विवाह सर्वप्रथम कर दिया गया। कई वर्षों के बाद जब स्वामिकार्तिक पृथ्वी प्रदक्षिणा करके लौटे, तो उनको श्री गणेशजी के विवाह का समाचार सुन आश्चर्य और क्रोध हुआ। वह दक्षिण में क्रौंच पर्वत पर चले गये। शिवजी पार्वती सहित क्रौन्च पर्वत पर अपने पुत्र स्वामि-कार्तिक से मिलने गये, माता पिता का आगमन मालूम कर वह क्रौंच पर्वत से कई मील दूर दूसरे पर्वत पर चले गये। क्रौंच पर्वत पर जाकर भगवान शिव ज्योतिस्वरूप लिंग के रूप में हो गये। तभी से वह श्री मल्लिकार्जुन ज्योतिर्लिंग के नाम से प्रसिद्ध हुए।

श्रीशैलपर्वत की दूसरी तरफ नीचे कृष्णानदी बहती है। उसको यहाँ पर लोग पातालगंगा कहते हैं। इस कृष्णानदी के स्नान करने को ८०० सीढ़ियाँ उतरनी और चढ़नी पड़ती हैं। महाशिवरात्रि के दूसरे दिन उसी पहले वाले रास्ते ही वापिस करनूल पहुँच जाते हैं।

इसके बाद हैदराबाद राज्य में नागनाथ ज्योतिर्लिंग के दर्शन होते हैं निजाम राज्य की रेलवे के चौंढ़ी नामक स्टेशन पर उतरना पड़ता है, द्रोणाचलम् से मनमाड़ तक जो निजाम राज्य की रेलगाड़ी गई है, उस पर "पूर्णा" नाम का एक जंकशन है यहाँ से हिंगोली तक इसी रेल

की एक शाखा गई है। चौंडी-स्टेशन इसी पूर्णा हिंगोली शाखा पर है, नागनाथ का मन्दिर "औंढा" नामक गाँव में है जो स्टेशन से १२ मील पड़ता है, स्टेशन पर बैलगाड़ी और मोटरें भी मिल जाती हैं, औंढा गाँव के चारों ओर पहाड़ी और घने जंगल हैं, नागनाथ जी का मन्दिर काफी बड़ा है, मन्दिर के ऊपर का भाग नया मालूम होता है लेकिन नीचे का भाग बहुत पुराना है और उस पर बहुत ही सुन्दर कारीगरी की गई है श्री नागनाथ ज्योतिर्लिंग मन्दिर के नीचे भाग में अँधेरी कोठरी में है, इस कोठरी की ऊँचाई बहुत कम है। जिसमें मनुष्य खड़ा नहीं हो सकता, मन्दिर के पास एक पानी का कुण्ड है जो सभी तरह उपयोग में आता है, थोड़ी दूर पर श्री कनकेश्वरी (पार्वती) देवी का छोटा मन्दिर है। एक समय परम शिवभक्त वैश्य ने भगवान शंकर की विश्व-व्यापिनी ज्योति का अनुभव किया और तभी से वह यहाँ नागनाथ ज्योतिर्लिंग के नाम से प्रसिद्ध हुए कुछ लोगोंका मत है कि नागनाथ ज्योतिर्लिंग द्वारिकापुरी के पास समुद्र से थोड़ी दूर पर है। हैदराबाद राज में नहीं। शिवपुराण में दी हुई कथाके आधार पर भी इस ज्योतिर्लिंग का समुद्र से थोड़ी दूर पर होना पाया जाता है इसलिये उसका भी वर्णन आगे किया जा रहा है।

हैदराबाद राज्य में दूसरा ज्योतिर्लिंग परली-बैजनाथ है। निजाम राज्य की रेलवे के पूर्णा जंकशन से आगे मनमाड़ की तरफ परभनी एक जंकशन है। परभनी से परली तक उसी रेल की एक शाखा गई है। इसी परली स्टेशन से थोड़ी दूर परली ग्राम के पास बैजनाथ ज्योतिर्लिंग है। मन्दिर बहुत पुराना है। उसका जीर्णोद्धार इन्दौर की सुप्रसिद्ध रानी अहिल्याबाई ने किया था। मन्दिर के पास ही एक पक्का तालाब है। ज्योतिर्लिंग काले पाषाण का है मन्दिर एक छोटी-सी पहाड़ी पर है इस पहाड़ी की परिक्रमा भी की जाती है। नीचे से मंदिर तक पहुँचने के लिये दो तरफ पक्की सीढ़ियाँ हैं। बैजनाथजी के मन्दिर के पास बालाजी का मन्दिर और कई मठ हैं जहाँ पर यात्री आसानी से ठहर सकते हैं।

हैदराबाद राज्य में तीसरा ज्योतिर्लिंग घृष्णेश्वर है परभनी जंकशन से निजाम राज्य की रेल द्वारा मनमाड़ की तरफ आगे बढ़ने पर दौलताबाद नामक स्टेशन आता है इस स्टेशन से १२ मील की दूरी पर वेरूल गाँव के पास श्री घृष्णेश्वर ज्योतिर्लिंग है। दौलताबाद स्टेशन पर बैलगाड़ियाँ मिल जाती हैं। यदि मोटर से जाना हो तो औरंगाबाद स्टेशन पर उतरना चाहिए। दौलताबाद स्टेशन से वेरूल गाँव तक जाने में पहाड़ी के ऊपर होकर

जाना पड़ता है, और रास्ते में दौलताबाद का किला और अजन्ता तथा इलारा की सुप्रसिद्ध गुफायें मिलती हैं। इलोरा में कैलाश-नामक गुफा सबसे श्रेष्ठ और सुन्दर है। पहाड़ की चट्टानों को काटकर एक विशाल मन्दिर बनाया गया है जिसमें शिवजी की मूर्ति है। इसी मन्दिर को कैलाश कहते हैं। इलोरा में कुछ गुफायें बौद्धकाल और कुछ गुफायें जैनकाल की हैं। इन गुफाओं से एक मील की दूरी पर श्रीघृष्णेश्वर जी का मन्दिर है। मंदिर की कारीगरी बहुत अच्छी है, इसके ऊपरी भाग में विष्णु के दस अवतारों की मूर्तियाँ हैं। इस मन्दिर को श्रीमती गौतमाबाई होल्कर ने बनवाया था। मन्दिर से थोड़ी दूर पर एक सुन्दर पक्का तालाब है। इस तालाब को शिवालय भी कहते हैं। इसे इन्दौर की महारानी अहिल्याबाई ने बनवाया था। इस तालाब से थोड़ी दूर पर वेरूल ग्राम है।

जिस स्थान पर घृष्णेश्वर का मन्दिर है वहाँ पहले भक्त घुश्मादेवी अपने पति सहित शिवजी की पूजा किया करती थी। घुश्मा जब अपनी सौत द्वारा अपने पुत्र के मारे जाने पर भी शिवजी की पूजा से विचलित नहीं हुई तब भगवान शंकर ने दर्शन देकर उसके मृत पुत्र को जिला दिया और लिंग रूप में वहाँ सदा स्थित रहने

का वरदान दिया। तब से वह लिंग घुश्मेश्वर अथवा घृष्णेश्वर नाम से प्रसिद्ध हुआ।

घृष्णेश्वर के बाद यात्री को त्र्यंम्बकेश्वर ज्योतिर्लिंग के दर्शन करने चाहिये। दौलताबाद से निजाम-राज्य की रेलवे से मनमाड़ पहुँचना चाहिये। वहाँ से जी० आई० पी० रेलवे द्वारा बम्बई की तरफ आगे बढ़ने पर नासिक रोड स्टेशन मिलता है। नासिक स्टेशन से त्र्यम्बकेश्वर करीब १८ मील है। नासिक में त्र्यम्बकेश्वर के लिए बैलगाड़ी और मोटर भी मिल जाती हैं। त्र्यम्ब-केश्वर ज्योतिर्लिंग का दर्शन स्त्रियों को नहीं करने दिया जाता। वे केवल मुकुट का दर्शन कर सकती हैं। मन्दिर के अन्दर एक छोटे से गड्ढे में तीन छोटे से लिंग हैं जो क्रमशः ब्रह्मा, विष्णु, और शिव के रूप माने जाते हैं। महर्षि गौतम और अहिल्या ने इस स्थान में बहुत तप किया और शिवजी की आराधना की भगवान शंकर की कृपा से गौतम ऋषि के स्थान से गोदावरी (गंगा) निकली शिवजी ने वहाँ लिंग रूप में सदा स्थित रहना भी स्वीकार किया, तभी से वह यह त्र्यम्बकेश्वर-ज्योतिर्लिंग नाम से प्रसिद्ध हुए।

त्र्यम्बकेश्वर के बाद पूने से ७५ मील की दूरी पर भीमशंकर ज्योतिर्लिंग है। त्र्यम्बकेश्वर से नासिक वापिस

आने पर जी० आई० पी० रेलवे से कल्याण होते हुए पूना आसानी से पहुँचा जा सकता है। पूने से भीमशंकर के लिये मोटर मिल सकती है जो भीमशंकर मन्दिर के पास तक गई है। थोड़े गाँव से पहाड़ की मामूली चढ़ाई आरम्भ होकर भीमशंकर पहाड़ तक गई है जिसकी ऊँचाइ ३४४६ फीट है। भीमशंकर की मूर्ति में से थोड़ा जल निकल कर भीमा नदी यहीं से पैदा हो जाती है। मन्दिर के पास ही दो कुण्ड हैं। यह मन्दिर सुप्रसिद्ध महाराष्ट्र-राजनीतिज्ञ नाना फड़नवीस का बनाया हुआ है। मन्दिर के आस-पास छोटी-सी बस्ती है। यहाँ के लोग कहते हैं कि जब महादेवजी ने त्रिपुरासुर का बध करके कुछ समय के लिये यहाँ विश्राम किया उस समय अवध का 'भीमक' नामक एक सूर्यवंशी राजा यहाँ तपस्या करता था। महादेव जी ने प्रसन्न होकर उसको दर्शन दिये और तभी से भीमशंकर नाम से यहाँ का ज्योतिर्लिंग प्रख्यात हुआ। शिव पुराण की कथा के आधार पर कुछ लोग भीमशंकर के ज्योतिर्लिंग को आसाम प्रान्त के कामरूप जिले में गोहाटी के पास ब्रह्मपुर पहाड़ी पर बतलाते हैं। लेखक को यह स्थान देखने का अभी तक सौभाग्य प्राप्त नहीं हुआ।

भीमशंकर से पूने लौटकर यात्री को सौराष्ट्र देश में

सोमनाथ ज्योतिर्लिंग के दर्शन करने चाहिये। पूने से जी० आई० पी० रेल द्वारा बम्बई पहुँचने पर वहाँ से सोमनाथ जाने के दो मार्ग हैं—एक तो जहाज द्वारा और दूसरा रेल द्वारा। बरसात के दिनों को छोड़कर अन्य समय में बम्बई से छोटे जहाज वेरावल (सोमनाथ) पोर बन्दर (सुदामा पुरी) द्वारकापुरी और ओखा बन्दरगाह को अक्सर जाते है। इन्हीं जहाजों द्वारा सोम-नाथ तक आसानी से पहुँचा जा सकता है जो यात्री रेल से जाना चाहें उनको बम्बई में बी०बी० एण्ड सी०आई० की गाड़ी में सवार होना चाहिए। बड़ौदा, अहमदाबाद होते हुए वीरमगाम स्टेशन पर गाड़ी बदल कर राजकोट तक दूसरी गाड़ी से जाकर तीसरी गाड़ी द्वारा जेतलसर जंकशन होकर वेरावल स्टेशन पर उतर जावे यहाँ से सोमनाथ का मन्दिर २ मील है। मन्दिर से थोड़ी दूर पर बस्ती है। सोमनाथ जूनागढ़ राज्य में है। सोमनाथ जी के सुप्रसिद्ध मन्दिर को मुसलमानों ने नष्ट कर डाला था। मन्दिर के टूटे भाग अब भी समुद्र के किनारे मौजूद हैं, जो इस मन्दिर के प्राचीन गौरव का स्मरण दिलाते हैं। श्री सोमनाथ जी के वर्तमान मन्दिर को इन्दौर की सुप्रसिद्ध रानी अहिल्याबाई ने बनवाया था।

सोमनाथ से यात्री द्वारका पहुँचकर नागेश्वर ज्योति-

लिंग के दर्शन करते हैं। सोमनाथ से द्वारका जाने के लिये जगेलसर होते हुए काठियावाड़ राज्य की रेल द्वारा राजकोट होकर जामनगर होता हुआ द्वारकापुरी जाना चहिए। द्वारकापुरी से नागेश्वर का मन्दिर १२ मील है।

नागेश्वर के बाद यात्री को उज्जैन आकर महाकालेश्वर के दर्शन करने चाहिए, नागेश्वर से द्वारकापुरी तक बैलगाड़ी या मोटर से आना होता है। द्वारकापुरी से वीरमगाम तक रेल द्वारा जाना चाहिए, वीरमगाम से रेल द्वारा उज्जैन जाने के दो मार्ग हैं, एक तो अजमेर होता हुआ और दूसरा डाकोर जी होता हुआ, अजमेर की तरफ से आने में एक लाभ यह है कि रास्ते में सिद्धपुर (मातृगया) अजमेर (पुष्कर राज) और नाथद्वारे जाने का भी सुअवसर मिल जाता है। वीरमगाम से महेसाना होकर अजमेर में गाड़ी बदल कर रतलाम में भी गाड़ी बदलनी पड़ती है, उज्जैन में बी० बी० एण्ड सी० आई० और जी० आई० पी० का मेल हुआ है। जी० आई० पी० की लाइन भोपाल से आती है, उज्जैन, ग्वालियर राज्य में एक बड़ा नगर है। जब सिंह राशि पर बृहस्पति आते हैं, तब प्रति बारहवें वर्ष सिंहस्थ का बड़ा मेला होता है, लाखों यात्री और साधु-सन्यासी उस

समय यहाँ आते हैं, यह नगर चिप्रा नदी के किनारे बसा हुआ है। नदी के किनारे पक्के घाट बने हुए हैं, श्री महाकालेश्वर का मन्दिर चिप्रा से थोड़ी दूर पर है। मन्दिर के नीचे के भाग में श्री महाकालेश्वर जोतिर्लिंग और ऊपर के भाग में श्री ओंकारेश्वर की मूर्ति है। मन्दिर के पास ही एक तालाब है, प्रातःकाल प्रतिदिन श्री महाकालेश्वर जी को चिता भस्म लगाया जाता है तथा पूजा और आरती होती है। उस समय का दर्शन अवश्य करना चाहिए, यहाँ पर बालक श्रीकर गोप की भक्ति से प्रसन्न होकर भगवान् शिव-ज्योतिर्लिंग रूप में प्रकट हुए, तभी से यह स्थान प्रसिद्ध तीर्थ माना जाने लगा, श्री महाकालेश्वर से दक्षिण में ओंकार मान्धाता स्थान में अमलेश्वर और ओंकारेश्वर ज्योतिर्लिंग है। उज्जैन से ओंकार-मान्धाता आने के लिए यात्री को बी० बी० एण्ड सी० आई० की छोटी लाइन की गाड़ी में बैठना चाहिए। यह गाड़ी इन्दौर तक सीधी जाती है। इन्दौर में उस गाड़ी पर सवार होना चाहिए जो अजमेर से खंडवे की तरफ जाने के लिये आती है। इस लाइन पर मोटर का एक स्टेशन है, श्री ओंकारेश्वर के लिये इसी स्टेशन पर उतर कर ७ मील ओंकार मान्धाता को बैलगाड़ी और मोटर मिल जाती है।

मान्धाता में एक पहाड़ी है वहाँ श्री नर्मदाजी की दो धारायें हो गई हैं, एक धारा पहाड़ी के उत्तर से और दूसरी धारा पहाड़ी के दक्षिण से बहती है, आगे दोनों मिल जाती हैं, बीच में पहाड़ी का एक टापू बन गया है, इसी पहाड़ी पर ओंकारेश्वर का सुप्रसिद्ध मन्दिर है और दक्षिण धारा के दोनों तरफ बस्ती है, श्री नर्मदाजी की प्रधान धारा पहाड़ी के दक्षिण में है, इस धारा को नाव द्वारा पार करना पड़ता है। नाव से दोनों तरफ का दृश्य बहुत ही सुन्दर मालूम होता है, नर्मदाजी पर पक्के घाट बने हुए हैं। श्री ओंकारेश्वरलिंग के चारों तरफ हमेशा जल भरा रहता है, कुछ लोग उस पहाड़ी को जिस पर श्री ओंकारेश्वर का मन्दिर है ओंकार रूप मानते हैं और परिक्रमा करते हैं, परिक्रमा में कई मन्दिर मिलते हैं। यात्रियों को रात्रि की शयन आरती के दर्शन अवश्य करने चाहिये, नर्मदा जी के दक्षिण किनारे की बस्ती में अमलेश्वर का मन्दिर है। अमलेश्वर ही ज्योतिर्लिंग माने जाते हैं। यहाँ पर सूर्यवंश के सुप्रसिद्ध राजा मान्धाता ने तपस्या करके भगवान शंकर को प्रसन्न किया था। तभी से इस स्थान का नाम मान्धाता पड़ा और भगवान् शिव अमलेश्वर ज्योतिर्लिंग नाम से प्रख्यात हुए। शिवपुराण में ओंकारेश्वर और अमलेश्वर

दोनों के दर्शन और पूजन का बहुत माहात्म्य वर्णित है। इस लेख में दिये हुए क्रम से अब केवल केदारनाथ का दर्शन ही शेष रह जाता है। ओंकारेश्वर से केदार-नाथ पहुँचने के लिए यात्री को रेल द्वारा हरिद्वार और ऋषिकेश पहुंचना आवश्यक है। मोटर के स्टेशन से ऋषिकेश आने के लिए दो मार्ग हैं, एक तो बी० बी० एण्ड सी० आई० रेल द्वारा रतलाम, दिल्ली होकर सहारनपुर, लुक्सर और हरिद्वार होता हुआ ऋषिकेश आता है। दूसरा जी०आई०पी० रेल द्वारा खण्डवा, मथुरा दिल्ली होकर ऋषिकेश से ही उत्तराखण्ड की यात्रा के लिये चढ़ाई शुरू होती है, जिसका विस्तृत वर्णन व नक्शा पिछले पृष्ठों पर छपा है।

द्वारिका

—:o:—

भगवान् कृष्ण ने जब कंस को मार दिया तब जरासंध की दोनों लड़कियाँ अस्ति और प्राप्ति अपने पिता को श्रीकृष्ण के विरुद्ध भड़काने लगीं, पुत्रियों के दुःख से दुःखित जरासंध ने मथुरा पर १७ बार आक्रमण किये, पर निष्फल हुए। लेकिन कंस की औरतों को चैन कहाँ। उन्होंने अपने पिता जरासंध के पास मगध जाकर रो-रोकर अठारहवीं बार बड़ी भारी सेना लाकर मथुरा पर चढ़ाई करादी। यादव पिछली लड़ाइयों से बहुत घायल थे इसलिये भगवान् श्रीकृष्ण समस्त यादवों को लेकर द्वारिकापुरी चले गये, द्वारिकापुरी पश्चिमी सागर के तट पर कच्छ प्रदेश बड़ौदा राज्य में है। उत्तर से जाने वाले यात्री दिल्ली, फुलेरा, अजमेर, आबूरोड वीरमगाम होते हुए द्वारिका जाते हैं, संयुक्तप्रदेश से जाने वाले यात्री या तो मथुरा, भरतपुर, कोटा, रतलाम अहमदाबाद, वीरमगाम होकर जामनगर जाते हैं या प्रयाग से जबलपुर होकर अहमदाबाद जाते हैं, बिहार, बंगाल और मध्यप्रदेशके यात्री नागपुर होकर अहमदाबाद जाते हैं, दक्षिण मद्रास से आने वाले यात्री पहले बम्बई आते हैं बाद वहाँ से या तो जहाज से चलकर डेढ़ मील

छोटी नाव द्वारा द्वारिका जाते हैं, या बड़ौदा अहमदाबाद होकर जाते हैं, स्टेशन से द्वारिकापुरी सिर्फ १ मील है जिसे गोमती द्वारिका कहते हैं, मोटर तांगे सभी हर वक्त मिल जाते हैं, ठहरने को कई धर्म-शाला तथा पण्डों के मकानात हैं, द्वारिका तीन हैं गोमती द्वारिका, मूलद्वारिका, बेटद्वारिका। गोमती द्वारिका के पास गोमती गंगासागर में मिली है यहाँ नौ घाट पक्के बने हुए हैं १ संगमघाट २ नारायण घाट ३ वासुदेव घाट ४ गऊघाट ५ पार्वती घाट ६ पाण्डव घाट ७ ब्रह्मा घाट ८ सुरधन घाट ९ सरकारी घाट, पास में निष्पाप कुण्ड है यहाँ एक रुपया एक आना प्रत्येक आदमी से कर लिया जाने के बाद स्नान पिंडदान किया जाता है। जिनसे कर वसूल हो जाता है उनके हाथ पर छाप लगादी जाती है। कहते हैं कि निष्पाप कुंड और गोमती स्नान किये बिना यात्रा निष्फल है। रण-छोड़जी का मन्दिर नदी से ४६ सीढ़ी चढ़कर मिलता है, मन्दिर की ऊँचाई १७५ फीट है जो सात मंजिला है भगवान की ३ फीट ऊँची चतुर्भुजी मूर्ति है जो सोने के मुकुट मालाओं से सुन्दर विराजमान है।

जगन्नाथपुरी

—::०::—

भारत के चार प्रधान तीर्थों में श्री जगन्नाथ जी का मुख्य स्थान है हिन्दुओं के तीन प्रसिद्ध तीर्थ समुद्र तट पर हैं केवल केदारनाथ और बद्रीनाथ हिमालय पर्वत के उच्च शिखर पर हैं, श्री जगन्नाथपुरी भारत के पूर्वीय तट उड़ीसा प्रान्त के अन्तर्गत है लाखों यात्री भारत के विभिन्न प्रान्तों से जगन्नाथपुरी पहुँचते हैं एकता, समता, प्रेम और अभेद बुद्धि का जितना अच्छा सम्मिश्रण देखने को यहाँ मिलता है उतना अन्य किसी भी तीर्थ में नहीं। श्री जगन्नाथपुरी का प्राचीन नाम पुरुषोत्तम क्षेत्र है जो नीलगिरी पर्वत पर स्थित है सृष्टि के प्रारम्भ में ब्रह्मा को विष्णु भगवान ने इस पर्वत पर दर्शन दिया और बोले हे चतुरानन समुद्र के उत्तर और महानदी के दक्षिण का प्रदेश अति पवित्र है जो मनुष्य यहाँ निवास करता है उसे सब तीर्थों के फल प्राप्त होते हैं, मैं यहाँ सदा निवास करता हूँ। इस स्थान का प्रलय में भी लय नहीं होता नीलगिरी पर एक वट वृक्ष है उसके मूल से पश्चिम की ओर रोहिणी कुण्ड नामक एक सरोवर है उसके तट में स्थित रहता हूँ जो मनुष्य उस कुण्ड में स्नान कर मेरा दर्शन करता है उसको मुक्ति मिलती है।

पुरी का मन्दिर अति प्राचीन है, मन्दिर को बने आठसौ वर्ष हुए जिसे उड़ीसा के प्रथम राजा गंगेश्वर ने बनवाया, पुरी से समुद्र १ मील पर है जहाँ ३–४ मील तक रहने को सुन्दर बंगले और मकानात बने हुये हैं। पुरी के बीच में एक २० फीट ऊंचा टीला है जिसे नील-गिरी कहते हैं श्री जगन्नाथ जी का मन्दिर इस टीलेपर है जो अति विशाल है। पुरी डेढ़मील चौड़ी ३ मील लम्बी है यहाँ न तो मथुरा, काशी की तरह अन्य मन्दिर ही हैं और न कोई व्यापार ही है पुरी के सर्वस्व जगन्नाथ जी ही हैं उन्हीं के एक मात्र मन्दिर से पुरी कहलाती है। जगन्नाथ जी के मन्दिर से जनकपुर तक खूब चौड़ी सड़क है जिसके दोनों तरफ पंडों के मकान और महन्त तथा मठाधीसों के अनेक मठ हैं मकान यहाँ के प्रायः कच्चे ही हैं किन्तु समुद्रतट वाले मकानात सुन्दर स्वास्थ प्रद, नये ढंग की बनावट के हैं और धीरे धीरे समुद्र तट आबाद होते चले जा रहा है, पुरी जाने को हवड़ा से खंगपुर होते जाते हैं प्रायः उत्तर भारत के लोग इसी मार्ग से जाते हैं किंतु कुछ लोग प्रयाग, काशी, गया वैद्यनाथ धाम और आसन-सोल होकर खंगपुर पहुँच जाते हैं, पंजाब के यात्री दिल्ली, मथुरा, आगरा, झांसी भोपाल, नागपुर, विजयगनर होके पुरी को जाते हैं पश्चि-

चम अर्थात् बम्बई की ओर से आने वाले बम्बई, पूना, वाड़ी, वैजवाड़ा से जाते हैं दूसरा रास्ता बम्बई, भुसावल, नागपुर होकर भी है मद्रास वाले वेजवाड़ा, विजय नगर होकर जाते हैं, कुछ लोग कटक से ४३ मील पक्की सड़क द्वारा भुवनेश्वर करके पैदल यात्रा करते हैं।

श्री जगन्नाथ जी का मन्दिर बड़ा विशाल है, उसका बाहरी परकोटा ६६५ फीट लम्बा ६४० फीट चौड़ा है ऊंचाई २४ फीट है चारों दिशाओं में ४ बड़े द्वार हैं जिनमें पूर्वका द्वार जिसे सिंह दरवाजा कहते हैं अति सुन्दर है, इसके सामने काले रंग के एक ही पत्थर का ३५ फीट ऊंचा १६ कोण का "अरुण स्तम्भ" है जिसके ऊपरी भाग में सूर्य के सारथी अरुण की मूर्ति है सिंह द्वार से भीतर जाकर दूसरा परकोटा मिलता है जिसकी लम्बाई ४२० फीट और चौड़ाई ३१५ फीट है इस परकोटे के भी ४ दरवाजे ठीक बाहर के दरवाजों के सामने ही है, श्री जगन्नाथ जी का मन्दिर ४ भागों में विभक्त है, विमान, जगमोहन, नृत्य मन्दिर और भोग मंडप। विमान-श्री भगवान जगन्नाथ जी के रहने का मुख्य स्थान है अर्थात् प्रधान मूर्ति यहीं पर है, विमान की ऊंचाई २१४ फीट लम्बाई ८० फीट और चौड़ाई

भी ८० फीट ही है इसके ऊपर नील चक्र है और उस पर ध्वजा है; इस चक्रका व्यास १२ हाथ का है यह चक्र और ध्वजा ५–६ मीलसे दिखाई देती है, भगवान की प्रधान मूर्ति "रत्न वेदी" पर है जिसके ऊपर ६ फीट लम्बा सुदर्शन चक्र हैं। समय समय पर भगवान के अनेक शृंगार किये जाते हैं। प्रातःकाल का बहुत सादा वेष है जिसे मंगला आरती का शृंगार कहते हैं, उसके बाद, अब काशवेष, प्रहर वेष, चन्दन वेष, दामोदर वे बुद्ध वेष और गणेश वेष आदि बनाये जाते हैं। मूर्तियोंका शृंगार हो जाने के बाद पट खुलते हैं। मन्दिर के अन्दर प्रकाश की कमी होने से बिनादीपक के भगवान के साफ दर्शन नहीं हो सकते, यात्री रत्नवेदी के पास जाकर बिना किसी कर के दिये अच्छी तरह दर्शन और परिक्रमा कर सकते हैं। जगमोहन १२० फीट ऊंचा और ८० फीट लम्बा ८० फीट चौड़ा है। इसके तीन तर्फ बड़े बड़े दरवाजे हैं। नृत्य मन्दिर ६९ फीट लम्बा ६७ फीट चौड़ा है। यहाँ भगवान का नृत्य होता है।

भोग मन्दिर १२० फीट ऊंचा ६० फीट लम्बा ६० फीट चौड़ा है जिस पर नीचे से ऊपर तक हजारों मूर्तियाँ बनी हुई हैं।

श्री जगन्नाथ जी के मन्दिर के भीतरी परकोटे में एक पीपल का वृक्ष है। उसके समीप ३८ फीट लम्बा और उतना ही चौड़ा एक मण्डप है। इसे (मुक्त मण्डप) कहते हैं। जहाँ बैठ कर पूजा पाठ और हरि चर्चा हुआ करती है। पास में अक्षय वट है। जिसके समीप प्रलय काल के विष्णु भगवान की बाल मूर्ति है इन्हें बालमुकुन्द कहते हैं। पास में ही रोहिणी कुंड के पास विमला देवी का अति प्राचीन मन्दिर है। तांत्रिकों कीविमला प्रधान और पूज्य देवी है।

भगवान की पूजा ११ महीने बारी बारी से वहाँ के पंडे करते हैं। हर रोज ३६ पुजारी पूजा को नियत है, किन्तु जेठ पूर्णिमा से आषाढ़ पूर्णिमा तक १ महीना सावर वंश के शूद्र लोग जो यहाँ के मूल निवासी हैं, जो दैतापति कहलाते हैं, वे किया करते हैं। भगवान का प्रसाद विशेष कर भात खाने का यहाँ बड़ा महत्व है जिसे बिना भेद भावके पाया जाता है, कहा भी है—

जगन्नाथ के भात को—जगत पसारे हाथ—ठेकेदारों की तरफ से यह भात आनन्द बाजार में बेचा जाता है। जिन्हें सभी कोई खरीद कर खाते हैं। यहाँ तक कि सभी द्विजाति मात्र एक ही पत्तल पर इस महाप्रसाद

भात को खा लेते हैं। किसी प्रकार का जूंठा नहीं माना जाता।

सेतुबन्ध रामेश्वर

भारत के चार प्रधान तीर्थों में दक्षिण समुद्रतट पर श्री रामचन्द्रजी ने अपने हाथों श्री रामेश्वर जी की रचना की है। यहाँ पर लक्ष्मण कुण्ड पर मुण्डन होता है। फिर श्री रामेश्वर जी के दर्शन होते हैं। विस्तृत वर्णन ज्योतिर्लिंग वर्णन में लिखा गया है।

तीर्थ-यात्रा-मार्ग दर्शक

भरतखण्ड के चारों दिशाओं में विराजमान प्रसिद्ध व प्रधान चारों तीर्थों एवम् १२ ज्योतिर्लिंगों के अति-रिक्त अयोध्या, मथुरा, काशी, हरिद्वार, काँची, उज्ज-यिनी और द्वारका में सात पुरी हैं। काशी और उज्जैन द्वादश ज्योति लिंगों में भी है। इन सब के अति रिक्त गंगा, यमुना आदि पवित्र नदियाँ, ज्वालामुखी आदि शक्तिक्षेत्र, बौद्धिगया, सारनाथ, गिरिनार आदि बौद्ध एवम् जैनतीर्थ इत्यादि हैं। चारों धाम की यात्रा करने वाले श्रद्धालु यात्री, रास्ते में पड़ने वाले इन छोटे बड़े सभी तीर्थों में ठहर कर यात्रा लाभ कर सकते हैं।

इन तीर्थों की यात्रा करने से देशभर के सब प्रदेशों

व प्रान्तों आदि की रहन सहन चाल चलन, रस्मौरिवाज खान पान व्यवहार व व्यवस्था आदि का ज्ञान भी हो जाता है। जिनकी जानकारी स्वतन्त्र देश के प्रत्येक नागरिक के लिये अपेक्षित है। अतः पाठकों को भी जानकारी के हेतु इनका संक्षिप्त वर्णन किया जाता है।

दिल्ली

इस नगर को कुछ लोग महाराजा दिलीप का बसाया मानते हैं, तो कुछ लोग इसे पांडव महाराज युधिष्ठिर की राजधानी कहते हैं। पांडवों की राजसूययज्ञ यहाँ ही हुई, जिसमें समस्त पृथ्वी के राजा एकत्र हुये थे भारत के। अन्तिम सम्राट् पृथ्वीराज की राजधानी भी यही नगर रहा मुसलमान बादशाहों की तथा अंग्रेजी राज की यही और अब राजधानी रही। और अब स्वतन्त्र भारत की भी यही राजधानी है।

इस नगर का संस्कृत नाम 'इन्द्रप्रस्थ' है। यह हिन्दुओं का बड़ा प्राचीन मुख्य तीर्थ स्थल का नाम 'निगमबोध' है, जो यमुना के किनारे अब भी प्रसिद्ध है।

यहाँ से १०, १२ मील दक्षिण को महरोली नाम से पृथ्वीराज के समय की दिल्ली है; जहाँ अब तक भी पृथ्वीराज का किला फूटा टूटा विद्यमान है। यहाँ ही

तोमर महाराज अनंगपाल के समय की लोहे की लाट है। यहाँ हिन्दुओं का तीर्थ योगमाया देवी का है और मुसलमानों के वलीख्वाजा कुतुबुद्दीन की दरगाह है दिल्ली के कुछ मील के फासले पर नई दिल्ली भी देखने योग्य है।

दिल्ली में कई स्थान देखने योग्य हैं। जैसे बादशाही किला, जुम्मामसजिद, हुमायूं का मकबरा, लक्ष्मीनारायण मन्दिर, विधान परिषद् भवन आदि २।

सोनपुर, हरिहर क्षेत्र ओ० टी० रेल्वे का प्रसिद्ध स्टेशन है जहाँ कार्तिकी पूर्णिमा को बड़ा भारी मेला लगता है। इस मेले में सभी पशुओं की खूब बिक्री होती है।

गया।

यहाँ पहले फल्गू नदी मार्ग में आती है। इसमें स्नान करने, क्या पाँव रखने मात्र से भी पितरों का मोक्ष होना शास्त्र में लिखा है। गया जी में अनेक जगह श्राद्ध किये जाते हैं। विशेष मुख्य विष्णु पद, प्रेतशिला आदि हैं। यहाँ पर बुद्ध गया में चीन, जापान ब्रह्मा आदि दूर दूर के मुल्कों से हजारों बौद्ध यात्री हर साल तीर्थ यात्रा को आते हैं।

गया में स्याह पत्थर के खरल, प्याले वगैरह बहुत अच्छे बनते हैं।

कलकत्ता ।

हावड़ा स्टेशन से गंगापार करके कलकत्ता बहुत बड़ा आलीशान शहर है। यहाँ कलकत्ता—यूनीवर्सिटी (महाविद्यालय) और हाईकोर्ट हैं, यहाँ की भाषा बंगाली है और प्रायः मनुष्य नंगे सिर रहते हैं, यहाँ कालीदेवी का मन्दिर परम पूज्य है, विशेपकर बंगालियों को परम मान्य है, इधर का प्रधान भोजन भात है, कलकत्ते में अजायब घर और चिड़ियाखाना देखने योग्य है। यहीं से गंगासागर जाने को जहाज मिलते हैं। गंगासागर का प्रसिद्ध मेला प्रति वर्ष मकर संक्रांति को होता है।

मदरास ।

समुद्र के किनारे २ रेल जाती है, रास्ते में कई शहर और कई नदियाँ आती हैं। जिनमें बेजवाड़ा बड़ा प्रसिद्ध जंकशन है, यहाँ से हैदराबाद-दक्षिण नजदीक है, शहर हैदराबाद बहुत भारी है, यहाँ के नवाब निजाम हैदराबाद हिंदुस्तान में सबसे बड़े रईस है, बेजबाड़ा के आसपास सरदी बिलकुल नहीं होती है।

मदरास शहर में कई स्टेशन हैं, जिनमें "बीच" सबसे प्रसिद्ध है। शहर मदरास भी बड़ा भारी है और बड़ी तिजारत की जगह है। मद्रास प्रान्त (दक्षिण) की राजधानी है। यहीं पर गवर्नर रहते हैं। यहाँ मद्रास यूनीवर्सिटी (महाविद्यालय) और हाईकोर्ट है। इधर के मनुष्य प्रायः काले होते हैं। भाषा मदरासी बोलते हैं। प्रायः सब धोती पहनते हैं और तिलक लगाते हैं। मारवाड़ी बाजार से ३ मील के करीब यहाँ पार्थसारथी भगवान का प्रसिद्ध मंदिर दर्शनीय है। इधर रेशमी किनारे का धोती-जोड़ा बड़ा कीमती और उमदा होता है। पान केले भी बहुत होते हैं।

चिदंबरम

चंगलपट होते हुए चिदंबर जाते हैं। यहाँ पर शिव-गंगा नदी है और महादेवजी का मन्दिर बहुत प्राचीन मनु महाराज का स्थापित बताते हैं। मंदिर बहुत ही बड़ा है जिसके चारों तरफ के दरवाजे दस दस मंजिल ऊंचे हैं। बाहर परिक्रमा में बाग लगा है। भीतर तालाब भी है। राजसभा का स्थान इतना बड़ा है, कि जिसमें ११०० खंभ लगे हैं। कठेहडे सोने चाँदी के हैं। मंदिर की लागत करोड़ों रुपयों की है। अब भी किसी नाटकोट के साहूकार ने २५ लाख रुपये लगाकर मरम्मत

करादी है। इसमें १ मूर्ति सोने की है जिसको नटराज कहते हैं और एक बिल्लोर की तथा एक मूर्ति माणिक्यकी एक बिलस्त ऊंची है। दूसरी तरफ सोने के सिंहासन पर बड़ी मूर्ति गोविंदराज शेषावतार की है। एक तरफ चाँदी के सिंहासन पर शिवकामसुंदरी देवी जी हैं।

स्टेशन से एक मील के अनुमान कावेरी गंगा है। यहाँ से अन्दाजन २ मील श्रीरंगनाथ भगवान का मंदिर है। इस मन्दिर की सात परिक्रमा है, जिनमें बाहरकी दोनों परिक्रमाओं में शहर आबाद हैं, भीतर की ४ परिक्रमाओं में मन्दिर का कारखाना हरेक परिक्रमा का डंडा और दरवाजे जुदे जुदे हैं। इस मन्दिर की हद सब मन्दिरों से ज्यादह है। मूर्तियां श्रीगंगानाथ जी की दो हैं १ छोटी, दूसरी बड़ी आठ दस लम्बी शेषशय्यापर विराजान हैं। दूसरी तरफ एक मंदिर में लक्ष्मीजी हैं। मन्दिर में सोने चाँदी के बाहन पात्र बहुत हैं शहर के चारों तरफ बागात है, वृन्दाबन में श्री रंगजी का मंदिर इसीके नकशे पर बना है, परन्तु वृन्दाबन का मन्दिर इससे बहुत छोटा है। श्रीरंगजीपर सहस्र-नाम से तुलसीदल चढ़ाते हैं। मन्दिर के सामने दश-बाराह हाथ ऊंची गरुड़जी की मूर्ति भी बड़ी सुन्दर है। छोटी कावेरी १ मील पर जंबुकेश्वर महादेव जी का मन्दिर

बड़ा भारी है। यहाँ पिंडी जलतत्व हैं यहाँ भी नाटकोट के साहूकारों ने ५ लाख रुपये लगा के मरम्मत करायी है।

मदुरा।

यहाँ पर मीनाक्षदेवी का मन्दिर बड़ा भारी है। करोड़ों ही की लागात का समझिये। मंदिर की बाहरी परिक्रमा में लाहों का जंगल लगा है, इसमें बाग भी लगे है। भीतर एक कमरे में तालाब है और बाग है, यहाँ से तोताद्रि, पद्मनाभ, जनार्दन कन्याकुमारी आदि तीर्थ निकट में हैं, वहां पर भी बड़े भारी मन्दिर हैं। यहाँ से कुछ दूरी पर जैनबद्री, मूलबद्री, जैनियों के तीथ हैं।

कांची।

मदुरा से वापिस त्रिचनापल्ली होते हुए तंजौर मायावर चेंगपेट होकर शिवकांची पहुँचते हैं। शिवकांची नगर खासा है, चौपड़ के बाजार चौड़े २ हैं। यहाँ शिव जी की पिंडी चौरस १ हाथ ऊंची मृत्तिका की है। इस पर जल की जगह तेल चढ़ता है। यह पिंडी पृथ्वी-तत्व है। यहाँ भी शिव सहस्र नाम से बिल्वपत्र चढ़ाते है। यहाँ भी मन्दिर बड़ा भारी है। इस मंदिर की मर-

म्मत भी नाटकौट के साहूकारों ने १५ लाख रुपये लगा कर करायी है। यहाँ से ३ मील बिष्णु कांची है, पर बस्ती मिली हुई ही है यहां का मंदिर दो मन्जिला है। भगवान की मूर्ति यहां १ छोटी, दूसरी बड़ी अति सुन्दर है। नीचे नृसिंहजी का तथा लक्ष्मी जी के मंदिर हैं। मन्दिर की दीवालों के पत्थरों पर वेद लिखा हुआ है। भाषा यहां द्राविडी बोलते हैं, कांची भी सातों पुरियों में है।

यहां से दक्षिण को त्रिविलुर स्टेशन से वीर राघव जी के दर्शन हैं।

त्रिपती व बालाजी।

काँची से आरकोट होते हुए रेनी गुंटा स्टेशन है। यहाँ से ६ मील स्टेशन त्रिपती है। यहां बाबा मनीराम की धर्मशाला अच्छे मौके पर है। त्रिपती में गोविंदराज का मन्दिर दर्शनीय है। त्रिपती से १॥ मील के अनुमान पर बालाजी पर्वत है। इसे बेंकटाचल भी कहते हैं, पहाड़ की चढ़ाई में कई जगह सीढ़ी बनी हैं यहां वृक्षों का बड़ा सघन बन है। यहां बालाजी से ३ मील पापनासिनी गंगा है। जिसमें स्नान करने से मनुष्य के प्रत्यक्ष पाप कटते मालूम पड़ते हैं अर्थात् स्नान करते ही

पानी ऊपर पड़ते ही रंग सफेद हो जाता है। जैसा चावलोंका माड हो फिर दूर तक गंगा में वह धार अलग ही दीखती है। इसके पास ही दूसरी ब्रह्मधारा है, उसमें यह बात नहीं है।

यहां पर पाँडवों की गुफा और पाँडव तीर्थ है, यहाँ मूर्ति श्री बालाजी विष्णु भगवान की सुन्दर बणी है, यहाँ पर नीचे गरमी और पहाड़ पर सरदी है। यहां पर बाबा हाथीराम का मठ है, जिसकी इमारत बड़ी भारी है। यहां से थोड़ी ही दूर कपिल तीर्थ है।

हौसपेट [पंपापुर]

रास्ते में गुंटकल स्टेशन से छोटी गाड़ी में सवार होकर हौसपेट पहुँचते हैं।

हौसपेट स्टेशन से पंपापुर ७ मील है। पंपापुर अब छोटी सी बस्ती है यहां पर तुंगभद्रा नदी है। यहां पहले सुग्रीव रहे थे। यहां से आधे मील में चक्रतीर्थ है जहां सुग्रीव का बनाया रामचन्द्रजी का मन्दिर है और नदी के पार ऋष्यमूक पर्वत है। जहां श्री रामचन्द्रजी हनुमान तथा सुग्रीव से प्रथम भेंट हुई थी। यहां से २ मील फटिक शिला है व मन्दिर है। यहां पर रामचन्द्र जी ने बहुत दिन व्यतीत किये थे यहां ही लंकापर लड़ाई

की तैयारी की थी। उस समय यहां पानी नहीं था; पंपा बाण मारके नदी निकाली वह भी विद्यमान है। पंपा पुर से ३ मील किष्किंधा सुग्रीव की राजधानी है।

नांदेड़—निजाम राज्य की छोटी लैन पर सिखों का प्रसिद्ध तीर्थ है।

नासिक

जी० आई० पी० की बड़ी लाइन पर बम्बई से ११७ मील दूर मनमाड़ के रास्ते में नासिक रोड स्टेशन से ७ मील पर नासिक है। नासिक शहर के पास ही गोदावरी गंगा है। गोदावरी से आधे मील पंचवटी है। यहाँ पर एक गुफा सीतागुफा नाम से पृथ्वी के नीचे है, गुफा के भीतर श्री रामचन्द्रजी का मन्दिर है, गुफा के अन्दर ही दूसरी तरफ शिवजी का मन्दिर है। यहाँ पर उस समय ५ बट के वृक्ष थे, इसी से पंचवटी नाम हुआ। यहाँ से डेढ़ मील तपोवन है। यहाँ ही दण्डकारण्य है। जहाँ रामचन्द्रजी ने शूर्पणखा की नाक काटी थी और पंचवटी की गुफा से ही रावण सीताजी को छल से हर ले गया था। नासिक शहर से २० मील के अनुमान त्र्यम्बकेश्वर महादेवजी का मन्दिर है, जो द्वादशज्योतिर्लिंगों में है। यहीं से गोदावरी निकलती है। यहाँ भी कुम्भ का महापर्व होता है।

बम्बई

बम्बई शहर हिन्दुस्तान में व्यापार में सबसे बड़ा और आबादी के लिहाज से दूसरे नम्बर का है। प्रायः विलायतों का विशेष माल बम्बई में ही आता है और यहीं से जाता भी है, शहर में मुम्बादेवी भोलेश्वर, बाबुलनाथ और महालक्ष्मीजी के मन्दिर उत्तम हैं यहाँ पर बम्बई यूनीवर्सिटी (महाविद्यालय) और हाईकोर्ट है। प्रिन्स आफ़ वेल्स म्यूज़ियम, विक्टोरिया गार्डन, शान्ता-कुञ्ज और तुलसी तालाब दर्शनीय स्थान हैं।

पोर बन्दर

यहाँ कभी कृष्ण महाराज के सखा भक्त सुदामाजी की झोपड़ी पड़ी थी। कृष्ण की कृपा से महलात बन गये थे। इसका नाम सुदामापुरी भी है।

जूनागढ़ व गिरनार

जूनागढ़ शहर से ३ मील के लगभग गिरनार पर्वत है। गिरनार के चारों तरफ़ चार पहाड़ हैं। गिरनार पर्वत पर चढ़ने में ६ हजार के करीब सीढ़ी हैं। थोड़ी दूर चलकर गोपीचन्द भर्तृहरिजी की गुफा है। आगे गोमुखी है। ऊपर अम्बिकादेवी का मन्दिर, दूसरी तरफ गोरख-नाथ की गुफा व समाधि है। तीसरी तरफ औघड़नाथ

की समाधि, चौथी ओर दत्तात्रेय भगवान की चरण-पादुका और स्वामी रामानन्द की समाधि है। गिरनार जैनियों का भी बड़ा तीर्थ है। पहाड़ से नीचे शहर के पास गिरधरजी, जरासिंहजी, दामोदरजी, भाऊनाथजी की मूर्तियों के दर्शन हैं। यहाँ पर एक मकबरा नवाब साहब का बहुत अच्छा बना हुआ है।

वहाँ से २ मील पर प्रभासपाटन है। वहीं पर सोमनाथ महादेव जी का मंदिर है।

अहमदाबाद

अहमदाबाद शहर अच्छा है। बड़ी भारी मण्डी है यह शहर गुजरात में प्रसिद्ध है। भाषा गुजराती है। कपड़ों की बड़ी बड़ी मिलें समस्त भारत में सबसे अधिक यहाँ हैं।

डाकोरजी

डाकोरजी में किसी समय भक्त रामदासजी की भक्ति के प्रताप से श्री द्वारिकानाथजी पधारे थे, जिसकी कथा भक्तमाल में है। मूर्ति यहाँ रणछोर द्वारिकानाथजी की डेढ़ हाथ ऊँची अति मनोहर है।

मन्दिर के पास गोमती तालाब का जल बहुत मधुर और निर्मल है। दूसरे मन्दिर में लक्ष्मीजी, बलदेवजी

की और रामदास भक्त की मूर्ति हैं। रास्ते में गोधरा-देववन्द होते हुए रतलाम आते हैं। रतलाम भी शहर अच्छा है। उज्जैन—यह भी पुरियों में से है। यहाँ पर शहर के निकट ही चिप्रा नदी है। शहर में महाकालेश्वर महादेव का मन्दिर है। यह द्वादशज्योतिर्लिंग में है। यहाँ अब तक विक्रमादित्य के किले का दरवाजा मौजूद है। शहर भी बड़ा और पुराना है। शहर से थोड़ी दूर गोपीचन्द भर्तृहरि की गुफा है। वहाँ से थोड़ी ही दूर पर सांदीपनि ऋषि का स्थान है, जहाँ कुछ समय कृष्ण महाराज ने विद्याध्ययन किया था।

श्रीनाथद्वारा व कांकरोली

फिर से रतलाम होकर नामली मंदसौर नीमच और चित्तौड़गढ़ होते हुए अजमेर के रास्ते पर नीमच शहर से १४ मील उत्तर को एक सुखानन्द नाम का तीर्थ स्थान है।

चित्तौड़ स्टेशन से उदयपुर को रेल गई है, उसके मावली स्टेशन से श्रीनाथद्वारा जाते हैं। यहाँ पर मूर्ति श्रीनाथजी की सवा हाथ ऊँची बड़ी रमणीक है। नित्य ११०० ग्यारह सौ रुपये उदयपुरी का भोग लगाया जाता है। केशर चक्कियों से और कस्तूरी सिलबटों से पिसती

है, भोग के सैकड़ों पदार्थ पकवान और भात वगैरह बड़े ही उत्तम होते हैं। ऐसी मिठाई और कहीं देखने में नहीं आई और भोग के सब पदार्थ मिठाई वगैरह बाजार में बिकते हैं जिससे सबको आसानी से मिल जाते हैं।

नाथद्वारे से थोड़ी दूर कांकरोली में भी बालकृष्ण जी का बड़ा मन्दिर है पास में एक समुद्र (सरोवर) कई मील लम्बा बड़ा रमणीय है। यहाँ उदयपुर के ही राज्य में चारभुजा एकलिंग महादेव का स्थान भी पूज्य है। जैनियों का तीर्थ केशरियानाथ का मन्दिर भी थोड़े फासले पर है। उदयपुर शहर का प्राकृतिक सौन्दर्य झील के कारण बहुत बढ़ गया है।

अजमेर शहर और पुष्कर

अजमेर में ख्वाजा साहब की दरगाह भी बड़ा भारी मकबरा है। यहाँ सैकड़ों ही मुसलमान यात्रा को आते हैं। पहाड़ी तारागढ़ एक पुराना किला है।

अजमेर से ७ मील पर पुष्करराज तीर्थ है पुष्करराज एक बड़ा तालाब कई मील के घेरे में हैं। पुष्कर में मगर बहुत हैं। कोई भी अन्दर घुसकर स्नान नहीं कर सकता, यहाँ पर ब्रह्माजी का मन्दिर अद्वितीय और परम मान्य

है। यहाँ से डेढ़ मील एक ऊँचे पहाड़ी टीले पर सावित्री जी का मन्दिर है। डेढ़ मील पर वृद्धपुष्कर भी है। जहाँ की रेती में पानी का निवास है और ऐसे कठिन समय में भी अपना प्रवाह दिखा रहा है। पुष्कर में दो बस्ती कहलाती है। छोटी बस्ती में पण्डे गौड़ ब्राह्मण रहते हैं और बड़ी बस्ती में (पाराशर) ब्राह्मण पण्डे हैं।

कृष्णगढ़ और सलेमाबाद

बी० बी० एण्ड सी० आई० रेलवे पर अजमेर से १८ मील दूर कृष्णगढ़ में बड़ा भारी किला और तालाब है।

कृष्णगढ़ से सलेमाबाद १० मील दूर है। कृष्णगढ़ स्टेशन पर सवारी मिल सकती हैं। सलेमाबाद निम्बार्क साम्प्रदाय की मुख्य गद्दी है। वहाँ पर श्रीजी महाराज विराजते हैं और बंगालियों के मस्तक के ठाकुर श्रीराधा-माधवजी का मन्दिर भी दर्शन करने योग्य है और गुरु परशुराम रनदेवजी की समाधि भी है। यहाँ पर श्रीठाकुर जी के भोगराग, उत्सव समय-समय पर होते हैं, देखने योग्य हैं।

जयपुर-रेवाड़ी आदि

जयपुर शहर भी देखने योग्य है सब बाजार गली-कूचे सभी चौपड़ के हैं। देशी कारीगरी में जयपुर हिन्दुस्तान में प्रसिद्ध है जयपुर से दिल्ली आने में रास्ते में अलवर शहर तथा रेवाड़ी पड़ते हैं। रेवाड़ी दिल्ली के दरम्यान फरूखनगर नामी छोटा-सा शहर है। यहाँ पर पहले नमक बहुत बनता था। फरूखनगर और दिल्ली के बीच में गुरगाँव में सीतलादेवी का प्रसिद्ध मन्दिर है, चैत्र से आषाढ़ तक हर सोमवार को बड़ा भारी मेला होता है और यह पाण्डवों के गुरु द्रोणाचार्यजी का स्थान-मन्दिर है।

कुरुक्षेत्र

यहाँ से थोड़ी दूर पर कुरुक्षेत्र नामक बड़ा सरोवर है। सूर्यग्रहण पर यहाँ बड़ा भारी मेला होता है। इस भूमि में कौरव पाण्डवों का महाभारत नाम युद्ध हुआ था। ग्यारह अक्षौहिणी सेना सहित बड़े-बड़े बली कौरवों की हार हुई थी और सात अक्षौहिणी सेना वाले पाण्डवों की जीत हुई थी। पाण्डव-वीर अर्जुन के सारथी कृष्ण महाराज हुए थे।

अमरनाथ जी

यह द्वादश ज्योतिर्लिंगों में से है यहाँ पर शीत बहुत पड़ता है। पिण्डी शिवजी की बरफ की है। जो कृष्णपक्ष को क्रम से नित्य घटती तथा शुक्लपक्ष को बढ़ती है। तथा यहाँ पर एक कबूतर का जोड़ा पूनों के दिन अवश्य प्राप्त होता है जिसके भी दर्शन करने का माहात्म्य है। इस मार्ग से काश्मीर का भी रास्ता है।

ज्वालाजी व पठानकोट

ईस्ट पंजाब रेलवे के पठानकोट से स्टेशन कांगड़े को जाते हैं। कांगड़ा में भी देवी का प्रसिद्ध मंदिर है। कांगड़े से थोड़ी दूर ज्वालाजी हैं। यहाँ देवीजी की मूर्ति अग्नितत्वमय है, अर्थात् मन्दिर के बीच में तथा अन्य स्थानमें भी अग्नि की ज्योति निकलती है। दोनों नवरात्रों में बड़ा भारी मेला होता है। पठानकोट से जम्मू तक, श्रीनगर व काशमीर को मोटर जाती है। काशमीर इलाके में प्रवेश करने के लिये आज्ञापत्र प्राप्त करना जरूरी है, जो बड़ी आसानी से अमृतसर में प्राप्त हो सकता है।

अमृतसर

ईस्ट पंजाब रेलवे का जंकशन, व्यापार का केन्द्र है, यहाँ शाल-दुशाले और ऊनी कपड़े, चाय, हींग और

किराने व लोहे के मामान की बड़ी भारी मंडी है। सिक्ख सम्प्रदाय का प्रसिद्ध तीर्थ है। पठानकोट को यहाँ से गाड़ी जाती है, श्रीनगर का काशमीर जाने के लिए यहाँ परमिट मिल जाता है, मोटरें श्रीनगर को यहाँ से भी जाती है। स्वर्णमन्दिर और तीर्थ दुर्गयाना दर्शनीय स्थान हैं। यहाँ से १५ मील अटारी नामक स्टेशन से भारत व पाकिस्तान की सीमा मिलती हैं।

श्री पशुपतिनाथ यात्रा—नेपाल

श्री पशुपतिनाथ जी का मन्दिर नेपाल राज्य की राजधानी काठमाण्डू से २ मील पश्चिम की ओर बाग-मती नदी के किनारे पर है। मन्दिर में श्याम पाषाण १ गज ऊँची लिंगाकार मूर्ति हैं जिसकी १ हाथ ऊँचाई पर ४ शिर और ८ भुजाएँ है। पुजारी के अतिरिक्त मूर्ति को दूसरा कोई स्पर्श नहीं कर सकता। नदी के दूसरे किनारे पूरब की तरफ गुह्येश्वरीदेवी और बाबा गोरखनाथ जी के मन्दिर हैं यहाँ अन्य रम्य स्थान और धर्मशालायें भी हैं।

मेला—श्रीपशुपतिनाथ जी की यात्रा का मेला केवल फाल्गुन कृष्ण चतुर्दशी (शिवरात्रि) को लगता

है वहाँ जाने की और समय आज्ञा नही है, शिवरात्रि पर ४०-५० हजार यात्री इकट्ठे हो जाते हैं।

पासपोर्ट—नेपाल राज्य की ओर से हरएक यात्री को आज्ञापत्र मिलता है और सारी यात्रा का प्रबन्ध नेपाल राज्य की ओर से हुआ करता है रास्ते भर में पड़ावों पर धर्मशालाओं के अलावे तम्बू-छोलदारी, डेरे आदि भी लगाये रहते हैं। सदावर्त लेने वालों को सदावर्त भी मिलता है। साधु-महात्माओं को भोजन-छादन तथा स्थानादि व्यवस्था अनुकूल रहती है।

रेल मार्ग—गोरखपुर या मुजफ्फरपुर होते हुए रक्शौल पहुँचते हैं, रक्शौल भारत की अन्तिम सीमा पर है कुछ दूर से नेपाल राज्य की रेल मिलती है। रक्शौल से १४ मील वीरगञ्ज स्टेशन है वहाँ से १० मील अम्लकगञ्ज आखीरी स्टेशन है।

मोटर—अम्लकगञ्ज से भीमफेरी २४ मील तक मोटर-लारी जाती है, यहाँ पासपोर्ट बदला जाता है।

पैदल यात्रा—भीमफेरी से पशुपतिनाथ २० मील है, भीमफेरी से पहले शीशागिरी की ३ मील की चढ़ाई है बीच में २ मील पर १ किला है वहाँ पर पासपोर्ट की जाँच होती है। गढ़ी से १ मील कठिन चढ़ाई के बाद

२ मील की उतराई है जो कुलीखाना तक गई है। कुली-खाना से मार्खू तक १॥ मील मैदान का सीधा रास्ता है। मार्खू से चित्तल्लांग २॥ मील सीधा रास्ता है। चित्तल्लांग से १॥ फर्लांग एकदन्ता पर्वत की साधारण चढ़ाई के बाद १ मील चन्द्रगिरि की चढ़ाई है। चन्द्र-गिरि से थालकोट तक २ मील का उतार है यहाँ भी पासपोर्ट की जाँच की जाती है। थालकोट से काठमाण्डू ६ मील है। मोटर तथा पैदल का मार्ग है काठमाण्डू से पशुपतिनाथ जी का मन्दिर पैदल से २ मील और मोटर से ४ मील है।

मौसिम—पशुपतिनाथ यात्रा में शीतकाल होने से ठंड तो पड़ती ही है लेकिन बर्फ नहीं मिलता और न किसी बीमारी का डर ही रहता है नैपाल राज्य का प्रबन्ध यात्रा के समय अच्छा रहता है, पासपोर्ट भी शिवरात्रि के ७ रोज आगे रक्शौल अथवा बीरगञ्ज से प्राप्त किये जाते हैं जो १५ दिन के लिए होते हैं।

रिलायन्स प्रिंन्टिग प्रेस, गली दाताराम,
रावतपाड़ा, आगरा।

श्री विश्राम घाट, मथुरा

श्री द्वारकानाथजी

श्री रंगनाथजी के मंदिर का सुवर्ण का गरुड़ स्तंभ

श्री गोबिंददेवजी का मंदिर वृंदावन

कुसुम सरोवर
गोवर्धन

बरसाना
नंद गाँव
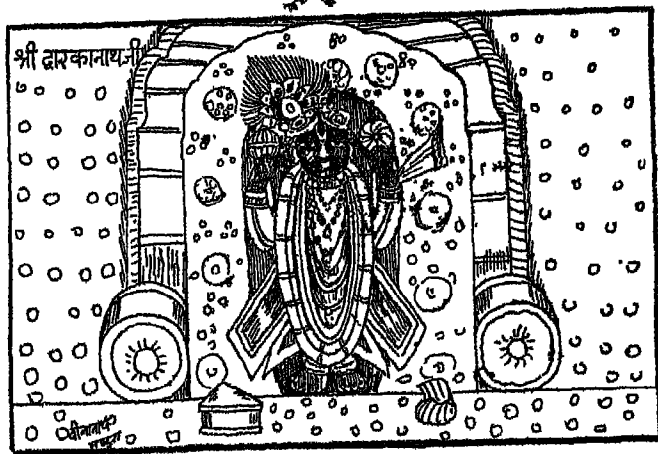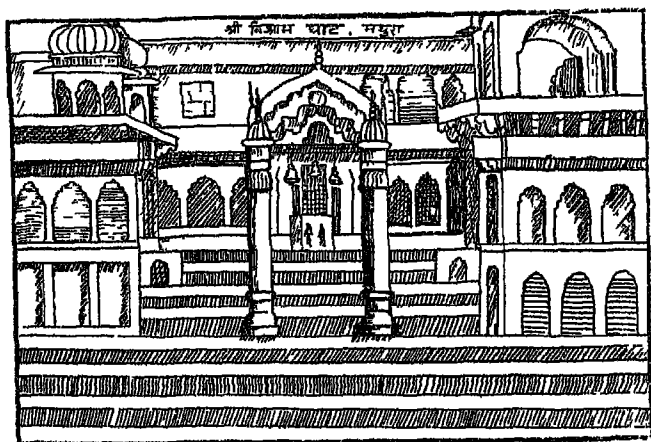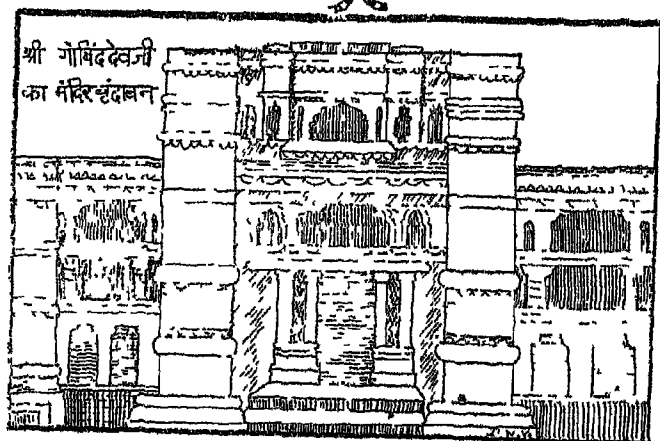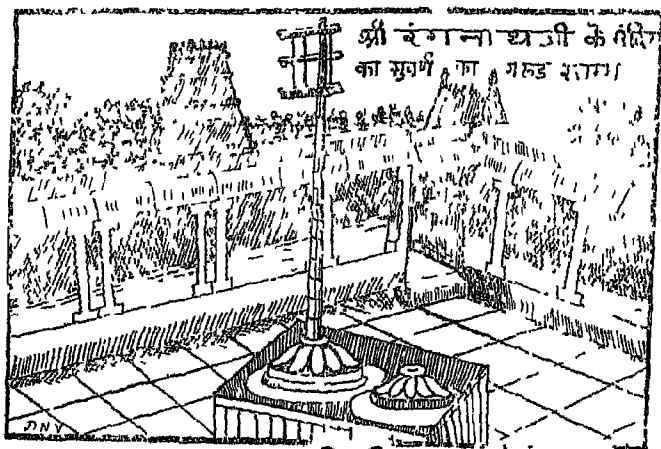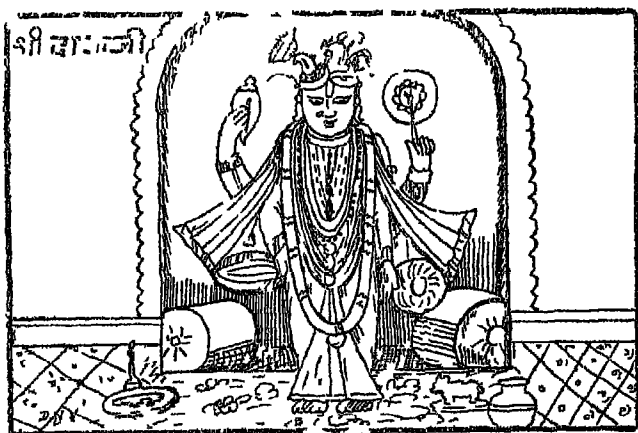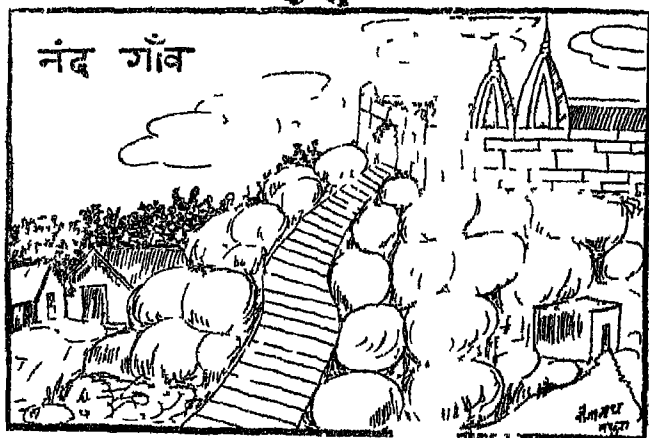
मथुरा और वृजभूमि की यात्रा

यौं तो भारत वर्ष में अनेकों तीर्थ हैं किन्तु बृजभूमि का आकर्षण कुछ निराला ही है। ब्रज की बोल चाल रहन सहन खान पान सभी में एक अद्भुद आकर्षण है। ब्रज भाषा की माधुरी का जिसने एक बार भी आस्वादन कर लिया है वह जन्म भर उसके आस्वादन को नहीं भूल सकता। सौन्दर्य और सरसता तो मानो उसमें कूट कूट कर भर दी गई है। साहित्य के कोमलतम भावों को प्रगट करने की अभिव्यक्ति जितनी इस भाषा में है उतनी संसार की किसी अन्य भाषा में पाया जाना असंभव है। साथ ही हृदय को अनेक मधुरतम भावनाओं की अनुभूति देने की जितनी सामर्थ ब्रज की भूमि में है उतनी अन्य कहीं प्राप्त होना असंभव है। जरा ध्यान मग्न होकर भावुक हृदय से देखिये उस यमुना के पुलिन को तमालों कदम्बों की शीतल छाया को मयूरों के मोदमय नृत्य को, सायंकाल वेला में वन से लौटती गायों के सुन्दर खिरकों को, ग्वालों की टोलियों और पनघट पर ग्वालिनों के जमघट को और इन सब के जीवन में एक अद्भुद सांमजस्य स्थापित करने वाली श्याम सुन्दर की

सख्य स्नेह भावना को। सचमुच तनिकसी भी सहृदयता धारण करने पर मन स्वतः ही एक अद्भुद रसास्वादन में विभोर हो जाता है। हाँ तो इस लेख में हम आपको उसी भगवतलीला भूमि ब्रज प्रदेश का संक्षिप्त सा परिचय कराने की चेष्टा करेंगे अस्तु क्रम पूर्वक हमें मथुरा से ही यात्रा प्रारंभ करनी चाहिये।

मथुरा पुरी एक सुन्दर नगर है। यह भारत की सप्त पुरियों में अयोध्या के बाद ही अपना सर्वोपरि स्थान रखती है। मथुरा "तीक लोक से न्यारी" यह कहावत बहुत प्रसिद्ध है कहा जाता है मथुरा पुरी विष्णु भगवान के सुदर्शन चक्र पर बसी हुई है और जब सारे संसार की प्रलय होती है तब भी मथुरा का नाश नहीं होता। मथुरा की बस्ती यमुना नदी के पश्चिम तट पर बसी हुई है, नगर की बसावट बड़ी ही सुन्दर है, बस्ती प्रायः ऊँचे नीचे टीलों पर बसी होने के कारण दूर से देखने में बड़ी सुहावनी मालुम होती है। सावन के महीने में जब यमुना नदी अपने पूर्ण प्रवाह में होती है यमुना के पक्के रेलवे पुल से यमुना का दृश्य देखने में बड़ा ही सुन्दर और चित्ताकर्षक प्रतीत होता है ऐसा मालुम होता है किसीने एक सुन्दर खिलौना बना कर उसे जल के ऊपर रख दिया है—

मथुरा अपना एक विशेष धार्मिक राजनैतिक सांस्कृतिक और साहित्यिक महत्व रखती है। आगरा और राजधानी देहली के बीच में होने के कारण इसका राजनीति में सदाँ से महत्व पूर्ण स्थान रहा है, अंग्रेजी समय में यहाँ बहुत बड़ी फौजी छावनी थी और अब भी यहाँ सैनिक शिक्षा का प्रधान केन्द्र है। धार्मिकता का तो यहाँ गढ़ ही समझिये। जितने मन्दिर और देवस्थान मथुरा ब्रन्दाबन में हैं और जितने धार्मिक उत्सव उन में मनाये जाते हैं उतने शायद और कहीं नहीं मनायें जाते हैं। हर ऋतु में हर मास यहाँ कोई न कोई उत्सव होता ही रहता है। चैत्र में डोल उत्सव ब्रह्मोत्सव, वैशाख में नृसिंह जयंती, जेठ में गंगा दशहरा, अषाढ़ में आषाढ़ी पहलवानों की कुस्ती के दँगल, श्रावण में झूला के महोत्सव। भादों में जन्माष्टमी, आश्विन में रामलीला, कार्तिक में अन्नकूट; दीपावलि, यमद्वितिया स्नान, मार्गशार्ष में पौष में हेमन्त उत्सव, माघ में, बसन्त उत्संव फागुन में, होलिकोत्सव सारांश यह कि यह "पुरी नित नव आनन्द उमंग उमग्यौ ही करै" का स्वरूप हमेशा ही बना रहता है।

मथुरा के घाट भी बड़े ही सुन्दर हैं और मन्दिरों का तो यहाँ पूछना ही क्या है, एक से एक आलीशान

सजधज और ठाट बाट के क्या कहने है ! पक्के घाटों पर यमुना जी की धार प्रायः ही रहती है और नाव में बैठ कर यमुना में सैर करने का सावन के महीने में बड़ा ही आनन्द आता है। मथुरा में श्रावण के झूले और फागुन की होली ब्रज की प्रसिद्ध है, कार्तिक में दीपावलि महोत्सव, अन्नकूट उत्सव, यमद्वितिया स्नान, गोचारन और कंसवध के मेले बहुत प्रसिद्ध हैं। केवल यमद्वितीया के दिन ही स्नान करने को प्रति वर्ष करीब २-३ लाख यात्री बाहर से यहाँ आता है। सावन के झूले देखने को भी १॥-२ लाख के जन समुदायका आवागमन सावन के महीने में यहाँ होता रहता है। झूला का मेला सावन सुदी तीज से प्रारम्भ होकर श्रावणी-पूर्णिमा तक रहता है और उसके बाद फिर भादों बदी ८ को श्री कृष्ण जन्माष्टमी का उत्सव मनाया जाता है।। मथुरा में इन दिनों प्रायः प्रत्येक मन्दिर में झूला की सजावट होती है इस समय मथुरा ब्रन्द्रावन की बस्ती इन्द्रपुरी प्रतीत होती है और फिर द्वारकानाथ का मन्दिर जो यहाँ का सब से बड़ा और प्रमुख देवस्थान है उसकी तो बात ही क्या है लाखों रुपयों का काँच का सजावट का सामान, हजारों बिजली की बत्तियों का प्रकाश, लाखों रुपये के चम चम करते सोने चांदी के

विशाल झूले, हीरा जवाहरात के भगवान के चका-चौंध पैदा करने वाले श्रृंगार एक से एक चीज चित्ता-कर्षक होती है। उस समय वहाँ जाकर मनुष्य एक बार जरूर अपने आपको भूल जाता है और एक परम सुखद और आनन्दमय जीवन का अनुभव करता है। इसी समय यहां अनेक मन्दिरों में बड़ी ही सुन्दर रासलीलायें भी होती हैं। और हरी पीली नीली लाल अनेक रंगों की घटायें भी सजाई जाती हैं जो बड़ी सुन्दर प्रतीत होती हैं।

होली के अवसर पर नंदगाँव और बरसाने की होली देखने योग्य होती है। बरसाने में राधारानी की सखियों से नंदगाँव के कृष्ण के सखा बड़ी तैयारी के साथ होली देखने को जाते हैं। उनके सिरों पर चमड़े की ढाल बँधी होती है और हाथों में सींग के बाहु रक्षक हाथों में भी बड़ी मजबूत ढालें आत्म रक्षा के लिये होती हैं। उधर बरसाने की सखियों के हाथों में बड़े बड़े मोटे लट्ठ होते हैं। पुरुष जो होली के खिलाड़ी होते हैं, पहिले साखी बोलते हैं और फिर एक साथ ही उन ब्रजवासिओं की कतार के बीच में कूद कर बैठ जाते हैं और तब उन पर दोनों तरफ से भयानक लट्ठों के प्रहार होने लगते हैं परन्तु तारीफ तो यह है कि वह निहत्थे

केवल ढालों के बल पर ही अपने अंगों को इस लाठी चार्ज से रक्षा करते हैं। वह दृश्य बड़ा ही रोमाँचकारी होता है और जब सारे प्रहारों को निष्फल करके वह खिलाड़ी उस महिला मोर्चे से सकुशल उछलता हुआ निकल आता है तो दर्शकों के हृदय को उस समय अपार आनंद होता है। उसी तरह की होली नंदगांव में भी होती है। किन्तु यहाँ से कुछ दूर पर ही एक गाँव फालैन है वहाँ की होली बड़ी आश्चर्यजनक होती है। यहां होली के दिन बहुत बड़ी जलती हुई होली में से यहां का पंडा केवल एक लंगोटी लगाये उस जलती अग्नि राशि की लपटों के बीच से होकर आर पार निकलता है। यह कोई अतिशयोक्ति पूर्ण वर्णन नहीं है जैसा कि बहुत से लोग बिना देखे ही धारणा बना लेते हैं। लेखक स्वयं वहाँ गया है और कई बार अपनी आंखों से उस चमत्कारी दृश्य को देखा है। बड़े बड़े आफिसर अमीर गरीब हजारों लोग उस अद्भुत दृश्य को देखने वहाँ पहुँचते हैं। यहां एक प्रहलाद कुण्ड है प्रहलाद जी का मठ है प्रहलाद जी की कोपीन और माला है वहाँ पंडा बसंत पंचमी से होली के दिन तक मन्त्र का अनुष्ठान करता है और तब होली में प्रवेश करता है। इस भौतिक वाद के युग में यह चरित्र अवश्य ही दर्शनीय है।

हाँ तो अब हमें मथुरा से वर्णन प्रारम्भ करना है। मथुरा का प्रसिद्ध तीर्थ विश्रान्तघाट है यहाँ कंस को मारकर कृष्ण बल्देव दोनों भाइयों ने विश्राम लिया है। यहां के विश्रामकाक्रम भी बहुत पुराना है हिरण्याक्ष को मारकर वाराह भगवान ने यहाँ विश्राम किया, शत्रुघ्न ने लवणासुर का वध कर यहाँ विश्राम किया, यमुनाजी ने गौलोक से आकर यहाँ श्रम दूर किया और कृष्ण जी ने कंस को मार कर। इस घाट के बारह घाट पक्के उत्तर तरफ और बाराह घाट दक्षिण तरफ बीच में विश्रान्त इस प्रकार पच्चीस तीर्थ यहाँ के मुख्य घाट रूप में माने गये हैं जिन का सबका अलग अलग माहात्म्य है। यहाँ के दर्शनीय मन्दिरों का वर्णन इस प्रकार हैं—

(१) श्री द्वारिकानाथ का मन्दिर—यह मन्दिर गवालियर के महाराज दौलतराव सिंधिया के खजांची पारिख गोकुलदासजी का बनवाया हुआ है। इसके निर्माण का इतिहास बहुत लम्बा है। यहाँ श्री द्वारिका-नाथजी की चतुर्भुजी श्याम मूर्ति है जिसका शृंगार देखने ही लायक होता है। मन्दिर की सेवा पूजा का प्रबन्ध कांकरौली के गुसांईजी के सुपुर्द है और प्रबन्ध की देख-रेख मथुरा वाले सेठों के वंशाज करते हैं। मन्दिर

में अटूट सम्पति है, हीरा, पन्ना, नीलम, मोती आदि के अत्यन्त मूल्यवान शृंगार यहाँ यथा समय ठाकुरजी को धारण कराये जाते हैं। मन्दिर की आमदनी ४-५ लाख रुपया साल की है और भोगराज भी इसी के अनुसार किया जाता है। यहाँ दिन में आठ बार दर्शन होते हैं जो थोड़ी थोड़ी देर को ही खुलते हैं। यह ठाकुर बड़े ही राजसी ठाठ बाट का है। यहाँ मन्दिर के जगमोहन की गुम्बज में भगवान की लीलाओं के बड़े ही सुन्दर चित्र अंकित किये गये हैं। रोज कथा-कीर्तन तथा एकादशी को रासलीला बारहों मास होती है। यहाँ के झूला, अन्नकूट, जन्माष्टमी के उत्सव देखने योग्य होते हैं।

(२) दाऊजी मदनमोहनजी—यह मथुरा के वल्लभ कुल के गोसांईजी के मन्दिर हैं। यहाँ भी सावन और अन्नकूट के उत्सव बड़े जोरदार होते हैं।

(३) छोटे मदनमोहन जी—यह मन्दिर भी बंगाली घाट पर है, सभी उत्सव सुन्दर होते हैं।

(४) अन्नपूर्णाजी का मन्दिर—यह होली दरवाजे पर है।

(५) कन्हैयालाल जी का मन्दिर—सावन में सजावट अच्छी होती है।

(६) लक्ष्मीनारायणजी का मन्दिर (७) सेठ भीकमचन्द का मन्दिर (८) गोर्धननाथजी (९) विजयगोविन्द जी (१०) मदनमोहन जी (११) रेवतीरमणजी (१२) मथुरानाथ जी (१३) गतश्रम भगवान (श्रावण में झूला के समय नित्य गाना बजाना होता है) (१४) राधेश्याम भगवान (श्रावण में अच्छी रामलीला होती है) (१५) मदनमोहन जी (१६) उदयपुर वाली रानी का मन्दिर (१७) गोर्धननाथ जी का मन्दिर (मन्दिर आलीशान और सफेद पत्थर की कारीगरी का बना है परन्तु इसकी मूर्ति गुसांई जी उठा ले गये अब मन्दिर सूना पड़ा है) (१८) श्रीनाथ जी (१९) गोविन्ददेवजी (चूरू के प्रसिद्ध सेठ गुरसहायमल घनश्यामदास का बनाया है यहाँ सावन में रासलीला होती है और हमेशा सदाव्रत साधुओं को दिया जाता है) (२०) गोपीनाथ जी (२१) दाऊजी (२२) किशोरीरमण जी (यहाँ का सोने चाँदी का विशाल झूला देखने ही योग्य है) (२३) बाटी वाली कुञ्ज (यहाँ राधाकृष्ण की एक प्राण दो देहमय युगल मूर्ति देखने लायक है) (२४) सीतारामजी का मन्दिर (घियामंडी) (२५) वेनीमाधव ।

नगर के प्राचीन देव स्थान—

(१) श्री आदि बाराह भगवान (यह सतयुग के

समय की मूर्ति बताई जाती है) (२) श्वेत वाराह (३) दाऊजी (४) श्रीनाथ जी (मानिक चौक, पत्थर की कारीगरी देखने योग्य) (५) प्राचीन गतश्रम (६) पद्मनाभ (७) दीर्घविष्णु (८) शत्रुघ्नजी (९) रामजी द्वारा (१०) श्रीनाथजीके चरण (गजापाइसा) (११) नृसिंहजी (मानिक चौक) (१२) दुर्वासा आश्रम (यमुना केपार)

मथुरा परिक्रमा के दर्शन और स्थान—

(१) विश्रामघाट से प्रारम्भ (२) सतीबुर्ज (पेशवाओं के समय का ऐतिहासिक स्तम्भ) (३) चर्चिकादेवी (कंस के शस्त्रागार की रक्षक) (४) पिपिलेश्वर महादेव (५) बटुक भैरव (६) रामेश्वर महादेव रामघाट (७) सूर्य घाट, सूर्यमन्दिर (८) ध्रुवघाट, ध्रुव का मन्दिर (९) सप्त-ऋषि टीला दर्शन (१०) बलिटीला वामन भगवान के दर्शन (११) देवकी वसुदेव (१२) अक्रूरथ रंगभूमि (१३) कंस अखाड़ा कुवलिया हाथी मल्ह आदि के दर्शन (१४) कुब्जा आश्रम (१५) कंस मंच (कंस के वध का स्थान) (१६) रंगेश्वर महादेव (१७) शिवस्थल कुण्ड (शिवस्थल विहारीकुण्ड सुन्दर पक्का बना है) (१८) श्रीकृष्ण पंचायती गोशाला (१९) कंकाली देवी (कंस की इष्ट देवी) (२०) बलभद्र कुण्ड (२१) जगन्नाथजी दर्शन (२२) वाराह मूर्ति (२३) उद्धवजी की बगीची

(२४) श्री बद्रीनारायण भगवान (२५) भूतेश्वर शिव (मथुरापुरी के रक्षक) (२६) पाताल देवी (२७) पीतरा कुण्ड (२८) श्रीकृष्ण जन्मस्थान (२९) केशवदेव मन्दिर (३०) महाविद्या देवी (पांडवों द्वारा स्थापित) (३१) रामलीला मैदान (३२) सरस्वती कुण्ड दर्शन (३३) चामुण्डा देवी (३४) गोकर्ण नाथ महादेव (३५) नील कंठ शिव (३६) अंबरीष टीला हनुमानजीके दर्शन (यह स्थान बड़ा चमत्कारी और सुन्दर है) (३७) कृष्ण गंगा घाट (३८) पंचमुखी हनुमान अष्टभुजी दुर्गा (३९) सोमतीर्थ (४०) अन्न पूर्णाजी (४१) कंस किला (प्राचीन किले का मान विशेष खड़ा है) (४२) काम भैरव कंसेश्वर महादेव (४३) संयमन तीर्थ (स्वामी घाट) (४४) नवमंजक तीर्थ (मफड़मघाट) (४५) असिकुंड घाट (४६) हनुमान जी मन्दिर (४७) गणेश जी (४८) वल्लभाचार्य की बैठक विश्राम घाट।

विश्रामघाट पर प्रातः ५ बजे और सायंकाल ७ बजे यमुनाजी की आरती होती है यह दृश्य बड़ा ही सुन्दर होता है। इसका एक प्रसिद्ध छंद है—

प्रातः अरु सांझ यमुना के तीर,

भक्तन की भीर भव्य देखना प्रचारती।

सुकवि मुकुन्द ता की शोभा कही न जाय,

घंटा घड़ियाल धुनि पावन पजारती ॥
जय जय कार जमुना के जन बोलत हैं,
भीड़ गहि हाथन में कुसुम उछारती।
मानुष को जीवन जो सफल करयो चहै तो,
चल नर देख विश्राम घाट आरती ॥

मथुरा में पुरातत्व संग्रहालय (म्यूजियम) भी है जिसमें अत्यन्त प्राचीन काल की अनेकों देव मूर्तियां जो यहां के विभिन्न स्थानों से प्राप्त हुई हैं सुरक्षित हैं। मथुरा सम्पूर्ण कला और विद्याओं का केन्द्र रहा है और सब प्रथम मूर्ति कला प्रादुर्भाव यहीं से हुआ है इसका प्रमाण यहाँ की प्राचीन मूर्तियों मे मिलता है। मथुरा में ब्राह्मण और वैश्यों की अधिकतर आबादी है। यहां के चौबे अपने गुणों के कारण भारत वर्ष भर में प्रसिद्ध और पूज्य हैं। मल्लविद्या के ये आचार्य थे किन्तु अब इधर से प्रवृत्ति हटाकर ये संस्कृति हिन्दी और आधुनिक विद्या कलाओं की ओर तेजी से अग्रसर होते जा रहे हैं। कवि और संगीतज्ञ भी इनमें सदा से होते आये हैं। मथुरा की शिक्षा संस्थाओं में किशोरी रमण कालेज चम्पा अग्रवाल कालेज, गवर्नमेण्ट हाई स्कूल मुख्य हैं, महिलाओं की शिक्षा के कार्य में किशोरी रमण गर्ल्स कालेज का प्रमुख भाग है।

मथुरा की प्रसिद्ध वस्तुएं हैं—पेड़ा, खुरचन, चूरन, चटनी, कंठीमाला, छपे कपड़े, डोरी, रस्सी, निवाड़, मुकट शृंगार, नाटक, रामलीला, रासलीला का सामान पर्दे पोशाकें, चेहरे, डाढ़ी मूंछ, दवाइयाँ, पुस्तकें, वासुदेव प्याला, रुक्मिणी कृष्ण, रामसीता आदि आदि।

ब्रज यात्रा

ब्रजभूमि का असली सौंदर्य उसके गांवों में है। यद्यपि ब्रजभाषा का परिष्कृत स्वरूप जिसे महाकवि बिहारी, सूर, नन्ददास, ग्वाल, पद्माकर, मतिराम आदि ब्रजभाषा के प्राचीन कवियों ने अपनी रचनाओं में प्रयुक्त किया है और जो साहित्यक बृजभाषा के नाम से पहिचानी जाती है उसका अभी भी ज्यों कात्यों स्वरूप मथुरा के चतुर्वेदियों के यहाँ अपनी भाषा के रूप में अब भी मौजूद है। रोज की बोलचाल में वह आज भी उसका उसी प्रकार प्रयोग करते हैं जैसा आज से पाँच सात सौ वर्ष पूर्व करते थे तो यह कोई आश्चर्य की बात नहीं। बृजभाषा के कितने ही प्रेमी और रसज्ञ इस भाषा को सुनने सीखने यहाँ आते हैं। ब्रज की ग्रामीणभाषा बहुत कुछ बदल भी गई है उसमें ग्राम्यत्व की छाप स्पष्ट परिलक्षित होती है फिर भी उसमें एक प्राचीन

भाषा की माधुर्य सम्पन्नता यत्र यत्र देखने को मिलती है जिसने अपने गुणों के कारण किसी दिन सारे हिन्दी काव्य जगत पर अपना एक क्षत्र साम्राज्य स्थापित किया था। भावों के सम्बन्ध में तो ब्रज की बात कुछ न पूछिये, ऐसे ऐसे अनूठे भाव सो भी साहित्यिकता से ओत प्रोत आपको यहाँ की ग्राम्य जनता के प्रति दिन की साधारण बोलचाल में मिलेंगे कि आप यदि सहृदय हैं तो चकित हुए बिना न रहेंगे। बृज के ग्राम्य साहित्य में रसियाओं का स्थान सर्वोपरि हैं। भाषा का माधुर्य और भावों के सौंदर्य ये प्रायः ही ओतप्रोत होते और इनके कहने की लय भी बृज की अपनी एक खास प्रकार की होती है।

ब्रज की नन्दगाँव बरसाना आदि स्थानों की ग्वालिनों का वेषभूषा भाषाविन्यास देखिये, छोकरे और छोकरों का अल्हड़पन से भरा हुआ आनन्दमय जीवन देखिये तो आपको आज से पाँच हजार वर्ष से पूर्व की कृष्ण के समय की ब्रजभूमि का अन्दाज लगाने में देरी नहीं लगेगी। यहाँ के लोग अभी भी यह समझते हैं कि नन्द का ढोटा कृष्ण अभी भी उनके बीच में है। क्या हुआ दस पाँच हजार वर्ष का समय निकल गया, दस पाँच युग भी निकल जांय तो क्या होता है। कृष्ण

उनका है कोई संसार की शक्ति उसे उनसे पृथक नहीं कर सकती यह स्वयं भी उनसे पृथक नहीं कर सकता। ऐसा अटूट सम्बन्ध है उनका उस श्यामसुन्दर से। ब्रज के सारे धार्मिक व्यापार इसी एक भावना के आधार पर चलते हैं।

हाँ तो बृज चौरासी कोस की एक यात्रा होती है, जिसे ब्रजयात्रा या वनयात्रा कहते हैं। यह मथुरा में विश्रामघाट से आरम्भ होती और यहीं आकर समाप्त होती है। इसमें डेढ़ महीना लगता है। प्रायः भाद्रपद शुक्ला एकादशी को यह आरम्भ होती हैं और कार्तिक कृष्णा सप्तमी अष्टमी तक मथुरा आ जाती है। पहिले यह मथुरा के चतुर्वेदियों द्वारा उठाई जाती थी; किन्तु अब वल्लभकुल सम्प्रदाय के गोस्वामी इस बड़ी यात्रा को उठाते हैं। अन्य एक यात्रा बंगालियों की भी उठती है। प्रति वर्ष इस बड़ी यात्रा में पाँच सात हजार यात्री हो जाता है। साथ में सरकारी अस्पताल, डाकखाना, आवश्यक वस्तु खाने पीने की चीजों की दूकानें, गैस बत्तियों का प्रकाश तथा पहिरे चौकी का भी प्रबन्ध रहता है। रहने के लिये डेरा तम्बू और सामान लादकर ले चलने के लिये बैल गाड़ियों का प्रबन्ध रहता है जिसमें कुछ अधिक खर्च नहीं पड़ता। साथ में रासलीला

की मंडली भी रहती है जो प्रत्येक स्थान पर भगवान ने जहाँ जो लीला की है वहाँ वही लीला दिखलाती हुई चलती है, इससे यात्रा करने वालों को विशेष आनन्द प्राप्त होता है। यह यात्रा कृष्णलीला के प्रेमियों के लिये जीवन का एक अमूल्य लाभ है और प्रतिवर्ष हजारों की संख्या में लोग इसके लिये एकत्र होते हैं। यही इसके आकर्षण का प्रत्यक्ष प्रमाण है। वैसे स्वास्थ की दृष्टि से भी यह यात्रा बड़ी लाभकारी रहती है, प्रतिदिन ४-५ मील पैरों से चलना, जंगल की स्वास्थ्य-प्रद जलवायु, गाँवों का शुद्ध आटा, घी, छाछ, दही, दूध आदि का भोजन, सभी चीजें बड़ी आकर्षक रहती हैं और फिर अनेक प्रकृति के सौन्दर्यमय स्थानों और धार्मिक महत्व के तीर्थों का लाभ सोने में सुगन्ध का उदाहरण उपस्थित करता है।

अब हम यात्रा के क्रम से ब्रज के तीर्थ स्थानों का वर्णन करेंगे वैसे साधारणतः ही मथुरा आने वाले यात्री इनमें से मुख्य मुख्य स्थान वृन्दावन, गोकुल, महावन ब्रह्माण्ड घाट, गोवर्धन, नन्दगाँव बरसाना आदि देख सकते हैं कुछ लोग दाऊजी भी जाते हैं। इन प्रमुख स्थानों के दर्शक यात्रीगण भी इस यात्रा के वर्णन में से इन स्थानों का परिचय देख कर ही यात्रा करेंगे तो उन्हें

अधिक आनन्द प्राप्त होगा। अतः इन थोड़े से स्थानों का वर्णन पृथक रूप से न करके यात्रा के क्रम में ही कर दिया है।

ब्रजयात्रा का सबसे पहला मुकाम होता है मधुवन--यह मथुरा से ४ मील दक्षिण पश्चिम की तरफ़ है, यहाँ उत्तानपाद राजा के पुत्र भक्त ध्रुव ने पाँच वर्ष की आयु में घोर तप करके भगवान को प्रसन्न किया था और ध्रुव लोक का राज्य प्राप्त किया था, यहाँ ध्रुवजी का आश्रम है, ध्रुवजी के तप की गुफा है, मधुवन में कृष्ण-बलराम गाय चराने जाते थे अतः यहाँ कृष्णकुण्ड है, मधुवानियाँ ठाकुर दाऊजी के दर्शन हैं बल्लभाचार्य की बैठक है मधुवन में ही प्रसिद्ध मधुदैत्य रहता था जिसे मारकर भगवान ने मथुरापुरी बसाई और इसी के मारने से भगवान का नाम मधुसूदन पड़ा है।

तालबन—यहाँ कृष्ण-बलराम ने धेनुकासुर दैत्य को मारा था जो गधे के वेष में यहाँ रहता था, यहाँ दाऊजी के दर्शन हैं बलभद्र कुण्ड है। यहाँ से थोड़ी दूर पर ही पालीखेड़ा गाँव है जहाँ लवणासुर की गुफा है यह ऐतिहासिक स्थान है यहाँ बौद्धकाल में पाली भाषा का केन्द्र था। यहाँ खुदाई करने से पुरातत्व की अनेक वस्तुएँ उपलब्ध हुई हैं जो मथुरा की पुरातत्व संग्रहालय में सुरक्षित है।

शान्तनुकुण्ड-यह मथुरा गोवर्धन सड़क पर स्थान है यहाँ ऊँचे टीले पर शान्तनु विहारी भगवान के दर्शन हैं मन्दिर के चारों ओर शान्तनुकुण्ड है जिसे सन्तान कुण्ड भी कहते हैं यहाँ भाद्रपद महीने में शुक्ल पक्ष की सप्तमी को स्नान करने से सन्तान की प्राप्ति होती है।

बहुलावन—यहाँ सत्यप्रतिज्ञ बहुलागाय का मन्दिर है कृष्णकुण्ड है। कहते हैं यह गाय कृष्ण के एक सखा की थी एक दिन सत्य की परीक्षा करने को धर्म ने सिंह का रूप धर कर इस गाय को पकड़ ली इसने वचन दिया कि मैं अपने अबोध शिशु से मिलकर उसे दूध पिलाकर आजाऊँ तब तू मुझे खा लेना सिंह ने उसे छोड़ दिया और वह भी बच्चे से मिलकर अपनी प्रतिज्ञा पूर्ण करने को सिंह के सामने आ गई यह गाय का सत्य देख धर्म ने सिंह का रूप त्याग उसे बरदान दिया कि सब जीवों में तेरी ही सबसे अधिक पूजा संसार में होगी और तेरे स्पर्श से भी लोग संसार से तर जायँगे।

राधाकुण्ड—यहाँ राधाकुण्ड अरिष्टकुण्ड नाम के दो कुण्ड जुड़वाँ बने हुए हैं, यहाँ कृष्ण ने अरिष्टासुर को जोबैल का रूप था माराथा इससे ब्रजवासियोंने कृष्ण को बैल मारने का दोष लगाया तब अरिष्ट कुण्ड से गंगाजी प्रकट करके कृष्ण ने स्नान किया और तब

हत्या के दोष से मुक्त हुए। यहाँ गिरिराज पर्वत की जिव्हा के दर्शन हैं और भी कितने ही मन्दिर हैं। यहाँ मणिपुर वासी बंगाली भक्तगण अधिक संख्या में भगवद्भजन करते हुए रहते हैं।

कुसुम सरोवर—यह बहुत सुन्दर कलापूर्ण सफेद पत्थर की कारीगरी से निर्मित ब्रज का दर्शनीय सरोवर है। यह ब्रज के देखने योग्य स्थानों में से एक है। यहाँ की सीन-सीनरी, वन उपवन की शोभा, सरोवर की बनावट और उसके ऊपर की इमारतों की आकर्षक कला सभी एक विशेष महत्व रखते हैं। सरोवर बहुत गहिरा और पक्का बना है, यह इतना गहिरा है कि कभी भी सूखा हुआ नहीं देखा गया। इसे भरतपुर के राजाओं ने दिल्ली की लूट के धन से बनवाया है। ऐसा भव्य सरोवर ब्रज में दूसरा नहीं है।

गोवर्धन—एक कस्बा है, यहाँ मानसी-गंगा कुण्ड है, हरदेवजी, मनसादेवी, चक्रेश्वर शिव तथा गिरिराज जी के मुखारविंद के दर्शन हैं, जहाँ पंडे अन्नकूट दूध आदि यात्रियों से चढ़वाते हैं, वल्लभाचार्य के सम्प्रदाय वालों के मतानुसार गिरिराज जी का मुखारविंद जतीपुर (गोपालपुर) में है जो यहाँ से तीन मील आगे है। यहां गिरिराज जी पर हमेशा सबसे ज्यादा दूध चढ़ता है

बड़े बड़े उत्सव; छप्पन भोग कुनवाड़ा, अन्नकूट आदि जिनमें लाखो रुपया खर्च होते हैं यहीं पर होते हैं। गोवर्धनमें भरतपुरके राजाओंके महलऔर छत्रियाँ जो बड़े २ राजाओंकी स्मारकके रूपमेंबनाई गईहैं देखनेयोग्यहैं। यहां दीपमालिका के दिन मानसीगंगापर दीपक जलाये जातेहैं जिनकी शोभादेखने योग्यहोती है किन्तुइस दिनयहां देहाती यात्रियों की भीड़ बहुत अधिक होने के कारण दर्शनार्थी को बड़ी तकलीफ उठानी पड़ती है। यहां ब्रजभाषा के बयोवृद्ध कवि नारायण जी सेंगरिया रहते थे। इनकी रचनायें बड़ी सरस और हृदयग्राही होती थी, घासीराम के नाम से इन्होंने बड़े सुन्दर ब्रज के रसिया लिखे हैं किन्तु अफसोस है कि हिन्दी संसार उनसे परिचित न हो सका। ब्रज में और भी न जाने कितने रत्न इसी प्रकार छिपे पड़े हैं परन्तु उन्हें खोजने की किसे उत्कंठा है—

"गुन न हिराने गुनगाहक हिराने हैं"

चन्द्र सरोवर—यहां भगवान कृष्ण ने छै महीने की रात्रि करके महारास किया था जहां बड़ा सुन्दर अष्टपहल छोटा-सा सरोवर है, स्थान बड़ा ही रमणीक है यहां से थोड़ी ही दूर पर जमनावती अष्टछाप के प्रसिद्ध भक्त कवि कुम्भनदास का गांव है। यहां से

थोड़ी ही दूर ऐंठा कदम पेठा गांव है जहां कृष्ण ने ब्रजवासियों के शंका करने पर उन्हें कदम्ब वृक्ष को उमेंठ कर अपने गिरिराज पर्वत के उठा सकने के पुरुषार्थ का परिचय दिया था और यहां जमीन में बैंठकर (प्रवेश करके) नीचे से गिरिराज पर्वत को उखाड़ कर उँगली पर उठा लिया था। आगे चलकर पूछड़ी का लौठा है जो कृष्ण का सखा एक गोप था उसका मंदिर है। कहते हैं जब कृष्ण जी गिरिराज पर्वत उठाने लगे तो इसने पर्वत का एक सिर (पूँछ) दबा लिया उस पर बैठ गया अतः कृष्णजी को पर्वत उठाना मुश्किल हो गया तब श्यामसुन्दर ने उसकी खुशामद करके कहा रेसखा, तू क्या मुझसे कुछकम है तू तो महावीरहै अतः इस पर्वत को छोड़ दे, भयभीत ग्वालबालों की रक्षा करने दे तेरी यहीं पूजा होगी। ब्रज में गाया जाता है।

धन तोहीकूँ पूँछरी के लौठा।
अन्न खाइ नहीं पानी पीवै तोह तूती परयौ है सिलौटा॥

जतीपुरा (गोपालपुर) यहां गिरिराज जी के मुखार बिन्द के दर्शन है वल्लभ सम्प्रदाय के अनेक मन्दिर हैं जिनमें मदन मोहन जी, दाऊजी, राजाठाकुर, सामलिया जी, आदि मुख्य हैं। यहीं पर्वत के ऊपर श्रीनाथ जी का प्रसिद्ध प्राचीन मन्दिर है जो श्रीनाथ जी के मेवाड़ चले

जाने के कारण खाली पड़ा है। कहते हैं श्रीनाथजी के ब्रज में वापिस आने का समय आचुका है और अब श्रीनाथ जी यहाँ आकर फिर इस मन्दिर को आबाद करेंगे इस मन्दिर के अन्दर एक पुरानी गुफा भी है जो कहा जाता है मेवाड के श्रीनाथ द्वारा स्थान तक जहाँ आज कल श्रीनाथजी विराजते हैं गई है। श्रीनाथ जी इसी की राह से मेवाड़ गये हैं अब भी रोज इसी राह से ब्रज में आकर रात्रि में शयन और क्रीड़ा करते हैं। देखने में यह गुफा बहुत पुरानी मालुम होती हैं किन्तु बहुत अन्धेरी होने के कारण अगम्य है।

जतीपुरा से थोड़ी दूर पर श्यामढाक स्थान है यह वह बन है जहाँ श्री कृष्ण गायों को चराते हुए गये और वहाँ बैठकर गोपों के साथ छाक खायी है। भोजन के पात्रों का बन में अभाव देख प्रकृति देवी ने यहाँ के कदम्ब वृक्षों में दही रखने के काम में आने योग्य दौंना पैदा किये जो उन कदम्ब वृक्षों में अब भी यत्र तत्र उत्पन्न होते देखे जाते हैं। जतीपुरा से गोवर्धन पर्वत की दूसरी तरफ आन्यौर गांव है। यहां के निवासियों के घर श्रीनाथजी दूध दही आदि पदार्थ मांग कर खाने जाते थे, समीप ही में गोविन्द कुंड नाम का एक बड़ा सुन्दर पक्का बना हुआ कुंड है। इसके चारों ओर

अनेक साधु महात्माओं के भजन करने के स्थान कुटियां बनी हुई हैं। व्रज का वास्तविक आनन्द प्राप्त करने वाले गौडीया सम्प्रदाय के भगवन्द्रेजी महात्मा ही हैं जो व्रजवासियों के घर मधुकरी भिक्षा लेकर प्रसाद ग्रहण करते और भगवतचर्चा के अतिरिक्त दूसरे किसी अन्य कार्य में अपने अमूल्य जीवन काल का उपयोग नहीं करते। ध्रज में एसे अनेक महात्मा अगोचर रूप से भजन करते हैं जिनके स्वल्प काल सत्संग से भी अपरिमित आनन्द लाभ की प्राप्ति होती है किन्तु इनका मिलना विना भगवत्कृपा के नहीं होता।

दीग—जतीपुरा से चलकर यात्रा दीग में मुकाम करती है यह स्थान भरतपुर रियासत के अन्तर्गत था जो अब राजस्थान प्रान्त में विलीन हो चुका है। यह एतिहासिक स्थान है जिसका प्राचीन नाम दीर्घ नगर था। इसे भरतपुर के राज्य संस्थापक राजा बदनसिंह ने बसाया था। यहाँ का किला बहुत सुदृढ़ एवं दर्शनीय है किले के गगनचुम्बी दृढबुर्ज चारों ओर की खाई, ऊँचे बुर्जों पर लगी हुई गर्भगंजिनी, मेघगर्जिनी, महा-काली आदि विशालकाय तोपों के जर्जरित आकार आदि दर्शनीय है। यहीं पर राजा जवाहर सिंह के बनाये हुए दीग के सुप्रसिद्ध भवन हैं जो दिल्ली की

एतिहासिक लूट के विपुल धन से निर्माणि कियेगये हैं। भवनों की कारीगरी दर्शनीय है, यहाँ शाही वेगम का झूला, बादशाह का स्नान मंच जो मूल्यवान कसौटी पत्थर का बना है, देहली के शाही महल के फाटक के किवाड़ आदि महत्त्व की चीजें जाटों के पुरूषार्थ की याद दिलाने वाली वस्तुऐं हैं। इन महलों के फव्वारे भी बहुत नामी हैं उनका हौज तो मानो एक पूरा तालाव ही समझिये, इन फव्वारों की विशेषता यह है कि इन में एक ही साथ कई कई प्रकार के रंग एक ही हौज से छोड़े जाते हैं। दीग के लोहे के बने बर्तन प्रसिद्ध हैं।

कांमबन—यह स्थान भी भरतपुर राज्यान्तर्गत ही है, यह वही महाभारत कालीन प्रसिद्ध काम्यक बन है जहां पाण्डवों ने अपना अज्ञातवास काल समाप्त किया था। यह प्राचीन ब्रन्दावन भी है और जहाँ ८४ तीर्थ हैं जिनमें कुछ दर्शनीय इस प्रकार हैं—१ बिमल कुण्ड (पुष्करराज तीर्थ) विमला देवी दर्शन (२) मधुसूदन कुण्ड (३) लंकापलंका रामेश्वर कुण्ड (४) लुकलुक कुंड गुफा (आँख मिचौनी की जगह) (५) चरण पहाड़ी (यहाँ पहाड़ पर कृष्ण के चरणों के दर्शन हैं जहाँ से वेणुनाद करके त्रिलोकी को मोहित किया है) (६) नंद जी की बैठक (७) चौरासी खंभा (यह पुराना बौद्ध

बिहार प्रतीत होताहै) (८) गोकुल चन्द्रमाजी वल्लभ संप्रदाय वालों के ठाकुर (६) मदन मोहनजी (१०) भौमासुर की गुफा (११) खिसलनी शिला (१२) कृष्णजी के मुकुट कठुला के पर्वत में बने चिन्ह (१३) भोजन थाली (१४) गरुड़ कुण्ड (१५) चंद्रभागातीथ (१६) कामेश्वर महादेव (१७) पाँचौ पाँडव (१८) धर्म कुण्ड आदि। दीग से कामवन आने के मार्ग में ही परमभक्त सुदामा जी का गाँव, आदिबद्री, अलखनंदा, बड़े बद्रीनारायण गंगोत्री, यमुनोत्री, लछमन झूला, हरिद्वार, शीतलकुंड, केदारनाथ आदि अत्यन्त दुर्लभ और महत्वपूर्ण स्थान भी आते हैं।

बरसाना—यह राधाजी की राजधानी है, जहाँ पहाड़ पर राधारानी के महल अत्यन्त सुन्दर देखने ही योग्य बने हैं। बरसाने का दृश्य बड़ा ही मनोरथ है और यहां के आसपास की भूमि बड़ी ही रमणीक और सात्विक भाव उत्पन्न करने वाली विलक्षणता से युक्त है। यहाँ देखने योग्य स्थानों में मुख्य है—(१) वृषभान सरोवर (पक्का सुन्दर सरोवर है) (२) जोगीवन (३) जलविहार कुण्ड (४) दोहनी कुण्ड (५) गहवर वन (६) सांकरी खोर (यह दो ऊंचे पहाड़ों के बीच में बनी इतनी सकरी गली है जिसमें केवल एक ही आदमी एक

बार में निकल सकता है, यहीं कृष्ण ने गोपिकाओं को रोक कर गोरस का दान लिया है यहां दान लीला होती है जिसका आनन्द देखते ही ज्ञात हो सकता है) (७) मोरकुटी (कृष्ण मोर बन कर नाचे हैं) (८) दान गढ़ (९) मानगढ़ (राधाजी के मान करने का स्थान) (१०) विशाल गढ़ (११) अष्ट सखी (१२) चित्रविचित्र शिला (यह शिला वह है जिस पर राधाजी ने सखियों को अपने हाथों में मेंहदी के चित्र बनाने के नमूने अंकित करके बतलाया है यहां शिला में अनेक चित्र बने हुए हैं) (१३ देह कुण्ड (यहां यात्रा के अवसर पर सोने के आभूषणों का दान होता है) (१४) पीरी पोखर (१५) गंदोखर (१६) प्रेम सरोवर (यहां चूड़ी वाले सेठों का मन्दिर बहुत सुन्दर बना है) ।

नंदगाँव—यह नन्दराय जी का पुराना किला है जहां कंस के भय से व्याकुल होकर नंद जी कृष्ण बल्देव दोनों पुत्रों की रक्षा के लिये आकर बसे थे । यहाँ पहाड़ के ऊपर नंद जी का मन्दिर बना है नंदजी यशोदा जी बीच में कृष्ण बलराम की छटा यहां देखने ही योग्य है । यहाँ देखने योग्य हैं—(१) टेककदम्ब (कदम्बवृक्ष पर चढ़ कर गायों को बुलाने का कृष्णजी का स्थान) (२) मोती कुण्ड (कृष्ण जी ने मोती की खेती की) (३)

ललिता कुण्ड (४) सूर्य कुण्ड (५) शक्ति कुण्ड (६) उद्धव जी के क्यार (यहाँ कदम्बों के अत्यन्त प्राचीन विस्तृत क्यारे हैं जहा बैठ कर उद्धव जी ने अपरिमित गुर्थो को कृष्ण का कहा योग शिक्षाप्रद सुनाया था और गोपियों के उत्तरों से पराजित होकर अपना सब अभिमान गँवा कर लौटे थे। यहां की उद्धव जी की लीला बड़ी महत्वपूर्ण होती है जो करूणा रस का मानो साकार रूप ही खड़ा कर देती है) (७) यशोदा कुण्ड (८) मधुसूदन कुण्ड (९) दाऊ (पत्थर के प्राचीन युग के शेर जैसे विचित्र जीव खड़े हैं जो कृष्ण जी को डराने के लिए खड़े किये गये थे) (१०) माँट ये बहुत वृहदाकार मिट्टी के दही मथने के माँट जमीन में गड़े हुए हैं जो यशोदा जी के दही बिलोने के कहे जाते हैं (११) मान सरोवर (यह बहुत गहरा विशाल सरोवर है) ।

कोसी—यह द्वारिका पुरी है। यहाँ अनाज के व्यापार की अच्छी मण्डी है रेल्वे स्टेशन भी है और मथुरा देहली की पक्की सड़क पर स्थित होने के कारण इसका महत्व है।

शेरगढ़—पैगाँव कामर होकर यात्रा शेरगढ़ जाती है, यहां काँच का सामान कपड़े और खिलौने, गैंद, घोड़ों का साज आदि सामान किसी समय अच्छा

बनता था किन्तु अब नये युग की उन्नति की दौड़ में पुराना गाँव होने की वजह से पिछड़ गया है।

चीरघाट—नंद गाँव से ग्वालिनें यहाँ यमुना स्नान को आती थीं। यहीं कृष्णजी ने कदम्ब पर ले जाकर चीर हरण लीला की थी। यहां का त्यागी देवी का मन्दिर भी है।

ब्रन्दावन—नन्दघाट, कच्छवन होते हुए यात्रा ब्रन्दावन आती है। वृन्दावन अत्यन्त सुहावना स्थान है। यह भक्ति का क्रीड़ा क्षेत्र है जहां भावुक भक्तों का मन सबसे अधिक शान्ति लाभ करता है। यहां इतने मन्दिर हैं कि उनकी गिनती नहीं हो सकती, घर घर में तुलसी, कुआँ, ठाकुर मूर्ति विरामान है। यहाँ सभी सम्प्रदायों के बड़े बड़े सुन्दर स्थान मन्दिर, मठ, अखाड़े आश्रम आदि बने हुए हैं। यहाँ के दर्शनीय स्थानों में कुछ प्रमुख ये हैं—

१—श्री गोविन्द देव जी का मन्दिर (जैपुर के राजा मानसिंह का बनाया यह इतिहास प्रसिद्ध मन्दिर पुरातत्व की अमूल्य निधि है, इसके कई मंजिल धर्मान्धि अत्याचारी औरंगजेब ने तोड़ डाले परन्तु जो कुछ भी बच रहा है वह भी अपने प्राचीन गौरवमय स्वरूप का आभास देने के लिये कुछ कम नहीं है।

कम नहीं हैं कहते हैं इसके ऊपरी मंजिल पर सवा मन घी का दीपक जलता था जो दिल्ली से दिखाई देता था।

२---रँगजी का मन्दिर—मन्दिर क्या है पूरी किला है जिसमें विशाल काय सोने का गरूड़ खम्भ और मन्दिर के गोपुर द्वार आदि आश्चर्य चकित करने वाले हैं। मन्दिर रामानुज सम्प्रदाय का दक्षिण के श्रीरंगम् मन्दिर के नमूने का बनाया गया है।

३—लाला बाबू—वह कलकत्ते के रईस और भक्त बंगाली लाला बाबू नामक सज्जन का बनाया हुआ है इसकी शिखिर बहुत ऊँची अतः दर्शनीय है।

४—ब्रह्मचारी जी–यह ग्वालियर के राजा ने अपने गुरू तपस्वी ब्रह्मचारी जी की भेट बना कर किया था ब्रह्मचारी जी बड़े भजन के प्रभाव वाले थे। ५—गोपे-श्वर–शंकर जी रास में गोपी का रूप बना कर आये थे। ६—बंसीवट–यहाँ कृष्ण ने रास–लीला की थी ७—शाहजी–यह मन्दिर संगमरमर के सुन्दर कलामय काम के लिये दर्शनीय है यहां बसन्ती कमरा नामका कमरा है जो मूल्यवान भाड़फानूस आदि काम के सामान से सज्जित है और साल में दो ही दफे खुलता है बसंत पंचमी पर और श्रावण में। ८—कालीदह–यहां से कुछ दूर पर असली कालीदह है परन्तु यहाँ मन्दिर के

पास भी एक कालीनाग घाट पर बना रक्खा है ६—सेवा-कुंज बन बहुत सुन्दर बन है जहां भगवान रात्रि में शयन करते हैं १०—निधिबज—यहां बिहारीजी का प्रगट होने का स्थान है तथा प्रसिद्ध संत स्वामी श्री हरिदासजी का यह भजन करने का परम रमणीक स्थान है। ११ - बाके-बिहारी-यह ब्रन्द्राबन का अलबेला ठाकुर है जो पर्दों के झकोरों की ओर भक्तो को दर्शन देता है। १२—अष्ट सखी-यह राधाजी की सखियों का मन्दिर है १३ - मदन मोहन जी यह ब्रन्द्राबन बसाने वाले रूप सनातन जी गोसाई के इष्ट देव का मन्दिर है जो भव्य और सर्वोच्च शिखर युक्त बना है। १४—श्री राधा बल्लभजी १५—श्री राधारमन १६—जैपुर राजा का मन्दिर, यह मन्दिर मथुरा ब्रन्दावन रोड़ पर है और बहुत सुन्दर और भव्य बना है, इसी रोड़ पर भतरोड़ बिहारी तथा मथुरा के निकट सेठ बिड़ला जी का भी नव निर्मित मन्दिर है जिसमें गीता स्तंभ पर सम्पूर्ण गीता अंकित की गई है। इसी के समीप राजा महेन्द्र प्रताप का प्रेम महाविद्यालय है। ब्रन्दावन में कुछ एसे मन्दिर भी हैं जहाँ धोखा देकर यात्री से अटका भेंट आदि वसूल किये जाते हैं जब कि यह पैसा एक आना रूपया ठाकुर जी का रख कर बाकी कुल साथ गांव वाले पंडे को लौटा दिया जाता है।

महावन—वृन्दावन से यात्रा श्यामवन, भांडीरबन मांटबन, वेलबन, आदि होकर, मानसरोवर, लोहबन, होकर महावन आती है। यह पुरानी गोकुल है यहीं नन्दजी का भवन था जिसका भाग विशेष कुछ किले के रूप में एवं कुछ चौरासी खम्भा के रूप में देखने में आता है। यहाँ से ब्रम्हांण घाट चिन्ता हरन होकर यात्रा दाऊजी जाता है।

दाऊजी—यह कोई प्राचीन तीर्थ नहीं है, पहिले यहाँ हथौड़ा नाम का गाँव था और दाऊजी की यह मूर्ति महावन में चौरासी खम्भा में स्थापित थी औरंगजेब के आक्रमण के समय यह मूर्ति महावन से लेजाकर हथौड़ा गांव में जो चमारों हरिजनों की छोटी सी बस्ती थी भूमिस्थ कर दी गई। प्रसिद्ध इतिहास शोधक ग्राउस साहब ने लिखा है कि कालांतर में इस औधी पड़ी हुई मूर्ति का पृष्ठ भाग चोडी शिला के रूप में दिखाई देने लगा इस पर इस गांव के लोग खुर्पा और दरांत घिस घिस कर पैने करते थे जिससे श्री दाऊजी की पीठ में गहिरे गढ्ढेपड़ गये। इस अनाचार से तंग आकर दाऊजी ने किसी भक्त को परिचय देकर अपने को किसी मंदिर में स्थापित कर देने की आज्ञा की और तब यह वर्तमान मन्दिर ईंट चूने का बनाया गया। उसी समय से दाऊ-

जी की मनौती बृज के चमारों में सबसे अधिक की जाने लगी। मन्दिर के पास ही यहां के अनुरूप ही एक कुण्ड भी है, उसे कहते हैं क्षीर सिन्धु। यहाँ बजार से जो प्रसाद के लिए खीर ली जाती है उसमें भी दूध की जगह जल भात ही मिलता है उसमें सौगन्ध खाने को कुछ दूध के दर्शन अवश्य रहते हैं।

गोकुल—दाऊजी से यात्रा रमणरेती (कृष्ण का बाल क्रीड़ा स्थल) होकर गोकुल आती है। यहां वल्लभ कुल सम्प्रदाय के सभी गोस्वामियों के मन्दिर हैं जहां समय समय से दर्शन होते हैं। यहां मन्दिरों के प्रसाद का बांट सस्ता और अच्छा मिलता है। यहां भी कुछ धोखा देकर अटका भेट लेनेवाले मन्दिर हैं जिनसे यात्री को सचेत रहना चाहिये। आगे यात्रा रावल जो राधिका जी का जन्म स्थान है वहां होकर मथुरा वापिस आ जाती है।

यह ब्रज यात्रा का संक्षिप्त क्रम है। हमने यहां प्रमुख स्थानों का ही वर्णन दिया है यात्रा के मार्ग में जो अनेक तीर्थ स्थान आते हैं उन सभी का वर्णन और परिचय इस छोटे से लेख में नहीं किया जा सकता। साधन और अवकाश अनुकूल हुए तो हम उसे स्वतंत्र पुस्तक के रूप में प्रस्तुत करने की चेष्टा करेंगे।

वृज-यात्रा के मुख्य स्थानों की दूरी

यात्रा क्रमानुसार मीलों में

मुकाम—	यात्रा से	मथुरा से सीधा
मथुरा	०	०
मधुवन	३	
तालबन	३	
कमोद्वन	२	
शान्तन कुंड	३	(३)
वहुला वन	५	
माधुरी कुंड	४	
राधाकुंड	२॥	(१६)
कुसुमसरोवर	१	(१५)
गोवरधन	१	(१४)
चन्द्रसरोवर	२	
पैंठा	२	
जतीपुरा	३	(१६)
दीग	६	(२१)
काम तरो	३	
घाटो	३	
कामवन	३	(२४
बरसाना	४	(३१)

मुक़ाम	यात्रा से	मथुरा से सीधा
संकेत	२	
महेराना	४	
नन्द गाँव	३	(२६)
करहला	४॥	
जाव	४	
कोकिलावन	२	
बठैन	१	
कामर	३	
कोटवन	२॥	
कोसीकलाँ	४॥	(२५)
पैगाँव	२॥	
शेर गढ़	५	
चीर घाट	५	
नन्दघन	६	
शामवन	१	
भांडीरवन	१	
मांटवन	२	
वेलवन	२	
ब्रन्दावन	१॥	(६)

मुकाम	यात्रा से	मथुरा से सीधा
(वृन्दावन से अक्रूर भतरोंड होकर वृन्दावन लौटना)	६	
वृन्दावन से लोहवन	१०	
अन्दीबद्री होते हुये दाऊजी	१२	(१४)
ब्रह्मानंदघाट	४	(८)
चिंताहरन	१	
रमन रेती	१	
महावन	१	(७
गोकुल	२	(६)
रावल	३	
मथुरा वापसि	३	

नोट—तीसरे कालम में मथुरा से सीधे पक्की सड़क के मार्ग की दूरी कोष्टक में दी गई है।

पुस्तक मिलने का पता—

रघुनाथदास पुरुषोत्तमदास

छत्ता बाजार, मथुरा।

रिलायन्स प्रिन्टिङ्ग प्रेस, गली दालाराम, रावतपाड़ा-आगरा।